मसीही विश्वास के लिए
बाइबल आधारित नीवें
पुस्तक-2

महिमामय सुसमाचार की खोज

पॉल डेविड वॉशर

ALETHIA Publications

महिमामय सुसमाचार की खोज

© ALETHIA Publications, 2018

The title *Discovering the Glorious Gospel* is originally published in English by Media Gratiae.
Copyright ©2016 by Paul Washer. This Hindi version has been translated and published by **Alethia Publications** with permission.

First Hindi Edition 2018

All rights reserved.
No part of this publication may be reproduced in any form or by any means,
Electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any
Information storage and retrieval system, without permission in writing
from the publisher.

Published & Distributed by
ALETHIA Publications.
Chandra Niwas Building, Bitco Point, Nashik Road 422101,
Maharashtra, India.W
www.alethiabooks.com

Alethia Publications is the publishing division of
Alethia Publication & Training Pvt. Ltd.
alethiapublications@gmail.com
www.alethiabooks.com

Price: ₹200

Hindi Translation: Sameer Salve & Team.
Cover Design: Jon Green

Printed and bound in India by
GS Media, Secunderabad 500 067
E-mail: printing@ombooks.org

"जैसा कि अपेक्षा की गई, पॉल वॉशर *महिमामय सुसमाचार की खोज (**Discovering the Glorious Gospel**)* में मुख्य सुसमाचार सिद्धांतों में विश्वासयोग्य मार्गदर्शक रहे हैं। यहां पर आपको कुछ टीका संबंधी और धर्मसैद्धान्तिक स्पष्टीकरण तथा सहायक, मार्गदर्शक प्रश्न एवं बाइबल पठन मिलेंगे। यह व्यक्तिगत या सामुहिक अध्ययन के लिए अत्यंत उपयुक्त साधन होगा, जो परमेश्वर कौन है और उसने कैसे हमें बचाने हेतु महिमामय तरीके से कार्य किया है इस विषयों से संबंधित गौरवशाली सच्चाइयों को और गहराई से खोज निकाले हेतु लोगों को सक्षम बनाएगा।

– रे वॅन नेस्ते, प्राख्याता यूनियन विश्वविद्यालय, *ई एस व्ही अध्ययन बाइबल में योगदान कर्ता*

"पॉल वॉशर की पुस्तक *महिमामय सुसमाचार की खोज* स्वर्ग से आई ताजी हवा के झोके के समान है। सबसे पहले, यह एक कार्यपुस्तिका है जो हमें चुनौती देती है कि हम बाइबल पढ़ें और स्वयं के लिए सुसमाचार की आत्म–पोषक सच्चाइयों को सीखें। पॉल वॉशर बाइबल की समृद्ध अवधारणाओं का उपयोग कर मसीह के कार्य और व्यक्तित्व की रूपरेखाओं को उजागर करते हैं जब तक कि सुसमाचार विस्मित करने वाले एव्हरेस्ट पर्वत के समान उभर कर न आ जाए। दूसरी बात, यह पुस्तक हमें वापस उस बुनियादी कारण की ओर ले जाता है कि परमेश्वर क्यों हमें उस तरह बचाता है जैसे वह सुसमाचार के द्वारा करता हैः ताकि खुद को महिमा दे सके। पुस्तक का आरंभ उस ईश्वरीय द्वंद से होता है, और इतना सबकुछ कहने और करने के बाद वह हमें अनुग्रह और न्याय के परमप्रधान परमेश्वर की आराधना करने हेतु अपने घुटनों पर लाता है। यदि आप जानना चाहते हैं कि सुसमाचार क्यों सदा के लिए सबसे महान सत्य है, तो इस पुस्तक को खरीदें और अपने हाथों में बाइबल खुली रखकर उसका अध्ययन करें!"

– कॉनरैड म्बेवे, पासबान, कबवाटा बैप्टिस्ट चर्च, *फाऊंडेशन्स फॉर द फ्लॉक* के लेखक

"यीशु मसीह का सुसमाचार अद्वितीय शुभ समाचार है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में भेजा ताकि "जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।" *महिमामय सुसमाचार की खोज* इस किताब में पॉल वॉशर सुसमाचार की कई खुबसूरत सच्चाइयों का विचारपूर्वक विवेचन करते हैं जिन्हें अक्सर अनदेखा किया जाता है। इन अद्‌भुत वास्तविकताओं पर प्रकाश डालते हुए पॉल संपूर्ण पवित्र शास्त्र के लिए उत्तम मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

– एन्थनी आर. मॅथेनिया, पासबान, क्राइस्ट चर्च – रैडफोर्ड, *बिहोल्ड योर गॉड* के लेखन में योगदान

विषय-सूची

परिचयः vii
अध्याय 1: ईश्वरीय द्वंद और सुसमाचार 1
अध्याय 2: मनुष्य को बचाने के लिये परमेश्वर का अभिप्राय 7
अध्याय 3: उद्धार करने के लिए पुत्र के आने का उद्देश्य 13
अध्याय 4: परमेश्वर का पुत्र अपनी महिमा में. 21
अध्याय 5: पुत्र ने मानव रूप धारण किया 26
अध्याय 6: पुत्र मनुष्य बना 33
अध्याय 7: पुत्र ने एक सिद्ध जीवन जिया 39
अध्याय 8: पुत्र ने हमारे पाप को उठा लिया 45
अध्याय 9: पुत्र शाप बना. 51
अध्याय 10: पुत्र ने परमेश्वर के क्रोध को सहा 56
अध्याय 11: पुत्र मर गया. 65
अध्याय 12: मसीह हमारा प्रायश्चित. 71
अध्याय 13: मसीह हमारा छुटकारा 77
अध्याय 14: मसीह हमारा छुटकारा 83
अध्याय 15: मसीह हमारा मेलमिलाप 89
अध्याय 16: मसीह हमारा मेलमिलाप 96
अध्याय 17: मसीह हमारा बलिदान 99
अध्याय 18: मसीह मेम्ना है 105
अध्याय 19: मसीह बलिदान का बकरा 111

अध्याय 20: मसीह गाड़ा गया 117
अध्याय 21: मसीह जीवित हुआ है 122
अध्याय 22: पुनरुत्थान में हमारे विश्वास की बुनियाद 128
अध्याय 23: मसीह के पुनरूत्थान के प्रमाण. 131
अध्याय 24: मसीह के पुनरूत्थान का गुणस्वभाव. 143
अध्याय 25: मसीह के पुनरूत्थान का महत्व 148
अध्याय 26: मसीह के पुनरूत्थान की अनिवार्यता 154
अध्याय 27: पुत्र का स्वर्गारोहण हुआ 160
अध्याय 28: हमारा महामहिमन् उद्धारकर्ता 168
अध्याय 29: हमारा महामहिमन् मध्यस्थ 174
अध्याय 30: हमारा महामहिमन् सहायक 180
अध्याय 31: मसीह राजा है. 185
अध्याय 32: मसीह प्रभु है 191
अध्याय 33: मसीह न्यायी है 197
अध्याय 34: न्याय की निश्चयता. 203

परिचयः

अध्ययन की पध्दति

एक विद्यार्थी के लिये इस अध्ययन का महान लक्ष्य यह है कि वह परमेश्वर के वचन के द्वारा उससे सामना करें। इस धारणा पर आधारित होकर कि धर्मशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचित हैं और परमेश्वर का अचूक वचन हैं, यह अध्ययन इस तरह निर्मित किया गया है कि विद्यार्थी के लिये बिल्कुल असंभव है कि वह अपने सामने बिना बाइबल खोले, आगे बढ़ सकते हैं। 2 तिमुथियुस 2:15 में वर्णित प्रेरित पौलुस के उपदेश को मानने में पाठक की सहायता करना, इस अध्ययन का लक्ष्य हैः

> *"अपने आपको परमेश्वर के ग्रहणयोग्य ऐसा कार्य करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर जिससे लज्जित होना न पड़े और जो सत्य के वचन को ठीक ठीक काम में लाए।"*

प्रत्येक अध्याय यीशु मसीह के सुसमाचार के एक विशेष पहलू को संबोधित करता है। विद्यार्थी प्रत्येक अध्याय को प्रश्नों के उत्तर देते हुए पूर्ण करेगा और दिये गये पदों के अनुसार निर्देशों का पालन करेगा। विद्यार्थी को प्रेरित किया गया है कि वह प्रत्येक पद पर ध्यान करे और अपने विचारों को लिखे। इससे मिलने वाला लाभ विद्यार्थी द्वारा किये गये अध्ययन के निवेश पर निर्भर करता है। अगर विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर विचारहीनता के साथ, केवल पदों की नकल करते हुए और इसके अर्थ को समझने की चेष्टा किये बिना देता है, तो यह पुस्तक उसके लिये बहुत ही कम सहायक होगी।

महिमामय सुसमाचार की खोज यह पाठ्यक्रम प्राथमिक तौर पर एक बाइबल अध्ययन है और यह बहुत अधिक रंगीन चित्रण, अनूठी कहानियां या धर्मविज्ञानी टिप्पणियां से भी भरा हुआ नहीं है। यह लेखक की इच्छा थी कि एक अभ्यास ऐसा दिया जाये जो केवल धर्मशास्त्र के पदों की ओर संकेत करे और परमेश्वर के वचन को स्वयं बातचीत करने दे।

यह अभ्यास पुस्तिका किसी व्यक्ति द्वारा, एक छोटे समूह में, संडे स्कूल कक्षा में अथवा दूसरे संदर्भो में प्रयुक्त की जा सकती है। यह अनुशंसा उच्च स्तर पर की जाती है कि विद्यार्थी अपने समूह या शिष्यता प्रमुख से इस पर चर्चा करने के लिये एवं प्रश्नों के संबंध में बात करने से पहले, प्रत्येक अध्याय को पूर्ण करे।

विद्यार्थी के लिये सत्योपदेश

विद्यार्थी को बाइबल के सिध्दांत का अध्ययन करने के लिये और मसीह जीवन में इसके उन्नत स्थान का अध्ययन करने के लिये प्रेरित किया जाता है। एक सच्चा मसीही जन भावनाओं और बुध्दि के मध्य या परमेश्वर के प्रति भक्ति और परमेश्वर के सिद्धांत के मध्य अलगाव को सहन नहीं कर सकता है और न हीं इनके बिना जीवित रह सकता है। धर्मशास्त्र के अनुसार, न हमारी भावनायें और न हमारे अनुभव मसीही जीवन के लिये एक उचित नींव प्रदान करते हैं। केवल धर्मशास्त्र की सत्य बातें, जो विचारों द्वारा समझी गयीं हों और सिद्धांतों द्वारा संप्रेषित की गयी हो, एक ठोस नींव प्रदान कर सकती है, उस नींव पर हमें हमारे विश्वास और हमारे व्यवहार का निर्माण करना चाहिये और हमारी भावनाओं और अनुभव की वैधता को तय करना चाहिये। बुद्धि हृदय का विरोधी नहीं है और सिद्धांत भक्ति की राह में बाधा नहीं है। दोनों परम आवश्यक एवं अविभाज्य हैं। धर्मशास्त्र हमें अपने संपूर्ण मन से, अपनी संपूर्ण आत्मा और संपूर्ण बुद्धि से प्रभु हमारे परमेश्वर से प्रेम रखने (मत्ती 22:37), और आत्मा और सच्चाई दोनों से परमेश्वर की आराधना करने की आज्ञा देता है (यूहन्ना 4:24)।

सिद्धांत का अध्ययन बौद्धिक और भक्तिपूर्ण अनुशासन दोनों है। यह परमेश्वर को तीव्रता से खोजना है, जो महानतम व्यक्तिगत बदलाव, आज्ञाकारिता और हृदय से परिपूर्ण होकर आराधना करने की ओर विद्यार्थी की सदैव अगुवाई करें। इसलिये, विद्यार्थी को परमेश्वर के व्यक्तित्व के स्थान पर अवैयक्तिक ज्ञान को खोजने वाली बड़ी चुक करने के प्रति सदैव सचेत रहना चाहिये। न तो विचारहीन भक्ति और न ही मात्र बौद्धिक अनुसरण, लाभदायक होता है, क्योंकि दोनों ही मामलों में हम परमेश्वर को खो देते हैं।

लेखक की ओर से शब्द

यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान मानव इतिहास की धुरी है, अभी तक की एक महानतम कहानी है एवं जो स्वर्गिक मनन करने का विषय है (1 पतरस 1:12)। जब बाइबल के प्रति ईमानदारी रखते हुए इसे सुनाया जाता है, तो यह प्रत्येक विश्वास करने वाले को उद्धार देने वाली परमेश्वर की सामर्थ होती है (रोमियों 1:16) और सब प्रकार की सच्ची धार्मिकता का एक बड़ा स्त्रोत व प्रेरणा ठहरती है (1 तिमुथियुस 3:16)। जब इसके संदेश को दूषित किया जाता है, तो यह सुनने वालों के लिये मृत्यु और जिसने यह गलत शिक्षा दी है, उसके लिये घोर श्राप लाता है (गलतियों 1:6–9)। इन्हीं कारणों से और कई अन्य कारणों से, मसीही जन को सुसमाचार के अपने अध्ययन को प्रथम और जीवनपर्यंत चलने वाला कार्य मानना चाहिये। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए इस अभ्यास पुस्तिका को रचा और लिखा गया था।

मैं अपनी पत्नी शैरो और अपने चारों बच्चों (इयान, इवान, रोवन और ब्रॉनविन) का उनके लगातार सहयोग के लिए आभारी हूं जो मुझे हमेशा बडा आनंद देते है।

अध्याय 1: ईश्वरीय द्वंद और सुसमाचार

धर्मशास्त्र में, हम सीखते हैं कि परमेश्वर पवित्र है; धार्मिक है; और समस्त प्रेम, श्रद्धा और आज्ञाकारिता के योग्य है। हम यह भी सीखते हैं कि यद्यपि मनुष्य भला रचा गया था, उसने स्वयं को भ्रष्ट कर लिया है, परमेश्वर की आज्ञा का विरोध किया है और स्वयं को स्वर्गिय दंड ओढ लिया है। हम इस अध्ययन में, परमेश्वर द्वारा पतित व्यक्ति की अवस्था को सुधारने के लिये किये गये अदभुत कार्य की खोज करेंगे।

ईश्वरीय द्वंद

वेबस्टर शब्दकोष में ''द्वंद'' शब्द की परिभाषा दी गयी है, ''ऐसी परिस्थिति जिसमें दो बराबर असंतोषजनक विकल्प'' सम्मिलित होते हैं या ''एक समस्या जो संतोषजनक हल देने में असमर्थ दिखाई देती है।'' धर्मशास्त्र में, समस्त द्वंदों में से सबसे बड़ा द्वंद हमारे सामने रखा गया है: परमेश्वर धर्मी है; इसलिये, अवश्य है कि वह निर्दोष को छोड़ते हुए और दोषी को दंड देते हुए, कड़े नियमों पर आधारित न्याय करें। अगर वह दोषी को क्षमा करता है और उसकी आज्ञा के प्रत्येक उल्लंघन व प्रत्येक अनाज्ञाकारिता को दण्ड नहीं देता है, तो वह अन्यायी है। परन्तु, अगर वह प्रत्येक मनुष्य के प्रति न्याय करता है – अगर हरेक जन के साथ जैसा व्यवहार किया जाना चाहिये, वह वैसा ही व्यवहार करता है – तब तो सभी मनुष्य दंडित ठहरेंगे। कैसे परमेश्वर न्यायी बने रहकर उन लोगों पर दया भी दिखा सकता है जिन्हें दंड मिलना चाहिये था? रोमियों 3:26 में प्रेरित पौलुस के शब्दों को प्रश्न रूप में अलग ढंग से व्यक्त करते हुए कह सकते हैं:

किस प्रकार परमेश्वर धर्मी होने के साथ–साथ अधर्मी मनुष्यों को धर्मी ठहरानेवाला हो सकता है?

परमेश्वर यूहीं क्यों क्षमा नहीं कर सकता?

कोई शायद यह पूछे, ''परमेश्वर क्यों यूहीं अधर्मी मनुष्यों को क्षमा कर मसले को हल नहीं करता है? धर्मशास्त्र हमें मुक्त भाव से क्षमा करने की आज्ञा देते हैं, तो अगर परमेश्वर ऐसा करते हैं तो यह क्योंकर गलत होगा? इस प्रश्न का उत्तर त्रिस्तरीय है। प्रथम, परमेश्वर हमारे समान नहीं हैं, परंतु अपनी समस्त रचना के जोड़ से भी बढ़कर अत्यधिक अनंत रूप में वह मूल्यवान परमेश्वर हैं। इसलिये, यह न केवल उचित है परंतु उसके लिये आवश्यक भी है कि वह दोनों कार्य करे कि अपनी महिमा करे एवं उसकी रक्षा भी करे। क्योंकि वह जो है उस अपने व्यक्तित्व के कारण, थोड़ा सा विद्रोह भी उसके व्यक्तित्व के प्रति भ्रष्ट

अपराध, उंचे दर्जे का विश्वासघात और सख्त रूप में निंदा के योग्य कहलायेगा। उसके व्यक्तित्व के प्रति किसी अपराध को होने देना और ऐसे अपराध को सजा नहीं देना एक द्विस्तरीय अन्याय कहलायेगाः 1) परमेश्वर के रूप में उसकी यथायोग्य महिमा का इंकार करके वह स्वयं के व्यक्तित्व के प्रति अन्याय करेगा, 2) अपनी रचना को स्वयं के अस्तित्व के (अर्थात परमेश्वर की महिमा) होने के मूल कारण से इंकार करने की अनुमति देकर, वह अपनी सृष्टि के प्रति भी अन्याय करेगा। यह कदम व्यर्थ ही सिद्ध होगा। अगर आधुनिक मनुष्य के लिये यह स्वीकार करना इतना कठिन है तो इसका कारण केवल यह है कि परमेश्वर के प्रति उसका दृष्टिकोण निम्न है।

दूसरा, परमेश्वर मनुष्य के पाप यूहीं क्षमा नहीं कर सकता और उन्हें समाप्त नहीं कर सकता क्योंकि उसके चरित्र में विरोधाभास नहीं है। धर्मशास्त्र सिखाते हैं कि परमेश्वर अपने सारे गुणों व अपने कार्यो में (बिना विरोधाभास के) सिद्ध है। इसलिये, वह हमेशा अपने परमेश्वरत्व के कारण सिद्धता लिये हुए सुसंगत व्यवहार करेगा। वह किसी दूसरे गुण की कीमत पर एक गुण को उंचा नहीं उठायेगा, न ही वह अपने चरित्र के एक पहलू का इंकार किसी दूसरे पहलू को प्रगट करने के लिये करेगा। वह प्रेमी, तरस से भरपूर और लंबे समय तक सहनशील बने रहने वाला परमेश्वर है; फिर भी वह पवित्र है, धर्मी है, अपने सारे कार्यो व न्याय करने में न्यायी है। पह प्रेम के नाम में अपनी पवित्रता से इंकार नहीं कर सकता और वह दया दिखलाने के कारण उसके न्याय की उपेक्षा नहीं कर सकता। कई अच्छी मंशा वाले सुसमाचार के प्रचारकों ने गलत शिक्षा दी है कि पापी जन का न्याय करने के बजाय परमेश्वर ने प्रेमी परमेश्वर होना तय किया है। किन्तु, इस असत्य का तार्किक निष्कर्ष यह है कि परमेश्वर का प्रेम अन्यायी है और वह प्रेम के नाम से अपने स्वयं के ठहराये हुए न्याय से मुंह मोड़ सकता है। ऐसे कथन परमेश्वर के गुणों की उपेक्षा करते हैं। सुसमाचार का आश्चर्य इस बात में नहीं था कि परमेश्वर ने न्याय के स्थान पर प्रेम को चुना, परंतु वह प्रेम में क्षमा प्रदान करने के उपरांत भी न्यायी बने रहने में समर्थ था।

तीसरा, परमेश्वर समस्त जगत का न्यायकर्ता है। यह उसका कार्य है कि वह देखे कि न्याय किया गया है, बुराई को दंड मिला है और सही व्यक्ति दोषमुक्त हुआ है। जिस प्रकार इस संसार में किसी न्यायाधीश के लिये उसके न्यायालय में कटघरे मे खड़े अपराधी को क्षमा करना उचित नहीं होगा, उसी प्रकार स्वर्गिय न्यायाधीश के लिये यह उचित नहीं होगा कि वह उस दुष्ट को क्षमा करे जो उसके न्यायालय में कटघरे मे खड़ा है। क्या अनेक लोगों के द्वारा बार बार यह शिकायत नहीं मिलती कि हमारी न्यायप्रणाली भ्रष्ट है? जब अपराधियों को सजा मिलती है तो क्या हम शर्मिंदगी महसूस नहीं करते हैं? क्या हम हमारे अपने न्यायाधीश से न्याय की जितनी अपेक्षा करते हैं उससे कम न्याय की अपेक्षा परमेश्वर से करते हैं? यह एक पुख्ता सत्य है कि न्याय के अमल किये बिना, समस्त देश, लोग और सभ्यतायें अराजकता और स्व–विनाश में अविचारी ढंग से नष्ट हो जायेंगी। अगर परमेश्वर ने अपनी स्वयं की धार्मिकता की उपेक्षा की होती; अगर क्षमा न्याय को संतुष्ट किये बिना प्रदान की गयी होती; अगर बुराई के लिये कोई अंतिम न्याय नहीं होता, तो सृष्टि के लिये यह असहनीय हो जाता।

पवित्र शास्त्र में प्रस्तुत द्वंद

समस्त धर्मशास्त्र में संभावित सबसे बड़ा प्रश्न यह है: ''कैसे परमेश्वर न्यायी हो सकता है और तौभी जिन्हें दंड मिलना चाहिये, उन पर दया दिखा सकता है?'' किस प्रकार वह धर्मी होने के साथ–साथ अधर्मी मनुष्यों को धर्मी ठहरानेवाला हो सकता है? धर्मशास्त्र के निम्नलिखित पदों में, यह ***ईश्वरीय द्वंद*** निर्विवाद स्पष्टतः दिखाई देगा।

1. निर्गमन 23:7 और रोमियों 4:5 में, हम ईश्वरीय द्वंद के उत्तम उदाहरण पाते हैं – किस प्रकार परमेश्वर धर्मी होने के साथ–साथ अधर्मी मनुष्यों को धर्मी ठहरानेवाला हो सकता है?

   अ. निर्गमन 23:7 में परमेश्वर स्वयं के लिये क्या घोषित करता है?

   (1) क्योंकि मै_____को_____न ठहराउंगा।

टिप्पणियां: ''दोषमुक्त करना'' शब्द इब्रानी भाषा के ***''साडेक''*** शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है, ''न्याय करना, निर्दोष ठहराना, या सही घोषित करना।''

ब. कैसे यह भविष्यवाणी बताती है कि मसीहा किसी मनुष्य से बढ़कर होगा – कि वह अनंत परमेश्वर होगा?

(1) वह जो_____को_____ठहराता है।

टिप्पणियां: ''धर्मी ठहराता है'' शब्द, यूनानी भाषा की क्रिया ***डिकायू*** से निकला है जिसका अर्थ है, ''सही ठहराना अथवा दोषमुक्त करना।''

क. ये दोनों पद कैसे ईश्वरीय द्वंद को चित्रित करते हैं?

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: निर्गमन 23:7 स्पष्ट रूप में पुष्टि करता है परमेश्वर दोषी को निर्दोष या दोषमुक्त नहीं ठहरायेगा, परंतु उसके प्रति सिद्ध न्याय करेगा। किन्तु, रोमियों 4:5 में, शास्त्रलेख निर्भिकता से प्रत्येक विश्वासी की उस बड़ी आशा को घोषित करता है कि परमेश्वर भक्तिहीन को धर्मी ठहराता है! दोनों कथन किस प्रकार सत्य हो सकते हैं?

2. ईश्वरीय द्वंद से संबंधित पदों में से एक सबसे अधिक सशक्त चित्रण नीतिवचन 17:15 में मिलता है।

अ. नीतिवचन 17:15 में कौनसा सार्वभौमिक और अचल सत्य निर्धारित किया गया है?

(1) जो दोषी को_____और_____को_____दोषी ठहराता है। उन दोनो से यहोवा_____ करता है।

टिप्पणियां: "घृणा" शब्द इब्रानी भाषा के ***टो-एबा*** शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है, "कोई चीज जो द्वेष करने योग्य, घिनौनी या वीभत्स है। इब्रानी धर्मशास्त्र में यह सबसे कड़े शब्दों में से एक हैं!

ब. नीतिवचन 17:15 में जो सत्य प्रकाशित किया गया है और यह सत्य कि परमेश्वर अधर्मी को धर्मी ठहराता है (रोमियों 4:5) कैसे ईश्वरीय द्वंद का चित्रण करता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: हम पूर्व में प्रेरित पौलुस के अलग ढंग से व्यक्त शब्दों में ईश्वरीय द्वंद को बता चुके हैं: "परमेश्वर धर्मी होने के बावजुद अधर्मी को कैसे धर्मी ठहरा सकता है?" यहां द्वंद को पुनः बताया गया है: "परमेश्वर अधर्मी को कैसे धर्मी ठहरा सकता है कि जो उसके पवित्र और धर्मी चरित्र के प्रति घृणा योग्य या घिनौना न ठहरे?"

3. निर्गमन 34:5–7 में, ईश्वरीय द्वंद का एक और स्पष्ट उदाहरण मिलता है। इस पाठ को पढ़ें और अभ्यास को पूर्ण करें।

अ. पद 7 में, परमेश्वर दो विरोधाभासी घोषणायें करते हैं जो सशक्त रूप में ईश्वरीय द्वंद का चित्रण करती हैं। इन घोषणाओं को पहचानिये।

*(1) परमेश्वर*_____; _____ और _____क्षमा करनेवाला है।

(2) परमेश्वर_____ किसी भी प्रकार_____दिए बिना नही छोडेगा।

ब. पद 7 के द्वंद का चित्रण समझाइये।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: कैसे दोनों कथन सत्य हो सकते हैं? एक ही पद सभी पापों की क्षमा का वायदा करता है और यह चेतावनी भी देता है कि परमेश्वर दोषी को क्षमा नहीं करेगा या उसे दंड दिये बिना नहीं छोड़ेगा।

4. हमारे अध्ययन के इस अध्याय को समाप्त करने से पूर्व, हम संपूर्ण बाइबल में से एक सबसे खूबसूरत अंश को देखेंगे। रोमियों 4:7–8 में, प्रेरित पौलुस भजन संहिता 32:1–2 पद को दोहराता है। रोमियों के इस अंश को पढ़िये, जब तक आप इसकी विषय वस्तु से परिचित न हो जायें, और तब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

अ. रोमियों 4:7–8 के अनुसार, जो मनुष्य परमेश्वर के समक्ष धन्य है, उसके तीन गुण बताइये?

(1) *जिनके*_____क्षमा हुए (पद 7)।

(2) *जिनके*_____*गए (पद 7)।*

(3) *उसके*_____*का*_____*प्रभु नहीं लेगा (पद 8)।*

ब. कौनसी धर्मविज्ञानी कठिनाईयां रोमियों 4:7–8 में प्रस्तुत की गयी हैं?

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: किस प्रकार धर्मी परमेश्वर, मनुष्य के व्यवस्थाविहिन कार्यो को क्षमा कर सकता है और उनका लेखा भी नहीं रखता?

ईश्वरीय उत्तर

धर्मशास्त्र की सबसे बड़ी पुष्टियों में से एक पुष्टि यह है कि परमेश्वर के लिये कुछ भी असंभव नहीं है! यह सत्य सर्वाधिक स्पष्टता के साथ परमेश्वर की उस प्रणाली में जिसमें वह पापी मनुष्य को क्षमा करते हुए अपने धार्मिक व्यक्तित्व को कायम रखता है, प्रकाशित हुआ है: परमेश्वर मानव बन गया और अपने लोगों के पाप क्रूस पर लिये उस ईश्वरीय न्याय को सहा जो मनुष्य के विरोध मे ठहराया गया था। अपने लोगों के बदले, उसके कष्ट सहने और मरने से, परमेश्वर उन लोगों के लिये ठहराये दंड की मांग से संतुष्ट हुआ और उनके प्रति स्वयं के क्रोध को शांत किया ताकि उसकी धार्मिकता में होकर उसकी दया उन लोगों पर सतत सिद्धता के साथ बनी रहे।

सबसे बड़ा द्वंद – ''कैसे परमेश्वर न्यायी हो सकता है और तौभी दुष्ट के उपर दया कर सकता है?'' – इसका उत्तर यीशु मसीह के सुसमाचार में मिल चुका है। वही परमेश्वर जो अपनी धार्मिकता में दुष्ट को दंडित करता है, मनुष्य बनकर दुष्ट के स्थान पर प्राण देता है। परमेश्वर दुष्ट को धर्मी ठहराने के लिये अपने न्याय की मांग की उपेक्षा नहीं करता, त्यागता नहीं अथवा उसे उलटता नहीं; इसके बजाय उसने अपने पुत्र के कलवरी पर दुःख उठाने और प्राण देने के द्वारा न्याय की मांग का मूल्य चुकाया।

अध्याय 2: मनुष्य को बचाने के लिये परमेश्वर का अभिप्राय

यह पूछना उचित है कि अपने एकमात्र पुत्र को मरने भेजने के पीछे परमेश्वर का क्या अभिप्राय हो सकता है ताकि पापी मनुष्यों को बचाया जा सके। धर्मशास्त्र में, हम को ज्ञात होता है कि परमेश्वर किसी ईश्वरीय आवश्यकता के कारण मनुष्य को नहीं बचाते या मनुष्य के किसी निहित मूल्य के कारण, या चूंकि उसने कोई अच्छे कार्य किये हों, इन कारणों से उसे नहीं बचाते। बल्कि, अपनी स्वयं की महिमा की प्रशंसा और मनुष्य के प्रति उस महान प्रेम के कारण उन्होंने हमें बचाया।

परमेश्वर से संबंधित सबसे विस्मयाकारी सत्यों में से एक सत्य यह है कि वह पूर्णतः किसी भी आवश्यकता से मुक्त है। उसका अस्तित्व, उसकी इच्छा की पूर्णता, और उसका आनंद किसी पर निर्भर नहीं करता या उसके व्यक्तित्व से बाहर की किसी वस्तु पर निर्भर नहीं है। वह एकमात्र स्व – अस्तित्वधारी, स्व–सिद्ध, स्व–पर्याप्त, स्वतंत्र और मुक्त है। समस्त जीवधारी अपने जीवन और आशीषें परमेश्वर से प्राप्त करते हैं, परंतु परमेश्वर के अस्तित्व व उसके सिद्ध आनंद के लिये जो सब कुछ आवश्यक है, वह स्वयं उसमें ही उपलब्ध है। तो यह शिक्षा देना या ऐसी सलाह भी देना कि परमेश्वर ने अपनी आवश्यकता या अपने अधूरेपन के कारण मनुष्य को बनाया या वह उसे बचाता है, ऐसी शिक्षा असंगत और ईश–निंदा भी है।

> *''परमेश्वर जिसने जगत और उसमें की सब वस्तुओं को बनाया, वही स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है। वह हाथ के बनाए हुए मंदिरों में निवास नहीं करता। और न ही मनुष्यों के हाथों से उसकी सेवा टहल होती है, मानो कि उसे किसी बात की आवश्यकता हो, क्योंकि वह स्वयं सब को जीवन, श्वास और सब कुछ प्रदान करता है (प्रेरितों के काम 17:24–25; भजन संहिता 50:9–12 को भी पढ़िये)*

मनुष्य के बारे में सबसे विनम्र करने वाले बाइबल के सत्यों में से एक सत्य यह है कि वह गुण या योग्यता रहित है। इसलिये, पतित मनुष्य में ऐसा कुछ नहीं है कि जो एक पवित्र और धर्मी परमेश्वर को उससे प्रेम रखने के लिये प्रेरित कर सके; बल्कि, मनुष्य की दशा ऐसी है जिसे केवल दोषी और दंडयोग्य ठहराया जा सके। तब, किसने, परमेश्वर को अपने एकमात्र पुत्र को पापी मनुष्य के उद्धार के लिये भेजने के लिये प्रेरित किया? धर्मशास्त्र के अनुसार, परमेश्वर ने अपनी स्वयं की महिमा की प्रशंसा और मनुष्य के प्रति उस महान प्रेम के कारण हमें बचाया।

परमेश्वर की महिमा के लिये

धर्मशास्त्र शिक्षा देते हैं कि जगत की रचना, मनुष्य का पतन, इजरायल देश, मसीह का क्रूस, कलीसिया और समस्त देशों का न्याय, इन सबमें एक बड़ा और अंतिम उद्देश्य निहित है – अर्थात परमेश्वर की महिमा। इसका अर्थ है कि परमेश्वर सब कुछ जो करता है, उसके पीछे यह उद्देश्य है कि उसकी संपूर्णता, उसके द्वारा बनायी हुई रचना के सामने प्रकट हो सके ताकि उसे महिमा मिले, उसकी आराधना हो और परमेश्वर के रूप मे उसका आनन्द लिया जाए।

यह अक्सर पूछा जाता है, गंभीर मसीही जनों के द्वारा भी, कि परमेश्वर के लिये अपनी महिमा के लिये कार्य करना उचित है या नहीं? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये, हमें केवल यह जानने की आवश्यकता है कि परमेश्वर कौन है? धर्मशास्त्र के अनुसार, वह अपनी समस्त सृष्टि के जोड़ की तुलना में ***अनंत रूप से महान*** है। अतः यह न केवल सही है परंतु आवश्यक भी है कि वह सर्वोच्च स्थान धारण करे और सब कार्यो के करने में स्वयं की महिमा बड़ा कारण या प्रमुख उद्देश्य बने। यह उसके लिये सही है कि वह मुख्य स्थान धारण करे और सारे कार्यो को उसकी महिमा, उसके (अस्तित्व की संपूर्णता के लिये) क्रियान्वित करे, ताकि सब लोगों को ज्ञात हो, कि इसका सार यह है कि उसे महिमा मिले अर्थात सब बातों में बढ़कर उसे महिमा मिले (अर्थात आदर और आराधना हो)। ऐसी सर्वोच्च महिमा से स्वयं को वंचित रखना उसके परमेश्वर होने से इंकार करना कहलायेगा। परमेश्वर के अतिरिक्त, अगर कोई दूसरा ऐसी सर्वोच्च महिमा को चाहे, तो वह मूर्तिपूजा का सबसे बुरा रूप होगा।

यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि की सबसे उत्तम भलाई से अलग हटकर अपनी महिमा नहीं चाहता। वास्तव में, वह उत्तम भलाई जो परमेश्वर अपनी सृष्टि के लिये कर सकता है और वह बड़ी दया जो वह उन पर प्रकट कर सकता है, वह यही है कि वे उसकी महिमा करें – सारी बातों को और समस्त कार्यो को परमेश्वर इस तरह करता है ताकि उसकी महिमा लोगों के सामने प्रगट हो। अगर परमेश्वर अनंत रूप से मूल्यवान, वैभवशाली और शोभायमान है, तो यह स्वाभाविक है कि सर्वाधिक मूल्यवान, सबसे अधिक वैभवपूर्ण और सबसे सुंदर उपहार वह अपनी रचना को यही दे सकता है कि वह उन्हें स्वयं का पूर्ण प्रकाशन दे।

1. रोमियों 11:36 के अनुसार सब वस्तुओं का ''प्रमुख उद्देश्य'' क्या है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

2. निम्न पदो के अनुसार, अपने लोगों को बचाने के पीछे परमेश्वर को कौन प्रेरित करता है? क्या लोगों की योग्यता या उसकी महिमा? उसकी प्रेरणा को तदनुसार पद से जोड़िये।

भजन 79:9_____	अ. उसकी महीमा के निमित्त
भजन 106:8_____	ब. अपने नाम के निमित्त
यशायाह 48:9_____	क. अपने पवित्र नाम के निमित्त
यशायाह 63:12_____	ड. सदा काल के लिए अपना नाम कमाने
यहेजकेल 36:22–23_____	इ. अपनी सामर्थ्य को दिखाने

3. यिर्मयाह 33:8–9 में इतना सुंदर और महत्वपूर्ण एक पद मिलता है कि वह उपर बताये पदों में से भी सबसे अलग दिखाई देता है। इस वचन के अनुसार, क्यों परमेश्वर मनुष्य को बचाने के लिये आगे आता है? क्या यह लोगों की योग्यता के कारण है या उसकी महिमा के लिए?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

4. निम्नांकित पदों के अनुसार दोनों पुराने और नये नियमों के अनुसार, परमेश्वर द्वारा यहूदी और अन्यजातियों के उद्धार के कार्य के पीछे कौनसी बड़ी प्रेरणा थी?

अ. 2 शमुएल 7:23 में परमेश्वर ने इस्राएल को म_____ और स्वयं के ना_____ लिये बचाया।

ब. प्रेरितों के काम 15:14 में परमेश्वर ने अन्यजातियों को स्वयं के ना_____ के लिये बचाया (अर्थात उसकी प्रतिष्ठा, सम्मान और महिमा के लिये)।

5. परमेश्वर द्वारा उद्धार देने के पीछे जो उददेश्य है, उससे संबंधित, धर्मशास्त्र में मिलने वाली समस्त बडी घोषणाओं में से एक इफिसियों 1:3–14 में मिलती है। इस वचन के अनुसार, क्यों परमेश्वर हमें बचाने के लिये आगे आये? हमारे उद्धार का प्रमुख या बड़ा उद्देश्य क्या है?

अ. परमेश्वर ने हमें उसके ज्ञा_____ व उसकी इ_____ के अभिप्राय से बचाया (पद 5)। यह शब्दांश यूनानी भाषा के शब्द ***यूडोकिया****, जिसे ''भला आनंद'' या ''भली इच्छा'' भी अनुवादित किया जा सकता है, से निकला है ।*

ब. परमेश्वर ने हमें उसकी प्र _____ व म_____ अनुग्रह के कारण बचाया (पद 6)। हमारा उध्दार प्रमुख लक्ष्य नहीं है, बल्कि प्रमुख लक्ष्य का साधन है, अर्थात परमेश्वर की प्रशंसा उसके उस अनुग्रह के लिये हो जो उसने उसके लोगों पर प्रगट किया है।

क. परमेश्वर ने हमें उसकी प्र _____ व उसके म_____ कारण बचाया (पद 12, 14)। इस शब्दांश का दोहराव इस बात पर जोर देने के लिये है कि अंततः हमारे उद्धार का उद्देश्य परमेश्वर की प्रशंसा करना है।

अपने लोगों के प्रति प्रेम के लिए

वचन में परमेश्वर के गुणों के बारे में सबसे महत्वपूर्ण घोषणाओं में से एक यह है: ''परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8)। अयोग्य पापियों के प्रति अपने प्रेम के द्वारा परमेश्वर को सबसे अधिक महिमा मिलती है। अपने लोगों के प्रति परमेश्वर का बिना किसी शर्त के किए उनके प्रेम के कारण अनंतकाल के लिए उनकी आराधना की जाती रहेगी। यह कितना आनन्द और सान्तवना देने वाली बात है कि जो परमेश्वर अपने नाम के कारण अपने लोगों का उद्धार करते हैं, वे वही परमेश्वर हैं जो अपने प्रेम के कारण उन्हें बचाते हैं, ऐसा प्रेम जो हमारी समझ और भाषा दोनों ही से परे है।

यह आवश्यक है कि हम इस बात को समझें कि पापियों के उद्धार के लिए पुत्र का आना पूरी तरह से परमेश्वर पिता की इच्छा के अनुरूप था। पिता के विषय में हमारी यह सोच नहीं होनी चाहिए कि वे क्रोधी परमेश्वर हैं जो पापियों की मृत्यु की इच्छा रखते हों। ना ही हमें ऐसा समझना चाहिए कि पुत्र ने हमें पिता से बचाने के लिए उद्धार का कार्य उनसे स्वतंत्र होकर किया हो। बाइबल के अनुसार वह पिता ही थे जिन्होंने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उन्होंने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, जगत पर दंड की आज्ञा देने के लिए नहीं, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए (यूहन्ना 3:16–17)। पुत्र द्वारा किया गया उद्धार का कार्य, पिता द्वारा ही किया गया उद्धार का कार्य है। पापियों के प्रति पुत्र का प्रेम पिता के सिद्ध उस प्रेम का प्रतिबिंब है जो वह उनसे करता है।

1. 1 यूहन्ना 4:9–10 के अनुसार, परमेश्वर जो प्रेम पापी लोगों के प्रति रखता है उसकी सबसे बड़ी अभिव्यक्ति क्या है? ये पद कैसे साबित करते है कि वह मनुष्य की योग्यता ना होके, परमेश्वर का प्रेम ही था जिसने उन्हें अपने पुत्र को भेजने के लिए प्रेरित किया?

_____

_____

_____

2. यूहन्ना 3:16–17 में बाइबल के सभी पदों में से सबसे प्रसिद्ध और सबसे प्रिय पद में से एक मिलता है। इस पद के अनुसार, पाप करने वाले मनुष्यों के उद्धार के लिए अपने पुत्र को भेजने का परमेश्वर का क्या उद्देश्य था? अपना उत्तर स्पष्ट करें।

टिप्पणियां: एक शाब्दिक अनुवादः "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से इस तरह प्रेम कियाः कि उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, ताकि वह प्रत्येक जो उसमें विश्वासी है, नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

3. व्यवस्थाविवरण 7:6–8 के अनुसार, इस्राएल के राष्ट्र को छुड़ा कर निकाल लाने की यहोवा की वास्तविक प्रेरणा क्या थी? यह सत्य हम पर कैसे लागू हो सकता है?

4. निम्नलिखित पदों के आधार पर, स्पष्ट कीजिए कि यह यहोवा का ही प्रेम था, न कि मनुष्य की योग्यता, जिसने हमें छुड़ाने के लिए उन्हें प्रेरित किया।

अ. रोमियो 5:6–10

_____

_____

_____

टिप्पणियाँ: हृदय परिवर्तन से पहले, मनुष्य का वर्णन निर्बल (पद. 6), भक्तिहीन (पद. 6), पापी (पद. 8) और परमेश्वर के शत्रु (पद. 10) के रूप में की गयी है।

ब. इफि. 2:1–5

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियाँ: हृदय परिवर्तन से पहले, मनुष्य का वर्णन पापों के कारण मरे हुए (पद.1, 5), संसार और शैतान के अनुसार चलनेवाले (पद. 2), आज्ञा न मानने वालों के पुत्र (पद. 2), और अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते वाले क्रोध की सन्तान (पद. 3) के रूप में की गयी है।

क. तीतुस 3:4–5

_____

_____

_____

_____

अध्याय 3: उद्धार करने के लिए पुत्र के आने का उद्देश्य

इस अध्याय में, हम उन बांतों पर विचार करेंगे जिन्होंने पुत्र को अपनी महिमा को छोड़कर, शरीर धारण करने और मनुष्य के उद्धार के लिए अपना जीवन देने को प्रेरित किया। हम यह जानेंगे कि मसीह ने ऐसा इसलिए नहीं किया कि मनुष्य में कोई योग्यता थी, वरन अपने पिता की महिमा के लिए, उस महान प्रेम के लिए जो उसने हमसे किया और उस आनन्द के लिए किया जो उसके सामने रखा था।

अपने पिता की महिमा के लिए

मसीह के जीवन पर केवल एक सरसरी जाँच करने से ही, यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी सबसे बड़ी धून पिता की इच्छा को पूरा करके उन्हें महिमा देनी की थी। मसीह के व्यक्तित्व के उन पहलुओं में से, जो हमारी समझ से बहार हैं, सबसे बड़ा यह है कि उन्होंने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा, वरन अपने आप को स्वेच्छा से और आनन्दपूर्वक दिव्य अधिकारों से ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण कर लिया, और मनुष्य की समानता में हो गए। वह पिता के प्रति, क्रूस पर मृत्यु सह लेने तक आज्ञाकारी बने रहे (फिलिप्पियों 2:5–8; इब्रानियों 10:9)। यद्यपि अन्य ऐसे उद्देश्य भी थे जिन्होंने मसीह को उन लोगों के लिए जो परमेश्वर की महिमा से गिर चुके थे, अपने जीवन का बलिदान करने के लिए प्रेरित किया, फिर भी उनकी पिता को महिमावंत करने की अभिलाषा, जिससे वे पूरी तरह भरे थे, सबसे प्रथम और बड़ा कारण था। इस अर्थ में, सही रूप से यह कहा जा सकता है कि ***मसीह परमेश्वर के लिए मरा।***

1. इब्रानियों 10:7 में, भजन 40:7–8 से उद्धृत एक मसीहा संबंधित भविष्यवाणी का वर्णन है। इन दोनों वचनों के अनुसार, परमेश्वर के पुत्र का जगत में आने का सबसे महान उद्देश्य क्या था? उनकी महान धुन और प्राथमिकता क्या थीं?

   _____

   _____

   _____

2. इन वचनों में से प्रत्येक से हमें इन बातों के बारे में क्या शिक्षा मिलती है (1) पिता की इच्छा के प्रति पुत्र की अभिवृत्ति, (2) पिता की महिमा करने की उनकी धुन, और (3) पिता के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करने का उनका दृढ़ संकल्प? स्पष्ट करें कि यह कहना क्यों उचित है कि मसीह ने सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से परमेश्वर के लिए अपने सभी कार्यों को, यहां तक कि उनकी मृत्यु के कार्य तक को पूरा किया।

अ. पिता की इच्छा के प्रति मसीह की आज्ञाकरिता (यूहन्ना 4:34)

ब. पिता की महिमा करने की मसीह की अभिलाषा (यूहन्ना 17:4)

क. पिता के लिए अपने प्रेम को प्रकट करने का मसीह का दृढ़ संकल्प (यूहन्ना 14:31)

3. रोमियों 15:8–9 में, मसीह के आने और यहूदियों और अन्यजातियों, दोनों में ही उनके उद्धार के कार्य के दो उदेश्यों का वर्णन है। वे उद्देश्य कौन से हैं, और वे कैसे यह दर्शाते हैं कि मसीह का आना सबसे प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण रूप से परमेश्वर की महिमा के लिए था?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियाँ: मसीह परमेश्वर की उन सभी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए आए, जो उन्होने यहूदियों से की थी, जिससे वे परमेश्वर की विश्वासयोगिता के लिए उनकी महिमा कर सकें। मसीह अन्यजातियों के लिए भी आए, जिससे वे परमेश्वर की करुणा के लिए उनकी महिमा कर सकें।

हमारे प्रति अपने महान प्रेम के लिए

बाइबल सिखाती है कि वह पिता परमेश्वर ही थे जिन्होंने अपने पुत्र को भेजा, जिससे पुत्र के द्वारा जगत का उद्धार हो सके (यूहन्ना 3:16–17)। हालांकि, यह महत्वपूर्ण है कि इस बात को भी समझा जाए कि इस उद्धार के कार्य को करने के लिए पुत्र को बाध्य नहीं किया गया था, और ना ही उन्होंने यह कार्य अनिच्छा से किया। वरन, उन्होंने अपने आप को पूरी तरह से और स्वेच्छा से दे दिया, ताकि, भ्रष्ट, विद्रोही मानवता–जो उनके प्रेम की विषय वस्तु है – उनकी क्षमा और अनन्त जीवन के बारे में जान सके। यह प्रकाशन एक बड़ा प्रोत्साहन और तसल्ली देता है कि पुत्र जिसने उद्धार के इतने बड़े कार्य को न केवल परमेश्वर की महिमा के लिए, वरन उस महान प्रेम के लिए भी पूरा किया जो वह अपने लोगों से किया। जो मसीह ***परमेश्वर के लिए*** मरा, वह हमारे लिए भी मरा।

1. यूहन्ना 15:9 में बाइबल में दी गई सबसे आश्चर्यजनक घोषणाओं में से एक पायी जाती है। यह मसीह के उद्धार के कार्य के प्रयोजन के बारे में हमें क्या दर्शाती है?

_____

_____

2. बाइबल के अनुसार, यह प्रेम ही था जिसके कारण मसीह ने अपने लोगों के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया। गलातियों 2:20 और इफिसियों 5:2 इस सत्य की पुष्टि कैसे करते हैं?

3. मसीह के प्रेम की सीमा यह है कि उसने हमारे लिए अपने आप को दे दिया था। प्रेम की इस से बड़ी कोई अभिव्यक्ति या तस्वीर नहीं हो सकती है। बाइबल के ये पद हमें इस सत्य के बारे में क्या शिक्षा देते हैं? यह इस बात को पुनः कैसे प्रमाणित करता है कि पुत्र के आने का उद्देश्य लोगों के गुणों या योग्यता पर नहीं, बल्कि उनके प्रति उसके प्रेम पर आधारित था?

अ. यूहन्ना 15:13–14

ब. 1 यूहन्ना 3:16

उस आनन्द के लिए जो उसके सामने रखा था

पुत्र ने अपने पिता की महिमा के लिए अपनी जान दी, और इस प्रकार वह ***परमेश्वर के लिए मर गया।*** पुत्र ने उस महान प्रेम के कारण से अपना जीवन बलिदान किया जो वो हमसे करते थे, और इस प्रकार उन्होंने ***अपने लोगों के लिए अपना प्राण दिया।*** हमारे अध्ययन के निष्कर्ष के लिए, हम उस अंतिम उद्देश्य पर विचार करेंगे जो पुत्र के क्रूस पर चढ़ने का कारण बना – उसने अपने सामने उपस्थित आनन्द के लिए जान दी।

कुछ लोगों के लिए, यह कहना कि पुत्र ने आने वाले समय में भावी आनन्द पाने की आशा से ऐसा किया, पुत्र को स्वार्थपरायण रूप में पेश करना होगा। तो किस प्रकार वे एक ही समय एक ही साथ परमेश्वर की महिमा करने की, अपने लोगों के उद्धार की, और अपने ही आनन्द की खोज कर सकते हैं? इस विरोधाभास का सरल उत्तर दिया गया है। सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि परमेश्वर के पुत्र ने अपने पिता की इच्छा और महिमा को प्रकट करने को अपने लिए सर्वाधिक आनन्द की बात समझी। इसलिए मसीह के लिए पुत्र का आनन्द, पिता की महिमा, और उसके लोगों का उद्धार, इन सभी बातों का समान महत्व था। उनकी निष्ठा या अभिलाषा में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं थी। इसके अलावा, हमें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर का पुत्र अपने ही आनन्द की खोज करने में धर्मी है। सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गईं हैं (कुलुस्सियों 1:16)। पिता ने सभी वस्तुएं पुत्र के हाथ में दीं हैं (यूहन्ना 3:35), और उनकी इच्छा है कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें (यूहन्ना 5:23)। पिता की भली अभिलाषा इसी में है कि पुत्र का आनन्द पूरा हो। सम्पूर्ण सृष्टि का, सभी क्षेत्रों मे एकमात्र महान उद्देश्य यही है: कि यह सब परमेश्वर के पुत्र को महिमा और आनन्द दें!

1. इब्रानियों 12:2 के अनुसार, परमेश्वर का पुत्र स्वर्ग की महिमा त्याग कर मानव रूप धारण कर और क्रूस की लज्जा और दुःख को सहने के लिए क्यों तत्पर था?

2. इब्रानियों 12:2 स्पष्ट रूप से सिखाता है कि जिस ने मसीह को कलवरी के क्रूस जाने की प्रेरणा दी, वह आनन्द था जो उनके सामने रखा था। हालांकि, हमें स्वयं अपने आप से पूछना चाहिए कि उस आनन्द में क्या सम्मिलित है? इन पदों से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

अ. अपने पिता की उपस्थिति में लौटने का आनन्द (भजन 16:9–11)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियाँ: प्रेरित पतरस ने इस पद्यांश को मसीह के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के संदर्भ में उनके पिन्तेकुस्त के दिन दिए सन्देश में उद्धृत किया है (प्रेरितों के काम 2:25–28), और अन्ताकिया के आराधनालय में प्रेरित पौलुस इस संदर्भ में उपदेश देता है (प्रेरितों के काम 13:35)। परमेश्वर के पुत्र के लिए स्वर्ग में अपने पिता के निवास स्थान को छोड़ना एक कड़ी परीक्षा थी, परन्तु अपने लोगों के पापों को उठाकर उनके स्थान पर दण्ड भोगना इससे भी बड़कर कड़ी परीक्षा थी। उन्होंने ऐसे अवर्णनीय दुःखों को सहन किया, यहाँ तक कि उन्हें तुच्छ माना, क्योंकि उन्होंने आने वाले समय में भावी आशा की ओर देखा कि वे एक बार फिर अपने पिता के साथ रहेंगे और उनकी उपस्थिति में आनन्दित होंगे।

ब. अपने पिता की महीमा मे एक होने का आनन्द (यूहन्ना 17:4–5, 24)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: वह आनन्द जिस ने मसीह को अपने लोगों के पापों के लिए अर्पित करने के लिए प्रेरित किया उसका एक भाग यह भी था, कि भविष्य में उन्हें उस स्थान पर महिमावन्त किया जाएगा या ऊंचा उठाया जाएगा, जो जगत की उत्पति से पहले से ही सही मायनों में उन्हीं का था। वह प्रभू और उद्धारकर्ता के रूप में लौट आएगा – वह सर्वोच्च जयवंत जिसने अपने लोगों का छुटकारा प्राप्त करने के लिए प्रत्येक बाधा को जीत लिया।

क. अपने लिए छुड़ाए हुए लोगों को पाने का आनन्द। जगत की उत्पति से पहले, परमेश्वर ने पापी मानवता की भीड़ मे से एक जाति को बचाने की योजना की, ताकि वे पुत्र की महिमा, सम्मान और स्तुति करने के लिए जीएं। पिता की इच्छा के अनुसार और उस आनन्द को ध्यान में रखते हुए जो उसके सामने रखा था – अर्थात उन लोगों को छुड़ाने का आनन्द जो उसके अपने लोग थे – पुत्र ने स्वेच्छा से, यहां तक कि आनन्द से, अपनी दुल्हन के लिए और उस आनन्द के लिए सब कुछ सहा जो वह (अर्थात कलिसिया) अंत मे उसे (मसीह) को देगी। अपने देहधारण और मृत्यु के द्वारा, उन्होंने जाति–जाति से, हर भाषा से, हर लोगों और हर राष्ट्र से स्वयं के लिए एक बड़ी मंडली सुरक्षित कर ली है। उन्होंने इन सभी को अनंतकाल के लिए निरंतर रहने वाले आनन्द, संतोष और महिमा का स्रोत बना दिया। इस सच्चाई के विषय में ये पद क्या सिखाते हैं?

1. *भजन. 2:8*

_____

_____

_____

_____

2. *यशायाह 53:11*

_____

_____

_____

_____

3. *लुका 15:10*

_____

_____

_____

_____

4. इब्रानियों 2:11–13

_____

_____

_____

_____

5. प्रकाशितवाक्य 5:9–10; 7:9–10; 22:3–5

_____

_____

_____

_____

अध्याय 4: परमेश्वर का पुत्र अपनी महिमा में

परमेश्वर के पुत्र के आगमन की महानता को समझने के लिये, हमें सर्वप्रथम उसके ईश्वरीय स्वभाव और उसकी शाश्वत महिमा पर विचार करना आवश्यक है। इस अध्याय में हम सीखेंगें कि परमेश्वर के पुत्र का अस्तित्व बैथलेहम में उनके जन्म लेने के समय से नहीं आरंभ नहीं हुआ था; बल्कि, वह तो अनंतकाल से व्याप्त है और परमेश्वर पिता के स्वभाव व महिमा में समान स्वरूप रखता है। वह मात्र एक मनुष्य अथवा एक प्रधान स्वर्गदूत ही नहीं था जिसने हमारे छुटकारे के लिये अपना जीवन दिया; पंरतु वह परमेश्वर का शाश्वत पुत्र था – समस्त जगत का सृष्टिकर्ता और सार्वभौमिक प्रभु। केवल उस स्तर तक, जिसमें पुत्र के विषय में हमारा उचित दृष्टिकोण हो, हम सुसमाचार और उसकी प्रशंसा के प्रति उस स्तर तक ही उच्च दृष्टिकोण रख सकते हैं। '

पुत्र का ईश्वरत्व

धर्मशास्त्र साक्षी देते हैं कि एक सच्चा परमेश्वर त्रिएकत्व के रूप में उपस्थित है (त्रिएकत्व शब्द लैटिन भाषा के ***ट्रिनिटस*** शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है, ''त्रिस्तरीय'' अथवा एक में ''तीन निहित''): पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। ये तीन अलग अलग व्यक्तित्व हैं, जो एक दूसरे से भिन्न हैं; तौभी वे समान ईश्वरीय ***स्वभाव*** अथवा ***तत्व*** रखता हैं एवं एक दूसरे से शाश्वत और अटूट सहभागिता द्वारा संबंद्ध हैं। पुत्र जो मनुष्य बना और कैलवरी क्रूस पर मरा, शाश्वत परमेश्वर हैः सब प्रकार से पिता और आत्मा के बराबर है और बुद्धि से परे उनकी महिमा में सहभागी है।

यह पूर्णतः आवश्यक है कि हम हमारे समक्ष प्रस्तुत शिक्षा के महत्व को समझ सकें। मसीही विश्वास के अंर्तगत, परमेश्वर के पुत्र का ईश्वरत्व एक मूल सिद्धांत है। कोई भी दृष्टिकोण जो उसे पिता से कम आंकता है अथवा ''कम महिमावान ईश्वर'' समझता है, वह मसीही हो ही नहीं सकता। पुत्र एक सृजन नहीं है, वह एक देवदूत नहीं है और वह परमेश्वर व सृष्टि के बीच किसी गौण ईश्वर के स्तर पर भी नहीं है। वह उच्चतम अर्थ में परमेश्वर है। हमारे उध्दार की निश्चयता और हमारे सुसमाचार की निष्ठा इस सच्चाई को हमारे द्वारा श्रद्धापूर्वक संपूर्ण हृदय से स्वीकारने पर निर्भर करती है।

महिमामय सुसमाचार की खोज

1. यूहन्ना 1:1–4 में परमेश्वर के पुत्र के ईश्वरत्व और अनंतता के संबंध में सर्वाधिक स्पष्ट घोषणाओं में से एक घोषणा मिलती है। इस पद में प्रगट किये गये सत्यों को पहचानिये।

   अ. आ_____में व_____ था (पद 1)। परमेश्वर के पुत्र के संबंध में यह स्पष्ट घोषणा है (पद 14)। ''वचन'' शब्द यूनानी भाषा के ***लोगोस*** *शब्द का अनुवाद है, जिसका अर्थ है ''वचन'' या ''तर्क।'' यहूदी अक्सर इस पद को परमेश्वर के संदर्भ में प्रयुक्त करते थे। यूनानियों के लिये, यह सृष्टि को नियंत्रित करने वाले ईश्वरीय तर्क या तार्किक सिध्दांत को प्रकट करता था। जब पुत्र पर यह सिद्धांत लागू किया गया, तो इसने यह व्यक्त किया कि वह परमेश्वर है (पूर्णरूपेण और सच्चा परमेश्वर) और ऐसा बिचवई है जिसके माध्यम से परमेश्वर ने स्वयं को अपनी सृष्टि पर प्रगट किया। सृष्टि के पहले ''आदि में'' पुत्र परमेश्वर के साथ था जो असृजित, शाश्वत और ईश्वरीय है।*

   ब. और वचन परमेश्वर के सा_____ था (पद 1)। अनंतकाल से पिता और पुत्र के मध्य विद्यमान भिन्नता के उपरांत भी, यह संयुक्तता का एक संदर्भ है । प्रथम स्थान पर, यह एकता और समानता को प्रदर्शित करता है – पिता और पुत्र पूर्ण सहभागिता में विद्यमान रहे। यह वाक्यांश इस तरह भी अनुवादित किया जा सकता है, ''वचन परमेश्वर के सम्मुख था,'' इस तरह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के मध्य यह गहरे मिलाप, सहभागिता और आनंद को प्रगट करता है। दूसरे स्थान पर, यह भिन्नता प्रगट करता है – पिता और पुत्र में समान ईश्वरीय गुण व्याप्त हैं, परंतु वे दोनों वास्तविक और भिन्न व्यक्ति हैं जो पवित्र आत्मा के साथ सिध्द सहभागिता में पाये जाते हैं।

   *क. और व_____ पर_____ था (पद 1)। यह वचन के ईश्वरत्व की निर्विवाद घोषणा थी। मूल यूनानी में, यह वाक्यांश वस्तुतः इस तरह से है, ''और परमेश्वर वचन था'' (**काइ थियोस एन हो लोगोस**)। कर्ताकारक विशेषण (परमेश्वर), कर्ता (वचन) के पहले आता है ताकि इस तथ्य पर बल दे सके कि वचन सत्य और वास्तविक रूप में परमेश्वर था। परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर है जो पुत्र है। ईश्वरत्व की पूर्णता उसमें निवास करती है (कुलुस्सियों 2:9)।*

   ड. सब कुछ उसके द्वा_____ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कुछ भी उसके बिना उत्पन्न न हुआ (पद 1)। सकारात्मक रूप में, सब वस्तुएं पुत्र द्वारा सृजित है (कुलुस्सियों 1:16) । वह पिता एवं आत्मा के संग सृष्टि का सह–कर्ता था। नकारात्मक रूप में, ऐसी कोई भी बात या वस्तु अस्तित्व मे नहीं है जो उसके द्वारा सृजी नहीं गयी। पुत्र प्रारंभ में न केवल परमेश्वर के साथ था, परंतु वह परमेश्वर के रूप में परमेश्वर के कार्य कर रहा था।

   इ. उस_____जीवन था और वह जी_____ मनुष्यों की ज्योति था (पद 4)। भजन 36:9 घोषित करता है, ''क्योंकि जीवन का सोता तो तेरे ही पास है; तेरे ही प्रकाश से हमें प्रकाश मिलता है।'' यह उल्लेखनीय है कि जिस बात का श्रेय भजनकर्ता परमेश्वर को देता है, उसी का श्रेय प्रेरित यूहन्ना पुत्र को देता है। प्रत्येक वस्तु जो सदैव अस्तित्व में रही व चलायमान थी, ऐसा परमेश्वर के पुत्र के अनुग्रह द्वारा ही संभव हुआ। परमेश्वर का किसी भी प्रकार का सच्चा ज्ञान, पुत्र के अनुग्रह की देन स्वरूप ही, मनुष्य को प्राप्त हुआ है। यह समझ से परे एक अचंभा है कि समस्त जीवन के सोते ने निर्जीवों के लिये अपने प्राण बलिदान किये।

2. फिलिप्पियों 2:6 में, हम मसीह के ईश्वरत्व और अनंतता का एक और प्रमाण देखते हैं। इस पद में प्रकाशित सच्चाई को पहचानिये।

   अ. जिसने परमेश्वर के स्व_____ में हो_____ भी। पुत्र उसके अवतार लेने के बाद से अस्तित्व में नहीं आया; वह तो अनंत है, बिना किसी आरंभ और अंत के।''स्वरूप'' शब्द यूनानी शब्द ***मोर्फ*** *से निकला है, जो न केवल किसी व्यक्ति के बाह्य या उपरी दिखावे को प्रकट करता है परंतु उसके तात्विक चरित्र या उसके भीतर की सच्चाई को भी बतलाता है। पुत्र न केवल परमेश्वर के स्वरूप में दिखाई देता था; बल्कि, वह तत्व रूप मे परमेश्वर था।*

   ब. परमेश्वर के स_____ होने को अपने अधिकार में रखने की वस्तु न समझा। ''समानता'' शब्द यूनानी शब्द ***आयसोस*** *से निकला है, जिसका अर्थ होता है, ''मात्रा या उत्तमता में समान होना।'' पुत्र में ईश्वरत्व (उत्तमता) की, संपूर्ण (मात्रा) निवास करती थी (कुलुस्सियों 2:9)। ईश्वरत्व के संदर्भ में उसके भीतर कोई कमी नहीं थी, परंतु वह इस पद के संपूर्ण अर्थ में हर प्रकार से समान था।*

पुत्र की महिमा

परमेश्वर के पुत्र के अनंत अस्तित्व और ईश्वरत्व की पुष्टि करते हुए, हम अब स्वयं को उस महिमा से संबद्ध करेंगे जो उसके अवतार लेने से पूर्व पायी जाती थी, जगत की नींव डलने के पूर्व और यहां तक कि संपूर्ण अनंतता के पूर्व पाई जाती थी। यधपि धर्मशास्त्र हमें केवल बीते समय की अनंतता की झलक देते हैं, तौभी यह सिद्ध करना पर्याप्त है कि पुत्र वचन के सर्वोच्च और सर्वाधिक उच्चतम रूप में ''परमेश्वर'' था और उसने परमेश्वर के रूप में परमेश्वर की महिमा का वहन किया। वह परमेश्वर के संग था और पिता की महिमा में संभागी हुआ (यूहन्ना 17:5)। वह अपने पिता के परम और असीम आनंद में संग था और पिता के लिये यह बड़ा आनंद था कि वह सृष्टि का निमित्त और केंद्र बने – उसके आनंद का स्त्रोत, उसके द्वारा की जाने वाली आराधना का अभिप्राय बने और सृष्टि के अस्तित्व का महान उददेश्य अथवा सिरा ठहरे।

सृष्टि के प्रारंभ से, स्वर्ग में विद्यमान प्रत्येक उत्तम वस्तु की केवल एक ही महान इच्छा थी – परमेश्वर के असाधारण पुत्र के मुख पर परमेश्वर की महिमा को निहारे! जब हम इस प्रकार के सत्य का कुछ अंश समझ लेंगे तभी हम सुसमाचार के प्रति उचित दृष्टिकोण और प्रशंसा का भाव रख पायेंगे। वह कोई मनुष्य मात्र नहीं था या देह में सीमित स्वर्गदूत नहीं था, जिसने उस दिन हमारे लिये अपने प्राण दिये। वह तो महिमा का परमेश्वर था, विश्व का प्रभु, संपूर्ण महिमा का अभिप्राय और वह एक परम सत्ता था जिसके द्वारा समस्त वस्तुएं सृजी गयीं और जिसके लिये सब कुछ अस्तित्व में है!

1. कुलुस्सियों 1:15–17 में पुत्र की शाश्वत प्रकृति और उसकी महिमा की एक सशक्त घोषणा मिलती है जो उसके जन्म के पूर्व से उसने पिता के साथ बांटी थी। इस पद पर आधारित, निम्नलिखित घोषणाएं पुरी करें।

   अ. वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रति_____ है (पद 15)। यह यूनानी शब्द ***आयकून*** *से निकलता है, जिसका अर्थ है ''प्रतिरूप'' या ''समानता।'' केवल परमेश्वर ही परमेश्वर की विशुद्ध समानता को धारण कर सकता है। इब्रानियों 1:3 घोषित करता है, ''वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व का प्रतिरूप है।''*

ब. पुत्र समस्त सृष्टि में प_____है (पद 15)। न तो यह मसीह के ईश्वरत्व से इंकार है और न ही यह प्रमाण है कि वह सृजा गया है। भजन 89:27 में, परमेश्वर दाऊद के विषय में निश्चयपूर्वक यह कहता है: "मैं उसे अपना पहिलौठा और जगत के सब राजाओं का प्रधान बनाऊंगा।" यह स्पष्ट है कि दाऊद परमेश्वर का "पहिलौठा" इस अर्थ में था कि वह समस्त राजाओं में सबसे ऊपर प्रतिष्ठित था। परमेश्वर का पुत्र इस अर्थ में "पहिलौठा" था कि वह समस्त सृष्टि में सबसे ऊपर प्रतिष्ठित है और उससे भिन्न है। पहिलौठे पुत्र के सारे अधिकार और लाभ उसके हैं।

क. ब वस्तुओं में प्र_____है (पद 17)। पुत्र की अनंतता, सर्वोच्चता और उत्कर्षता इस कथन में प्रकट की गयी है।

ड. उसी में सब वस्तुओं की सृ_____हुई है (पद 16)। समस्त वस्तुएं का अस्तित्व पुत्र से है, उससे सीधे संबद्ध है और उससे जुड़ी हुई हैं।

इ. वही सब वस्तुओं में प्रथम है – और सब वस्तुएं उसी में _____ रहती है (पद 17)। समस्त सृष्टि पुत्र पर पूर्णतया निर्भर रहती है। वह "अपनी सामर्थ के वचन के द्वारा सब वस्तुओं को संभालता है" (इब्रानियों 1:3)। पुत्र पौराणिक कथा के एटलस के समान नहीं है, जो एकल संसार के बोझ तले कराहता है; इसके विपरीत, वह तो अंसख्य संसारो को एकमात्र अपने वचन की सुगमता से संभालता है!

*ई. पुत्र सब वस्तुओं का महान लक्ष्य है – समस्त वस्तुएं उ_____लिये सृजी गई है (पद 16)। पुत्र की अनंत महिमा इस सत्य में देखी गयी कि समस्त वस्तुएं उसी के **द्वारा** और उसी की महिमा और भले आनंद **के लिये** रची गयी।*

2. परमेश्वर और उसकी महिमा के विषय में, धर्मशास्त्र के सबसे सजीव और भव्य वर्णनों में से एक वर्णन, यशायाह 6:1–10 में मिलता है; फिर भी, आगे ढूंढने पर हम पाते हैं कि यशायाह ने परमेश्वर का जो दर्शन देखा, वह पुत्र का दर्शन था! यशायाह 6:1–5 को पूरा पढ़िये जब तक कि आप इसकी विषय वस्तु से पूरी तरह परिचित नहीं हो जाते, और तब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिये।

*अ. यशायाह 6:1–3 के अनुसार, यशायाह ने किसको देखा? प्र _____ को। पद एक के अनुसार, "प्रभु" शीर्षक इब्रानी शब्द **आदोने** से अनुवादित है; परंतु तीसरे पद में यह इब्रानी शब्द **याहवे** या **जेहोवा** से अनुवादित किया गया है। वह एकमात्र जिसे यशायाह देखता है, निश्चित रूप से परमेश्वर है; फिर भी, यूहन्ना 12:39–41 इस सत्ता को त्रिएकत्व के **दूसरे** व्यक्तित्व के रूप में पहचानता है, अर्थात परमेश्वर का पुत्र, इस तरह यह वचन मसीह की परमेश्वर के रूप में पुष्टि करता है।*

ब. यशायाह 6:1 के अनुसार, परमेश्वर के पुत्र का वर्णन कैसे किया गया है? यह हमें उसकी महिमा के विषय में क्या बताता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: पुत्र का वर्णन स्वर्ग और पृथ्वी की समस्त रचनाओं में सबसे ऊपर किया गया है। उसके वस्त्र का घेर मंदिर को भर रहा है, यह उसकी वैश्विक, असीम और अबाधित सार्वभौमिकता को प्रकट करता है।

क. यशायाह 6:2–3 के अनुसार, सराफीम (संभवत सृष्टि में सबसे ऊंची श्रेणी की रचना) की परमेश्वर के पुत्र के प्रति क्या प्रतिक्रिया है? यह हमें उसकी महिमा और श्रेष्ठता के विषय में क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: विश्व के सर्वाधिक सामर्थवान और भव्य प्राणी परमेश्वर के पुत्र के सम्मान में झुकते हैं। "पवित्र" शब्द इब्रानी भाषा के शब्द ***कैदोश*** से निकला है और इसका अर्थ है अलग किया हुआ। यह उसकी ओर संकेत देता है जो पृथक किया गया है, अलग किया गया है, या अद्वितीय है। सृष्टि के मध्य में, परमेश्वर ही एकमात्र परम सत्ता है। उसके सदृश्य कोई नहीं है, और किसी से उसकी तुलना भी नहीं हो सकती है (यशायाह 40:18)। पुत्र की तुलना सर्वाधिक भव्य रचना से करना भी बहुत हद तक असंगत होगा जैसे छोटी सी चिंगारी से दिन के सूर्य की तुलना करना। पुत्र की पवित्रता की त्रिस्तरीय घोषणा, इब्रानी भाषा की उत्तम श्रेणी का सबसे सबल रूप है। यह पद हमें समझने में सहायता करता है कि यूहन्ना 17:5 में यीशु के कथन का क्या तात्पर्य है: "हे पिता, अब तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की उत्पत्ति से पहले, तेरे साथ मेरी थी।" क्या यह अदभुत नहीं है कि ऐसी एक परम सत्ता हम पापियों के लिये प्राण बलिदान करे?

अध्याय 5: पुत्र ने मानव रूप धारण किया

भाग एक: पुराना नियम देहधारण की गवाही देता है

परमेश्वर के पुत्र की अनंत महिमा पर विचार करते हुए, अब हम हमारा ध्यान उसके ***देहधारण*** पर लगायेंगे। ''देहधारण'' शब्द लेटिन भाषा की क्रिया ***इनकारनरे*** से निकला है (**इन = इन** + **कारो** = देह) जिसका अर्थ है, ''देहधारी होना'' या ''देह धारण करना।'' धर्मशास्त्र में, देहधारण उस महान सच्चाई की ओर संकेत करता है कि लगभग दो हजार वर्ष पहले, परमेश्वर का शाश्वत पुत्र, पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा कुंवारी कन्या के गर्भ में आया और नाजरथ के यीशु के रूप में जन्म लिया – परमेश्वर–मानव। उसमें परमेश्वरत्व की समस्त परिपूर्णता सदेह वास करती है (कुलुस्सियों 2:9), वह सब बातों में हमारे समान था तौभी निष्पाप निकला (इब्रानियों 4:15) । उसने पुराने नियम की व्यवस्थानुसार पूर्ण रूप से धर्मी जीवन व्यतीत किया और तब स्वयं को उसके लोगों के पापों के लिये बलिदान बना कर अर्पित किया। मनुष्य जगत में परमेश्वर के पुत्र का आगमन, निसंदेह, मानव इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है और जो बाइबल आधारित मसीहत का मुख्य केंद्र है। इसलिये यह आवश्यक है कि हम देहधारण के सिद्धांत पर गंभीरता से विचार करें।

पुराने नियम की भविष्यवाणी

यद्यपि, देहधारण मुश्किल से दो हजार वर्षो पूर्व हुआ था, परंतु यह समझना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम के भविष्यसूचक लेखन में ''समस्त घटनाओं में सबसे बड़ी घटना'' की पूर्व झलक मिलती है। यह हमारे लिये सहायक और उत्साहवर्धक दोनों रहेगा कि हम पुराने नियम की कुछ भविष्यवाणियों पर विचार करें। यह तथ्य कि वे नाजरथ के यीशु के जन्म के सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखी गयीं थीं, नये नियम में उसके देहधारण और परमेश्वरत्व के लिये किये गये दावे पर सशक्त बल देता है।

1. मीका 5:2 में, हमको एक सबल भविष्यवाणी मसीहा के लिये मिलती है। इस पद पर विचार करो जब तक कि आप इसकी विषय वस्तु से परिचित नहीं हो जायें, और तब निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

   अ. यह भविष्यवाणी कैसे प्रमाणित करती है कि मसीहा एक मनुष्य होगा?

1. वह य_____ के कु_____ में से आयेगा।

टिप्पणियां: मसीहा यहूदा के कुल एवं दाऊद के घराने में से होगा। रोमियों 1:3 में, प्रेरित पौलुस पुष्टि करता है कि "यीशु देह की रीति से दाऊद का वंशज है।" वह पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मानव होगा। उसकी मनुष्यता दाऊद के गोत्र से प्रकट होगी।

ब. यह भविष्यवाणी कैसे प्रकट करती है कि मसीहा मनुष्य से बढ़कर होगा – कि वह शाश्वत परमेश्वर होगा?

1. उसका निकलना अ_____ से है।

टिप्पणियां: यह एक स्पष्ट संकेत है कि मसीहा मनुष्य ये बढ़कर होगा। इस कथन से केवल यह अर्थ नहीं निकलता कि उसका आगमन लंबे समय पूर्व से बतला दिया गया था, परंतु वह उसके जन्म से पहले, यहां तक कि अनादिकाल से विद्यमान है। ऐसा केवल परमेश्वर के लिये कहा जा सकता है, इसलिये यह वर्णन, मसीहा के ईश्वरत्व की ओर एक स्पष्ट संदर्भ है। यदि वह सनातन है तो वह भी परमेश्वर है, क्योंकि केवल परमश्वर ही सनातन है।

2. यशायाह 7:14 में की गयी, एक भविष्यवाणी मत्ती द्वारा उदधृत की गयी है जो यीशु मसीह के देहधारण और उनके पवित्र जन्म दोनों की ओर संकेत देती है (मत्ती 1:22–23)। यह पद क्या दर्शाता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: इस भविष्यवाणी की प्रारंभिक पूर्णता यशायाह व नबिया के पुत्र के जन्म से होना आरंभ हुई (8:3), क्योंकि लड़के के लिये यह कहा गया है कि इसके पूर्व कि वह मॉ और पिताजी कहना सीखे, यहूदा के शत्रु प्रबल होंगे (8:4) । फिर भी, यह मसीहा के रूप में इसकी पूर्णता का भी संकेत है। यद्यपि यशायाह ने जिस भाषा का प्रयोग किया, वह तत्कालीन संदर्भ में उचित थी, उसकी भविष्यवाणी स्पष्टतः उस अर्थ से भरपूर थी जो उसके या उसके पुत्र के समय से कहीं आगे चलकर ***समूचे*** तौर पर पूर्ण होगी। इब्रानी भाषा के दो शब्द हैं जो "कुंवारी" रूप में अनुवादित किये जा सकते हैं। पहला शब्द ***अल्माह*** है, जो एक कुंवारी कन्या या विवाह योग्य उम्र की युवा महिला की ओर संकेत देता

है; दूसरा शब्द, ***बेथ्यूलाह*** है, जिसका अर्थ ''कुंवारी'' से भिन्न नहीं है। इस पर अक्सर विचार किया गया है कि क्यों यशायाह ने ***बेथ्यूलाह*** के स्थान पर ***अल्माह*** का प्रयोग किया, परंतु कारण स्पष्ट है। पवित्र आत्मा की विद्वता ने उस इब्रानी शब्द को चुना, जिसका प्रयोग यशायाह के समय के लिये थोड़ा और मसीहा के समय की पूर्णता के लिये उससे बढ़कर, पूर्णरूपेण उचित होता। यशायाह के समय में, वह एक ***सेविका*** थी जो प्राकृतिक संबंधों से गर्भवती हुई और पुत्र को जन्म दिया; परंतु उस महान पूर्णता वाले कार्य में, एक ***कुंवारी*** थी, जो पवित्र आत्मा की सामर्थ से गर्भवती हुई और पुत्र को जन्म दिया जो परमेश्वर और मनुष्य दोनों था। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि जब यहूदी शास्त्रियों ने यशायाह 7:14 को यूनानी भाषा में अनुवादित किया (सेप्तुजिंट 70), उन्होंने यूनानी भाषा का वाक्यांश ***हे पार्थीनोज*** को चुना (अर्थात कुंवारी) जो इब्रानी शब्द ***ऐल्मा*** का सही अनुवाद है। मत्ती यूनानी सेप्तुजिंट में से मत्ती 1:22–23 को उदधृत करते हुए ***हे पार्थीनोज*** का प्रयोग करता है और यीशु मसीह के पवित्र जन्म की गवाही देता है। वे लोग जो मसीहा के कुंवारी मरियम के गर्भ में स्वर्गिक रूप से आने से इंकार करते हैं, वे नये नियम को उनकी सहायता के लिये उपयोग नहीं कर सकते हैं। सुसमाचार लेखक सुस्पष्ट थे – मसीहा का जन्म कुंवारी कन्या से हुआ! मत्ती 1:23 में, प्रेरित हमें ''इम्मानुएल'' का उचित अनुवाद देते हैं – ''परमेश्वर हमारे साथ है।'' यशायाह 7:14 के तात्कालिक संदर्भ में, यह नाम सरल रूप में यह प्रगट करता है कि इस बालक का जन्म परमेश्वर की शपथ और प्रमाण होगा कि वह यहूदा के साथ था और उन्हें उसके शत्रुओं – इजरायल और सीरिया, के हाथों से छुड़ायेगा। मसीहा के संदर्भ में, एवं मत्ती की समझ अनुसार, नाम का अर्थ इससे बढ़कर नहीं है कि ''वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच मे निवास किया।'' (यूहन्ना 1:14)

3. यशायाह 9:6अ पद में, हमें पुराने नियम की समस्त महान झलकियों में से एक झलक, विशुद्ध अचरज और रहस्य से भरी, मसीहा के आगमन की भी दिखलाई गयी है। इस पद को तब तक पढ़िये, जब तक आप इसकी विषय – वस्तु से परिचित न हो जायें और तब निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये। किस प्रकार यह भविष्यवाणी देहधारण के सत्य को हम तक पहुंचाती है – कि मसीहा एक मनुष्य से बढ़कर होगा और वह पूर्ण परमेश्वरत्व को धारण करेगा?

   अ. कैसे यह भविष्यवाणी यह मसीहा की मानवता को प्रकट करती है?

   1. हमारे लिये एक बालक_____ होगा।

      टिप्पणियां: भविष्यवाणी एक वास्तविक प्रकार के और प्राकृतिक मनुष्य के जन्म के बारे में बताती है। यद्यपि वह पवित्र आत्मा के द्वारा अलौकिक रूप से कुंवारी कन्या के गर्भ में आया, तौभी मसीहा किसी अन्य मनुष्य जीवन की तरह ही इस संसार में प्रवेश करेगा। किसी ईश्वरीय प्रकाशन से हटकर अगर देखें तो किसी ने भी चरनी के उस शिशु को परमेश्वर के शाश्वत व अबोधगम्य पुत्र के रूप में नहीं पहचाना होगा।

ब. कैसे यह भविष्यवाणी मसीहा के परमेश्वरत्व को प्रकट करती है?

1. हमें एक बा_____दि_____ जाएगा।

टिप्पणियां: यहां मसीहा के पवित्रतम व्यक्तित्व के आवरण के पीछे हमें दिखाई पड़ता है और हम पाते हैं कि वह मानवीय एवं ईश्वरीय दोनों ही है। पृथ्वी पर के दृष्टिकोण से एक बालक का जन्म दिखाई देता है परंतु स्वर्ग के दृष्टिकोण से एक पुत्र दिया गया है! समय पूर्ण होने पर जो बालक उत्पन्न हुआ, वह परमेश्वर का शाश्वत पुत्र था, जो पिता द्वारा दिया गया था और स्वर्ग से भेजा गया था।

क. कैसे यह भविष्यवाणी मसीहा के राजसी महीमा और संप्रभूता को प्रकट करती है?

1. *प्र_____उसके कां_____ पर होगी।*

टिप्पणियां: रहस्य निरंतर खुलता जाता है। बालक सृष्टि के संपूर्ण राज्य का प्रभुत्व का धारण करता है। स्वयं की सामर्थ और बुद्धि से, वह पूर्ण संप्रभुता के साथ विश्व पर राज्य करेगा। प्रत्येक क्षेत्र का दायित्व उसके कांधे पर होगा, और तौभी यह उसके लिये बेहद हल्का सिद्ध होगा। ऐसे राज्य को चलाने के लिये जो आवश्यक बातें हैं, वे मनुष्य और स्वर्गदूतों के पहुंच से बाहर की बातें हैं, वे उस एक परम सत्ता के आगे कुछ भी नहीं जिसने सब वस्तुओं की सृष्टि की और अपने मुंह से कहे गये वचन द्वारा स्थिर किया (इब्रानियों 1:3)। इन सब बातों को देखने से हमें वह बड़ा प्रमाण मिलता है कि मसीहा परमेश्वर का ही देहरुप है। जिस परिमाण के साथ यह कार्य किया गया है, वह केवल परमेश्वरत्व की पूर्णता के द्वारा ही संपादित किया जा सकता है।

4. यशायाह 9:6 ब में, मसीहा को कई नाम या पदवियां दी गयीं हैं। वे पदवियां, उसके बारे में कौन से महत्वपूर्ण सत्य हमें बताती हैं?

*अ. द_____। यह इब्रानी शब्द **पायलाय** से निकला है, जिसका अर्थ है "अदभुत" या "अबोधगम्य।" ऐसा गुण केवल परमेश्वरत्व के लिये ही उपयुक्त ठहर सकता है। जब परमेश्वर सैमसन के माता पिता के सामने प्रभु के दूत बनकर उपस्थित हुए, उन्होंने स्वयं का परिचय इसी नाम से दिया (न्यायियों 13:18, 22) । सभी मनुष्य और स्वर्ग में सबसे विशिष्ट स्वर्गदूत भी सीमित अस्तित्व कहलाते हैं जिनके अदभुत कार्य समझे जा सकते हैं। केवल परमेश्वर ही असीम रुप मे अद्‌भूत है और सब लोगों की समझ से परे है।*

ब. परा_____। यशायाह 28:29 में, यहोवा को "अदभुत युक्ति करने वाला" कहा गया है (केजेवी/एनकेजेवी/ईएसवी) । इसलिये, मसीहा को यही पदवी देना उसके परमेश्वरत्व के लिये निर्विवाद घोषणा करना है। प्रेरित पौलुस मसीह को "परमेश्वर का ज्ञान कहता है" (1 कुरिन्थियों 1:24) जिसमें "बुद्धि और ज्ञान के समस्त भंडार छिपे हुए हैं" (कुलुस्सियों 2:3)। ऐसी बातें अति बुद्धिमान मनुष्यों और स्वर्गदूतों के लिये नहीं कहीं जा सकती।

*क. पराक्रमी और ई_____ है। यह पद इब्रानी शब्द **एल जिबर** से अनुवादित किया गया है, जिसका प्राचीन नाम हमें व्यवस्थाविवरण 10:17, यिर्मयाह 32:18, नहेमायाह 9:32 और भजन 24:8 में मिलता है। पुराने नियम में मसीहा के परमेश्वरत्व का यह प्रमाण नये नियम की इसी गवाही के समान है। मसीह परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1), ''हमारा महान परमेश्वर'' (तीतुस 2:13) और ''जो सब के ऊपर युगानयुग धन्य परमेश्वर है'' (रोमियों 9:5 ईएसवी)*

ड. अनं_____ से पि_____ के संग है। यह बालक जो समय पूर्ण होने पर उत्पन्न हुआ, वह अनादि काल से उपस्थित था। जब मसीह से अब्राहम के साथ उसके संबंध के विषय मे प्रश्न किया गया, उसने सभों के समक्ष घोषित किया, ''इससे पहले कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूं'' (यूहन्ना 8:58–59)। यहूदियों ने इसे ठीक समझा था कि अनंतता का दावा करना परमेश्वरत्व का दावा करना है और वे उसे ईश–निंदा करने के आरोप के कारण पत्थरवाह करना चाहते थे। ''पिता'' के पद का प्रयोजन त्रिएकत्व के व्यक्तित्वों को उलझन में डालना नहीं था, परंतु आने वाले मसीहा के दो महत्वपूर्ण पहलूओं के ऊपर बल देना था: 1. संपूर्ण अनंतता से, वह समस्त वस्तुओं का मूल, स्त्रोत और पालनहार रहा है (यूहन्ना 1:3–4); और प्रारंभ से, वह अपने लोगों का पोषक और रक्षक रहा है।

इ. शां_____ प्र_____ । मसीहा और उसका राज्य शांति स्थापित करेगा; एवं यह मात्र राजनीतिक शांति नहीं होगी, परंतु अति महत्वपूर्ण प्रकार की, परमेश्वर और मनुष्य के मध्य की शांति होगी। यहां एक और बड़ा प्रमाण मसीहा के परमेश्वरत्व का देखने को मिलता है। वह जो शांति स्थापित करने वाला होगा, उसे मनुष्य और परमेश्वर के ऊपर हाथ रखना आवश्यक है, ताकि उन्हें सहभागिता में ला सकें; परंतु कौन अपना हाथ जीवित परमेश्वर को छुने के लिए आगे बढाने का साहस करेगा, केवल वही, जिसमें परमेश्वर का तत्व हो? अय्यूब के लिये यह बड़ा द्वंद था: ''क्योंकि वह (अर्थात परमेश्वर) मेरे समान मनुष्य नहीं, जिसके साथ मैं वाद विवाद कर सकूं और हम दोनों का न्याय हो सके। हमारे बीच कोई निर्णायक नहीं, जो हम दोनों पर अपना हाथ रख सके'' (अय्यूब 9:32–33)। यहां यशायाह भविष्यवाणी करता है कि अय्यूब का एवं हमारा द्वंद हमेशा के लिये मसीहा में समाप्त हो जायेगा। वह शांति स्थापित करने वाले अथवा एक मध्यस्थ की सारी अर्हतायें पूर्ण करता है। परमेश्वर के रूप में, वह अपना हाथ परमेश्वर की ओर बढ़ा सकता है; और एक मनुष्य के रूप में, वह अपना हाथ मनुष्य की ओर बढ़ा सकता है। प्रेरित पौलुस लिखता है, ''इसलिए विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाकर अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर से हमारा मेल है'' (रोमियों 5:1)

5. शेष बचे स्थान पर, मसीह के विषय में, पुराने नियम की भविष्यवाणियों द्वारा हमारे ऊपर प्रकट किये गये कुछ अत्यधिक महत्वपूर्ण सत्यों का संक्षेप में वर्णन कीजिए, जिन पर हम ने अभी अभी विचार किया है।

_____

_____

_____

समय पूरा होने पर

परमेश्वर के पुत्र का मनुष्यों के संसार में आगमन, निसंदेह, मानव इतिहास में, सबसे महत्वपूर्ण घटना है। पुराने नियम में स्पष्ट रुप मे इसकी भविष्यद्वाणि की गई थी और परमेश्वर की इच्छानुसार निर्धारीत नियत समय में यह हो गया। वह एकाएक नहीं आया, परंतु यह परमेश्वर की परम योजना के अनुसार हुआ। इस सत्य का प्रकाशन विशेषतः गलतियों 4:4–5 में हमें मिलता हैः

> *''परंतु जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से उत्पन्न हुआ और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, कि जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उन्हें मूल्य चुकाकर छुड़ा ले और हम को लेपालक पुत्र होने का अधिकार प्राप्त हो''*

यह एक विशेष गद्यांश है, एवं यह वाक्यांश ''समय पूरा होने पर'' अर्थ से परिपूर्ण है। कुछ लोग ईश्वरीय बुद्धि से यह प्रश्न कर सकते हैं कि मसीहा को भेजने में देर क्यों हुई? वे मसीहा के आगमन प्रथम प्रतिज्ञा के बाद एवं उसके वास्तविक आगमन में इतने लंबे अंतराल के विषय में तर्क कर सकते हैं (उत्पत्ति 3:15)। किन्तु, पवित्रशास्त्र शिक्षा देते हैं कि मसीह परमेश्वर द्वारा निर्धरीत समय पर ही आये और मानव इतिहास की उस घड़ी में प्रकट हुए, जब मनुष्य जगत बड़ी आवश्यकता में था।

इस पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि ''समय पूरा होना'' यह प्रदर्शित करता है कि मसीह मानवता की घोर आवश्यकता की घड़ी में ही नहीं आया, परंतु वह पुराने धर्मशास्त्र में बताये गये समय और मसीहा के लिये की गयी भविष्यवाणियां के अनुसार आया। यह स्पष्टतः सिद्ध किया जा सकता है कि मसीहा के आगमन का समय बीत चुका है। अगर नाजरथ के यीशु मसीहा नहीं थे, तो धर्मशास्त्र की कही गयीं बातें पूर्ण नहीं हुई हैं और पूर्ण नहीं हो सकती हैं। इन प्रासंगिक सत्यों पर विचार कीजिये।

1. उत्पत्ति 49:10 के अनुसार, ''यहूदा से तब तक राजदंड न छूटेगा और न उसके पैरों के बीच से शासकीय राजदंड हटेगा तब तक कि शीलो (मसीहा का संदर्भ दिया गया है, एक प्राचीन यहूदी लेख इसे स्वीकारता है) न आए।''यहां प्रतिज्ञा की गयी है कि यहूदा का वंशज मसीहा के आने तक राज्य करता रहेगा। यरूशलेम 70 ए.डी. में नष्ट किया गया, यहूदियों का राजनीतिक वर्चस्व और प्रभुता छीन ली गयी और इस तरह राष्ट्र बिखर गया। यहूदा की जाति से दो हजार वर्षो से कोई शासक नहीं था। अगर यीशु ही मसीहा नहीं होते, तब उत्पत्ति 49:10 में की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा विफल हो जाती, क्योंकि समय बीत चुका था और प्रतिज्ञा अब पूर्ण नहीं की जा सकती थी।

2. दानियेल 9:24–27 के अनुसार, यरूशलेम को दासत्व खत्म होने के बाद के सालों के (अर्थात उनपचास साल) सात सप्ताह में पुर्ननिर्मित किया जाना था; मसीहा यरूशलेम के पुर्ननिर्माण के बाद अर्थात बासठ सप्ताह पश्चात (अर्थात चार सौ चौंतीस वर्षो) प्रगट होगा। यह भविष्यवाणी यीशु के जीवन से पूर्ण तौर पर मिलती है। अगर यीशु ही मसीहा नहीं होते, तब दानियेल 9:24–27 में मसीहा की दी हुई प्रतिज्ञा विफल हो जाती, क्योंकि समय बीत चुका था और प्रतिज्ञा अब पूर्ण नहीं की जा सकती थी।

3. मलाकी 3:1–3 यह शिक्षा देता है कि मसीहा का आगमन उस अवधि में जब तक दूसरा मंदिर स्थिर है, होना था। दूसरा मंदिर 70 ए.डी. में नष्ट किया गया। अगर यीशु ही मसीहा नहीं होते, तब यह भविष्यवाणी विफल हो जाती, क्योंकि समय बीत चुका था और प्रतिज्ञा अब पूर्ण नहीं की जा सकती थी।

4. मसीहा को दाऊद का वंशज होना था और उसे तब आना था जब दाऊद का घराना निम्न अवस्था में था और तिरस्कार में जी रहा था जैसे किसी पेड़ को उसकी अपनी ही जड़ों से पृथक कर दिया जाता है। यशायाह 11:1 में, पद यह घोषित करता है, ''तब यिशै के ठूंठ में से एक अंकुर फूट निकलेगा, हां, उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवंत होगी।'' ऐसे ही समय में यीशु मसीहा के रूप में प्रगट हुए। अगर वह मसीहा नहीं होते, तो धर्मशास्त्रों का लेख पूर्ण नहीं होता, क्योंकि 70 ए.डी. में यरूशलेम के नष्ट होने पर यिशै की जड़ भी ''उखड़'' जाती। उस समय, समस्त वंशावलियों के प्रमाण नष्ट हो चुके थे, और किसी अन्य प्रस्तावित ''मसीहा'' के वंश को प्रमाणित करना असंभव होता।

5. दानियेल 9:27 के अनुसार, मसीहा नयी वाचा की पुष्टि करेगा और पुरानी वाचा के अंर्तगत आने वाली बलिदान प्रथा को समाप्त करेगा। बलिदान प्रथा, यरूशलेम व मंदिर का 70 ए.डी. में नष्ट होने पर समाप्त हो गयी। यदि यीशु, *मसीहा* नहीं हैं, तो पुराने नियम मे बलिदान प्रथा बिना मसीहा के आगमन के समाप्त हो चुकी है।

6. आमोस और यशायाह भविष्यवक्ताओं के अनुसार (अन्य दूसरों के मध्य), मसीहा का आगमन राष्ट्रों या जातियों के इकट्ठे होने के समय से चिंन्हित किया गया (यशायाह 2:2–3; 11:10; 42:1–6; 49:6; 60:3; आमोस 9:11–12; उत्पत्ति 17:5; 49:10; भजन 2:8; 22:27, 30; जकर्याह 8:22; प्रेरितों के काम 15:15–18)। लगभग दो हजार साल तक (यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान से), हर राष्ट्र की अन्य जाति की भीड़ ने स्वयं को इजरायल के परमेश्वर और इब्रानी धर्मशास्त्र के साथ को पहचाना। इसके पूर्व के इतिहास में इसके समांतर कुछ नहीं है।

अध्याय 6: पुत्र मनुष्य बना

भाग दोः देहधारण के लिये नये नियम की गवाही

परमेश्वर पुत्र के कुंवारी कन्या के द्वारा जन्म लेकर देहधारण करना, मसीही विश्वास और सुसमाचार का एक आवश्यक सिद्धांत है। धर्मशास्त्र के स्पष्ट कथन और चर्च की प्राचीनतम गवाही के इंकार के बिना, इस सिद्धांत का इंकार करना असंभव है। अगर मसीह अलौकिक ढंग से गर्भ में नहीं आते, तो वह देहधारी परमेश्वर नहीं थे, तब सुसमाचार एक झूठ होता और क्रूस के पास बचाने की सामर्थ नहीं होती! इस कारण से, हमारे लिये यह आवश्यक है कि हम इस आधारभूत सिद्धांत पर बहुत ध्यान दें और इसे पूरी निष्ठा से थामे रहें!

यीशु मसीह ***देहधारी परमेश्वर या देह में परमेश्वर*** हैं, ऐसा कहने से क्या आशय है? यह अत्यधिक आवश्यक है कि हम समझ लें कि परमेश्वर का पुत्र देहधारण करने पर, परमेश्वर होने के स्तर से कहीं भी कम नहीं हुआ, न ही उसने परमेश्वर और मनुष्य के बीच का कोई मध्यवर्ती स्वभाव लिया। इसके बजाय, परमेश्वर का पुत्र वह कुछ बन गया जो वह पहले कभी नहीं था। उसने अपने परमेश्वरत्व में मानवता को जोड़ा और वह परमेश्वर–मानव बन गया, एक व्यक्ति जिसमें दो भिन्नतायें थीं, तौभी अविभाजित स्वभाव थे – ईश्वरीय और मानवीय। उसने अपने किसी भी ईरवरीय गुण को नहीं छोड़ा, परंतु अपनी इच्छा से उन गुणों के उपयोग को अपने पिता की इच्छा पर छोड़ दिया। उसने मनुष्य का सिर्फ बाहरी रूप ही धारण नहीं किया या वह सिर्फ मनुष्य ही नहीं दिखता था; परंतु वह एक वास्तविक मनुष्य बन गया था, हर प्रकार से हमारे समान, परंतु वह निष्पाप था।

1. मत्ती 1:18–25 में यीशु मसीह के आश्चर्यजनक ढंग से गर्भ में आने का पहला वर्णन मिलता है। पद 20 में किस सत्य का प्रकाशन किया गया है? इसका महत्व क्या है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''गर्भ में आना'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***गेनॉव*** से लिया गया है, जिसका अर्थ है, ''जन्म देना या उत्पन्न करना।'' इस एक साधारण परिभाषा से, जीवन का गर्भ में धारण किया जाना बतलाया जाता है। यह धर्मशास्त्र की गवाही है कि यीशु के कोई सांसारिक पिता नहीं थे, परंतु वह पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ से उत्पन्न हुए।

2. लूका 1:26–38 में अलौकिक सामर्थ से परमेश्वर के पुत्र के गर्भ में आने का और अधिक विस्तृत वर्णन मिलता है। इस पाठ को पढ़िये एवं तब निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

अ. पद 34 के अनुसार, स्वर्गदूत की घोषणा के प्रति कि वह मसीहा की माता होगी, मरियम की क्या प्रतिक्रिया थी? कैसे उसकी प्रतिक्रिया ने इस सत्य को सुदृढ़ किया कि मसीहा का जन्म अलौकिक था?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मरियम के कुंवारेपन का वर्णन सुसमाचार में पांच बार घोषित किया गया है: मत्ती 1:23,25; लूका 1:27 (दो बार), 34। यद्यपि, कोई जन इस पवित्र जन्म को लेकर, प्रेरितों की साक्षी को मानने से इंकार कर सकता है, किंतु यह उनकी साक्षी थी, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। मरियम का प्रश्न अविश्वास से नहीं उपजा, परंतु इस तथ्य से उपजा कि वह तो कुंवारी थी। उसे आश्चर्य हुआ कि कैसे गर्भधारण किया जाना संभव होगा।

ब. पद 35 में स्वर्गदूत की क्या प्रतिक्रिया थी? यह पद हमें यीशु के आश्चर्यजनक ढंग से गर्भ में आने के विषय में क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: एक समान शब्द ''छाया करना'' (यूनानीः ***इपिसकियेजो***) उस चमकीले बादल के लिये भी कहा गया है जो पतरस, यूहन्ना और याकूब पर छा गया था, (मत्ती 17:5); जिस पर्वत पर रूपांतरण हुआ था; मरकुस 9:7; लूका 9:34)। भाषा भी सृष्टि निर्माण के बारे में हमें स्मरण दिलाती है, जब परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था (उत्पत्ति 1:2)। चूंकि पवित्र आत्मा विश्व के निर्माण में एक प्रारंभिक शक्ति थी, तो यह उसके सामर्थ के बाहर की बात नहीं हो सकती कि वह अपनी सामर्थ से कुंवारी के गर्भ में एक जीवन का निर्माण कर दे।

क. पद 37 में, जिब्राएल स्वर्गदूत परमेश्वर के विषय में एक महत्वपूर्ण घोषणा करता है। किस प्रकार से यह सत्य, यीशु के आश्चर्यजनक ढंग से गर्भ में आने के ऊपर विश्वास रखने पर, किसी व्यक्ति का आधार बन सकता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: एक बार सर्वशक्तिशाली परमेश्वर पर विश्वास कायम हो जाता है, तो मसीहा के अदभुत रूप से कुंवारी कन्या के गर्भ में आने पर विश्वास करना कठिन नहीं है। परमेश्वर कुछ भी कर सकते हैं, सिर्फ उन बातों को छोड़कर, जो उनके पवित्र, धर्मी और प्रेमी स्वभाव के विरूद्ध हो।

3. यूहन्ना 1:14 में देहधारण का उल्लेख करनेवाले पदों में से एक सबसे सामर्थी और सुंदर पद मिलता है। इस पद पर मनन कीजिये जब तक कि आप इसके अर्थ से परिचित न हो जायें और तब निम्न वाक्यांशों पर अपने विचारों को लिखिये।

अ. वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में निवास किया।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''वचन'' परमेश्वर के शाश्वत पुत्र का संदर्भ देता है (पद 1)। क्रियाशब्द ''हुआ'' परिवर्तन या अवस्थांतर को बताता है। शाश्वत पुत्र सदैव देहधारी नहीं था, परंतु जब मरियम के गर्भ में आया तब देहधारी ''हो गया''। देहधारी होने

पर, उसका परमेश्वर होने का गुण थम नहीं गया; इसके बजाय, उसने उसके परमेश्वरत्व में मनुष्यत्व को सम्मिलित किया और परमेश्वर –मानव बन गया। ''निवास किया'' शब्द यूनानी भाषा के ***स्केनू*** से निकला है, जो तंबू या मंडप में निवास करने की ओर संकेत करता है। देहधारण में, परमेश्वर ने अपने ''तंबू को स्थापित किया'' या मनुष्यों के मध्य ''निवास किया''।

ब. और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के इकलौते की महिमा जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण हो।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''महिमा'' शब्द (यूनानी: ***डोक्सा***) पुत्र की स्वर्गिक भव्यता की ओर संकेत देता है। यह वाक्यांश ''इकलौता''(यूनानी: ***मोनोगेनिस***) को और अधिक अच्छे ढंग से ''एक और केवल एक'' के रूप में अनुवादित किया जा सकता था। मसीह को अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण कहना उसके परमेश्वरत्व की निर्विवाद घोषणा थी, क्योंकि इसने उसे दो गुणों की पूर्णता प्रदान की जो साधारण तौर पर केवल परमेश्वर के लिये ही प्रयुक्त होते हैं (कुलुस्सियों 2:9 को पढ़ें)।

4. फिलिप्पियों 2:6–8 में, प्रेरित पौलुस हमें परमेश्वर के पुत्र के शाश्वत अस्तित्व से महिमा की ओर ले चलते हैं, देहधारण से होते हुए, कलवरी के क्रूस तक ले चलते हैं। इस पद पर आधारित, देहधारण की निम्न घोषणाओं को पूर्ण कीजिये।

   *अ. जिसने परमेश्वर के स्व_____ में होते हुए भी परमेश्वर के स_____7 होने को (पद 6) । यह धर्मशास्त्र की गवाही है कि परमेश्वर का पुत्र उसके देहधारण के पहले और बाद में भी विद्यमान था। ''स्वरूप'' शब्द (यूनानी: **मार्फ**) बाहरी रूप–रंग की ओर संकेत देता है, उसी प्रकार आवश्यक गुण या निहित सत्यता को भी भी प्रगट करता है। पुत्र सिर्फ दिखाई देने मात्र से ही परमेश्वर नहीं **जान पड़ता** था; वह यथार्थ में परमेश्वर **था**।*

   *ब. उसने परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी परमेश्वर के स_____ होने को अपने अधिकार में रखने की वस्तु न समझा (पद 6)। ''समानता'' शब्द (यूनानी: **आयसोस**) पुत्र के परमेश्वरत्व के प्रति निर्विवाद संदर्भ है। वाक्यांश ''समझे जाने के लिये'' (यूनानी: **हार्पागमोस**) किसी मूल्यवान वस्तु के प्रति अनधिकृत रूप से अधिकार करने की ओर संकेत देता है। देहधारण में, पुत्र ने अपनी इच्छा इस बात में प्रगट की कि उसने पिता की इच्छा पालन के लिये, परमेश्वरत्व के विशेष अधिकारों को छोड़ दिया।*

क. परंतु उसने अपने को शू_____ कर दिया (पद 7)। देहधारण करने पर, पुत्र ने अपनी महिमा और परमेश्वरत्व के सारे विशेषाधिकार एक तरफ रख दिये। परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि उसकी सामर्थ परमेश्वर से कम हो गयी, बल्कि उसने परमेश्वर के रूप में अपनी वैधानिक महिमा और अधिकार को एक ओर रख दिया (यूहन्ना 17:5)।

*ड. दास का स्व _____ कर मनु _____ (पद 7)। यहां "स्वरूप" (यूनानी **मार्फ**) बाहरी रंग रूप एवं साथ ही जो तात्विक गुण है, उस की ओर संकेत देता है। मसीह बाहरी रूप में ही **दिखाई देने वाला** प्रतिबद्ध सेवक नहीं बना, परंतु वह, वास्तव में हर प्रकार से प्रतिबद्ध सेवक **बन गया।***

*इ. इस प्रकार मनुष्य की समा _____ में प्रकट हुआ। मनुष्य के जैसे रंग _____ धारण किया (पद 7–8)। "समानता" शब्द (यूनानीः **होमोआयोमा**) "समानता" अथवा "रूप" को बताता है। मसीह एक सच्चा मनुष्य था और सच्ची मनुष्यता के सारे गुण उसने धारण किये। "रूप रंग" शब्द (यूनानीः **स्कीमा**) एक व्यक्ति की आदतें और तरीकों की ओर संकेत देता है। मसीह न केवल एक मनुष्य था, परंतु जो उसे जानते थे और उसके व्यवहार को देखते थे, उन्हें वह वैसा प्रतीत भी होता था।*

ई. उसने स्वयं को दी _____ किया और यहां तक आज्ञा _____ रहा कि मृत्यु वरन क्रूस की मृत्यु भी सह ली (पद 8)। निष्पाप मसीह के लिये मृत्यु परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता रखने का एक ऐच्छिक कार्य था। वह उसके ऊपर दंड स्वरूप थोपा नहीं गया था, परंतु एक कार्य के रूप में दिया गया था।

5. कुरन्थियों 8:9 में हमें, बाइबल में देहधारण से संबंधित समस्त पदों में से एक सुंदर पद पढ़ने को मिलता है। इस पद पर अपने विचार लिखिये।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः किसी अमीर व्यक्ति के लिये गरीब बनने की शपथ लेना अलग बात है और गरीबों के बीच रहना अलग बात है। **विश्व** के सर्वोच्च परमेश्वर के लिये देहधारण करना और सर्वाधिक पतित लोगों के मध्य उनके जैसे बनकर रहना

बिल्कुल ही भिन्न बात है। हमें स्मरण रखना चाहिये कि पुत्र द्वारा धारित गरीबी के पीछे एक निश्चित और तय उद्देश्य की पूर्ति होनी थी _____ उसने स्वर्ग की महिमा को त्याग दिया ताकि हम उस महिमा में प्रवेश कर सकें।

6. 1 तिमुथियुस 3:16 में देहधारण से संबंधित सबसे संक्षिप्त और सुंदर कथनों में से एक पढ़ने को मिलता है। इस पद के पहले वाक्यांश में, प्रेरित पौलुस देहधारण के लिये कौनसी घोषणा करता है?

   अ. निसंदेह, भक्ति का भे_____बड़ा गं_____ है। इस वाक्यांश में ''सबकी स्वीकारोक्ति'' को ''सबकी सहमति से'' या ''बिना विवाद या झगड़े के'' ऐसा भी अनुवादित किया जा सकता था। ''रहस्य'' शब्द (यूनानीः ***मस्टेरिन****) किसी छिपी हुई या अबोधगम्य वस्तु की ओर संकेत देता है। ''भक्ति'' शब्द (यूनानीः* ***यूसेबिया****) परमेश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा को प्रगट करता है। इस वाक्यांश को इस तरह भी अच्छे तरीके से समझा जा सकता हैः ''सभी मसीही जन निर्विवाद यह स्वीकार करते हैं कि वह भेद बहुत गंभीर है जो परमेश्वर के प्रति सच्ची भक्ति की बुनियाद और स्त्रोत है।''*

   ब. वह जो शरीर में हो_____ प्र_____ हुआ। वह भेद जो परमेश्वर के पुत्र की समस्त सच्ची भक्ति की बुनियाद और स्त्रोत है जिसे उसने ''देह में'' पूर्ण किया। देहधारण करना मसीही विश्वास का एक आधारभूत सिद्धांत है। अगर यीशु ***पवित्र आत्मा*** *और* ***कुंवारी मरियम के गर्भ*** *दोनों से मिलकर नहीं जन्मा होता, तब वह देहधारित परमेश्वर नहीं कहलाता, और संपूर्ण सुसमाचार एक झूठ ठहरता – कि क्रूस के पास कोई छुटकारे देने वाली सामर्थ नहीं है; पुनरुत्थान एक धोखा ठहरता; और हम परमेश्वर से पृथक एवं आशाहीन होकर, पापों में ही जीवन व्यतीत करते रहते।*

अध्याय 7: पुत्र ने एक सिद्ध जीवन जिया

परमेश्वर के पुत्र के लिये मनुष्य बन जाना पर्याप्त नहीं था; परंतु यह आवश्यक था कि वह परमेश्वर की व्यवस्था तले सिद्ध रूप से आज्ञाकारी होकर जीवन बिताते। अगर वह अपने विचार, स्वभाव, शब्द, या कार्य में दोषी पाया जाता; तो वह पाप के लिये बलिदान देने के लिये अनुपयुक्त सिद्ध हो जाता। इस कारण से यह कहना उचित है कि मसीह के संपूर्ण जीवनकाल में पूर्ण आज्ञाकारिता के बिना, उसके जीवन और सेवकाई के समस्त पहलू अप्रभावी रहते। केवल एक पूर्ण रूप से सिद्ध दूसरा आदम, पहले आदम द्वारा किये गये नैतिक पतन को निरस्त कर सकता था (रोमियों 5:12–19)। केवल एक निष्कलंक और बेदाग मेम्ना संसार के पापों के लिये अपने प्राण दे सकता था (यूहन्ना 1:29; 1 पतरस 1:19)। केवल धर्मी जन ही अधर्मियों के लिये अपने आप को बलिदान कर सकता था ताकि उन्हें परमेश्वर के पास ला सके (1 पतरस 3:18) । केवल एक निष्पाप मसीहा अपने जीवन को कईयों के लिये दे सकता है (मरकुस 10:45)।

1. इसके पहले कि हम आगे बढ़े, हमें रोमियों 8:3 पर विचार करना चाहिये। यह मसीह के देहधारण के विषय में क्या शिक्षा देता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: देहधारण में, परमेश्वर के पुत्र ने पतित मानवता को ही अपने ऊपर नहीं लिया; बल्कि एक ऐसी देह धारण की, जो यद्यपि पाप से निष्कलंक थी, तौभी हमारी पतित जाति के बुरे परिणामों से प्रभावित हो सकती थी। मनुष्य के रूप में, वह कुछ सीमाओं, कमजोरियों, दु:ख और पतित मानवता के अधीन हो सकता था। यह उसकी कितनी बड़ी दीनता है कि वह चाहता तो पतित मानवता के पहले के समय की अपनी संपूर्ण महिमा और सामर्थ को धारण कर सकता था। तौभी, वह ''पाप की देह की समानता में होकर'' भेजा गया!

2. लूका 1:35 के अनुसार, यह कैसे संभव हुआ कि यीशु आदम के उस स्वभाव से वंचित होकर गर्भ में आया, जिस स्वभाव ने शेष मानवता को नैतिक रूप से भ्रष्ट कर दिया था?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''पवित्र''शब्द वही शब्द है जो आत्मा के लिये प्रयुक्त हुआ है। वह ''पवित्र बालक'' था क्योंकि वह ''पवित्र आत्माा'' की छाया से उत्पन्न हुआ था।

3. बाइबल में, एक व्यक्ति के नाम का बहुत महत्व है क्योंकि यह अक्सर प्रगट करता है कि वह व्यक्ति कैसा है और उसके व्यक्तित्व के बारे में कुछ बताता है। प्रेरितों के काम 3:14 में मसीह को कौनसा नाम दिया गया है, और यह उसकी प्रकृति के बारे में कौनसी शिक्षा देता है?

*अ. वह प_____और ध_____है। पतरस भजन 16:10 से लेकर उदधृत कर रहा है। ''पवित्र'' शब्द (यूनानी: **होश**) उसकी ओर संकेत करता है जो पाप से भ्रष्ट नहीं हुआ हो, दुष्टता से मुक्त हो और नैतिक रूप से पवित्र हो। ''धर्मी'' शब्द (यूनानी: **दिकेयोज**) परमेश्वर की प्रकृति और स्वभाव के प्रति अनुरूपता की ओर संकेत देता है। यह बात महत्वपूर्ण है कि वह शीर्षक, जो पुराने नियम में अनूठे रूप में केवल परमेश्वर को दिया गया है (यशायाह 24:16) वही शीर्षक प्रेरितों के काम में यीशु को तीन बार दिया गया (प्रेरितों के काम 3:14; 7:52; 22:14)*

4. पिता, यीशु के विषय में मत्ती 3:17 में कौनसी गवाही देता है? उसकी गवाही मसीह की प्रकृति और कार्यो के विषय में हमें क्या बताती है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यह घोषणा सर्व प्रथम (यशायाह 42:1 की मसीहा के विषय में भविष्यवाणी मिलती है। यह मसीह के बपतिस्मा (मत्ती 3:17; मरकुस 1:11; लूका 3:22) एवं उनके रूपांतरण (मत्ती 17:5; मरकुस 9:7) के समय घोषित की गयी थी। मसीह के विषय में परमेश्वर की गवाही उसके निष्पाप होने के बारे में बताती है। परम पवित्र परमेश्वर केवल परम पवित्र से ही आनंदित हो सकता है। थोड़ा सा पाप भी परमेश्वर की मुस्कुराहट को त्योरियों में बदल सकता था।

5. निम्न पदो के अनुसार, यीशु ने स्वयं के और परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता के विषय में क्या गवाही दी?

अ. युहन्ना 8:29

टिप्पणियां: मसीह के इस दावे का सबसे अदभुत पहलू क्रियाविशेषण ''सदा'' का प्रयोग है। पतित मनुष्य नियत काल तक सिद्ध आज्ञाकारिता का दावा भी नहीं कर सकता, परंतु मसीह आज्ञाकारिता का दावा करते हैं जो न केवल सिद्ध है पंरतु निरंतर और अखंडित है। वह समूचे जीवनकाल में लेश मात्र दोष के बिना आज्ञाकारी पाया गया।

ब. युहन्ना 17:7

टिप्पणियां: मनुष्य के सामने सिद्ध होने का दावा करना एक निर्भिक बात है, परंतु परमेश्वर के समक्ष ऐसा करना बिल्कुल अलग ही बात है। संपूर्ण अदम्य आत्मविश्वास के साथ, यीशु पिता के सामने खड़े होते हैं और अपने हृदय और कार्य में

सिद्ध आज्ञाकारिता का दावा करते हैं। मनुष्यों के मध्य में से, परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ सेवक भी ऐसा दावा नहीं कर सकते जो यीशु ने किया था, बल्कि उनके लिये यह स्वीकार करना आवश्यक था कि, ''हम अयोग्य दास हैं; हमने तो केवल वही किया है जो हमें करना था'' (लूका 17:10)

6. सुसमाचार के वर्णानुसार, मसीह के सर्वाधिक विरोधी भी उसकी धार्मिकता को पहचानने के लिये बाध्य हुए। इस सत्य के विषय में निम्नलिखित पद क्या सिखाते हैं?

—— मत्ती 27:3–4	अ. चोर जिसने देखा कि मसीह ने कुछ भी गलत नहीं किया।
—— मत्ती 27:19	ब. पीलातुस की पत्नी ने मसीह को धर्मी व्यक्ति कहा।
—— मत्ती 27:23–24; लूका 23:4	क. यहूदा ने मसीह के निर्दोष होने को पहचाना
—— लूका 23:39–41	ड. सेनापति ने साक्षी दी कि मसीह निर्दोष थे।
—— लूका 23:47	इ. पीलातुस ने मसीह में कोई दोष नहीं पाया।

7. निम्न पदों में, यीशु के निष्कलंक होने के विषय में, पत्रियों में मिलने वाले सबसे महत्वपूर्ण पदों पर हम विचार करेंगे। अपने स्वयं के शब्दों में प्रत्येक पद को सारगर्भित करें।

अ. 2 कुरिन्थि. 5:21

_____

_____

_____

_____

ब. इब्रानियों 4:15

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यीशु हमारी दुर्बल मानवीय दशा में जो आम बातें पायीं जाती हैं, उन सभी बातों में परखा गया। हमारी कमजोरी में, हम अक्सर थोड़ी सी परीक्षा की घड़ी में ही गिर जाते हैं, और इसलिये बड़ी परीक्षाओं से बहुत कम हमारा सामना होता है। मसीह, सभी को आने वाली, थोड़ी परीक्षाओं में प्रबल हुए और सबसे बड़ी परीक्षा में भी विजयी ठहरे जिसका सामना अभी तक किसी व्यक्ति ने नहीं किया था।

क. इब्रानियों 7:26

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''पवित्र'' शब्द (यूनानी: ***होश***) व्यक्ति की उस अवस्था की ओर संकेत देता है जो पाप से शुद्ध, बुराई से मुक्त, और नैतिक रूप से शुद्ध है। ''निर्दोष'' या ''हानिरहित'' शब्द (यूनानी: ***अकायकोश***) उस व्यक्ति की ओर संकेत देता है जो विनाशकारी दुष्टता या द्वेष से रहित हो। ''पाप से शुद्ध'' शब्द (यूनानी: ***अमियांतोस***) को ''बेदाग'' अथवा ''निष्कलंक'' भी अनुवादित किया जा सकता था। ''पापियों से पृथक किया गया'' वाक्यांश मसीह और मनुष्य जगत के बीच बड़े अंतर की ओर संकेत देता है– वह पापरहित था।

ड. 1 पतरस 1:19

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह का रक्त बहुमूल्य था क्योंकि वह निष्कलंक और बेदाग मेम्ना था। ''निष्कलंक'' शब्द (यूनानी: ***अमॉमोस***) यह बताता है कि जो दोषरहित हो या आरोपी न हो। ''बेदाग'' शब्द (यूनानी: ***एसपायलोस***) प्रगट करता है जो ''दाग रहित, स्वच्छ, या धब्बारहित, किसी कलंक या भर्त्सना से मुक्त हो।'' व्यवस्था कि अनुसार, बलिदान की जाने वाले मेम्ने को समस्त प्रकार के दोषों से मुक्त होना चाहिये (लैव्यव्यवस्था 22:20–25; गिनती 6:14; 28:3, 9)। इस तरह मसीह के लिये सब प्रकार से पाप से मुक्त होना आवश्यक था।

इ. 1 पतरस 2:22

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यह संपूर्ण पद, मसीह के विषय में भविष्याणी जो यशायाह 53:9 के सैप्टयूजिंट संस्करण में पायी जाती है, उससे लिया गया है। यह प्रभु यीशु मसीह की पापरहित सिद्धता के बारे में प्रबल और स्पष्ट कथन है। बाइबल में, किसी व्यक्ति का मुंह या उसकी वाणी, उसके हृदय की दशा का संकेत देती है (यशायाह 6:5; मत्ती 15:18)। मसीह की वाणी छलरहित थी क्योंकि उसका हृदय में छल नहीं था। याकूब लिखता है, ''जो अपनी बातों में नहीं चूकता, वही सिद्ध मनुष्य है और सारी देह पर भी नियंत्रण रख सकता है'' (याकूब 3:2)। सरल सा तर्क है: यीशु ने जो कहा, वे उसे पूरा करने में नहीं चूका क्योंकि वह सिद्ध जन था।

ई. 1 युहन्ना 3:5

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह पाप से अज्ञात था (2 कुरिन्थियों 5:21) और उसमें कोई पाप नहीं था (1 यूहन्ना 3:5)

अध्याय 8: पुत्र ने हमारे पाप को उठा लिया

मसीह का क्रूस हमारे विचार में उसके अपमान और शारीरिक कष्ट को लाता है जो उसने सहा। क्रूस की मृत्यु घोर निरादर और यंत्रणा से भरी होती थी। तौभी, शारीरिक कष्ट और शर्म जो मनुष्यों द्वारा मसीह के ऊपर लाद दी गयी थी, वह क्रूस का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू नहीं था। हम मात्र इसलिये नहीं बचाये गये कि मनुष्यों ने उसे कोड़ों से पीटा और क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया। हमें इसलिये छुटकारा मिला है क्योंकि उसने हमारे पाप अपने ऊपर ले लिये और परमेश्वर के न्याय तले कुचला गया।

पुत्र हमारे स्थान पर खड़ा हुआ

पुत्र के देहधारण और उसके सिद्ध जीवन का उद्देश्य बाइबल के इस सत्य में मिलता है कि वह अपने लोगों के बदले उनका स्थान लेने के लिये आया। उनके दोषों को उठा लेने के लिये आया, न्याय के लिये उनके स्थान पर खड़े होने के लिये आया, और मृत्यु का दंड भुगतने के लिये आया। बाइबल के सबसे बड़े मुख्य विषयों में से यह एक विषय है और मसीही विश्वास की आधारशिला है। इस कारण से मसीह का कार्य अक्सर ***प्रतिनिधित्व*** का कार्य कहलाता है। ''प्रतिनिधि'' शब्द लेटिन भाषा के ***विकेरियस*** (***विचिस*** = परिवर्तन, अदल – बदल या स्थान शब्द) से निकला है और स्थान बदलने या किसी के बदले में खड़े होने की ओर संकेत करता है।

मसीह अपने लोगों ''के स्थान पर'' मराः

यूनानी पूर्वसर्ग ***ऐंटी*** का प्रयोग, क्रूस पर मसीह की मृत्यु अपने लोगों के लिये हुई, इस संदर्भ में किया गया है।[1] पूर्वसर्ग का अर्थ है ''बदले में'' या ''स्थान पर।''

> मत्ती 2:22: ''परन्तु यह सुनकर की अरखिलाउस अपने पिता **के स्थान पर** यहूदिया में राज्य कर रहा है, वहां जाने से ड़रा। फिर स्वप्न में परमेश्वर से चेतावनी पाकर वह गलील के प्रदेश मे चला गया।''

1 See also Mark 10:45 for another example of the use of this preposition.

मत्ती 20:28: ''जिस प्रकार मनुष्य का पुत्र भी अपनी सेवा–टहल कराने नहीं वरन् सेवा करने और **बहुतों के** छुटकारे के मुल्य में अपना प्राण देने आया''

मसीह अपने लोगों ''के स्थान पर'' मराः

यूनानी पूर्वसर्ग **पैरी** का प्रयोग, क्रूस पर मसीह की मृत्यु अपने लोगों के लिये हुई, इस संदर्भ में किया गया है।[2] पूर्वसर्ग का अनुवाद अक्सर ''के लिये'' किया जाता है।

मत्ती 26:28: ''क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है जो **बहुत लोगों के निमित्त** पापों की क्षमा के लिए बहाया जाने को है।''

1 युहन्ना 4:10: ''प्रेम इस में नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परन्तु इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित्त **के लिए** अपने पुत्र को भेजा। ''

मसीह अपने लोगों ''के लिए'' मराः

यूनानी पूर्वसर्ग ***हाइपर*** का प्रयोग, क्रूस पर मसीह की मृत्यु अपने लोगों के लिये हुई, इस संदर्भ में किया गया है।[3] पूर्वसर्ग का अर्थ ''के लिए'' है।

युहन्ना 10:11: ''अच्छा चरवाहा मैं हूँ अच्छा चरवाहा भेड़ों **के लिए** अपना प्राण देता है।''

2 कुरिन्थ. 5:15: ''और वह सब **के लिए** मरा कि वे जो जीवित हैं आगे को अपने लिए न जीएं परन्तु **उसके लिए** जीएं, जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा। ''

1 पतरस 3:18: ''मसीह भी सब पापों के लिए एक ही बार मर गया, अर्थात् **अधर्मियों के लिए** धर्मी, जिस से वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए, शरीर के भाव से तो वह मारा गया, परन्तु आत्मा के भाव से जिलाया गया।''

मसीह अपने लोगों ''की खातिर'' मरा

यूनानी पूर्वसर्ग ***डाय*** का प्रयोग, क्रूस पर मसीह की मृत्यु अपने लोगों के लिये हुई, इस संदर्भ में किया गया है। पूर्वसर्ग का अर्थ ''की खातिर'' या ''क्योंकि'' है।

1 कुरिन्थ. 8:11: ''क्योंकि तेरे ज्ञान के द्वारा वह जो निर्बल है नाश हो जाएगा–अर्थात् वह भाई **जिसके लिए** मसीह मरा।''

---

2 See also I John 2:2 for another example of the use of this preposition.

3 See also Mark 14:24; Romans 5:6, 8; Galatians 3:13; Ephesians 5:2; I Timothy 2:6; Titus 2:14; and I John 3:16 for more examples of the use of this preposition.

2 कुरिन्थि. 8:9: ''क्योंकि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह को जानते हो, कि धनी होते हुए भी, वह **तुम्हारे लिए** निर्धन बन गया कि तुम उसकी निर्धनता के द्वारा धनी बन जाओं।''

पुत्र ने हमारे पाप उठा लिये

बाइबल में, हम सीखते आदम के पाप संपूर्ण मनुष्य जाति के भीतर ***अध्यारोपित*** पाये जाते हैं। परमेश्वर की सिद्ध धार्मिकता और गूढ़ बुद्धि में, उसने आदम के पाप को समस्त मानव जाति का पाप माना; इसलिये ***आदम में होकर*** सभी मनुष्यों ने पाप किया है और आदम के पाप के दोषी हैं। आगे आने वाले पृष्ठों में, आध्यारोपित किये जाने के दूसरे पहलू पर विचार करेंगे – मसीह पर हमारे पाप आध्यारोपित किये गये। जैसे आदम का पाप समस्त मानव जाति में आध्यारोपित हुआ, वैसे ही परमेश्वर के लोगों के पाप मसीह पर आध्यारोपित किये गये।

1. पुराने नियम में, परमेश्वर के लोगों के स्थान पर, जानवरों का बलिदान किया जाना एक प्रतिछाया मात्र या प्रकार था जिसने अंततः अपनी पूर्णता मसीह में पाई। तौभी, जानवरों के इस बलिदान ने बहुत ही उत्तम ढंग से यह चित्रण प्रस्तुत किया कि कैसे मसीह परमेश्वर के लोगों के पाप को वहन करेगा और उनके बदले अपने जीवन का बलिदान चढ़ायेगा। आप (लैव्यव्यवस्था 16:21–22) को पढ़िये; एवं वर्णन कीजिये कि यह कैसे मसीह के बलिदान से संबंद्ध है।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: चूंकि एक बलिदान द्वारा मसीहा की स्थानापन्न मृत्यु के द्विस्तरीय उद्देश्य का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करना असंभव था, इसलिए लोगों के सामने दो बलिदानी बकरों को अर्पित किया गया, (लैव्यव्यवस्था 16:5–10)। पहला बकरा परमेश्वर के समक्ष पापबलि के लिये मारा जाता था और उसका रक्त, पवित्र स्थान में पर्दे के पीछे, प्रायश्चित के ढंकने के ऊपर और सामने छिड़का जाता था (पद 9,15,20) । यह मसीह की प्रायश्चित स्वरूप मृत्यु का एक अदभुत चित्रण था – उसने परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट करने के लिये, उसके क्रोध को तृप्त करने व शांति स्थापित करने के लिये अपना लहू बहाया। परमेश्वर के समक्ष, दूसरा बकरा अजाजेल के स्वरूप प्रस्तुत किया जाता था (पद 10)। इस बकरे के सिर पर महायाजक ''अपने दोनों हाथ रखता था _____ और उसके ऊपर इस्राएलियों के सारे अधर्म और उनके सारे

अपराधों और पापों का अंगीकार करता था (करे)'' (पद 21)। अजाजेल को तब लोगों के सारे अधर्मो को लादे, निर्जन स्थान में भेज दिया जाता था (पद 21 – 22)। यह बकरा मसीह का प्रतीक है, जिसने ''अपनी ही देह में क्रूस पर हमारे पापों को उठा लिया'' (1 पतरस 2:24) और दुःख उठाया व अकेले ''छावनी के बाहर'' मर गया (इब्रानियों 13:11 –12)। यह मसीह की प्रायश्चित स्वरूप मृत्यु का अदभुत चित्रण है – वह हमारे पापों को अपने ऊपर ले लेता है। भजनकार ने लिखा था, ''उदयाचल से अस्ताचल जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हमसे उतनी ही दूर कर दिया है'' (भजन 103:12)।''

2. पुराने नियम में किये गये बलिदानों का वर्णन केवल प्रतिछाया या प्रतीक मात्र थे, जो आगे चलकर अंततः मसीह में पूर्ण हुए। वह एक महान पाप–वाहक था जिसने हमारे पापों का दंड चुकाने के लिये अपने जीवन का बलिदान दिया। इस सत्य के विषय में निम्न पद हमें क्या सिखाते हैं?

अ. यशायाह 53:6

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: प्रभु (इब्रानीः ***याहवे***) ने अपने लोगों के पाप उसके एकलौते पुत्र पर अध्यारोपित कर दिये। ''गिरना'' शब्द किसी के ऊपर लद जाना या गिर पड़ने का संकेत देता है। परमेश्वर के लोगों के पाप, मसीह के ऊपर इस तरह लाद दिये गये जैसे कोई जर्बदस्त, शीघ्रता से फैलने वाली हिंसा हो, जैसे किसी एक सेना का आक्रमण हो या अचानक किसी निर्मम तूफान का आक्रमण हो (पढ़िये यशायाह 53:11 –12)।

ब. 2 कुरिन्थ. 5:21

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह को उसी तरह पाप ठहराया गया जैसे एक विश्वासी को ''परमेश्वर की धार्मिकता'' बना दिया जाता है। जिस क्षण एक व्यक्ति यीशु में विश्वास करता है, उसको उसके पापों से क्षमा मिल जाती है और मसीह की धार्मिकता उसके भीतर अध्यारोपित कर दी जाती है अथवा उसके लेखे में दर्ज कर ली जाती है। परमेश्वर वैधानिक रूप से विश्वासी को धर्मी घोषित करता है और उससे धर्मी के समान व्यवहार करता है। जब मसीह क्रूस पर टंगे हुआ था, वह वास्तव में भ्रष्ट और अधर्मी नहीं हो गया था; परंतु परमेश्वर ने हमारे पापों को उसके भीतर अध्यारोपित कर दिया था, उसे वैधानिक तौर पर अपराधी घोषित किया और उससे अपराधियों जैसा व्यवहार किया।

क. इब्रानियों 9:27–28

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह के देहधारण और मरण का उद्देश्य यह था कि वह अपने लोगों के पाप को उठा सके। ''उठाना'' शब्द यूनानी ***आनाफेरो*** से निकला है, जिसका शाब्दिक अर्थ है ''वहन करना।''

ड. 1 पतरस 2:24

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''उठाया'' शब्द यूनानी ***आनाफेरो*** से निकला है, जिसका शाब्दिक अर्थ है ''वहन करना।'' क्रूस पथभ्रष्ट मानवता द्वारा प्रताड़ना देने का क्रूरतम साधन था, तौभी यह वह वेदी थी, जिस पर परमेश्वर के पुत्र ने अपना बलिदान चढ़ाया था। क्रूस पर मसीह के मरण का उद्देश्य न केवल परमेश्वर के साथ संबंध स्थापित करना है बल्कि हमें परमेश्वर की उस सामर्थ द्वारा सक्षम बनाना है कि हम पाप के प्रति मर सकें और धार्मिकता के लिये जीयें। पतरस, यशायाह 53:5 को लेकर, न केवल शारीरिक चंगाई के संदर्भ में, परंतु पाप और उसके परिणामों से चंगाई के संदर्भ में भी उद्धरण देता है।

3. इस खंड को समाप्त करते हुए, हम यूहन्ना 3:14 –15 पर विचार करेंगे, जो एक बहुत महत्वपूर्ण अंश है। मसीह द्वारा अपने लोगों के पापों को अपने ऊपर उठा लेने के विषय में, यह पद क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यीशु के वचन गिनती 21:5–9 के संदर्भ में समझना आवश्यक है। इजरायलियों द्वारा परमेश्वर के प्रति निरंतर विद्रोह और उसके अनुग्रहपूर्ण प्रावधानों को अस्वीकार करने के कारण परमेश्वर ने उन लोगों के बीच ''विषैले सर्प'' भेजे और बहुत से लोग उनके डसने से मर गए। यद्यपि, लोगों के प्रायश्चित करने और मूसा के मध्यस्थी करने पर, परमेश्वर ने एक बार फिर उनके उद्धार के लिये रास्ता तैयार किया। उसने मूसा को ''एक विषैला सर्प बनाकर खंभे पर लटकाने के लिये कहा।'' उसने तब प्रतिज्ञा की कि सर्प से डसा व्यक्ति जब कांसे के सर्प को देखेगा, तो वह जीवित रहेगा। यह घटना क्रूस की एक सशक्त तस्वीर प्रस्तुत करती है। इजरायली लोग विषैले सर्प के जहर से मर रहे थे; वैसे ही मनुष्य अपने स्वयं के पापों के जहर से मरते है। मूसा को आज्ञा दी गयी कि मरण के कारण को खंभे पर ऊंचा लटकाया जाये; परमेश्वर ने हमारे मरण के कारण को अपने स्वयं के पुत्र के ऊपर लादकर उसे क्रूस पर ऊंचाई पर लटका दिया; वह ''पापमय शरीर की समानता में'' आया (रोमियों 8:3) और ''हमारे लिए पाप'' ठहराया गया (2 कुरिन्थियों 5:21)। वे इस्राएली जिन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया और कांसे के सर्प को देखा, वे जीवित रहे; वैसे ही जो मनुष्य परमेश्वर द्वारा अपने पुत्र के लिये दी गई गवाही पर विश्वास करता है और उसकी ओर विश्वास से देखता है, वह बचाया जायेगा (1 यूहन्ना 5:10–11)।

अध्याय 9: पुत्र शाप बना

इसके पूर्व अध्याय में, हमने सीखा कि मसीह हमारे स्थान पर ''पाप ठहराया गया।'' इस अध्याय में, हम इतने ही अबोधगम्य सिद्धांत पर विचार करेंगे कि मसीह हमारे लिये श्रापित हो गया। बाइबल स्पष्टतः शिक्षा देती है कि जितनों ने पाप किया है, वे व्यवस्था के अधीन श्रापित हैं। हमें बचाने के लिये परमेश्वर का पुत्र मनुष्य बना, हमारे अपराधों को अपने ऊपर ले लिया और हमारे स्थान पर श्राप बन गया।

1. गलातियों 3:10 परमेश्वर के समक्ष मनुष्य की पापमय, पतित अवस्था के विषय में क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''जो लोग व्यवस्था के कामों पर निर्भर हैं,'' यह वाक्यांश उनके संदर्भ में है जो स्वयं के नैतिक गुण, व्यक्तिगत धर्मीपन या परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी रहकर परमेश्वर के समक्ष स्वयं को ग्रहणयोग्य बनाने पर निर्भर रहते हैं। बाइबल घोषित करती है कि ऐसे सभी व्यक्ति श्राप के अधीन हैं क्योंकि व्यवस्था एक सिद्ध और अखंडित आज्ञाकारिता चाहती है जिसे कोई मनुष्य कभी पूर्ण नहीं कर सकता है। ''श्राप'' शब्द यूनानी भाषा के ***कतारा*** शब्द से निकला है, जिसका अनुवाद ''फटकार,'' ''अभिशाप'' अथवा ''लानत'' भी किया जा सकता है। यह किसी वस्तु या व्यक्ति का तीव्र अरूचि, नफरत या घृणा के साथ प्रचंड बहिष्कार करने को वर्णित करता है। स्वर्गिक दृष्टिकोण से, जो परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ते हैं, वे घृणित होते हैं और सब प्रकार की नफरत के योग्य होते हैं; वे उचित ईश्वरीय प्रतिशोध के लिये अनावृत होते हैं और शाश्वत विनाश के योग्य होते हैं। यद्यपि ऐसी भाषा संसार को घृणास्पद लग सकती है और कई

उन लोगों को जो स्वयं को मसीही मानते हैं, परंतु यह बाइबल की भाषा है और इसे बताया जाना आवश्यक है। अगर शिष्टाचारवश हम बाइबल के इन कठिन सत्यों को समझाने और व्याख्या करने से इंकार करते हैं, तो परमेश्वर पवित्र नहीं समझा जायेगा एवं मनुष्य स्वयं की भीषण दुर्दशा को नहीं समझ पायेंगे और मसीह के द्वारा चुकाये गये मूल्य के प्रति कभी भी वास्तविक ढंग से आभार नहीं व्यक्त किया जा सकेगा। जब तक हम यह समझ न ले कि मनुष्य के लिये ईश्वरीय शाप के अधीन होना क्या होता है, तब तक हम कदापि नहीं समझ पायेंगे कि मसीह का ''हमारे लिये शापित हो जाना'' क्या था। कलवरी पर हमारे लिये जो कुछ किया गया उसके खौफ और सुंदरता को हम कभी पूर्ण रूप से समझ नहीं पायेंगे!

2. गलातियों 3:13 के अनुसार, मसीह ने हमें पापों से मुक्ति दिलाने के लिये क्या किया?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''मुक्ति दिलायी'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***एक्जागोलायजो*** से निकला है, अर्थात ''किसी के अधीन किसी वस्तु या व्यक्ति को छुड़ाने के लिये मूल्य चुकाना।'' अक्सर इसका उपयोग किसी कर्जदार या गुलाम को मूल्य चुकाकर स्वतंत्र करवाने के लिये किया जाता है। मसीह ने अपने ऊपर हमारे पापों को ले लिया और ईश्वरीय अभिशाप का पात्र बन गया, ताकि अपने लोगों के स्थान पर इसे पूर्ण करने का कार्य कर सके। वह प्रचंडता के साथ अपराधी के रूप में त्यागा गया और पाप के विरूद्ध पवित्र परमेश्वर के संपूर्ण क्रोध को महसूस किया। उसने हमारे खातिर, ईश्वरीय दंड का सबसे पृथक रूप सहन किया।

3. ईश्वरीय श्राप, ईश्वरीय आशीष का विलोम (विपरीत अर्थ में) है। मत्ती 5:3–12 में परम आनंद के वर्णन में, हम पाते हैं कि परमेश्वर के समक्ष आशीषित होना क्या होता है। इन आशीषों को पहचानने से और उनके विपरीत (विलोम) बातों पर विचार करने से, हम सीखते हैं कि मसीह के लिये हमारे स्थान पर श्रापित कहलाना क्या हो सकता था।

अ. धन्य लोगों को स्_____ का राज्य सौंपा गया है (पद 3), परंतु श्रापित लोगों को प्रवेश से वंचित रखा गया है।

ब. धन्य लोगों को परमेश्वर द्वारा शां_____प्रदान की गयी है (पद 4), परंतु श्रापित ईश्वरीय क्रोध के पात्र होंगे।

क. धन्य लोग पृथ्वी के उत्त_____ कहलायेंगे (पद 5), परंतु श्रापित को इससे पृथक कर दिया गया है।

ड. धन्य लोग तृ_____ किये गये हैं (पद 6), परंतु श्रापित दुःखी और घृणायोग्य होंगे।

इ. धन्य लोगों पर द_____ की जायेगी (पद 7), परंतु श्रापित को निर्ममता के साथ दंड मिलता है।

ई. धन्य लोग परमे_____ को देखेंगे (पद 8), परंतु श्रापित उसकी उपस्थिति से दुर कर दिए जाते हैं।

उ. धन्य लोग परमेश्वर के पु_____ हैं (पद 9), परंतु श्रापित अनुग्रहविहिन होते हैं।

टिप्पणियां: कलवरी के क्रूस पर, मसीह ने अपने लोगों के पापों को अपने ऊपर लेकर ईश्वरीय श्राप को पूरी प्रबलता के साथ सहन किया। वह परमेश्वर द्वारा त्यागा गया (मत्ती 27:46) और अपने लोगों के स्थान पर ईश्वरीय क्रोध का प्याला पिया (मत्ती 26:39, भजन 75:8; यिर्मयाह 25:15–16)। उसने हमारे दुःखों को उठा लिया और परमेश्वर के क्रोध का मारा हुआ और दुर्दशा में पड़ा हुआ था (यशायाह 53:4)। हमारी खातिर, परमेश्वर को यह भाया कि वह उसे कुचले और पीड़ित करें (यशायाह 53:10)

4. गिनती 6:24–26 में, हमें परमेश्वर द्वारा मनुष्य को प्रदान की गयी, सबसे सुंदर आशीषों की प्रतिज्ञा में से एक मिलती है। फिर भी, यह आशीष हमारे सामने एक बड़ी धर्मविज्ञानी समस्या को रखती है। कैसे एक धर्मी परमेश्वर अपनी धार्मिकता से समझौता किये बिना, पापी लोगों को ऐसी आशीष सौंप सकता है? पुनः उत्तर मसीह के क्रूस में मिलता है! पापी तभी आशीषित हो सकता है क्योंकि मसीह उसके स्थान पर श्रापित किया गया! कोई भी और किसी प्रकार की भी आशीष जो परमेश्वर ने कभी अपने लोगों को प्रदान की हो या कभी भी करेगा क्योंकि मसीह हमारे लिये क्रूस पर श्रापित हुआ। गिनती 6:24–26 में प्रदत्त हरेक आशीष को पहचानने से और तब उसके विपरीत बातों पर विचार करने से, हम इस बारे में कुछ सीख सकते हैं कि हमारे स्थान पर श्राप हो जाना मसीह के लिये क्या था।

अ. प्रभु तुझे आ_____ देवे, और तेरी र_____ करे (पद 24)। यह केवल तभी संभव है क्योंकि पिता ने मसीह को श्राप बनाया और उसे नष्ट होने के लिये दे दिया।

ब. प्रभु अपने मुख का प्रकाश तेरे ऊपर च_____ और तुझ पर अ_____ करे पद 25। यह केवल तभी संभव है क्योंकि परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति का प्रकाश मसीह से हटा लिया था और बिना दया किये अपने सिद्ध न्याय के साथ उसे दंडित किया।

क. प्रभु अपना मुख तेरी ओर करे और तुझे शां_____ दे पद 26। यह केवल तभी संभव हुआ, क्योंकि परमेश्वर ने मसीह की ओर से अपने मुख को फेर लिया था और अपना क्रोध उस पर उड़ेल दिया था। भजनकर्ता "धन्य" उनको कहता है, जो

उसकी उपस्थिति के हर्ष से आनंदित किये गये हैं (भजन 21:6) जो आनंद की ललकार को पहचानते हैं, और उसके अनुग्रह के प्रकाश में चलते हैं (भजन 89:15)। हमारे लिए, मसीह अपने पिता की अनुपस्थिति द्वारा दुःखी किया गया, उसने न्याय की तुरही की खौफनाक गूंज को जाना और परमेश्वर की असहनीय हाय के समक्ष अंधकार में लटका रहा। आदम के दुर्भाग्यपूर्ण चयन के परिणाम स्वरुप संपूर्ण सृष्टि श्राप के अधीन कराहती है और भ्रष्टता व विनाश के अधिन कर दी गई है (रोमियों 8:20–22)। सृष्टि को मुक्त करने के लिये, मसीह अंतिम आदम ने अपने लोगों के पाप अपने ऊपर ले लिये जो भीषण बोझ तले कराह रहे थे। हमारा मेलमिलाप परमेश्वर से केवल इसलिए हो पाया है (रोमियों 5:1) क्योंकि मसीह ने परमेश्वर द्वारा हमारे पाप के विरूद्ध छेड़े गये युद्ध की प्रबलता को कलवरी के क्रूस पर सहा।

5. भजन 32:1–2 में (पढ़िये रोमियों 4:7–8), वास्तविक रूप से आशीषित व्यक्ति का वर्णन दाऊद किस प्रकार करता है? ऐसी आशीष कैसे संभव है?

   अ. जिसका अपराध_____ और जिसका पाप _____ गया हो! (पद 1) कैसे एक पवित्र और धर्मी परमेश्वर पाप को ढांपकर धर्मी बना रह सकता है? यह केवल तभी संभव है क्योंकि मसीह ने हमारे पाप को अपने ऊपर ले लिया और परमेश्वर व स्वर्ग की सेना के समक्ष अनावृत हो गया। वह मनुष्यों के सामने विज्ञापित किया गया और स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं के सामने समान रूप से दर्शनीय बनाया गया। जो अपराध उसने अपनी देह में सहे, उन्हें क्षमा नहीं किया गया था और न ही उठाये गये पापों को ढांपा गया।

   ब. प्रभु जिसके अधर्म का ले_____न ले और जिसे पा_____ न ठहराये (पद 2) । यह केवल तभी संभव हुआ, जब क्रूस पर हमारे पाप मसीह के ऊपर अध्यारोपित कर दिये गये। अगर एक व्यक्ति आशीषित गिना गया है तो केवल इसलिए क्योंकि उसका अधर्म उसपर नहीं गिना गया, तो समझा जा सकता है कि मसीह असीमित रूप में शापित बनाया गया, क्योंकि हम सब के अधर्म का बोझ उस पर लाद दिया गया (यशायाह 53:6)।

6. व्यवस्थाविवरण के सत्ताइसवें और आठ्ठाइसवें अध्याय में, परमेश्वर ने इजरायल देश को दो अलग समूहों में बांट दिया। उसने एक समूह को गिरिज्जीम पर्वत पर रखा और दूसरे को एबाल पर्वत पर रखा। गिरिज्जीम पर्वत के समूह को, परमेश्वर की आज्ञा पालन करने वाले लोगों को मिलने वाली आशीषों को घोषित करने की आज्ञा हुई (व्यवस्थाविवरण 28:1–14)। जो एबाल पर्वत पर थे उन्हें ईश्वरीय न्याय के तहत अनाज्ञाकारियों के ऊपर पड़ने वाले भयानक श्रापों को घोषित करने की आज्ञा हुई (व्यवस्थाविवरण 28:15–68)।

   अ. बाइबल हमारे पाप के विषय में जो सिखाती है, उसके संदर्भ में दो पर्वतों में से कौनसा पर्वत हमसे सबसे अधिक संबंध रखता है? हमारे कार्यो के प्रकाश में, क्या स्वर्गिक आशीषें अथवा स्वर्गिक श्राप हमारे ऊपर लागू होने चाहिये? अपने उत्तर को समझाइये।

   _____

   _____

_____

_____

ब. व्यवस्थाविवरण 29:20–21, परमेश्वर पुनः एबाल पर्वत से दिये जाने वाले दंड को बताता और सारगर्भित करता है। इस पद के अनुसार, परमेश्वर उसकी व्यवस्था के प्रति अनाज्ञाकारी रहने वाले के विरूद्ध और परमेश्वर की वाचा तोड़ने वाले के लिये क्या घोषणा करता है?

_____

_____

_____

_____

क. मसीह का कलवरी पर दुःख उठाना और उनकी मृत्यु किस तरह हमें ऐसे न्याय से बचाती है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः कलवरी पर, मसीहा दुःख उठाने के लिये ''चुना गया'' और ''हरेक श्राप'' जो व्यवस्था की पुस्तक में लिखा हुआ है उसके ऊपर आ पड़ा। यद्यपि मसीह के पास गिरिज्जीम की हरेक आशीष लेने का अधिकार था, तौभी एबाल पर्वत से उसके अपने पिता उसके विरूद्ध गरजे जब वह कलवरी के क्रूस पर लटकाया गया। वह एक मनुष्य के समान श्रापित ठहराया गया जो मूर्ति बनाता है और उसे गुप्त में स्थापित करता है। वह उसके समान श्रापित ठहराया गया जो अपने पिता या माता का अनादर करता है, या जो किसी अंधे को मार्ग से भटकाता है। वह उसके समान श्रापित किया गया जो किसी परदेशी, अनाथ या विधवा का न्याय बिगाड़ता है। वह उसके समान श्रापित किया गया जो हर प्रकार की अनैतिकता और विकृति का दोषी हो, जो अपने पड़ोसी को गुप्त में घात करता है अथवा किसी मासूम पर प्रहार करने के लिये घूस स्वीकार करता है। वह ऐसे श्रापित किया गया मानो व्यवस्था में लिखी बातों को पूर्ण नहीं करता हो (व्यवस्थाविवरण 27:15–26) । नीतिवचन 26:2 कहता है, ''अकारण दिया गया शाप नहीं ठहरता।'' किन्तु, शाप पापविहीन मसीह के ऊपर आ पड़ा क्योंकि उसने अपने लोगों के पापों को परमेश्वर के न्याय दंड के आगे उठा लिया।

अध्याय 10: पुत्र ने परमेश्वर के क्रोध को सहा

प्रारंभ के अध्यायों में, हमने पाया था कि मसीह ने हमारे पाप और हमारे श्राप को अपने ऊपर उठा लिया, जब वह परमेश्वर के समक्ष क्रूस पर टांगा गया। इस अध्याय में, हम सीखेंगे कि मसीह ने हमारे पाप को इसलिए उठाया ताकि वह पाप के विरूद्ध परमेश्वर के क्रोध को सह सके। ऐसा करने में, वह परमेश्वर के न्याय की मांग को संतुष्ट करता है और इस बात को संभव बनाता है कि परमेश्वर धर्मी और पापी मनुष्य को धर्मी ठहरानेवाला दोनो ही बन सके (रोमियों 3:25–26)।

मसीह परमेश्वर द्वारा त्यागा गया

परमेश्वर के क्रोध का एक पहलू यह था कि मसीह ने परमेश्वर पिता द्वारा त्यागा जाना या अलगाव को सहन किया था। परमेश्वर नैतिक रूप से सिद्ध हैं और समस्त बुराई से परे हैं। उसके लिये यह असंभव है कि वह पाप से आनंदित हो या जो अधर्मीपन का निर्वाह करते हैं, उनकी संगति में बने रहे। इसके कारण, परमेश्वर के लोगों का पाप एक बड़ी और अभेद्य दीवार बनकर खड़ा हुआ जिसने परमेश्वर के साथ संगति को असंभव में बदल दिया। परमेश्वर और मनुष्य के मध्य इस बड़े अलगाव को सुधारने के लिये, मसीह हमारे स्थान पर खड़े हुए और हमारे पापों का दोष वहन किया एवं परमेश्वर द्वारा त्यागे गये जब तक कि हमारे पापों का दंड पूरी तरह चुकाया नहीं गया।

1. बाइबल परमेश्वर के विषय में हबक्कूक 1:13 में क्या घोषित करती है?

   अ. उसकी आंखें इतनी शु_____ हैं कि बु_____देख ही नहीं सकती।

   ब. वह दु_____पर दृ_____नहीं कर सकता ।

2. यशायाह 59:2 के अनुसार, पाप किस प्रकार, परमेश्वर की मनुष्य के साथ संगति को प्रभावित करता है? क्या परमेश्वर दुष्ट के साथ संगति कर सकता है?

   _____

   _____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मनुष्य की सतत पतित अवस्था और परेशानी परमेश्वर के व्यक्तित्व में किसी कमी के कारण नहीं है। यह तो मनुष्य का पाप है जो उसके और परमेश्वर के मध्य रसातल को निर्मित करता है; पाप अभेद्य दीवार को निर्मित करता है। मनुष्य की परेशानी का सच्चा अपराधी स्वयं मनुष्य है – ऐसा परमेश्वर के व्यक्तित्व के प्रति उसकी शत्रुता और परमेश्वर की आज्ञा के प्रति उसके विद्रोहीपन के कारण है।

3. इफिसियों 2:12 में पापी को किस तरह वर्णित किया गया है?

   *अ. मसीह से अ_____। यह यूनानी शब्द **कोरिस** से लिया गया है, जो अलगाव और स्वतंत्रता को प्रदर्शित करता है। पापी मनुष्य, अलग होकर रहता है अथवा समस्त जीवन, आनंद और शांति के दाता से स्वतंत्रत होकर रहता है।*

   *ब. इजरायल की प्रजा कहलाये जाने से वं_____। यह यूनानी शब्द **अपोलोट्रियो** से लिया गया है, अर्थात ''पृथक या विमुख होना।'' पापी जन परमेश्वर के लोगों से पृथक हो जाता है।*

   *क. प्रतिज्ञा की गई वाचाओं के भागी_____ न थे। यह यूनानी शब्द **जीनोस** से निकला है, जिसका अर्थ है, एक अजनबी अथवा परदेशी। पापी जन परमेश्वर की समस्त प्रतिज्ञाओं से अंजान रहता है।*

   ड. आशा_____ तथा संसार में परमेश्_____थे। संभवतः मनुष्य के पाप का सबसे अधिक डरावने वाला परिणाम है।

4. परमेश्वर के लोगों का पाप एक अभेद्य दीवार बनकर खड़ा था जिसने परमेश्वर के साथ संगति को असंभव बना दिया था। परमेश्वर और उसके लोगों के मध्य, इस बड़े अलगाव को सुधारने के लिये, मसीह हमारे स्थान पर खड़ा हुआ, हमारे पाप अपने ऊपर लिये और परमेश्वर द्वारा त्याग दिया गया। उसने परमेश्वर की विमुखता को सहा और उसकी अनुकूल उपस्थिति से वंचित रहा जब तक कि पाप का दंड पूर्ण रूप से चुकाया नहीं गया। मत्ती 27:45–46 में इस सत्य को किस प्रकार समझाया गया है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: क्रूस पर से यीशु की पुकार यहां इब्रानी और अरामी में दर्ज की गयी है। ***एली*** इब्रानी शब्द है, परंतु शेष अरामी भाषा में है। मरकुस संपूर्ण विलाप को अरामी भाषा में दर्ज करता है (मरकुस 15:34)। ''त्यागा गया'' शब्द, यूनानी शब्द ***एकाटालायपो*** से अनुवादित है, जिसका अर्थ है, ''त्यागना, छोड़ना, बुरी दशा में छोड़ना।''

5. मत्ती 27:46 में, यीशु दाऊद के भजन 22:1–18 से उद्धरण दे रहा था। इस पाठ को पूरा पढ़िये और तब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

अ. पद 1–2 में मसीह की कौनसी पुकार या शिकायत थी? इसका क्या अर्थ है?

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''त्यागा गया'' शब्द इब्रानी शब्द ***आजायब*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''छोड़ना, परित्याग करना, तजना, छोड़ देना।'' दाऊद ने उसकी परीक्षा की घड़ी में, परमेश्वर की अनुपस्थिति का अनुभव किया था; परंतु केवल मसीह ने पूर्ण परिमाण से बिल्कुल ही छोड़े जाने का अनुभव किया। ''कराहना'' शब्द इब्रानी शब्द ***शीहाग*** से निकला है, जो शाब्दिक रूप से शेर के समान ''दहाड़'' को बताता है। मसीह की तीव्र व्यथा की पुकार क्रूस से भयानक दहाड़ के समान फूट निकली। उसकी तलाश अनवरत थी; उसकी पुकार स्थायी थी; उसकी व्यथा आकलन से परे थी। आसमान कांस्य वर्णीय हो चला था। परमेश्वर की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं थी; केवल चुप्पी और मसीह के प्रिय जन की उपस्थिति का अभाव था। हम पाप के कारण परमेश्वर से अलग हो गये थे। इस अलगाव को समाप्त करने के लिये और हमें पुनः परमेश्वर की अनुकूल उपस्थिति में लाने के लिये, यह आवश्यक था कि मसीह भयावह तौर पर परमेश्वर द्वारा त्यागे जाने का अनुभव करे, जो वास्तव में हमारे लिये ठहराया गया था।

ब. पद 3 और 6 में मसीह के शब्दों के अनुसार, क्यों परमेश्वर ने उसे त्याग दिया या उससे मुंह फेर लिया था?

1. तु प_____ है (पद 3)

टिप्पणियां: अथाह पीड़ा भोगने के मध्य, मसीह, परमेश्वर की पवित्रता में अपने अविचल विश्वास को घोषित करता है। परमेश्वर द्वारा उसे त्यागे जाने के पीछे एक न्यायपूर्ण और पवित्र कारण था – वह उसके लोगों के पाप वहन करने वाला बन चुका था और परमेश्वर के पवित्र क्रोध का पात्र था।

2. मै तो की_____हुँ म_____नहीं।

टिप्पणियां: यद्यपि, वह एक सिद्ध मनुष्य था, वह पापी बनाया गया (2 कुरिन्थियों 5:21) और श्रापित कहलाया (गलातियों 3:13) । यद्यपि, वह बेदाग मेम्ना था (1 पतरस 1:19), वह निर्जन में ऊंचे पर चढ़ाया गया सर्प भी बना (यूहन्ना 3:14), एक कीड़ा बना, मनुष्य नहीं। यद्यपि गिरिज्जम पर्वत की समस्त आशीषें उसके ऊपर उड़ेल दी जानी थी, किंतु एबाल पर्वत के सारे दंड उसके सिर पर उण्ड़ेल दिये गये।

मसीह ने ईश्वरीय क्रोध को सहा

मसीह ने ईश्वरीय क्रोध को सहा, इसका अर्थ त्यागे जाने से बढ़कर था (अर्थात परमेश्वर की अनुकूल उपस्थिति से वंचित होना); इसका यह अर्थ भी है कि वह परमेश्वर के न्याय दंड का मारा हुआ था। परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन हुआ था। ईश्वरीय दंड को किये गये अपराधों के अनुसार आंकना था। न्याय को संतुष्ट होना था; पैमाने को संतुलित होना था। क्रूस पर, मसीह ने उसके लोगों का अपराध वहन किया, परमेश्वर द्वारा त्यागा गया और उसके दंडात्मक न्याय और क्रोध को पूर्ण परिमाण में सहन किया।

1. भजन 7:11–13 पापी के विरूद्ध परमेश्वर के क्रोध की वास्तविकता के बारे में क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''कोप'' शब्द इब्रानी भाषा की क्रिया ***जैअम*** से निकला है, जिसका अर्थ है, आरोप लगाना, कोप व्यक्त करना, या घृणित समझना है, उसके प्रति क्रोधित होना।'' पवित्र और धर्मी होने के कारण, अपने व्यक्तित्व व प्रकृति के विरोध में संपूर्ण क्रोध के साथ परमेश्वर की घृणा आवश्यक थी। परमेश्वर का कोप उाके प्रेम और करुणा के समान ही उसके चरित्र का अभिन्न पहलु है। अगर एक मनुष्य परमेश्वर के व्यक्तित्व और इच्छा के विरोध में निरंतर कार्य करता है, तब परमेश्वर का न्यायसंगत क्रोध निश्चित है। चढ़ा हुआ तीर और धार की गयी तलवार का संदर्भ, परमेश्वर के न्याय करने की तत्परता को प्रदर्शित करते हैं। तैयारियां हो चुकी हैं: उसकी तलवार तेज कर दी गयी है, उसका धनुष तान दिया गया है और उसके तीर सुलग चुके हैं। स्वर्ग की सेना का सेनापति पवित्र युद्ध के लिये तैयार हो चुका है। केवल परमेश्वर की सहनशीलता उसके क्रोध को संसार पर प्रगट होने से रोके हुए है।

2. भजन 7:11–13 में, भजनकर्ता हमें आश्वासन देता है कि परमेश्वर का क्रोध बाइबल की सत्यता है और वह उसके क्रोध की तीव्रता को बताने के लिये, युद्ध के लिये धनुष और धार वाली तलवार जैसी उपमा का प्रयोग करता है। जब कभी परमेश्वर के न्याय और पवित्रता का सामना मनुष्य की बुराई से होता है, तो इसका परिणाम ईश्वरीय घृणा और कोप होता है। हमें परमेश्वर के न्याय की तलवार से बचाने के लिये, यह आवश्यक था कि परमेश्वर का स्वयं का पुत्र हमारे स्थान पर उस प्रहार को अपने ऊपर लेता। जर्कयाह 13:7 में परमेश्वर अपनी तलवार को क्या करने की आज्ञा देता है? किसके विरूद्ध आज्ञा दी गयी है? यह हमें मसीह के कलवरी पर कष्ट सहने के विषय में क्या बताती है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: भजन 7:11–13 में, परमेश्वर के न्याय के लिये तलवार का संदर्भ दिया गया है। वाक्यांश ''मेरा चरवाहा'' मसीहा की ओर संकेत देता है। जर्कयाह 11:15–17 के मूर्ख चरवाहे के विपरीत, वह अच्छा चरवाहा है (यूहन्ना 10:11,14)। वाक्यांश ''मेरा सहयोगी'' इब्रानी शब्द ***आमिथ*** के अनुवाद से लिया गया है, जो एक साथी, मित्र या पड़ोसी को प्रदर्शित करता है। मसीह के संदर्भ में, यह पद विशेष अर्थ लिये हुए है। वह पिता का पुत्र, सहयोगी और घनिष्ठ साथी है। वह और पिता एक हैं (यूहन्ना 10:30)। पुत्र की मृत्यु परमेश्वर की सार्वभौमिक इच्छा का कार्य है। यह पिता थे जिन्होंने अपनी

तलवार पुत्र के विरूद्ध उठायी। मत्ती, मसीह की मृत्यु और उसके चेलों के बिखराव को मत्ती 26:31 में उद्धरण देकर बताता है।

3. यशायाह 53 में, हम मसीह का एक सजीव चित्रण पाते हैं जो परमेश्वर के लोगों के पापों के प्रति परमेश्वर के क्रोध को सहन कर रहा है। निम्न पदो के अनुसार, मसीह था:

*अ. 3. परमेश्वर का मा_____ हुआ पद 4। यह इब्रानी शब्द **नागे** से निकला है जिसका अर्थ है, "मारना, गिराना, पीड़ा देना या पीटना।" परमेश्वर ने अपने न्याय की तलवार को सचेत किया और हमारे स्थान पर दंड सहने वाले के ऊपर प्रहार किया।*

*ब. परमेश्वर द्वारा दु_____ में डाला हुआ पद 4। यह इब्रानी शब्द **नाखा** से निकला है जिसका अर्थ है, "मारना,घायल करना, या मार डालना।" जिन्होंने मसीह को मरते हुए देखा था, उन्होंने उसे सचमुच, परमेश्वर द्वारा त्यागा गया देखा। परंतु वे यह आकलन करने में गलत थे कि यह उनके पापों के कारण हो रहा है, न कि मसीह के पापों के कारण।*

*क. परमेश्वर द्वारा दु_____ से सताया हुआ पद 4। यहा इब्रानी शब्द **अनाह** से निकला है जिसका अर्थ है, "दुःख देना, परेशानी में डालना, कुचलना।" परमेश्वर ने मसीह को उस क्रोध के साथ तब तक पीड़ित किया जब तक कि पाप का दंड पूरा नहीं चुकाया गया।*

*ड. हमारे अपराधों के कारण _____ गया पद 5। यह इब्रानी शब्द **खलयाल** से लिया गया है जिसका अर्थ है किसी प्रकार से भेदना। मसीहा के क्रूसीकरण के समय यह शाब्दिक रूप से पूर्ण हुआ क्योंकि उसे कीलों और भाले से छेदा गया था। यह उपमा स्वरूप पूर्ण किया गया क्योंकि मसीह को उसके पिता की अनुपस्थिति और उसके क्रोध के प्रवाह के द्वारा छेदा गया।*

*इ. हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया पद 5। यह इब्रानी शब्द **डाखा** से लिया गया है जिसका अर्थ है "तोड़ना, टुकड़े में तोड़ना, कुचलना, चोट पहुंचाना, नष्ट करना, बिखरा देना या पीड़ा देना।" मसीह के मरण पर चटटानें दो भाग में टूट गयी थी मत्ती 27:51, यह परमेश्वर के क्रोध का दुर्बल प्रस्तुतीकरण था जिसने मसीह को कलवरी पर कुचला।*

*ई. हमारी शांति के के लिये उस पर ता_____ पड़ी पद 5। यह इब्रानी शब्द **मुसार** से लिया गया है जिसका अर्थ है "ताड़ना, अनुशासित करना, सुधारना या फटकारना। मसीह ने क्रूस पर जिस दण्ड को सहा वह पिता द्वारा पुत्र को सुधारने के लिये दी गयी ताड़ना नहीं थी, अपितु एक न्यायाधीश द्वारा अपराधी को दंडात्मक और प्रतिशोध स्वरूप दी गयी ताड़ना थी।*

*उ. उसके को_____हम चंगे हुए पद 5। यह इब्रानी शब्द **खाबुराह** से लिया गया है जिसका यह अर्थ भी हो सकता है "कोड़े मारना, घायल करना या चोट पहुंचाना।" मसीह हमारे स्थान पर खड़े हुआ और परमेश्वर के क्रोध के कारण कोड़े की मार खाई, वह सजा जो हमारे लिये थी।*

4. सुसमाचारों में, मसीह के बंदी बनाये जाने और क्रूस पर चढ़ाये जाने के पूर्व, गैतसेमनी में की गयी प्रार्थना लिखी हुई मिलती है। संभवतः मसीह के जीवन में कोई और घटना इतनी स्पष्टतः से परमेश्वर के क्रोध के कारण कलवरी के क्रूस पर मिलने वाली भयानक पीड़ा का निरूपण नहीं कर सकती। लूका की पुस्तक 22:41–44 में दर्ज घटनायें हमें मसीह के कलवरी पर आने वाले दुःख के बारे में क्या बताती है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः उस अकथनीय दुःख का, जो मसीह के लिये कलवरी पर राह देख रहा था, निम्नलिखित कथनों से निष्कर्ष निकाला जा सकता हैः 1. मसीह की वह याचना जो कहती है कि दुःख का वह प्याला उसके सामने से हटा दिया जाये; 2. स्वर्गदूतों की उपस्थिति, जो क्रूस की तैयारी के लिये उसको ताकत देने के लिये थी; 3. वह सत्य कि मसीह ने प्रार्थना में बहुत तीक्ष्णता और गहन पीड़ा के साथ संघर्ष किया (''गहन पीड़ा'' शब्द यूनानी ***एगोनिया*** से निकलता है, जिसका उपयोग अक्सर कसरती अभ्यास या कुश्ती के लिये किया जाता है; इसका अनुवाद '' संताप'' के रूप में भी किया जा सकता है) और 4. यह सत्य कि मसीह का लहू पसीने की बूंदों के समान टपक रहा था। मेडीकल शब्दावली में इस अंतिम स्थिति को ***हिमेटीड्रोटिस*** कहते हैं। ऐसा तब होता है जब भयानक मनस्ताप या शारीरिक पीड़ा के समय रक्त पसीने के साथ मिश्रित हो जाता है।

5. उस प्याले में कितनी भयावह सामग्री होगी जो मसीह को मनोस्ताप में तीन बार प्रार्थना करने के लिये विचलित करती है कि उसे वह प्याला न पीना पड़े? इसमें मात्र, दुष्टों के हाथों से मिलने वाली बेपरिमाण क्रूरता ही सम्मिलित नहीं थी, परंतु इसमें परमेश्वर का क्रोध भी सम्मिलित था! निम्नलिखित पद उस प्याले से उंड़ेले जाने वाले परमेश्वर के क्रोध को प्रगट करते हैं, ये बताते है कि यह वह क्रोध है जो मसीह को क्रूस पर पीना था। अपने स्वयं के शब्दों में, प्रत्येक पद को सारगर्भित करें।

अ. भजन. 11:5–6

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: जैसे आशीषें धर्मी के लिये प्याला या उसका भाग होती है (भजन 23:5), वैसे ही दुष्ट के लिये वह प्याला या उसका भाग ठहराया गया है। यह भयावह प्याला होता है और उसमें का भाग घातक होता है। क्रूस पर, परमेश्वर के पुत्र ने प्याला लिया जो प्याला परमेश्वर के लोगों को पीना था और उसने उस प्याले को तलछट तक पीया।

ब. भजन. 75:8

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यह वह परमेश्वर है जो दुष्ट के लिये क्रोध को ठहराता और तैयार करता है। '' तलछट तक'' शब्द, इब्रानी शब्द ***शेमर*** से निकला है, जिसका अनुवाद ''शेष'' भी किया जा सकता है। यह एक शराब की बोतल की तलछट या अवशेष की ओर संकेत करता है। दुष्ट को उस प्याले के अंत तक की हर कड़वी बूंद को पीना होगा। क्रूस पर, परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर के लोगों के स्थान पर खड़ा हुआ, परमेश्वर के हाथ से क्रोध का प्याला लिया और उस की एक एक बूंद को पीया। पाप के विरूद्ध, परमेश्वर के क्रोध से भरे उस प्याले की प्रत्येक बूंद मसीह पर खाली की गयी।

6. मसीह ने जो भयानक क्रोध क्रूस पर सहा, उस पर विचार करने के बाद हमें पुनः एक बार इस बात पर जोर देना चाहिये कि उसका दुःख भोगना परमेश्वर की तीव्र इच्छा थी और वह माध्यम था जिसके द्वारा परमेश्वर के लोगों को उद्धार प्रदान किया गया। यशायाह 53:10 हमें इस सत्य के बारे में क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''प्रभु'' शीर्षक इब्रानी शब्द ***याहवे*** या ***जेहोवा*** से अनुवादित किया गया है। यह स्वयं परमेश्वर के संदर्भ में प्रयुक्त किया गया है। प्रेरितों के कार्य 2:23 के अनुसार, मसीह ''परमेश्वर की पूर्वनियोजित योजना और पूर्वज्ञान द्वारा'' त्यागा गया था। ''भाया'' यह शब्द, इब्रानी शब्द ***खॅफेटस*** से लिया गया है जिसका अर्थ है, ''इसमें आनंदित होना, किसी से प्रसन्न होना, या इच्छा करना।'' पिता ने अपने क्रोध के संपूर्ण भार तले स्वयं के पुत्र को कुचलने के द्वारा, कोई उदास करने वाला आनंद नहीं प्राप्त किया; परंतु मसीह के दुःख भोगने और मरण से, परमेश्वर की इच्छा पूर्ण हुई, उसके लोगों के लिये मुक्ति का मार्ग खुल गया और इससे पिता प्रसन्न हुआ। ''कुचलना'' शब्द इब्रानी भाषा के ''***डाखा***''शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है, ''कुचलना, पीड़ा देना, टुकड़ों में तोड़ देना।'' मसीह पिता के द्वारा कुचला गया और दुःख में डाला गया ताकि उसके दुःख उठाने व मरण से उसके लोग बचाये जायें।

अध्याय 11: पुत्र मर गया

कलवरी पर मसीह ने जो अविश्वसनीय दु:ख सहन किया, उतना हमारे पापों का मूल्य चुकाने के लिये पर्याप्त नहीं था। पाप की मजदूरी मृत्यु है; सो मसीह के लिये मरना आवश्यक था।

हम मृत्यु के अधीन हैं

बाइबल में प्रारंभिक वर्णन से ही, मृत्यु मनुष्य के पाप के प्रति किये गये परमेश्वर के न्याय का परिणाम मानी गयी है (उत्पत्ति 2:17)। प्रत्येक समाधि स्तंभ हमारी पतित मानवता के प्रति परमेश्वर के न्याय का प्रगटीकरण है। इसका हमेशा ही यह अर्थ नहीं होता है कि कुछ लोग दूसरों की तुलना में जल्दी मर जाते हैं क्योंकि वे अधिक पापी होते हैं। ऐसे बच्चे भी होते हैं जो बिना कोई पाप किये गर्भ में ही मर जाते हैं, और ऐसे भी हैं जो परमेश्वर के प्रति दशकों तक विद्रोही बने रहते हैं। इसका सरल सा अर्थ है कि हममें से प्रत्येक पतित मानवता का एक भाग है और मृत्यु हमारे विरूद्ध किये गये परमेश्वर के न्याय का प्रतीक है।

1. रोमियों 5:12 के अनुसार, कैसे मृत्यु ने परमेश्वर के बनाये हुए संसार में प्रवेश किया?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: "एक मनुष्य" आदम के संदर्भ में कहा गया है। बाइबल की यह स्पष्ट गवाही है कि मृत्यु प्राकृतिक घटना नहीं है, परंतु पाप के विरूद्ध दिये गये परमेश्वर के न्याय का परिणाम है। इसने आदम के पाप द्वारा संसार में प्रवेश किया और आदम की पीढ़ियों फैल गई (पद 15 और 17 को भी पढ़िये)।

2. हमें समझना आवश्यक है कि मृत्यु पाप का मात्र एक प्राकृतिक परिणाम नहीं है जिससे परमेश्वर का दूर दूर तक कोई संबंध नहीं है। बाइबल के अनुसार, प्रत्येक मनुष्य की मृत्यु परमेश्वर के सार्वभौमिक विधान के अनुसार होती है। उसने न केवल प्रत्येक मनुष्य की मृत्यु का एक निश्चित दिन तय कर रखा है, बल्कि वह इसे मूर्त रूप भी देगा। व्यवस्थाविवरण 32:39, 1 शमूएल 2:6 और इब्रानियों 9:27 इस सत्य के विषय में हमें क्या सिखाते हैं?

3. संपूर्ण बाइबल में, मृत्यु मनुष्य के पाप के परिणाम के रूप में देखी गयी है। चाहे यह आदम का अध्यारोपित किया गया पाप हो या प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत अधार्मिकता हो, सिद्धांत समान ही है: सभी मनुष्य पाप करते हैं अतः सभी मनुष्य मरते हैं। निम्न पद हमें इस सत्य के विषय में क्या सिखाते हैं?

अ. यहेज. 18:4, 20

ब. रोमियों 6:23

4. यशायाह 64:6 में, मृत्यु और मनुष्य के पाप के मध्य संबंध कविता की शैली में चित्रित किया गया है। इस पद को तब तक पढ़िये जब तक कि आप इस की विषय सामग्री से परिचित न हो जायें। मनुष्य की नैतिक भ्रष्टता का वर्णन किस प्रकार किया गया है? मनुष्य की नैतिक भ्रष्टता और पाप के सक्रिय अनुगमन के अटल परिणाम क्या हैं?

मसीह की मृत्यु की आवश्यकता

हमने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा है और हम मृत्यु और नर्क के भागीदार हैं। हमारी क्षमा असंभव है जब तक कि हमारे पापों का मूल्य नहीं चुकाया जाये और परमेश्वर के न्याय की उचित मांगों को पूर्ण नहीं किया जाये। यह यीशु मसीह के सुसमाचार का मुख्य केंद्र है। उसने हमारे पापों को उठा लिया और हमारे स्थान पर मर गया, एक पवित्र परमेश्वर और उसके पवित्र व्यवस्था की मांग के कारण उसने दुःख उठाया।

1. मसीह ने क्रूस पर, हमारे पाप को उठा लिया और हमारे स्थान पर परमेश्वर का क्रोध सहा। उसकी मृत्यु ने, उस आज्ञा की मांग को संतुष्ट किया, जिसका हमने उल्लंघन किया था और मसीह ने हमारे लिये क्षमा को संभव बनाया। पदों का निम्नलिखित सार हमें इस सत्य को समझने में सहायक रहेगा।

   अ. हम सब ने पा_____ किया है (रोमियो 3:23), परंतु यहोवा ने हम सब के अ_____ का बोझ मसीह पर लाद दिया (यशा. 53:6)।

   ब. हम हमारे पाप के कारण शा_____ के अधीन थे (गलातियों 3:10), परंतु मसीह ने हमें उससे छुड़ाया और स्वयं हमारे लिए शापित बना (गलातियों 3:13)।

   क. हमारे अधर्म के कामों ही ने हमें परमेश्वर से अ_____ कर दिया (यशा. 59:2), परंतु क्रूस पर हमारे बदले मसीह को त्या_____ गया (मत्ती 27:46)।

   ड. हम तो एक पवित्र परमेश्वर के दंड और क्रोध के लायक है, परंतु क्रूस हमारे अ_____ के कारण दंड मिला और हमारे अधर्म के लिए मसीह शा_____ हुआ (यशा. 53:5)।

   इ. पाप की मजदूरी तो _____ है, परंतु क्रूस पर मसीह एक ही बार में हमारे पापों के लिए _____ अर्थात धर्मी जन _____ के लिए, ताकि हमें परमेश्वर के निकट ले आए (1 पतरस 3:18)

2. 1 कुरिन्थियों 15:14 में, हमें धर्मशास्त्र के सुसमाचार की सबसे पूर्ण और सारगर्भित परिभाषा मिलती है। इस पद के अनुसार, धर्मशास्त्र के सुसमाचार के तीन मुख्य तत्व क्या हैं?

अ. धर्मशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पाप के लिये _____ (पद 3)। यहां हम देखते हैं कि मसीह के लिये केवल कलवरी के क्रूस पर परमेश्वर के क्रोध को सहना ही आवश्यक नहीं था, परंतु वह वास्तव में हमारे पाप के लिये मरते हैं।

ब. मसीह गा_____ (पद 4)। इसे मात्र मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान को जोड़ने वाली अवस्था परिवर्तनकालिक दशा के रूप में देखना गलत होता। मसीह का गाड़ा जाना उसकी मृत्यु की वास्तविकता पर जोर देने के कारण वर्णित किया गया है। वह वास्तव में मरा था इसलिये वह वास्तव में गाड़ा गया।

क. पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह तीसरे दिन _____ (पद 4)। यीशु मसीह के पुनरूत्थान का रूख हमारे सुसमाचार प्रस्तुतीकरण के अंत तक बदलना नहीं चाहिये, उसे इस तरह प्रस्तुत नहीं करना है, कि जैसे यह कोई बाद में उपजा विचार या अनावश्यक बात हो। प्रेरितों की पुस्तक में, पुनरुत्थान की घोषणा को प्राथमिक स्थान दिया गया है!

3. चारों सुसमाचार लेखक यीशु की मृत्यु का वर्णन करने में सावधान हैं। यहां तक कि उनके वर्णन भी संक्षिप्त हैं, तथापि निश्चित है। इन वर्णनों में से प्रत्येक का पढ़िये: मत्ती 27:50; मरकुस 15:37; लूका 23:46; यूहन्ना 19:30। वे कुछ प्रमुख विचार कौन से हैं जिन्हें प्रगट किया गया है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: सुसमाचार के वर्णन में, दो बातें प्रगट की गयी है: 1. मसीह की मृत्यु की सच्चाई – पाप की मजदूरी मृत्यु है, और मसीह ने अपने लोगों के पाप का दंड उनके स्थान पर मरने के द्वारा चुकाया – और 2. मसीह की संप्रभूता उसकी मृत्यु के ऊपर _____ उसने अपना आत्मा अधीन कर दिया या सौंप दिया (मत्ती 27:50; यूहन्ना 19:30) ; उसने अपना आत्मा अपने पिता के हाथों सौंप दिया (लूका 23:46)। मसीह एक अनिच्छुक शहीद के रूप में नहीं मरा; इसके बजाय उसने स्वेच्छा से अपना जीवन अपने लोगों के स्थान पर बलिदान के रूप में दे दिया।

4. मसीह की मृत्यु और उसके लोगों में इसके महत्व से संबंधित, धर्मशास्त्र के कुछ निम्नलिखित पद सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। अपने शब्दों में प्रत्येक पद का अर्थ सारगर्भित कीजिये।

अ. रोमियों 5:6

ब. रोमियों 5:8

क. रोमियों 5:10

5. 2 कुरिन्थियों 5:14–15 के अनुसार, हम विश्वासियों को हमारे स्थान पर मसीह की मृत्यु के लिये कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिये?

6. स्वर्ग और अनंतकाल के दृष्टिकोण से हम इस पाठ का समापन करेंगे। प्रकाशितवाक्य 5:8–10 के अनुसार, स्वर्गदूतों और छुटकारा पाये हुओं का अनंतकाल तक के लिये महान गीत क्या होगा?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

अध्याय 12: मसीह हमारा प्रायश्चित

"प्रायश्चित" शब्द लैटिन भाषा की क्रिया ***प्रोपीशियरे*** से निकलता है, जिसका अर्थ है, "शांत करना, मनाना, या अनुकूल बनाना।" अंग्रेजी के नये नियम में, "प्रायश्चित" शब्द यूनानी भाषा के ***हिलासमॉस*** से अनुवादित किया गया है, जो उस बलिदान की ओर संकेत देता है जिसके द्वारा परमेश्वर के न्याय की मांग संतुष्ट होती है और उसके क्रोध को शांत किया जाता है। प्रायश्चित का पूरा अर्थ और महत्व समझने के लिये, हम पूर्व के अध्यायों में पहले ही सीख चुके कुछ प्रमुख सत्यों का निरीक्षण करेंगे।

धर्मशास्त्र में सब द्वंदों में सबसे बड़ा द्वंद हमारे सामने रखा हुआ है: परमेश्वर धर्मी है; इसलिये, उसे न्याय करने के कड़े से कड़े नियमों के अनुरूप कार्य करना चाहिये, निर्दोष को बरी करना और दोषी को दंड देना। अगर वह दोषी को क्षमा करता है और व्यवस्था के एक एक उल्लंघन और अनाज्ञाकारिता को सजा नहीं देता है, तब वह अन्यायी कहलायेगा।, अगर वह प्रत्येक मनुष्य के साथ न्याय करे और प्रत्येक को बिल्कुल वही न्याय प्रदान करे, जो उसे मिलना चाहिये, तब तो समस्त मनुष्य दंडित ठहरेंगे। इससे बाइबल के सभी बड़े प्रश्नों में से एक प्रश्न ऐसा भी हमारे सामने उपस्थित होता है: "कैसे परमेश्वर न्यायी बने रह सकता है और तौभी जिन्हें दंडित किया जाना है, उन पर दया दिखा सकता है?" या जैसे हमने पूर्व में प्रेरित पौलुस के शब्दों को रोमियों 3:26 में से लेकर दुसरे शब्दों में व्यक्त किया था, "कैसे परमेश्वर एक ही समय धर्मी और अधर्मी मनुष्य को धर्मी ठहरानेवाला दोनो ही हो सकता है?"

इन प्रश्नों के उत्तर "प्रायश्चित" शब्द में मिलते हैं चूंकि यह यीशु मसीह के सुसमाचार से संबंधित है। वही परमेश्वर जो धर्मी है, दुष्ट को दंडित करता है, वह मनुष्य बना और दुष्ट के स्थान पर मर गया। परमेश्वर ने दुष्ट को धर्मी ठहराने के लिये उसके न्याय की मांगों को उपेक्षित नहीं किया, त्याग नहीं दिया, उलट नहीं दिया; परंतु उसने दोषियों के विरूद्ध स्वर्गीय न्याय की मांगों को संतुष्ट किया और अपने स्वयं के क्रोध को अपने पुत्र के दुःख उठाने और मरण के द्वारा शांत किया। मसीह हमारा प्रायश्चित इस तरह कहलाता है कि उसके बलिदान ने इसे संभव बनाया कि एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर हमारे प्रति दयालू भी हो सके और उसके विरूद्ध किये गये अपराधों को भी क्षमा कर सके।

न्यायिक और दंड विषयक संतुष्टि

जब कभी मसीह द्वारा स्वर्गिक न्याय की मांगों को संतुष्ट करने संबंधी संदर्भ दिया जाता है, तो ठीक से यह समझना महत्वपूर्ण हो जाता है कि इसका अर्थ क्या है। मूलतः, दो प्रकार के संतुष्टि होती है: **व्यावसायिक** और **न्यायिक** (**दंड विषयक**)

व्यावसायिक संतुष्टिः कर्ज की संतुष्टि तब होती है जब पूरी राशि चुकाई जाती है। एक 50 डॉलर का कर्ज 25 डॉलर की राशि से पूर्ण नहीं किया जा सकता, न ही दस औंस के सोने का कर्ज, उतने वजन की मिट्टी की राशि से पूर्ण किया जा सकता है।

न्यायिक और दंड विषयक संतुष्टिः कर्ज की संतुष्टि तब होती है जब अपराधी न्यायाधीश द्वारा दी गयी सजा को पूर्ण करता है। सजा अपराध के अनुरूप हो, यह आवश्यक नहीं है। जो आवश्यक है, वह यह है कि उसे कम से कम अपराध के बराबर तो होना चाहिये। चोरी के लिये, कोई जुर्माना हो सकता है; हत्या के लिये जेल हो सकती है; देशद्रोह के लिये देश निकाले की सजा होती है।

उपरोक्त उदाहरणों से, यह प्रमाणित है कि मसीह का दुःख उठाना व्यावसायिक नहीं था , परंतु ***न्यायिक*** या ***दंड विषयक*** प्रकृति का था। मसीह ने ठीक वही दंड नहीं चुकाया जिसके अंर्तगत उसके लोगों को सजा मिलनी थी – उसने नर्क में अनंतकालीन दंड को नहीं भोगा। परंतु उसका दुःख उठाना ठीक उसी प्रकार का था जो एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर ने अपने ईश्वरीय न्याय को संतुष्ट करने के लिये और अपराधी को पाप के दंड से मुक्त करने के लिये ठहराया था।

संतुष्टि और मसीह का असीम मूल्य

जब कभी मसीह द्वारा ईश्वरीय न्याय को संतुष्ट करने संबंधी संदर्भ लिया जाता है, तब यीशु मसीह के अनंत मोल पर विचार करना भी आवश्यक हो जाता है। कैसे एक मनुष्य क्रूस पर कुछ घंटे दुःख उठाकर लगभग असंख्य पापियों के पापों का मोल चुका सकता है और उन्हें नर्क में अनंत दंड से बचा सकता है? कैसे एक मनुष्य का जीवन एक पूर्ण पवित्र परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट कर सकता है? इसका उत्तर उस व्यक्ति की प्रकृति में मिलता है जिसने दुःख भोगा और मर गया। चूंकि परमेश्वर का पुत्र मानव देह में होते हुए भी परमेश्वरत्व का पूर्ण रूप था कुलुस्सियों 2:9, अतः उसका जीवन अनंत मोल लिये हुए था – उन सब लोगों के जीवन से कई अधिक बढ़कर असीम रूप में अनमोल था, जिनके लिये वह मरा। यह संपूर्ण पवित्र शास्त्र मे सबसे सुंदर सत्यों मे से एक है।

धर्मशास्त्र में प्रायश्चित

निम्नलिखित गद्यांश में, हम धर्मशास्त्र के कुछ महत्वपूर्ण पदों पर विचार करेंगे जो हमारे पापों के लिये मसीह द्वारा प्रायश्चित करने को बताते हैं।

1. निम्नलिखित पद हमें हमारे पाप के लिये मसीह द्वारा किये गये प्रायश्चित के विषय में क्या सिखाते हैं?

अ. 1 यूहन्ना 2:2

टिप्पणियां: ''प्रायश्चित'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***हिलासमॉस*** से निकला है इस अध्याय के परिचय में इसकी परिभाषा देखिये। मसीह का बलिदान केवल यहूदियों तक के लिये सीमित नहीं था, परंतु इसमें प्रत्येक जाति, भाषा, कुल और राष्ट्र के लोग सम्मिलित हैं (प्रकाशितवाक्य 5:9)

ब. यूहन्ना 4:10

टिप्पणियां: ''प्रायश्चित्त'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***हिलासमॉस*** से निकला है। यह परमेश्वर का अपने लोगों के प्रति, सार्वभौमिक और शर्त रहित प्रेम था जिसने उसे, उसके पुत्र को भेजने के लिये प्रेरित किया, यह मनुष्यों के मूल्य या उनकी किसी योग्यता से पूर्णतः निष्पक्ष था। उसके पुत्र का हमारे लिये प्रायश्चित स्वरूप मरण परमेश्वर के प्रेम का सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है।

क. इब्रानियों 2:17

टिप्पणियां: यह वाक्यांश ''प्रायश्चित्त करना'' यूनानी भाषा के शब्द ***हिलासकमॉय*** से निकला है, जो ***हिलासमॉस*** का क्रिया रूप है। मनुष्य की सहायता करने के लिये, परमेश्वर के पुत्र को उनका स्वभाव स्वयं अपने ऊपर लेना था। एक

मनुष्य का इन मनुष्यों के लिये मरना आवश्यक था (इब्रानियों 10:4) और केवल परमेश्वर–मनुष्य का रूप ही, परमेश्वर व मनुष्य दोनों को परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत कर सका।

2. रोमियों 3:23–28 के समान, धर्मशास्त्र में कोई और पद, हमारे पापों के लिये मसीह द्वारा किये गये प्रायश्चित का अर्थ नहीं समझाता है। निम्नलिखित वाक्यांशों में से प्रत्येक पर अपनी टिप्पणियां लिखिये।

अ. परमेश्वर ने किसको खुल्लमखुल्ला प्रायश्चित्त के रूप में प्रदर्शित किया (पद 25)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यह वाक्यांश ''*खुल्लमखुल्ला* '' प्रदर्शित किया'' यूनानी भाषा के शब्द ***प्रोथइथऐमही*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''लोगों के समक्ष प्रदर्शन के लिये रखना।'' यह परमेश्वर की आज्ञा थी कि उसका पुत्र खुल्लमखुल्ला क्रुसपर चढाया जाये ताकि उसकी धार्मिकता सभी लोगों के सामने प्रदर्शित हो। यहां, ''प्रायश्चित'' शब्द यूनानी भाषा के ***हिलास्टेरियोन*** शब्द से निकला है, जो उस बलिदान के संदर्भ में कहा जाता है जिसमें क्षतिपूर्ति के लिये, तृप्त करने के लिये या क्रोध को शांत करने का भाव निहित हो ताकि कुपित पक्ष से कृपा प्राप्त हो सके। क्रूस पर परमेश्वर ने उसके पुत्र को संपूर्ण जगत के सामने पाप के प्रायश्चित करने के लिये खुल्लमखुल्ला प्रदर्शित किया।

ब. उसके लहू मे विश्वास के द्वारा (पद 25)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: इस वाक्यांश का सर्वाधिक स्वाभाविक विवेचन यह है कि मसीह द्वारा किये गये प्रायश्चित के लाभ विश्वास द्वारा प्राप्त किये जा सकते हैं। हम मसीह पर विश्वास रखकर और उसके हमारे स्थान पर बलिदानी (रक्तरंजित) मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से हमारा मेलमिलाप हो गया हैं।

क. यह उसकी धार्मिकता को प्रगट करने के लिये था क्योंकि परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता में पूर्व में किये गये हमारे पापों को, उसके ऊपर लाद दिया (पद 25)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: उसके पुत्र की मृत्यु को खुल्लमखुल्ला प्रदर्शित करने के पीछे परमेश्वर का महान उद्देश्य उसकी धार्मिकता का प्रदर्शन या उसे प्रमाणित करना था। परंतु ऐसा प्रदर्शन क्योंकर आवश्यक था? जो उपवाक्य ऊपर बताये गये हैं, वे हमें उत्तर देते हैं: ''क्योंकि परमेश्वर की सहनशीलता में उसने पूर्व में किये गये हमारे पापों को उसके ऊपर लाद दिया।'' परमेश्वर की सहनशीलता और दया पापमयी मानवता के प्रति प्रगट की गई, चूँकि आदम के पतन ने उसके धर्मी होने के दावे को संशय में डाल दिया था। आदम और हवा, मृत्यु के हकदार थे, परंतु उन्हें जीवनदान मिला; समस्त विश्व महाप्रलय के समय नष्ट हो चुका होता, परंतु नूह और उसका परिवार को छोड़ दिया गया; परमेश्वर की आज्ञा के प्रति इजरायल के सतत विद्रोह के परिणामस्वरूप राष्ट्र को नष्ट हो जाना था; दाऊद के व्यभिचार और हत्या के अपराधों को क्षमा नहीं किया जाना था। तब कैसे, परमेश्वर धर्मी भी हो सकता है और जिन्हें सजा मिलनी है, उनके प्रति करूणा भी दिखा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर मसीह के दुःख उठाने और उसके मरण में मिलता है। चूंकि आदम का पतन परमेश्वर की किसी उदासीनता या अधार्मिकता के कारण नहीं था, परंतु अपने लोगों के पाप के प्रति लंबे समय तक उसकी सहनशीलता, भविष्य में मसीह के हमारे पाप के लिये मरने पर आधारित थी। पुराने नियम में परमेश्वर पर विश्वास रखने वाले अपने संतो को, उसने दया, सहनशीलता, क्षमा उदारता से प्रदान की, क्योंकि मसीह उन सब के लिये प्रगट होने वाला था और मरने वाला था! परमेश्वर की भूत, वर्तमान और भविष्य की करूणायें मसीह की मृत्यु के कारण सब संभव है। दि वेस्टमिंस्टर कंफेशंस ऑफ फेथ घोषित करता है, ''यद्यपि छुटकारे का कार्य उसका पुनरुत्थान होने के बाद तक वास्तव में मसीह ने पुरा नहीं किया था तौभी जगत के प्रारंभ से, क्रमशः समस्त युगों के चुने हुओं के लिये भलाई, सामर्थ और समस्त लाभ सुरक्षित प्राप्त किये गये थे'' (अध्याय 8, अनुच्छेद 6)।

ड. वर्तमान समय में उसकी धार्मिकता का प्रदर्शन, मेरे अनुसार यह है, कि यीशु पर विश्वास रखने वाले के प्रति, वह धर्मी और धर्मी ठहरानेवाला दोनो ही हो सके (पद 26)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यीशु मसीह के कलवरी पर दुःख उठाने और मृत्यु की राह में आने वाली हर बाधा को जो धर्मी परमेश्वर को उसके पापी लोगों को क्षमा करने से रोक सकता हो, वह दूर कर दी गई है। उसके लोगों के पापों की सजा देकर, उसके न्याय की शर्तो को पूर्ण करके और उसके क्रोध को शांत करके, परमेश्वर ने अपनी धार्मिकता का प्रदर्शन किया। उसने अपनी देह में उन लोगों के पाप को वहन करके, उनके स्थान पर खड़े होकर एवं जो क्रोध उन पर बरसना था उसका शमन करके, अपने लोगों के लिये उद्धार का मार्ग खोल दिया। इस कारण, परमेश्वर अपनी पवित्रता और धार्मिकता से कोई समझौता किये बिना, अपने लोगों को क्षमा कर सकता है।

अध्याय 13: मसीह हमारा छुटकारा

बाइबल में ***छुटकारा***, ***छुड़ौती***, ***विमोचन*** तीन सर्वाधिक सुंदर शब्द हैं जो यीशु मसीह के द्वारा किये गये, परमेश्वर के उद्धार के कार्य का वर्णन करते हैं। पूर्व के अध्याय में, हमने प्रायश्चित को लेकर बाइबल के सत्य के ऊपर विस्तार से विचार किया था। वर्तमान में, छुटकारे के ऊपर विचार करना क्रूस के विषय में हमारी समझ से कम महत्वपूर्ण नहीं है। बाइबल आधारित मसीहत के लिये दोनों सत्य नींव का कार्य करते हैं और दोनों को घोषित किया जाना और उनकी रक्षा करना आवश्यक है।

बाइबल में छुटकारा

"छुटकारा" शब्द लैटिन क्रिया रिडिमियरे (***रि*** = पुनः + ***इमियरे*** = खरीदना) से निकला है। किसी को छुटकारा देने का अर्थ है कि उसे उसकी दासता या बंदी बनाये जाने से पुनः मोल चुकाकर छुड़ाना। ***छुटकारा देनेवाला*** वह होता है जो किसी को छुटकारा देने के लिये वह मूल्य स्वयं चुकाता है। ***छुड़ौती*** चुकाये जाने वाले मूल्य को कहते हैं। ***दाम*** स्वतंत्र कराये जाने को व्यक्त करता है जो किसी कीमत पर खरीदा गया हो। बाइबल में, मसीह ***छुटकारा देनेवाला*** है जिसने उसके लोगों को अपने जीवन का दाम देकर और दुःख उठाकर ***छुटकारा*** प्रदान किया है।

मसीह - मुक्तिदाता और छुडौती का दाम

बाइबल यीशु मसीह का वर्णन उसके लोगों का ***मुक्तिदाता*** और ***छुड़ौती*** का दाम दोनों के रुप में करती है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर के लोगों के मध्य, सदियों से ये दो शब्द बहुत सर्वश्रेष्ठ माने जाते रहे हैं।

1. मसीह उसके लोगों का मुक्तिदाता है और उसका स्वयं का जीवन, वह छुड़ौती था जो उसने चुकाई। इस सत्य के विषय में, निम्नलिखित पद क्या शिक्षा देते हैं?

   *अ. मसीह बहुतों के छु_____ के लिये अपना जीवन देने आया (मत्ती 20:28)। यूनानी भाषा के शब्द **लूट्रोन** से **लूओ** किया (खोलना) निकली है। यह कपड़ों, हथियार, बंधन और इसी तरह की कुछ चीजों को ढीला करने के उपयोग में लिया जाता था। (मत्ती 20:28) के संदर्भ में, यह बंदी या गुलाम को छुटकारा देने के लिये दिये गये मोल की ओर संकेत देता है। मसीह ने अपने लोगों के छुटकारे के लिये जो छुड़ौती चुकाई, वह उसका स्वयं का जीवन था।*

*ब. मसीह ने बहुतों की छु_____ के लिये स्वयं को दे दिया (1 तिमुथियुस 2:5–6)। यह शब्द **ऐंटीलूट्रोन** से आता है, जो किसी की स्वतंत्रता के बदले चुकाये गये मूल्य का संकेत देता है। वाक्यांश "उचित समय पर गवाही दी गयी" इस तथ्य का संकेत देता है कि मसीह आया और परमेश्वर की सिद्ध इच्छा व इतिहास में ठहराये गये स्वर्गिक समयानुसार स्वयं को छुड़ौती स्वरूप दिया।*

2. बाइबल में दो सबसे अधिक सुंदर पद जो परमेश्वर के लोगों के छुटकारे का मूल्य चुकाये जाने से संबंधित है, निम्नलिखित है, इन सत्यों को अपने शब्दों मे सारगर्भित करें।

अ. प्रेरितों के काम 20:28

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह ने केवल कलीसिया को ही छुटकारा नहीं दिया है; उसने स्वयं के लिये उसे छुटकारा दिया। यहां कलीसिया से तात्पर्य "परमेश्वर की कलीसिया जिसे ***उसने*** (परमेश्वर) ने ***अपने स्वयं के*** रक्त से खरीदा है।" यह मसीह के परमेश्वरत्व के लिये बहुत सशक्त संदर्भ है। वह मनुष्य जिसने कलवरी पर अपना रक्त बहाया, उसकी देह में संपूर्ण परमेश्वरत्व वास करता था (कुलुस्सियों 2:9)। हमारे छुटकारे के लिये जो रक्त उसने बहाया बेशकीमती था।

ब. 1 पतरस 1:18–19

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: "बेशकीमती" शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***तिमिओस*** से निकला है, जिसका अर्थ, बड़ी कीमत, कोई सम्मान और श्रद्धायोग्य चीज, कोई विशेष प्रिय चीज। मसीह का बेशकीमती रक्त समस्त ***नष्ट होने वाली*** वस्तुएं जो मनुष्य अपने छुटकारे के लिये दे सकता है, उसके तीव्र विरोध में, अलग ही पहचान रखता है। "निष्कलंक" शब्द यूनानी भाषा

के शब्द ***अमॉमॉस*** से निकला है, जो दोषरहित और निर्दोष होने को प्रगट करता है। ''बेदाग'' शब्द यूनानी भाषा के ***असपीलोस*** से निकला है, जिसका अर्थ है जो निष्कलंक, अनिंद्य और बिना आक्षेप के हो।

3. निम्नलिखित पद हमें हमारे छुटकारे के विषय में क्या शिक्षा देते हैं? क्या यह एक हासिल किया गया तथ्य हैं? क्या हमारे पाप का मूल्स पूरा चुका दिया गया है?

अ. यूहन्ना 19:30

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''पूरा हुआ'' यह शब्द संसार में छुटकारे के विषय में पहली बार की गयी सबसे सशक्त घोषणा है। यह एकल यूनानी शब्द ***टेलियो*** से अनुवादित है, जिसका अर्थ है, ''समाप्त करना, निष्पादित करना, पूर्ण करना''; किसी कार्य को समाप्ति पर लाना या बंद करना; अंतिम कार्य को निष्पादित करना, जिससे एक प्रक्रिया पूर्ण होती है।'' यूहन्ना 19:28 में यही शब्द दो पद पहले प्रयुक्त किया गया है, ''इसके पश्चात, यीशु ने यह जानकर कि सब कुछ ***पूरा हो चुका***, इसलिए कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो, कहा, ''मैं प्यासा हूं।''

ब. इब्रानियों 9:12

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: उसके मरण के प्रभावस्वरूप, मसीह, परमेश्वर के लोगों का मध्यस्थ बनने के लिये स्वर्ग चढ़ाया गया। वाक्यांश ''अनंत छुटकारा प्राप्त करने से'' हम दो महान सत्यों को पाते हैं। पहला सत्य, हमारा सत्य अस्थाई नहीं है, परंतु अनंत और अपरिवर्तनशील है। दूसरा सत्य, हमारा छुटकारा पहले से ही प्राप्त हो चुका है; यह सुरक्षित है।

व्यवस्था के दंड से छुटकारा प्राप्त करना

प्रत्येक मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा है और दंड या शाप के योग्य ठहरा है। यीशु मसीह ने अपने लोगों को अपने स्वयं के जीवन का मूल्य दंडस्वरूप चुकाकर व्यवस्था के श्राप से मुक्त किया है।

1. गलातियों 3:10 में व्यवस्था के दंड का वर्णन किस प्रकार किया गया है? कौन इस दंड के अधीन है? इसका क्या अर्थ है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: व्यवस्था सिद्ध आज्ञाकारिता की मांग करती है। व्यवस्था में निरंतरता, सिद्धता और व्यवहारिक आज्ञाकारिता पाई जाती है, इस पर बल देने के लिये, पौलुस ''बने रहना'' और ''पालन करना'' शब्दों का प्रयोग करता है। इससे थोड़ा सा भी भटकना, मनुष्य को श्राप के अधीन ले आता है। ''श्राप'' शब्द यूनानी भाषा के ***कतारा*** शब्द से निकला है, जिसका अनुवाद ऐसे भी किया जा सकता है, ''लानत,'' ''कोसना'' या ''अभिशाप।'' यह ईश्वरीय न्याय और कठोरतम प्रकार के दंड या किसी को इस प्रकार की सजा देना या विनाश करने को बताता है।

2. गलातियों 3:13 के अनुसार, परमेश्वर के लोगों का छुटकारा किस चीज से हुआ, और किस प्रकार मसीह ने इस छुटकारे को प्राप्त किया?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''छुटकारा पाये हुए'' यूनानी भाषा के शब्द ***एक्जागराजो*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''खरीदना, मूल्य चुकाना या किसी वस्तु या व्यक्ति को किसी के बंधन से छुड़ाना।'' अक्सर इसका प्रयोग एक गुलाम को उसकी गुलामी से मुक्त करवाने के लिये किया जाता है। मसीह ने हमारे पाप को वहन किया, श्रापित कहलाया और हमारा छुटकारा होने तक परमेश्वर के क्रोध को सहन किया। ''पेड़'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***झूलॉन*** से निकलता है, जिसका शब्दशः अनुवाद ''लकड़ी'' है। यह पारंपरिक यूनानी भाषा में उन खंभों और खूंटों के लिये प्रयुक्त होता था, जिन के ऊपर अपराधियों के शरीरों को लटका दिया जाता था। पुराने नियम की व्यवस्था में, प्रतीक स्वरूप, अपराधी पेड़ और खूंटे पर लटकाये जाते थे कि देखने वाले जान लें कि वे परमेश्वर से श्रापित हैं (व्यवस्थाविवरण 21:23)

3. कुलुस्सियों 2:14 में, मसीह के छुटकारे का कार्य एक बहुत ही चित्रमय रूप में वर्णित किया गया है। इस पद के अनुसार, मसीह ने अपने लोगों का छुटकारा किन चीजों से किया है? कैसे छुटकारा पूरा हुआ? प्रत्येक वाक्यांश के नीचे अपने विचार लिखिये।

अ. और विधियों का वह अभिलेख जो हमारे नाम पर हमारे विरूद्ध था, मिटा डाला।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''अभिलेख'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***कैराग्रफॉन*** से निकला है। अक्सर इस अभिलेख का प्रयोग पैसों के कर्ज या अपराधी के विरूद्ध लिखे गये किसी अभियोग से होता है। ''विधान'' शब्द यूनानीशब्द ***डॉगमा*** से निकला है, जो सार्वजनिक विधान या अध्यादेश को प्रदर्शित करता है। इस संदर्भ में, यह शायद व्यवस्था की कानूनी मांगों की ओर संकेत देता है जो हमारे द्वारा किये गये आज्ञा उल्लंघन के परिणाम स्वरूप लागू होती है। वाक्यांश ''मिटा डाला'' यूनानी शब्द ***एक्जालीइफो*** से निकलता है, जिसका अर्थ है, ''साफ कर देना, मिटा देना, या लुप्त कर देना।'' मसीह ने परमेश्वर व उसकी व्यवस्था के प्रति हमारे सारे कर्जो को मिटा डाला या लुप्त कर दिया।

ब. और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर हमारे सामने से हटा दिया।

_____

_____

टिप्पणियां: कलवरी पर उसकी मृत्यु के द्वारा, मसीह ने हमारे कर्जो को चुकाया और हमारे विरूद्ध न्याय की हर मांग को संतुष्ट किया। ''उसे क्रूस पर कीलों से ठोक दिया'' इस वाक्यांश की अनेक व्याख्याएं हैं। कुछ मानते हैं कि यह किसी के विरूद्ध कर्ज भरपाई के अभिलेख को सार्वजनिक स्थान पर लगाने की प्रथा की ओर संकेत देता है, ताकि सब देख सके कि कर्ज चुकता कर दिया गया है। इसका उद्देश्य कर्जदार को निर्दोष सिद्ध करने के लिये होता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उसके विरूद्ध भविष्य में कोई मांग न उठ सके। मसीह की मृत्यु के द्वारा हमारा कर्ज चुका दिया गया। दूसरे लोगों का मानना है कि क्रूस पर अपराधी के शरीर से ऊपर इस अभियोग को कीलों से जड़ना, इस बात का संकेत देता है कि उसके अपराध सार्वजनिक किये जाये और उसके क्रूस पर लटकाने का कारण सभी को ज्ञात हो (मत्ती 27:37)। मसीह ने हमारे पापों को कलवरी पर उठा लिया और व्यवस्था का दंड जो हमें मिलना था, उसे सहन किया।

अध्याय 14: मसीह हमारा छुटकारा

बाइबल हमें न केवल यह सिखाती है कि पतित मनुष्य व्यवस्था के दंड के अधीन रहता है, परंतु वह शैतान के बंधन में भी है। मसीह ने अपने लोगों को इस भयानक सच्चाई से, उनके स्थान पर मरने के द्वारा, छुटकारा दिलाया, इस तरह उनके लिये निर्धारित दंड को भी चुकाया और शैतान के सामर्थ पर भी विजयी हुए।

इसके पहले कि हम हमारे अध्ययन में आगे बढ़े, इसे समझना बहुत आवश्यक है कि यद्यपि मसीह ने अपने लोगों को शैतान की सामर्थ से छुटकारा दिलवाया, इसके लिये जो छुड़ौती चुकाई गयी, वह शैतान को नहीं अपितु परमेश्वर को चुकाई गयी। मसीही इतिहास में सदियों से यह धारणा प्रबल है, कुछ लोगों ने गलत विश्वास कर लिया है कि मसीह ने शैतान को छुड़ौती चुकाई और इस तरह अपने लोगों को गुलामी से स्वतंत्र किया।

यह धारणा स्पष्टतः बाइबल के विरोधाभास में है, मसीह द्वारा किये गये छुटकारे के कार्य की महिमा को घटाती है और शैतान को अत्यधिक बाइबलविहीन दर्जा देती है। बाइबल हमें सिखाती है कि मसीह ने परमेश्वर को उसके लोगों के पाप के दंड का मूल्य चुकाने के लिये स्वयं का बलिदान चढ़ाया। उसके मरण ने परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट किया और हमारे पाप के ऋण को निष्प्रभाव किया, इस तरह शैतान की दोषी ठहराने वाली सामर्थ पर विजय प्राप्त की।

शैतान का आधिपत्य और मनुष्य का बंधन

यद्यपि परमेश्वर समस्त सृष्टि पर पूर्ण प्रभुत्व के साथ राज्य करता हैं, तथापि सच्चे अर्थ में शैतान को सीमित नियंत्रण दिया गया है और इसके द्वारा वह पतित संसार और उसके रहवासियों के ऊपर राज्य करता है।

1. लुका 4:5–6 में, शैतान स्वयं के विषय में एवं उसके इस पतित जगत के साथ संबंधों को लेकर घोषणा करता है। वह क्या घोषणा करता है, और इसका क्या अर्थ है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मनुष्य के पतन के समय से, यह जगत और उसमें बसने वाले लोग, शैतान के आधिपत्य में आये। फिर भी, हमें इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि यह नियंत्रण परमेश्वर की इच्छा के अधीन था।

2. लूका 4:5–6 में, शैतान की घोषणा कोई निरर्थक डींग नहीं थी। बल्कि, सच्चे अर्थ में यह पतित संसार उसके नियंत्रण में था। 1 यूहन्ना 5:19 इस सत्य के विषय में क्या शिक्षा देता है?

   अ. सम_____ जगत का अधि_____शैतान के अधीन है। ''समस्त'' शब्द सामूहिक रूप से न केवल मानवजाति की ओर संकेत देता है परंतु मसीह के प्रभुत्व से परे प्रत्येक जन की ओर भी संकेत देता है। ''अधीन'' शब्द यूनानी शब्द ***कायमाय*** *से निकला है, जिसका अर्थ है, ''वश में होना या उस ओर झुका होना।'' मानवजाति, सामान्य तौर पर शैतान के राज्य से मुक्त होने के लिये संघर्ष नहीं कर रही है, बल्कि वह इसके अनुकूल जीवन बिता रही है।*

3. बाइबल में, अक्सर एक व्यक्ति का नाम, उसके अर्थ के अनुसार कुछ प्रगट करता है। शैतान को कौन कौन से नाम या शीर्षक निम्नलिखित पदों में दिये गये हैं?

   अ. इस सं_____का शा_____ (यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11) । ''शासक'' शब्द यूनानी शब्द ***अरखॉन*** *से निकला है, जिसका अनुवाद इस प्रकार से भी किया जा सकता है, ''सेनापति'' या ''मुखिया।'' यह ''संसार'' मानवता के उस विशाल जनसाधारण के ओर संकेत देता है जो परमेश्वर से पृथक होकर रहता है और उसकी इच्छा के विरूद्ध है।*

   ब. इस सं_____का ई_____ (2 कुरिन्थियों 4:4)। केवल एक सच्चा परमेश्वर है (1 कुरिन्थियों 8:4–6), तौभी यह पतित संसार शैतान का ऐसे अनुसरण करता है जैसे कि वह ईश्वर हो। यद्यपि शैतान को ईश्वरीय गुण प्राप्त नहीं हैं, तौभी वह स्वयं को परमेश्वर दिखाने का आडंबर करता है और परमेश्वर के समान आराध्य माने जाने की इच्छा रखता है।

   क. आ_____ में शा_____ करने वाले अधि_____ (इफिसियों 2:2) । शैतान एक आत्मा है और मनुष्य के सांसारिक संयम से अबाधित है। शैतान की सामर्थ और आधिपत्य इस ''पृथ्वीलोक'' के किसी भी राजकुमार से बढ़कर हो सकती है। वह आत्मिक रूप से मृतकों के ऊपर अपनी वास्तविक सामर्थ और प्रभाव को छोड़ता है (देखिये पद 1)।

4. निम्नलिखित पदों में पतित मनुष्य का किस प्रकार वर्णन किया गया है? पतित मनुष्य और शैतान के मध्य क्या संबंध है?

अ. पापी मनुष्य शै_____ की संतान है (1 यूहन्ना 3:8, 10; यूहन्ना 8:44) । पतित मनुष्य, शैतान की संतान इस संदर्भ में है क्योंकि वह शैतान का चरित्र और इच्छा प्रगट करता है। यूहन्ना 8:44 में, यीशु घोषित करता है कि फरीसी अपने पिता शैतान से थे और वे अपने पिता की ''इच्छा को पूर्ण करना'' चाहते थे।

*ब. पतित मनुष्य, शैतान के आधि_____ में रहता है (प्रेरितों के काम 26:18) । यह शब्द यूनानी भाषा के शब्द **एक्जोसिया** से निकला है, जिसे ''सामर्थ'' या ''आधिपत्य'' भी अनुवादित किया जा सकता है। पतित मनुष्य, शैतान के आधिपत्य और सामर्थ के अधीन होकर रहता है। कुलुस्सियों 1:13 में, शैतान के साम्राज्य को आत्मिक या नैतिक अंधकार के रूप में वर्णित किया गया है।*

*क. पतित मनुष्य, शैतान की इच्छा अनु_____चलता है (इफिसियों 2:2)। पतित मनुष्य, परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघन व शैतान की इच्छानुसार चाल चलने से पहचाना जाता है। पतित मनुष्य को ''अनाज्ञाकारिता के पुत्र'' उचित नाम दिया गया है, जिनके भीतर शैतान क्रियाशील है। ''क्रियाशील'' शब्द यूनानी शब्द **ऐर्नेजिइओ** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''सक्रिय होना; प्रभावोत्कारी कार्य या सामर्थ के साथ ऊर्जात्मक कार्य करना।''*

ड. पतित मनुष्य, शैतान के द्वारा अं_____ कर दिया गया है (2 कुरूंथियों 4:4)। वे मनुष्य जो परमेश्वर की गवाही पर विश्वास करने से इंकार कर देते हैं, भयानक न्याय के भागीदार होते हैं – वे शैतान को सौंप दिये जाते हैं ताकि उसके झूठ और छल के द्वारा आत्मिक व नैतिक रूप से अंधे बनाये जायें।

*इ. पतित मनुष्य, शैतान के फं_____ में फंस जाता है (2 तिमुथियुस 2:26)। यह शब्द यूनानी शब्द **पॉगिज** से निकला है, जिसका अर्थ जाल, फंदा, या बंधन होता है, जिसमें शिकार उलझ जाता है और पकड़ा जाता है। यह प्रायः दृष्टि से ओझल रहता है और अपने बेखबर शिकार को पकड़ लेता है। पतित मनुष्य अनभिज्ञ रहते हैं और शैतान के जाल में उलझ जाते हैं, जब तक कि परमेश्वर के अनुग्रह से उनको सुध न आ जाये और वे सुसमाचार के प्रकाश में बच न निकले।*

*ई. पतित मनुष्य शैतान के बं_____ में जक_____हुआ है (2 तिमुथियुस 2:26)। यह वाक्यांश यूनानी **जॉग्रिइओ** से निकला है, जिसका अर्थ, ''बंदी बनाना या पकड़ लेना।'' परमेश्वर की अनुग्रहपूर्ण करूणा का इंकार करने से पतित मनुष्य, शैतान के आधिपत्य में जकड़ा जाता है। शैतान परमेश्वर के नैतिक नियमों से पतित मनुष्य को मुक्त करने का प्रस्ताव रखता है, परंतु ऐसी ''स्वतंत्रता'' हमेशा पाप के **बंधन** की ओर ले जाती है।*

*उ. पतित मनुष्य शैतान का अनु_____ करते हैं (1 तीमु. 5:15)। ''बहक जाना'' वाक्यांश यूनानी शब्द **एक्ट्रेपो** से निकला है, जिसका यथाशब्द अर्थ है, ''पलट जाना या तोड़–मरोड़ करना।'' इसका प्रयोग किसी सभा में भाग लेने की उपेक्षा करने से या किसी के साथ जुड़ने से पलटने के लिये किया जाता था। चिकित्सीय संदर्भ में, इसका प्रयोग अंगों के संधि भंग होने में किया जाता था। जो परमेश्वर की इच्छा से मुख मोड़ लेते हैं, वे यह प्रगट करते हैं कि परमेश्वर के साथ वे कोई संगति या भाग लेना नहीं चाहते है। स्वभावतः वे ''शैतान'' के अनुयायी हो जाते हैं। यद्यपि पतित मनुष्य अनभिज्ञतावश शैतान का अनुसरण*

कर सकता है, तौभी वह अनिच्छा से अनुसरण नहीं करता। शैतान और पतित मनुष्य के मध्य स्वाभाविक आकर्षण होता है। वे दोनों समान भ्रष्ट स्वभाव के पाये जाते हैं और परमेश्वर के प्रति उसी शत्रुता की प्रवृत्ति को प्रगट करते हैं।

मसीह की विजय और हमारा छुटकारा

बाइबल सिखाती है कि पाप की मजदूरी मृत्यु है (रोमियों 6:23) और शैतान को इस दंड को मनुष्य के ऊपर लगाने का अधिकार दिया गया है (इब्रानियों 2:14–15) । मसीह ने अपने जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा शैतान के ऊपर विजय प्राप्त की। अपने लोगों के लिये मरने के द्वारा, उसने उनके ऋृण को चुकाया और शैतान को सामर्थ विहीन बनाया।

1. उत्पत्ति 3:15 में, हम आने वाले मसीहा के विषय में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी देखते हैं। इस भविष्यवाणी के अनुसार, मसीह शैतान के व्यक्तित्व और कार्य के साथ क्या करेगा? वह किस प्रकार शैतान को पराजित करेगा?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यह अंश अक्सर प्रोटोइवेंजलिज्म के संदर्भ में लिया जाता है (लैटिनः ***प्रोटो*** = प्रथम+ ***इवेंजलिज्म*** =सुसमाचार) या ''प्रथम सुसमाचार।'' ''स्त्री का बीज'' परमेश्वर के पुत्र की ओर संकेत करता है, जो देहधारण करेगा, शैतान के विरूद्ध युद्ध करेगा और उस पर विजय प्राप्त करेगा। मसीहा शैतान के सिर को कुचलेगा – वह उसे मृत कर देने वाले घाव से घात करेगा। शैतान मसीहा की एड़ी को डसेगा – मसीह सर्प के साथ अपने युद्ध में घायल किया जायेगा, (यशायाह 53:4–5), परंतु वह घाव अततः घातक नहीं होगाः और मसीहा पुनर्जीवित होगा! रोमियों 16:20 के अनुसार, परमेश्वर के लोग मसीहा की जीत में सहभागी होंगेः ''शांति का परमेश्वर आप के पैरों तले शैतान को जल्द ही कुचलेगा।''

2. यूहन्ना 3:8 मसीहा के आगमन के उद्देश्य के बारे में क्या सिखाते हैं?

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''नष्ट करना'' ग्रीक शब्द ***लूओ*** से निकला है, जो खोलने, नष्ट करने, तोड़ने या समाप्त करने की ओर संकेत देता हैं। मसीह के आगमन से विशेषकर, शैतान द्वारा उसके लोगों को बंदी बनाये जाने जैसे कार्य नष्ट किये गये।

3. कुलुस्सियों 2:15 का पद, मसीह की शैतान के ऊपर विजय के संबंध में एवं अपने लोगों के लिये किये गये छुटकारे के कार्य के बारे में क्या सिखाता हैं?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: वाक्यांश ''शासक और अधिकारी'' शैतान और पतित स्वर्गदूतों के बारे में दिया गया संदर्भ है। परमेश्वर के लोगों के ऊपर शैतान के प्रबल होने का आधार, उसके लोगों का पाप है, जिसने उन्हें परमेश्वर से अलग कर दिया, श्राप के अधीन किया और मृत्यु दंड के योग्य ठहराया। जब मसीह ने मध्यस्थी की और अपने लोगों के पाप का दाम चुका दिया, तब उनके ऊपर से शैतान की सामर्थ को निर्बल कर दिया। ''निर्बल करना'' शब्द यूनानी शब्द ***ऐपेकडूओमही*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''वंचित करना, लूटना या निर्बल करना।'' यह वाक्यांश ''खुल्लमखुल्ला प्रदर्शन'' यूनानी शब्द ***डायमैटिट्जो*** से निकला है, जिसका अर्थ है ''किसी को मिसाल के रुप में या उदाहरण स्वरूप प्रदर्शित करना।'' मसीह हमारे पापों के प्रायश्चित स्वरूप खुल्लमखुल्ला क्रूस पर चढ़ाया गया था (रोमियों 3:25) और कलवरी पर उसकी मृत्यु ने शैतान को खुल्लमखुल्ला पराजित किया। मसीह की शैतान और उसके दूतों के ऊपर विजय क्रूस के द्वारा संभव हुई थी, जहां उसने हमारे पाप अपने ऊपर उठा लिये, हमारे स्थान पर दु:ख उठाया और हमारे विरूद्ध कर्ज का अभिलेख मिटा डाला। पाप को निष्प्रभावी करने से मृत्यु और मृत्यु को लाने वाली शैतान की सामर्थ का अंत हुआ!

4. इब्रानियों 2:14–15, मसीह की शैतान के ऊपर विजय और अपने लोगों के लिये किये गये छुटकारे के कार्य के विषय में क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''सहभागी'' शब्द यूनानी शब्द ***कोईनोनो*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''संगति करना, हिस्सा लेना, एकत्रित होना।'' समस्त मनुष्य देह और रक्त की एक संगति और उसके दुःखों में सहभागी होते हैं। परमेश्वर का सनातन पुत्र, देह और रक्त की हमारी संगति में सहभागी हुआ और सम्मिलित रूप से हमारे दुःखों के प्याले में से पिया। शैतान के पास मृत्यु पर सामर्थ्य थी जिस से की वह मनुष्य के पाप के कारण उसे दोषी ठहराकर, ठीक मृत्यु दंड की मांग कर सके। मसीह ने उस दंड को चुकाकर सारे दोषों को शांत कर दिया।

अध्याय 15: मसीह हमारा मेलमिलाप

भाग एकः मेलमिलाप का सिद्धांत

संसार के समस्त धर्मो में एक प्रश्न सबसे अधिक आम हैः ''कैसे एक पापी मनुष्य का परमेश्वर से मेलमिलाप हो सकता है?'' जबकि सभी दूसरे धर्म मेलमिलाप के लिये मनुष्य के कर्म को माध्यम मानते हैं, बाइबल मनुष्य से अलग हटकर, यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य की ओर संकेत देती है।

मेलमिलाप का अर्थ

शब्द ''मेलमिलाप करना'' लैटिन भाषा के शब्द ***रिकंसीलियरे*** से निकला है (***रि*** = पुनः नये सिरे से + ***कंसीलियरे*** = जमा करना, संयुक्त करना, विजय हासिल करना)। इसका अर्थ है, ''पुनः साथ साथ लाना, नये सिरे से संयुक्त करना, सुलह करना, अनुकूल बनाना या ग्रहणशील बनाना, मित्रता को पुर्नस्थापित करना या सामंजस्य बिठाना।'' नये नियम में, ''मेलमिलाप करना'' और ''मेलमिलाप'' शब्द यूनानी शब्दों से अनुवादित है।

डिअलासो – बदलना या इच्छा को बदलना; सुलह करना; किसी के साथ संबंध को पुनः नया बनाना। केवल मत्ती 5:24 में, एक कुपित भाई से सुलह करने के संदर्भ में यह शब्द प्रयुक्त हुआ है।

काटालासो – बदलना या आदान प्रदान करना, जैसे कोई बराबर कीमत के सिक्कों का आदान प्रदान कर सकता है; मेल करना; के पक्ष मे लौटना। 1 कुरिन्थियों 7:11 के पद में, यह एक महिला और उसके पति के बीच समझौते को बताता है। रोमियों 5:10 में (दो बार) और 2 कुरिन्थियों 5:18–20 में (तीन बार), यह परमेश्वर के साथ मेलमिलाप के लिये प्रयुक्त हुआ है।

अपोकाटालासो – यह ***काटालासो*** का एक और गहन और सशक्त रूप है; यह पूर्ण रूप से मेलमिलाप को प्रगट करता हैं इफिसियों 2:16 और कुलुस्सियों 1:20 और 22 में परमेश्वर के संदर्भ में इसका प्रयोग किया गया है।

कटालागे – यह संज्ञा है जो क्रिया रूप ***काटालासो*** से संबंद्ध है। गैर–धार्मिक साहित्य में, यह शब्द पैसो का आदान प्रदान करने वाले व्यवसाइयों के मध्य उपयोग में लाया जाता है, बराबर मूल्य की राशि को बदलना, या अंतर

को समायोजित करना। लाक्षणिक रूप में, यह किसी अन्य के पक्ष को पुनः प्राप्त करने से संबंधित है। नये नियम में, यह शब्द पापियों द्वारा मसीह और उनके कार्य में विश्वास रखने से पुनः परमेश्वर से कृपा पाने की ओर संकेत देता है (रोमियों 5:11; 11:15; 2 कुरिन्थियों 5:18–19)।

किस के साथ किसका मेल-मिलाप कराया गया?

''मेलमिलाप करने'' और ''मेलमिलाप'' की बाइबल आधारित शब्दावली पर विचार करते हुए हमारे सामने एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित होता हैः ''किसने किसके साथ किसका मेलमिलाप कराया गया?'' इसका तात्पर्य है, क्या कूस ने मनुष्य का परमेश्वर से मेल कराया? (अर्थात मनुष्य को परमेश्वर की कृपा पाने के लिये प्रवृत्त करता है) या परमेश्वर को मनुष्य की ओर झुकाता है (अर्थात परमेश्वर मनुष्य की ओर कृपालू होने के लिये प्रवृत्त होता है)?

यह प्रश्न महत्वपूर्ण है क्योंकि कुछ लोग त्रुटिपूर्ण विश्वास करते हैं कि यद्यपि पापी मनुष्य परमेश्वर के साथ शत्रुता रखता है (अर्थात परमेश्वर के विरूद्ध होना), परंतु परमेश्वर कभी मनुष्य के साथ शत्रुता नहीं रखते। किन्तु, बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर भी पापी के साथ शत्रुता रखता है। वह धर्मी और पवित्र है; इसलिये, वह पापी पर क्रोधित है (भजन 5:5; 7:11; यूहन्ना 3:36), पापी से विरक्त हो जाता है (भजन 5:4; यशायाह 59:2), और पापी का न्याय करने के लिये प्रवृत होता है (भजन 7:11–13; 11:5–6)।

इसलिये, इस प्रश्न ''किसने किसके साथ मेलमिलाप किया?'' के लिये हमारा उत्तर दोस्तरीय है। 1. ***कूस ने परमेश्वर से हमारा मेल करवाया*** अर्थात मसीह ने हमारे पाप का ऋृण चुकाया, परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट किया और उसके क्रोध को शांत किया। इसने हमसे परमेश्वर की शत्रुता को दूर कर दिया और उसके लिये यह संभव किया कि उसके पुत्र पर विश्वास लाने के द्वारा वह हमें धर्मी ठहराये। 2. ***कूस के द्वारा परमेश्वर से हमारा मेलमिलाप तब होता है*** जब हम पवित्र आत्मा के द्वारा पुनरुज्जिवित किये जाने के कारण हम हमारे पापों से प्रायश्चित करते हैं (अर्थात विचार व कार्य में हमारा विरोध दुर्बल पड़ जाता है) और मसीह में हमारा विश्वास प्रगट करते हैं।

1. मेलमिलाप के सिद्धांत के संबंध में, रोमियों 5:10–11 के पद, बाइबल के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पदों में से एक है। इन पदों को तब तक पढ़िये, जब तक कि आप इसकी विषय सामग्री से परिचित न हो जायें और तब निम्नलिखित वाक्यांशों पर, अपने विचारों को प्रगट करे। बाइबल आधारित मेलमिलाप के बारे में वे क्या सिखाते हैं?

   अ. क्योंकि जब हम शत्रु ही थे (पद 10)

   _____

   _____

   _____

   _____

टिप्पणियां: ''शत्रु'' शब्द यूनानी विशेषण ***एकथ्रॉस*** से निकलता है जो उस व्यक्ति की ओर संकेत देता है जो दुश्मन हो, घृणायोग्य हो या किसी के कड़े विरोध में हो। सुसमाचारों में, इसका उपयोग शैतान का वर्णन करने के लिये किया गया है (मत्ती 13:39; लूका 10:19) ; रोमियों 8:7 और कुलुस्सियों 1:21 में, यह पतित मनुष्य के ''शत्रुत्वपुर्ण'' मन या विचारों के वर्णन के लिये प्रयुक्त होता है। अक्सर, यह समझा जाता है कि मनुष्य परमेश्वर का शत्रु है और परमेश्वर कभी भी मनुष्य का शत्रु नहीं रहा है। किन्तु, यह कथन अत्यंत भ्रामक है। यद्यपि शत्रुता या बैर जो पद 10 में दर्शाया गया है, वह परस्पर है, कई धर्मविज्ञानी परमेश्वर के पवित्र बैर या पापी मनुष्य के प्रति उचित क्रोध पर बल देते हैं। चार्ल्स हॉज लिखते हैं, ''पापी का परमेश्वर के प्रति दुष्टतापूर्ण विरोध ही नहीं हैं, परंतु परमेश्वर का पापी के प्रति पवित्र प्रकार का विरोध पाया जाता है।''[4] राबर्ट एल. रैमंड लिखते हैं, '''शत्रु' शब्द परमेश्वर के प्रति हमारे अपवित्र शत्रुत्व को ही प्रगट नहीं करता परंतु परमेश्वर की हमारे प्रति पवित्र द्वेष को भी प्रगट करता है।''[5] मैथ्यू हैनरी लिखते हैं, ''यह शत्रुता परस्पर शत्रुता है, परमेश्वर पापी के प्रति बैर रखता है, और पापी परमेश्वर से बैर रखता है।''[6]

ब. हमारा मेल परमेश्वर के साथ उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हुआ (पद 10)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''मेल हुआ'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***काटालासो*** से निकलता है (''मेलमिलाप के अर्थ'' के अंतर्गत ऊपर लिखी परिभाषा पढ़िये)। परमेश्वर से मेल करवाने हेतु, विश्वासी के लिये, मसीह की मृत्यु आधार या बुनियाद है। ***परमेश्वर के संबंध में:*** मसीह की मृत्यु ने परमेश्वर के न्याय की उचित मांगों को संतुष्ट किया, परमेश्वर के क्रोध को शांत किया और परमेश्वर के लिये इसे संभव किया कि वह अपनी धार्मिकता को बनाये रखते हुए पापी पर करूणा प्रगट करे। ***मनुष्य के संबंध में:*** मसीह की मृत्यु ने पाप और उसके दंड की बाधाओं को दूर कर दिया और पापी के हृदय में, परमेश्वर प्रदत्त उद्धार के फलस्वरूप होने वाले बदलाव के कार्य के लिये रास्ता खोल दिया। पवित्र आत्मा के नए जन्म के कार्य के द्वारा, परमेश्वर के प्रति पापी की घृणा या शत्रुता, प्रेम में बदल गयी और परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति उसका अनादर या तिरस्कार आदर में बदल गया और आज्ञा मानने की इच्छा में परिवर्तन हो गया है।

4 *Commentary on the Epistle to the Romans*, p.138

5 *A New Systematic Theology of the Christian Faith*, p.646

6 *Matthew Henry Commentary*, Vol.6, p.397

क. अब मेल हो जाने पर हम उसके जीवन के द्वारा उद्धार क्यों न पायेंगे (पद 10)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: विश्वासी का मेल ***हो चुका*** है। विश्वासी का मेल एक संपूर्ण सच्चाई है जो मसीह की एक बार, परंतु सदाकाल के लिये पूर्ण मृत्यु पर आधारित है। हम मेल होने की राह नहीं जोह रहे हैं, परंतु जिस क्षण हम विश्वास करते है, परमेश्वर से हमारा पूर्ण मेल हो जाता है। ***प्रश्नः*** अगर उसकी मृत्यु के द्वारा हमारा मेल हुआ है, तो कैसे उसके जीवन के द्वारा हम बचाये गये हैं? ***उत्तरः*** मसीह की मृत्यु, परमेश्वर से मेल करवाने की एकमात्र बुनियाद है। परंतु यह जीवित और महिमादायी मसीह है, जो हमें बुलाता है, हमें जीवित करता है, देखभाल करता है, सिद्ध बनाता है और हमारे लिये स्वर्ग में परमेश्वर से निवेदन करने के लिये सदैव विद्यमान है (इब्रानियों 7:25)।

ड. और केवल इतना ही नही, हम परमेश्वर की हमारे प्रभू यीशु मसीह के द्वारा प्रशंसा भी करते हैं, जिसके द्वारा हमें अब मेलमिलाप प्राप्त हुआ है (वचन 11)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: जो यह स्वीकार कर लेते हैं कि उनका मेल केवल मसीह के द्वारा संभव हुआ तो वे सिर्फ परमेश्वर में ही घमण्ड़ करते है, या उसी की प्रशंसा करते हैं। ''प्रशंसा करना'' यह शब्द यूनानी शब्द ***कॉखाओमाय*** से निकला है, जो किसी वस्तु या व्यक्ति के कारण उल्लसित होने या घमण्ड़ करने को प्रदर्शित करता है। फिलिप्पयों 3:3 में, प्रेरित पौलुस सच्चे मसीही जन का वर्णन करता है ''जो मसीह यीशु में विश्वास (रखता) है और शरीर पर कोई भरोसा नहीं रखता।'' उसी प्रकार, 1 कुरिन्थियों 1:31 में, पौलुस लिखता है, ''यदि कोई गर्व करे तो मसीह में करे।''

2. कुलुस्सियों 1:19–22 में, मेलमिलाप के सिद्धांत से संबंधित एक महत्वपूर्ण पद मिलता है। इस पद को तब तक पढ़िये जब तक आप इसकी विषय सामग्री से परिचित न हो जाये और तब निम्नांकित वाक्यांशों पर अपने विचार लिखिये।

अ. क्योंकि पिता को यही भाया कि संपूर्ण परिपूर्णता उसी में वास करे (पद 19)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह देह में परमेश्वर हैं। इसलिये, उसके व्यक्तित्व या कार्य में किसी भी प्रकार की कमी नहीं है; ऐसा कुछ नहीं है जो विफल हो; हमारे उद्धार के कार्य की श्रृंखला में कोई कमजोर कड़ी नहीं है। हमारा मेलमिलाप पूर्ण और अपरिवर्तनीय है।

ब. और उसी के द्वारा समस्त वस्तुओं का अपने साथ मेल कर ले (वचन 20)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह एकमात्र वह जन है जो परमेश्वर द्वारा ठहराया हुआ है, और कोई दूसरा नहीं है। यहां, इस 22 वें पद में, ''मेल'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***अपोकाटालासो*** से निकला है (''मेलमिलाप के अर्थ'' के अंतर्गत ऊपर लिखी परिभाषा पढ़िये)। वाक्यांश ''समस्त वस्तुएं'' पद 20 में यह वर्णित करता है जैसे पृथ्वी और स्वर्ग की सब वस्तुएं उसमें सम्मिलित है।

क. उसके क्रूस पर बहाए गए लहू के द्वारा शान्ति स्थापित की।

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: परमेश्वर से मेलमिलाप और शांति मसीह के हमारे स्थान पर दुःख उठाने और मरने के कारण ही संभव हुआ। कोई भी सुसमाचार जो इस सत्य के महत्व से इंकार करता या उसे घटाता है, झूठा सुसमाचार है। केवल मसीह की मृत्यु द्वारा, हमारे पाप का ऋण चुकाया गया, परमेश्वर का न्याय संतुष्ट हुआ और उसका क्रोध शांत हुआ।

ड़. चाहे वे पृथ्वी पर की हों अथवा स्वर्ग में की (वचन 20)

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: कई सत्य इस पद में से एकत्रित किये जा सकते हैं। सबसे पहले, पाप ने समस्त सृष्टि को प्रभावित किया था (रोमियों 8:19–21)। केवल मसीह के क्रूस द्वारा पाप दूर किया जा सकता है और उसके विध्वंसकारी प्रभावों को ठीक किया जा सकता है।

दूसरा, मसीह का कार्य न केवल परमेश्वर और मनुष्य के बीच मेलमिलाप करवाता है, परंतु मनुष्य और मनुष्य के बीच भी मेल करवाता है। अंतिम स्थान पर, परिणामस्वरूप, मसीह संपूर्ण विश्व में शांति स्थापित करेगा। वह गिराये गये स्वर्गदूतों और छुटकाराविहीन लोगों को निकाल देगा ताकि वे परमेश्वर की सृष्टि के प्रति अब और विभाजन और वैमनस्य न फैला सके।

इ. और यद्यपि तुम पहिले तो अलग किए हुए और मन से बैरी थे और बुरे कामों में लगे हुए थे (वचन 21)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह जन की पूर्व अवस्था का वर्णन करने के लिये जिन शब्दों का प्रयोग किया गया, वे मेलमिलाप के बिल्कुल विपरीत थे। ''अलग किए हुए'' शब्द यूनानी भाषा के ***अपालोट्रियो*** से निकला है, जो किसी को एक दूसरे की सहभागिता और घनिष्ठता से अलग करने को बताता है। ''बैरी'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***एकथ्रॉस*** से निकला है, जो बैर रखने वाले, घृणा करने वाले, विरोधी और शत्रुता रखने वाले की ओर संकेत देता है।

ई. फिर भी उसने अपनी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुमसे मेल कर लिया है (वचन 22)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: दो सत्य सामने निकल कर आते हैं। पहले स्थान पर, मेल केवल मसीह के हमारे स्थान पर दुःख उठाने और मसीह की मृत्यु द्वारा ही संभव है। दूसरे स्थान पर, विश्वासी का मेल एक संपूर्ण कार्य या सच्चाई है।

उ. कि तुम्हे अपने समक्ष पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष बना कर उपस्थित करें (वचन 22)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यहां हमारे मेलमिलाप के महान उद्देश्यों में से एक उद्देश्य का वर्णन दिया हुआ है – पवित्र, निष्कलंक और परमेश्वर के समक्ष निर्दोष। यह न केवल परमेश्वर के समक्ष मसीह में होकर, विश्वासी की व्यक्तिगत स्थिति को बताता है, परंतु विश्वासी का सच्चा व व्यक्तिगत परिवर्तन भी प्रगट करता है। वह प्रक्रिया जिसके द्वारा परमेश्वर उनका परिवर्तन करता और मेलमिलाप करता है, पवित्रीकरण कहलाती है (लेटिनः ***सैंक्टस*** = पवित्र + ***फेसेरे*** = बनाना)। यह प्रक्रिया परिवर्तन के समय आरंभ होती है, विश्वासी के संपूर्ण जीवनकाल तक चलती है और जब विश्वासी स्वर्ग पहुंचता है तब सिद्ध होती है।

अध्याय 16: मसीह हमारा मेलमिलाप

भाग दो: मेलमिलाप की सेवकाई

इसके पूर्व के अध्याय में, हमने ''मेलमिलाप'' के अर्थ पर विचार किया और इस सिद्धांत की बाइबल पर आधारित व्याख्या को देखा, और इस विषय से संबंधित बाइबल के दो पाठों का अध्ययन किया। इस अध्याय में, एक और पद को हम ध्यान से देखेंगे जो मसीह में मेलमिलाप के सैद्धांतिक और व्यवहारीक महत्व व ***मेलमिलाप की सेवकाई*** जो हमें सौंपी गयी है, उसके ऊपर प्रकाश डालता है। कैसे परमेश्वर से मेल होना हमारे जीवन जीने के तरीके पर असरकारक होता है? परमेश्वर द्वारा दिये गये मेलमिलाप के उपहार के प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिये?

1. 1 कुरिन्थियों 5:17–20 में मेलमिलाप के सिद्धांत और मेलमिलाप की सेवकाई के विषय में एक महत्वपूर्ण पद मिलता है जो विश्वासी को दिया गया है। इस पद को तब तक पढ़िये जब तक कि आप इसकी विषय सामग्री से परिचित न हो जायें। तब निम्न वाक्यांशों पर अपने विचारों को लिखिये।

   अ _____*परमेश्वर ने मसीह के द्वारा हमसे मेल किया (पद 18)*

   _____

   _____

   _____

   _____

टिप्पणियां: ''मेल हुआ'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***काटालासो*** से निकला है (''मेलमिलाप के अर्थ'' के अंतर्गत ऊपर लिखी परिभाषा पढ़िये)। इस वाक्यांश में तीन प्रमुख सत्य पाये जाते हैं। प्रथम, विश्वासी का मेल एक पुरी की गई सच्चाई है। दूसरा, मेल परमेश्वर का कार्य है जिसे उसने प्रारंभ किया था और खत्म किया– मनुष्य की कोई ताकत नहीं है कि वह मेलमिलाप को संभव कर सके। अंततः, मेल केवल मसीह के व्यक्तित्व व कार्य के द्वारा ही संभव हो सका है।

ब. और हमें मेलमिलाप की सेवकाई दी (पद 18)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: जिनका मेल परमेश्वर से हुआ है, उन्हें एक महान भंडारीपन या उत्तरदायित्व सौंपा गया है ताकि सुसमाचार दूसरों के साथ बांटे, ताकि वे भी मेल कर ले। परमेश्वर को भाया कि वह सुसमाचार प्रचार के द्वारा स्वंय से मनुष्यों का मेल कर ले।

क. अर्थात परमेश्वर, लोगों के अपराध का दोष उन पर न लगाते हुए, मसीह में जगत का मेलमिलाप अपने साथ कर रहा था (पद 19)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यहां हमें मसीह के परमेश्वरत्व का एक और प्रमाण मिलता है। मसीह में होकर, परमेश्वर जगत में आया ताकि हमारे मेल को प्रभावी बना सके। मेल तभी संभव है क्योंकि मसीह ने शांति की राह की एक बड़ी बाधा को निकाल दिया – अर्थात हमारे अपराधों को दूर कर दिया। ऐसा उसने अपने लोगों के पापों के लिये मरने के द्वारा किया, परमेश्वर के न्याय की मांगों को संतुष्ट किया और उसके क्रोध को शांत किया।

ड. और उसने हमें मेलमिलाप का वचन सौंप दिया है (पद 19)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यीशु मसीह का सुसमाचार मेलमिलाप का कार्य है। "*सौंपा*" शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***टिथआयमी*** से निकला है, जिसका अर्थ है, "नियुक्त करना, वचनबद्ध होना, अभिषिक्त करना।" विश्वासियों को एक महान भंडारीपन या कार्य सौंपा गया है: उनकी पीढ़ी को सुसमाचार सुनाना।

इ. इसलिये, हम मसीह के राजदूत हैं मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा है (पद 20)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: परमेश्वर मनुष्य का उपयोग करता है ताकि उसके मेलमिलाप के कार्य को दूसरों का बतायें। यह एक राजसी बुलाहट है। जो सुसमाचार का प्रचार करते हैं, वे प्रतिष्ठित जन हैं जो परमेश्वर की विनती मनुष्यों तक पहुंचा रहे हैं।

ई. हम मसीह की ओर से तुम से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लो (पद 20)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: "*निवेदन* " शब्द यूनानी भाषा के शब्द **देयोमाय** से निकला है, जिसका अर्थ है, "अनुनय करना, याचना करना, निवेदन करना, मांगना या प्रार्थना करना।" परमेश्वर से मेलमिलाप करने की अनुनय करने में, हम लोगों को, न केवल परमेश्वर के प्रति उनकी शत्रुता को एक तरफ रखने के लिये कह रहे हैं, परंतु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य द्वारा परमेश्वर से मेलमिलाप होने पर मिलने वाले लाभ को भी उठाने के लिये कह रहे हैं। परमेश्वर जैतून की शांति स्थापित करने वाली शाखा को कुछ नियत दिनों के लिये बढ़ायेगा। परंतु यह प्रस्ताव मनुष्य की मृत्यु और मसीह के द्वितीय आगमन के समय वापस ले लिया जायेगा। जब हम लोगों से मसीह की ओर आने का निवेदन करते हैं तब उसमें बड़ा आग्रह होना चाहिए। इसी कारण, प्रेरित पौलुस कहता है, "देखो, अभी वह ग्रहण किए जाने का और "उद्धार के दिन" का समय है (2 कुरिन्थियों 6:2)। फिर से, इब्रानियों का लेखक कहता है, "यदि आज तुम उसकी आवाज सुनो, तो अपने हृदयों को ऐसा कठोर न करो" (3:15; 4:7) ।

अध्याय 17: मसीह हमारा बलिदान

बलिदान शब्द लैटिन भाषा की क्रिया ***सैकरफैसेरे*** (***सैकर*** = शुद्ध या पवित्र + ***फैसेरे*** = बनाना) से निकला है। इब्रानी और यूनानी भाषा में क्रमशः, जो प्रारंभिक शब्दों को प्रयुक्त किया जाता है, वे ***जबाह*** और ***थूसिया*** हैं। दोनों शब्द किसी का वध किए जाने वाले या किसी के ऐवज में बलिदान स्वरूप मारे जाने वाले किसी जीव की ओर संकेत देते हैं। परमेश्वर का न्याय पापी की मृत्यु की मांग करता है; अतः परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट करने के लिये व उसके क्रोध को शांत करने के लिये प्राणबलि चढ़ायी जाती है।

पुराने नियम में, व्यवस्था के प्रत्येक उल्लंघन के लिये एक स्थानापन्न बलिदान चढ़ाया जाना आवश्यक था। एक निष्कलंक जानवर को मारा जाता था और जिस व्यक्ति ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी, उसके स्थान पर परमेश्वर को बलि चढ़ायी जाती थी। यह ध्यान देना आवश्यक है कि ''बैलों और बकरों का लहू'' पाप को दूर करे (इब्रानियों 10:4)। ऐसे बलिदान निम्नलिखित बातों के लिये उदाहरण का कार्य करते थेः 1. पाप की गंभीरता और उसका दण्ड़ – ''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है'' (रोमियों 6:23) 2. एक स्थानापन्न बलिदान की आवश्यकता जो परमेश्वर के न्याय की मांगों को संतुष्ट करे; और 3. परमेश्वर के पुत्र द्वारा – एक बड़े और महान, बेशकीमती बलिदान की आवश्यकता।

1. इब्रानियों 10:1–4 को पढ़िये; यह अंश पाप को दूर करने में, जानवरों के बलिदान की अयोग्यता के विषय में क्या सिखाता है?

अ. पद 1 अ के अनुसार, क्यों जानवरों का बलिदान, जो पुराने नियम की व्यवस्था में आवश्यक बतलाया गया था, परमेश्वर के लोगों के पाप को दूर करने में असमर्थ था?

1. व्यवस्था में तो भावी अच्छी वस्तुओं का वास्_____नहीं, परंतु छा_____ है।

टिप्पणियांः ''छाया'' शब्द यूनानी भाषा के ***स्किया*** शब्द से निकला है, जो एक छाया अथवा रूपरेखा की ओर संकेत देता है। ''स्वरूप'' शब्द यूनानी शब्द ***आइकॉन*** से निकला है, जो एक स्वरूप या छाया को प्रदर्शित करता है। पुराने नियम के बलिदान एक सच्ची तस्वीर की मात्र एक धुंधली या प्राथमिक रूपरेखा थेः अर्थात, मसीह के बलिदान की तस्वीर।

ब. पद 1 ब –2 के अनुसार, हम कैसे जान सकते हैं कि पुराने नियम में जानवरों के बलिदान परमेश्वर के लोगों के पाप को दूर करने और शुद्ध करने में असमर्थ थे?

1. *उन्हें निरं_____प्रति वर्ष चढ़ाया जाना था (पद 1 ब)*

2. अगर वे पाप को दूर कर सकते, तो उनका निं_____ चढ़ाया जाना बंद क्यों हो जाता (पद 2)

टिप्पणियां: इस तर्क का अनुसरण करना आसान है। अगर जानवर का बलिदान परमेश्वर के लोगों को शुद्ध करने में समर्थ होता, तो उन्हें ''निरंतर वर्ष प्रति वर्ष'' चढ़ाये जाने की आवयकता क्यों होती। एक ही बार का बलिदान पर्याप्त होता। जैसे जैसे ये बलिदान प्रति वर्ष चढ़ाये जाते रहे, वे लोगों को उनके उल्लेखनीय पाप या दोष के विषय में स्मरण दिलाते थे।

क. पद 4 के अनुसार, जानवर का बलिदान पूर्णतः परमेश्वर के लोगों के पाप को दूर करने में व उनकी अशुद्धता को शुद्ध करने में असमर्थ है। जो हमने पूर्व के पदों में देखा है, तो आप इसे अपने शब्दों में समझाइये कि ऐसा क्यों है।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मनुष्य ने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया है; इसलिये मनुष्य का मरना आवश्यक है। बलिदानी जानवर कभी भी मनुष्य के विरूद्ध ईश्वरीय न्याय की मांगों को पूर्ण नहीं कर सकते थे। एकमात्र पर्याप्त बलिदान किसी एक मनुष्य का चढ़ाया जाना आवश्यक था जो अनंत सिद्धता और योग्यता लिये हुए हो – अर्थात परमेश्वर – मनुष्य, यीशु मसीह!

2. इब्रानियों 10:5–10 मसीह के बलिदान की सर्वोत्तमा के संबंध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पदों में से एक है। इस पद को पढ़िये और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

अ. पद 5–6 के अनुसार, मसीह ने जानवरों के बलिदान के संबंध में क्या कथन दिया था?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह इस बात से इंकार नहीं कर रहा है कि परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था में जानवरों के बलिदान को विधिवत ठहराया था। वह तो सरल रूप में यह कह रहा है कि ऐसे बलिदान पाप को दूर करने में असमर्थ थे। उनका उद्देश्य तो मसीह की ओर संकेत देना था।

ब. पद 5–7 के अनुसार, मसीह ने इन अप्रभावकारी रहे जानवरों के बलिदान को हटाने के संबंध में क्या कहा?

1. परंतु तूने मेरे लिये एक दे_____तै_____की है (पद 5)।

टिप्पणियां: इब्रानियों का लेखक सैप्टयूजिंट भजनसंहिता 40:6 से उदाहरण दे रहा है (इब्रानी पुराने नियम का यूनानी अनुवाद)। मसीह के ऊपर लागू होते हुए, यह उसके देहधारण और परमेश्वर की इच्छा को संपूर्ण भक्ति के साथ पूरी करने की ओर संकेत देता है।

2. हे परमेश्वर देख मैं तेरी ई_____पूरी क_____ आया हूं, (पद 7) ।

टिप्पणियां: यह न केवल परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण करने के प्रति मसीह की प्रवृत्ति है, परंतु उसको सिद्धता के साथ पूर्ण करना भी निहित है।

क. पद 10 के अनुसार, परमेश्वर की इच्छा क्या थी और इसने क्या हासिल किया?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह के लिये परमेश्वर की इच्छा उसकी देह को उसके लोगों के लिये, पापों का वाहक बनकर, एक ही बार सदा के लिये बलिदान देने की थी। उसका सिद्ध बलिदान, उसके लोगों को, परमेश्वर के सामने पवित्र बनाता है (1 थिस्सलुनीकियों 3:13)।

ड. पद 9 के अनुसार, जब मसीह उसके लोगों के पापो के लिये मरा, परमेश्वर का उसके लोगों के प्रति व्यवहार में क्या अंतर आया?

1. वह प_____ को हटा लेता है कि दू_____को स्थापित करे।

टिप्पणियां: मसीह के देहधारण और छुटकारे के कार्य ने पुरानी वाचा की बलिदानी प्रथा का उसके याजकीय विधियां और संस्कारों समेत अंत किया। वह पुराने नियम की समस्त प्रतिज्ञाओं और प्रकारों की ***पूर्णता*** है और नयी वाचा की ***नींव*** है; उसके द्वारा, विश्वासी परमेश्वर के पास आते हैं।

3. इब्रानियों 9:11–14 एक और अदभुत पाठ है जो मसीह के बलिदान की विशिष्ठता बताता है। कैसे मसीह की याजककियता और बलिदान की सर्वोच्चता इन पदों में प्रगट हुई?

अ. वचन 11

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: पुराने नियम के याजक इस पृथ्वी के पवित्र स्थान पर जानवरों के लहू को लेकर प्रवेश करते थे। मसीह ने स्वयं का बलिदान कलवरी के क्रूस पर दिया और परमेश्वर की परम उपस्थिति में प्रवेश किया।

ब. वचन 12

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: कलवरी पर अपना लहू बहाकर, मसीह उसके लोगों का प्रतिनिधि बनकर, परमेश्वर के समक्ष स्वर्ग में प्रगट हुआ। यह पद ऐसा नहीं सिखाता कि मसीह ने अपना लहू परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत किया।

क. वचन 13–14

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: पृथ्वी के पवित्र स्थान पर अगर जानवरों का लहू पापी याजकों के द्वारा सारे उत्सवों के साथ, अशुद्ध की बाह्य शुद्धता के लिये चढ़ाया जाता था, तो मसीह का लहू तो कितना कुछ करने में समर्थ था! हमारे भले कार्य, हमारे दोषी ठहराने वाले विवेक को शांत नहीं कर सकते, वह विवेक जो धर्मी कहलाने के हमारे सारे व्यर्थ प्रयासों के बाद भी हमें पापी घोषित करता है। मसीह का एक ही बार सदा के लिये चढ़ाया गया बलिदान, हमारे हर एक पाप को दूर करने में, हमारे दोषी विवेक को शुद्ध करने में और हमें शांति व आनंद के साथ परमेश्वर की सेवा के योग्य बनाने में सक्षम है।

4. मसीह के बलिदान संबंधी सत्यों में से एक महत्वपूर्ण सत्य यह है कि यह बलिदान परमेश्वर के लोगों के प्रत्येक पाप के लिये एक ही बार चढ़ाया गया परंतु सदा के लिये पूर्ण किया गया। इब्रानियों की पुस्तक में, यह सत्य बारंबार दोहराया गया है। निम्नलिखित पदों में से प्रत्येक पद पर अपने विचार लिखिये।

अ. इब्रानियों 9:25–26

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: पुरानी वाचा के उन बलिदानों की तुलना में, मसीह के बलिदान की महान सर्वश्रेष्ठता यह थी कि उसके एक ही बार के बलिदान ने उसके लोगों के पापों को सदा सदा के लिये मिटा दिया।

ब. इब्रानियों 9:27–28

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: पाप के लिए मसीह का बलिदान इतना सिद्ध और परिपुर्ण है कि जब उसके लोगों के लिए उसका दुसरा आगमन होगा तब उनके पापों का कोई भी उल्लेख नहीं होगा।

क. इब्रानियों 10:12

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: वह याजक जो ''प्रतिदिन खड़ा रहता है'' (पद 11) और मसीह, जो ''बैठ गया'' है के मध्य विरोधाभास मिलता है। अर्थात मसीह पिता के दाहिने हाथ बैठ गया है यह इस बात का प्रमाण है कि उसका कार्य पूर्ण है।

ड. इब्रानियों 10:14

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: परमेश्वर के साथ सही संबंध में होने के लिये, एक मनुष्य को सिद्ध होना अवश्य है, पूर्ण रीति से पाप से परे होना चाहिये और परमेश्वर के लिये अलग होना चाहिये। जो पापी मनुष्य के लिये असंभव था, वह मसीह में संभव बनाया गया। वे सब जो मसीह और उसके बलिदान में विश्वास रखते हैं, उन्हें परमेश्वर के समक्ष एक सिद्ध स्थिति दी गयी है, जो अपरिवर्तनशील और शाश्वत है। उनके पापों और व्यवस्थाविहीन कार्यो को वह अब और अधिक स्मरण नहीं करेगा (पद 17)।

अध्याय 18: मसीह मेम्ना है

बाइबल में, मसीह के संदर्भ में, बलिदान से जुड़े विषय में मसीह को ''परमेश्वर का मेम्ना'' कहा गया है। मेम्ने ने इजरायल के इतिहास व आराधना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। पुराने नियम की बलिदानी प्रथा में, प्रतिदिन प्रातः काल व संध्या समय एक बेदाग मेम्ना बलि किया जाता था (निर्गमन 29:38–39)। सब्त के दिन, चढ़ाये जाने वाले बलिदानों की संख्या दुगुनी हो जाती थी (गिनती 28:9–10)। इसके साथ ही यह फसह के पर्व के समय मारे जाने वाला मेम्ना था, फसह का पर्व वह धार्मिक उत्सव था जिसे परमेश्वर द्वारा मिस्र की भयानक गुलामी से छुटकारा दिलाने की स्मृति में मनाया जाता था।

यद्यपि मेम्ने की उपमा निश्चय ही मसीह के आचरण की कोमलता और नम्रता की परिचायक है, परंतु इसका प्राथमिक महत्व यह नहीं है। इतिहास की पृष्ठभूमि के प्रकाश में, मसीह की ''मेम्ने'' के रूप में जो तस्वीर है, वह उसके लोगों के स्थान पर बलिदान देने की ओर संकेत देती है।

मसीह जो बलिदान का मेम्ना है

मेम्ने ने पुराने नियम की बलिदानी प्रथा में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। यद्यपि, ऐसे बलिदान प्रतिछाया और प्रतीक स्वरूप थे जो उस ओर संकेत दे रहे थे कि संसार में कोई एक मेम्ना प्रगट होगा जो पापों के बोझ को उठा ले जायेगा! वह मेम्ना नाजरथ का यीशु मसीह है।

1. यूहन्ना 1:29 और 1:36 में बपतिस्मा करनेवाला यूहन्ना किस प्रकार यीशु मसीह की ओर संकेत देता है? कौन से सत्यों को प्रगट किया गया है? अपने विचारों को लिखिये।

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: याजकिय परिवार का सदस्य होने के कारण, बपतिस्मा करनेवाला यूहन्ना बलिदान के मेम्ने और फसह के पर्व के मेम्ने के विषयक अधिक परिचित था। यह तथ्य कि यूहन्ना के पद का दो बार वर्णन किया गया, बहुत महत्वपूर्ण है (1:29, 36)। बपतिस्मा करनेवाले यूहन्ना ने यीशु को राजनीतिक छुटकारा देने वाले के रूप में नही देखा, अपितु परमेश्वर द्वारा नियुक्त बलिदान का मेम्ना जो जगत के पाप उठाकर ले जाता है, के रूप में देखा। यह वाक्यांश '' उठा ले जाता है'' यूनानी भाषा के शब्द ***अहिरो*** से निकला है, जो किसी चीज को उठाने या धारण करने का अर्थ बताता है। मसीह के संदर्भ में, इसका अर्थ है कि उसने हमारे पापों को उठाया और उन्हें ले गया। यह क्रिया वर्तमान काल में है जो सतत कार्यवाही को प्रगट करती है। मसीह की मृत्यु की सामर्थ या प्रभावोत्पादकता इस जगत के अंत होने तक जारी रहेगी। ''पाप'' शब्द एकवचन है, जो पाप को पूर्ण रूप में प्रगट करता है – इसमें हर प्रकार के पाप की समग्रता निहित है।

2. यशायाह 53:6–7 में परमेश्वर के लोगों के लिये एवं उनके स्थान पर मसीहा जो कार्य करेगा, इसका वर्णन मिलता है। किस प्रकार यशायाह का वर्णन बपतिस्मा करनेवाला यूहन्ना द्वारा यूहन्ना 1:29 के वर्णन से समानांतर है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''भटक गये'' शब्द इब्रानी भाषा के शब्द ***ताह*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''गलती करना, भटक जाना, पथभ्रष्ट होना या गुमराह होना।'' यह कभी कभी नशे के संदर्भ में भी प्रयुक्त होता है। सब मनुष्य परमेश्वर से भटक गये हैं और मतवाले मनुष्यों के समान हो गये हैं जो अपने नशे की अवस्था में लड़खड़ाते हैं। वाक्यांश, ''हम में से प्रत्येक ने अपना अपना मार्ग लिया,'' यह सिद्ध करता है कि सभी मनुष्यों ने वह मार्ग अपना लिया जो उन्हें ठीक जान पड़ा, परंतु उसका अंत मृत्यु है (नीतिवचन 14:12)। हमें बचाने के लिये, यह आवश्यक था कि मसीह हमारे अधर्म को उठा ले और हमारे स्थान पर वध किए जाने के लिये जाये। यहां हम देखते हैं कि बपतिस्मा करनेवाला यूहन्ना पहला भविष्यवक्ता नहीं था जिसने मसीहा को उसके लोगों के पाप उठाने वाला मेम्ना कहकर संबोधित किया।

3. 1 पतरस 1:18–20 में, हमें बाइबल के समस्त पदों में से एक सबसे सुंदर पद पढ़ने को मिलता है जो मसीह के व्यक्तित्व और उसके कार्य से संबंधित है। इस पद में पतरस, किस प्रकार यीशु मसीह और उसके द्वारा उसके लोगों के स्थान पर किये गये उद्धार के कार्य के विषय में बताता है? इस पद को कई बार पढ़िये जब तक कि आप इसकी विषय सामग्री से परिचित न हो जायें और तब निम्नलिखित पदों पर अपने विचारों को लिखिये।

अ. क्योंकि तुम जानते हो कि उस निकम्मे चाल चलन से जो तुम्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ, तुम्हारा छुटकारा सोने या चांदी जैसी नाशवान वस्तुओं से नहीं हुआ (पद 18)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''छुटकारा पाये हुए'' यह शब्द यूनानी भाषा के शब्द **ल्यूट्रों** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''किसी व्यक्ति या वस्तु को पुनः किसी गुलामी या बंधन से खरीदना।'' इस पद में, विश्वासी अपने पूर्वजों से पाये हुए व्यर्थ के चाल चलन से मुक्त किया गया है। यह मूर्ति पूजक या यहूदी पर लागू हो सकता है। यहूदी और अन्यजाति की किसी भी प्रकार की परंपरा, धार्मिक रीति रिवाज और नैतिक नियम में उद्धार देने की सामर्थ नहीं है।

ब. परंतु निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ है (पद 19)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: लैव्यव्यवस्था 22:20–24 के अनुसार, एक निष्कलंक मेम्ना बलिदान के लिये आवश्यक था। पतरस के अनुसार, मसीह वह मेम्ना है। बाइबल कहती है, ''क्योंकि उसके (मनुष्य) के प्राण की छुड़ौती तो भारी है, उसके लिये फिरौती कभी पर्याप्त नहीं होगी'' (भजन 49:8)। मनुष्य कोई भी मोल चुकाये, वह उसकी आत्मा को छुटकारा नहीं दे सकता। कलवरी पर एकमात्र मसीह का बहाया हुआ लहू पर्याप्त है, क्योंकि वह अनमोल था।

मसीह फसह का मेम्ना

फसह के पर्व पर मेम्ने को मारा जाता था, फसह का पर्व वह धार्मिक उत्सव था जिसे परमेश्वर द्वारा मिस्र की भयानक गुलामी से छुटकारा दिलाने की स्मृति में मनाया जाता था। उस रात्रि जब परमेश्वर ने मिस्रियों का न्याय किया, इजरायल के प्रत्येक परिवार को आज्ञा मिली कि उन्हें एक मेम्ने के लहू को अपने घरों की चौखट पर लगाना है। जब मृत्यु का दूत वहां से गुजरा, तो उसने परमेश्वर के जिन लोगों के घरों पर मारे गये मेम्ने का लहू लगा देखा, वह वहां से "गुजर गया।" यह देखना कठिन नहीं है कि फसह का मेम्ना मसीह का ही प्रकार है। मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी है और उस पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी है। मसीह अपने उन दंडाज्ञा पाये लोगों के स्थान पर खड़ा है और उनके ऐवज में मर गया। जैसे पुराने नियम में फसह का मेम्ने के लहू उसके लोगों को मृत्यु से छुटकारा देता है।

1. निर्गमन 12:1–24 में, हमें मारे गये फसह के मेम्ने के द्वारा, इजरायलियों के मिस्र से छुटकारे का बाइबल आधारित वर्णन मिलता है। इस पद को तब तक पढ़िये जब तक आप इसकी विषय वस्तु से परिचित न हो जायें और तब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

   अ. निर्गमन 12:5 में, फसह के पर्व का वर्णन किस प्रकार किया गया है? कैसे यह वर्णन मसीह जो परमेश्वर का मेम्ना है, उस पर लागू होता है?

   1. मेमना नि_____हो।

   टिप्पणियां: यह शब्द इब्रानी शब्द ***तामिम*** से निकला है, जिसका अर्थ है जो पूर्ण, स्वस्थ, अक्षत, या निर्दोष हो। क्योंकि पाप के कारण मनुष्य नष्ट, दुर्बल और दोषी हो चुका था। शारीरिक रूप से निष्कलंक मेम्ना पापरहित मसीह का प्रतीक या प्रकार था, जो उसके लोगों के पाप के स्थान पर स्वयं का बलिदान चढ़ायेगा।

   ब. निर्गमन 12:21 के अनुसार, फसह के मेम्ने के साथ क्या किया जाना था? कैसे यही सत्य मसीह जो परमेश्वर का मेम्ना था, उस पर लागू होता है?

   _____

   _____

   _____

   _____

टिप्पणियां: ''वध करना'' यह इब्रानी शब्द ***शाहेत*** से निकला है, जिसका अनुवाद ''मार देना'' भी किया जा सकता है। फसह के मेम्ने के वध ने, मसीह के उसके लोगों के लिये मारे जाने का पूर्व संकेत दिया। प्रकाशितवाक्य 5:9 में, आकाश की सेना मसीह की महिमा करते हुए कहते हैं, ''तू इस पुस्तक के लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है क्योंकि तू ने ***वध*** होकर अपने लहू से प्रत्येक कुल, भाषा, लोग और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।''

क. पद 22 के अनुसार, फसह के मेम्ने के लहू के साथ क्या किया जाना था? प्रत्येक इजरायली को लहू के लगाने के बाद क्या करने की आज्ञा दी गयी? कैसे यही सत्य, परमेश्वर के मेम्ने मसीह के ऊपर और मसीही जन की प्रतिक्रिया व उसके साथ संबंध पर लागू होता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: सबसे पहले, यह आवश्यक था कि इजरायली परमेश्वर पर विश्वास करते और उसने जो उद्धार का माध्यम बतलाया था, उस पर विश्वास लाते। फसह के मेम्ने के लहू से, वे आने वाले न्याय से बचाये जाते। उसी प्रकार, हमें परमेश्वर की अपने पुत्र के संबंध में दी गयी गवाही पर विश्वास लाना आवश्यक है (1 यूहन्ना 5:9–12) – कि हमारे पाप के लिये उसका बलिदान, छुटकारे और परमेश्वर से मेल करने का एकमात्र साधन है। दूसरी बात, यह आवश्यक था कि इस्राएली उस लहू की सुरक्षा तले, अपने अपने घरों में ही रहते; क्योंकि बाहर दिखना निश्चित ही मौत का कारण बनता। उसी तरह, मसीह व उसके द्वारा कलवरी पर छुटकारे का जो कार्य किया गया, उसके बाहर कहीं और छुटकारा उपलब्ध नहीं है। केवल ''मसीह में'' परमेश्वर के साथ पुनः नये बनाये बने संबंध में समस्त आशीषें उपलब्ध हैं। ध्यान दीजिये कि यह वाक्यांश (''मसीह में'' या ''उसमें'' या ''प्रिय में'') इफिसियों 1:3–13 में कितनी बार प्रयुक्त किया गया है, जहां पौलुस उद्धार की आशीषों का वर्णन करता है पद 3, 4, 6, 7, 9, 10 (दो बार), 12, 13 (दो बार)।

ड. पद 23 के अनुसार, फसह के मेम्ने के लहू का क्या महत्व था? कैसे इस सत्य को मसीह के बलिदान और परमेश्वर के न्याय पर लागू किया जा सकता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मिस्री, जो परमेश्वर के क्रोध से नष्ट किये गये और इजरायली जो उसके न्याय से बचाये गये, उनके मध्य एकमात्र अंतर लहू का था। उसी प्रकार, विश्वासी का व्यक्तित्व अथवा उसके कार्य उसे परमेश्वर के न्याय से नहीं बचा सकते, परंतु मसीह ने कलवरी पर विश्वासी के एवज में जो लहू बहाया केवल वह उसे बचा सकता है।

2. *1 कुरिन्थियों 5:7 में, मसीह के संबंध में हमें एक बहुत अधिक महत्वपूर्ण वर्णन मिलता है। यह हमें क्या सिखाता है?*

अ. फसह का मेम्ना मसीह भी बलि_____ हुआ है। यहां, बाइबल में सीधे यीशु मसीह और उसके छुटकारा देने के कार्य को, फसह के मेम्ने का प्रतीक या छाया के रुप मे प्रगट किया गया है। ''बलिदान'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द **थूओ** *से निकला है, जिसका अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है, ''बलिदान देना, मारा जाना या वध करना।'' वैयक्तिक रूप से एक मसीही जन और विश्ववपि कलीसिया के लिए के लिये, मसीह ''हमारे लिये'' फसह है, जिसके लहू से हम धर्मी ठहराए गए हैं और आने वाले क्रोध से बचाये गये हैं (रोमियों 5:9)। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि मसीह की बलिदानी मृत्यु हमारे लिये* **फसह** *के समान है और पाप के बंधन से मुक्त होकर पवित्र जीवन जीने के लिये* **हमारी प्रेरणा** *भी है। इस्राएलियों को केवल अखमीरी रोटी खाने की आज्ञा दी गयी थी एवं फसह के पर्व के दौरान अपने घरों से सारे खमीर को (जो पाप का प्रतीक था) दूर कर देने के लिये कहा गया था (निर्गमन 12:15)। इसी के समान एक मसीही को मसीह के प्रति जो हमारे फसह का बलिदान है, उचित भक्ति के रुप में अपने जीवन से पाप को दूर हटाने का यत्न करना चाहिए।*

अध्याय 19: मसीह बलिदान का बकरा

प्रायश्चित का दिन

प्रायश्चित दिवस इब्रानी कैंलेडर में को सबसे पवित्र दिन माना जाता था, क्योंकि इस दिन वर्ष भर के लोगों के पापों के लिये बलिदान चढ़ाया जाता था। वर्ष का यही एक दिन होता था जब महायाजक मंदिर के परदे के भीतर परमपवित्रतम स्थान में प्रवेश कर जाता था, जहां परमेश्वर निवास करता था। उस दिन, अनेकों बलिदान दिये जाते थे, किंतु एक घटना विशेष रूप में मसीह के हमारे लिये प्रायश्चित का कार्य किये जाने का सशक्त चित्रण प्रस्तुत करती है: दो बकरों का चुनाव – एक को वेदी पर बलिदान चढ़ाये जाने के लिये या पाप के मूल्य चुकाने के लिये, और दूसरी को जंगल में परमेश्वर के लोगों के पाप को वहन करके भेजने के लिये चुना जाता था।

एक बकरे को बलि चढ़ाया जाता था और दूसरे को निर्जन में भेजा जाता था, यह देखना कठिन नहीं था कि कैसे ये दोनों बलिदान मसीह का प्रतीक या प्रतिच्छाया थे। एक बलिदान पूर्ण रूप से मसीह के प्रायश्चित कार्य के द्विस्तरीय उददेश्य का चित्रण नहीं कर सकता था। इसलिये, पहले बकरे को वध किया गया, जो मसीह के बलिदान का प्रतीक था जिसने अपने लोगों के पाप का ऋृण भरने के लिये प्राण बलिदान दिया; दूसरा बकरा निर्जन में भेजा गया जो अपने लोगों के पाप उठा ले जाता था, यह भी मसीह के पाप – वाहक होने का प्रतीक था जिसने अपने लोगों के अधर्मो को उठा लिया।

1. लैव्यव्यवस्था 16:8 में, हारून को दो बकरों पर चिट्ठी डालनी थी। इस पद को तब तक पढ़िये जब तक के इसकी विषय सामग्री से आप परिचित न हो जायें और तब निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

   अ. हारून द्वारा दो बकरों पर चिट्ठी डालने का क्या महत्व है?

   _____

   _____

   _____

   _____

टिप्पणियां: नीतिवचन 16:33 यह घोषित करता है, "निर्णय के लिये चिट्टियां तो डाली जाती है परंतु उसका परिणाम यहोवा की ओर से होता है।" चिट्टियों के डालने द्वारा निर्णय होना, प्रभु के चुनाव या सर्वश्रेष्ठता को प्रगट करता है। यहां तक कि, सृष्टि की नींव डाले जाने से पूर्व, एक अनंत गहन रूप में, यीशु मसीह परमेश्वर का चुनाव थे (1 पतरस 1:20) । वह परमेश्वर द्वारा छुटकारा दिये जाने के लिये एक चुना हुआ साधन थे। कलवरी पर मसीह के मरण से संबंधित प्रत्येक चीज परमेश्वर के विधान अनुसार थी। प्रेरित पतरस ने यरूशलेम में यहूदियों के सामने यह कहा था, "इसी मनुष्य को, जो ***परमेश्वर की पूर्व निश्चित योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया*** था, तुमने विधर्मियों के हाथों क्रूस पर कीलों से ठुकवा कर मार डाला" (प्रेरितों के काम 2:23) ।

ब. दोनों बकरों का वर्णन कैसे किया गया है?

1. एक बकरा प्र_____ लिये है।
2. एक बकरा पा_____ के लिये है।

टिप्पणियां: केवल कोई एक बलिदान मसीह द्वारा प्रायश्चित के कार्य के दो पहलूओं का पूर्ण रूप से चित्रण नहीं कर सकता था। वह बकरा जो "प्रभु के लिये" था, वह बलिदान के रूप में वध किया जाता था जो मसीह के अपने लोगों के पाप का ऋण चुकाने का प्रतीक था। दूसरा बकरा, जो "बलि का बकरा" भी कहा जाता है, निर्जन में भेजा जाता था ताकि वह मसीह द्वारा उसके लोगों के पाप उठाने का प्रतीक ठहरे। वाक्यांश "बलि के बकरे के लिये" का यथाशब्द अनुवाद किया गया है, "***अजैजेल*** के लिये।" ***अजैजेल*** शब्द की संपूर्ण इतिहास में कई तरीकों से व्याख्या की गयी है। कुछ विद्वान मानते है कि यह दो इब्रानी शब्दों से निकला है (***अजे*** = बकरा +***अजल*** = मुड़ जाना) और यह समझा जाता है कि यह "वह बकरा है जो रवाना हो जाता है। दूसरे विद्वान यह मानते हैं कि यह अरबी शब्द ***अजाला*** से निकला है, जिसका अर्थ है, "निकाल देना या दूर कर देना।" तौभी दूसरे यह मानते हैं कि यह एक व्यक्तिगत नाम है जो शैतान की ओर संकेत देता है। इस अंतिम दृष्टिकोण में, एक बकरा जैसे परमेश्वर को अर्पित किया गया है और दूसरा शैतान को – किंतु ऐसा मानना, धर्मशास्त्र में प्रायश्चित के लिये दी गयी उस पूरी शिक्षा का घोर उल्लंघन होता। शैतान के क्रोध को शांत किये जाने की आवश्यकता नहीं थी, परंतु एक धर्मी व पवित्र परमेश्वर के क्रोध को शांत किये जाने की आवश्यकता थी! यद्यपि, इस पद का बिल्कुल ठीक अर्थ निकाल पाने में अनिश्चयता हो सकती है, किंतु सबसे अधिक संभावित अर्थ वह है जो बलि के बकरे की ओर संकेत देता है – बकरे को तंबू से दूर भेज दिया जाता है जो प्रतीकात्मक रूप में लोगों के पाप उठाकर निर्जन में चला जाता है।

प्रभु के लिये निर्धारित बकरा

परमेश्वर न्यायी है; इसलिये, वह साधारणतः पहले उसके न्याय की मांगों को संतुष्ट किये बिना हमारे पाप की उपेक्षा नहीं कर सकता है। पाप की मजदूरी मृत्यु है। पहला बकरा, अर्थात वह बकरा जो "प्रभु के लिये" था, वेदी पर मारा गया, इस तरह वह मसीह के बलिदान का प्रतीक था जो अपने लोगों के पाप का ऋण चुकाने के लिये वेदी पर मारा गया।

1. *लैव्यव्यवस्था 16:9 के अनुसार, जो बकरा प्रभु के लिये था, उसका क्या उद्देश्य था?*

   अ. इसे पा_____ के रूप में चढ़ाया जाना था। यह वाक्यांश इब्रानी भाषा के एकल रूप वाले ***चाटह*** *शब्द से निकला है, जो स्वयं पाप की ओर संकेत देता है या पाप के लिये बलिदान की ओर संकेत देता है। इस संदर्भ में, यह परमेश्वर को चढ़ाये जाने वाली बलि की ओर संकेत देता है जो पाप के दोष को दूर करने व उसके दंड के लिये है। संसार के पापों के लिये मसीह के सच्चे बलिदान, की यह एक स्पष्ट प्रतिछाया है।*

2. लैव्यव्यवस्था 16:15–16 के अनुसार, परमेश्वर ने महायाजक को प्रभु के लिये बकरे के संबंध में क्या आज्ञा दी थी? कैसे यह मसीह और उसके प्रायश्चित के कार्य का प्रतीक है?

   अ. वह पा_____ का बकरा होगा (पद 15) ।

   _____

   _____

   _____

   _____

टिप्पणियां: इब्रानी शब्द ***शाकात*** से निकला है जिसका अर्थ है, "वध करना या मारना।" साधारणतः यह बलि चढ़ाये जाने वाले जानवरों के लिये प्रयुक्त होता था। यशायाह 53:7 में, मसीहा वह मेम्ना कहलायेगा, जो वध किये जाने के लिये होगा (इब्रानीः ***तेबख***)। नये नियम में, यीशु वह मेम्ना है जो मारा गया (प्रकाशितवाक्य 5:6, 9, 12; 13:8) ।

ब. वह उसका लहू पर्दे के भी _____ लायेगा (पद 15)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: महायाजक को परमपवित्र स्थान में प्रवेश करना था, जहां परमेश्वर का निवास था, ताकि लोगों के पापों के लिये पापबलि चढ़ाये। इब्रानियों का लेखक हमें बताता है कि मसीह ने पाप के लिये बलिदान स्वरूप, अपना लहू बहाकर, स्वर्ग में परमेश्वर की परम उपस्थिति में प्रवेश किया (इब्रानियों 9:11–12)। जब मसीह मरा, मंदिर का पर्दा दो भागों में

विभक्त हो गया, यह प्रदर्शित करते हुए कि उसके लोगों के लिये क्षमा का मार्ग खुल चुका था और परमेश्वर से अबाधित मेल संभव हो गया (मत्ती 27:51)।

क. वह लहू को बी_____पर्दे के भी_____ ले आये (पद 15)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''प्रायश्चित का ढकना'' वाक्यांश इब्रानी शब्द ***कॉपपोरेत*** से अनुवादित है, जिसे ''प्रायश्चित का स्थल'' भी अनुवादित किया जा सकता है। यह सोने से निर्मित ढकना था और इसकी लंबाई लगभग पैंतालिस इंच और चौड़ाई सत्ताईस इंच थी, यह वाचा के संदूक के ऊपर लगाया जाता था। इस प्रायश्चित के ढकने के ऊपर दो स्वर्गिय प्राणी, जिन्हें करूब कहते थे, उनकी आकृति बनी हुई थी; उनके मुखाकृति एक दूसरे की ओर थी, उनके फैले हुए पंख परस्पर एक दूसरे को और संपूर्ण ढकने को ढांप रहे थे। यह मंदिर के परमपवित्रस्थान में स्थित था, जो परमेश्वर के उच्च सिंहासन का पृथ्वी पर स्थित प्रस्तुतीकरण था (यशायाह 6:1–3)। प्रायश्चित के ढकने के ऊपर के स्थान पर परमेश्वर ने अपने लोगों से मिलने की प्रतिज्ञा की थी (गिनती 7:89); और यहीं बलिदान का लहू छिड़का जाना था, पाप के लिये प्रायश्चित करके, दया प्राप्त की जानी थी। सेप्टयूजिंट में (पुराने नियम का यूनानी अनुवाद), ***कॉपपोरेत*** शब्द यूनानी शब्द ***हिलएस्टेरिओन*** में अनुवादित किया गया है, जो प्रायश्चित किये जाने वाले स्थल अथवा वस्तु की ओर संकेत देता है। ***हिलएस्टेरिओन*** शब्द रोमियों 3:25 में मसीह के लिये प्रयुक्त किया गया हैः जिसे ''परमेश्वर ने उसके लहू में विश्वास के द्वारा ***प्रायश्चित*** ठहरा कर खुल्लमखुल्ला प्रदर्शित किया है।'' मसीह की मृत्यु एक प्रायश्चित थी क्योंकि वह ईश्वरीय न्याय को संतुष्ट करती थी और इसके द्वारा एक धर्मी परमेश्वर के लिये यह संभव हुआ कि वह अपने न्याय को अप्रभावित किये बिना, पापियों के प्रति करूणा प्रगट करे। पृथ्वी पर स्थित इस मिलापवाले तंबू में, प्रायश्चित के ढकने पर बकरे के लहू से छिड़काव किया जाना, मसीह के लहू का नमूना या प्रतिछाया थी ताकि परमेश्वर से उसके लोगों का मेल हो सके और स्वर्ग में परमेश्वर की परम उपस्थिति तक उनकी पहुंच संभव हो।

ङ. वह प्रा_____ करेगा (पद 16)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''प्रायश्चित'' शब्द इब्रानी शब्द ***किपर*** या ***किपुर*** से निकला है। इसका क्रिया रूप ***कफार*** परिष्कृत किये जाने या प्रायश्चित बनाये जाने या मेल करवाये जाने को प्रगट करता है। चूंकि ''यह अनहोना है कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे'' (इब्रानियों 10:4), यह प्रगट है कि यह बलिदान, जो हर वर्ष दोहराया जाता था, मसीह के द्वारा, एक ही बार सदा के लिये दिये गये बलिदान का नमूना या प्रतिछाया थी।

अजाजेल का बकरा

हमने अभी अभी ''प्रभु के लिये बकरे'' पर विचार किया है, जो मसीह के बलिदान द्वारा लोगों के पाप का ऋृण चुकाने के नमूने का प्रतीक है। किन्तु एक बकरा, मसीह के आगे आने वाले कार्य की दोहरी प्रकृति के चित्रण के लिये पर्याप्त नहीं था। अब हम ''अजाजेल के बकरे'' के ऊपर विचार करेंगे, जो जंगल में भेजा जाता था ताकि मसीह जिसने अपने लोगों के पाप को वहन किया, उसका नमूना बन सके।

1. लैव्यव्यवस्था 16:21–22 के अनुसार, परमेश्वर ने बलि के बकरे के संदर्भ में महायाजक को क्या आज्ञा दी और किस प्रकार यह मसीह और उसके प्रायश्चित के कार्य के नमूने को प्रगट करता है?

   अ. और हारून अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे पर रखकर इजरायलियों के सब अधर्म के कामों, और उनके सब अपराधों, निदान उनके सारे पापों को अंगीकार करे और उन को बकरे के सिर पर धरकर उसको किसी मनुष्य के हाथ जो इस काम के लिये तैयार हो जंगल में भेज के छुड़वा दे_____ (पद 21)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ***अभ्यारोपित*** किये जाने वाले सिद्धांत का यह सशक्त और सुंदर चित्रण है (लैटिनः ***इन*** = इन या तरफ + ***प्यूटेरे*** = गिना जाना), जिसके अंर्तगत परमेश्वर अपने लोगों के पाप को एक निर्दोष पीड़ित व्यक्ति पर रखता है, जो उनके स्थान पर दंड भोगता है। महायाजक को अपने ***दोनों*** हाथ बकरे के ऊपर रखकर इजरायल के ***समस्त*** पाप का अंगीकार करना था, यह लोगों के पाप के ***पूर्ण*** हस्तांतरण को प्रगट करता है। यशायाह ने प्रभु के विषय में भविष्यवाणी

की थी, वह ***हम सब के*** अधर्म का बोझ मसीहा के ऊपर लाद देगा (यशायाह 53:6)। नया नियम इसे स्पष्ट करता है कि हमारा पाप मसीह पर लाद दिया गया और उसकी धार्मिकता हम पर लाद दी गयी (2 कुरिन्थियों 5:21)।

ब. वह बकरा उनके सारे अधर्मों को अपने ऊपर लादे हुए किसी सुनसान स्थान में चला जाएगा। वह मनुष्य उस बकरे को जंगल में छोड़ दे।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: वह बकरा परमेश्वर के लोगों के पाप को उठाकर जंगल में भेज दिया जाता था और परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित किया जाता था। कलवरी पर, मसीह ने अपने लोगों के पापों को उठाया और उनके स्थान पर स्वयं परमेश्वर द्वारा त्यागा गया। इसी कारण वह क्रूस पर पुकार उठा, ''हे मेरे परमेश्वर हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' (मत्ती 27:46) । उस बलि के बकरे के समान जो जंगल में भटक रहा था और दूसरे बलिदानी पशु, जिनकी देह शहर से बाहर जलायी जाती थी, मसीह ने भी शहर के बाहर क्रूस का दुःख भोगा और मरने के लिये छोड़ दिया गया, परमेश्वर एवं परमेश्वर के लोगों की उपस्थिति से वंचित किया गया इब्रानियों (13:11–12) ।

अध्याय 20: मसीह गाड़ा गया

इस अध्याय में, हम सुसमाचार के एक बहुत महत्वपूर्ण परंतु अक्सर ही उपेक्षित पहलू पर विचार करेंगे जो मसीह के पुनरुत्थित होने के लिये मंच तैयार करता है – उसका गाड़ा जाना।

मसीह का गाड़ा जाना

1 कुरिन्थियों 15:3–4 में, बाइबल कहती है, "मसीह हमारे पापों के लिये मरा और गाड़ा गया, तथा पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।" मसीही विश्वास के दो बड़े स्तंभों के मध्य लगभग छिपा हुआ – "मसीह मरा" और "वह जी भी उठा" – उसके गाड़े जाने का संदर्भ है। यह संदर्भ साधारण रूप से दो बड़ी घटनाओं को बांधे रखने के उद्देश्य से नहीं है, परंतु उन दोनों घटनाओं के मध्य कड़ी के रूप में उनकी वैधता को दर्शाता है। मसीह का गाड़ा जाना यह प्रमाण है कि वह सचमुच मर चुका था, जो उसके जी उठने की वैधता को प्रमाणित करता है! इस कारण से, प्रारंभिक कलीसिया के लिये यह महत्वपूर्ण था कि वह मसीह के गाड़े जाने की पुष्टि करे।

1. यशायाह 53:9 में, एक भविष्यवाणी मिलती है जो एक नाटकीय प्रमाण है कि मनुष्य रूपी यीशु ही मसीह था और यहां तक कि उसके जीवन और मरण का सूक्ष्म विवरण भी धर्मशास्त्र में पंक्तिबद्ध मिलते हैं। यह भविष्यवाणी मसीहा के आगमन के लिये हमें क्या बताती है? मत्ती 27:57–60 के अनुसार, किस प्रकार यीशु में यह भविष्यवाणी पूर्ण हुई?

टिप्पणियां: ''नियुक्त किया गया'' शब्द को ''ठहराया गया'' या ''निर्दिष्ट'' भी अनुवादित किया जा सकता है। क्रूसीकृत किये जाने वाले अपराधियों के लिये साधारण प्रचलन था कि उन्हें गड्डे मे फेंक दिया जाता था कि गिद्ध या कुत्ते उन्हें अपना आहार बना लें। परंतु परमेश्वर ने यह ठहराया था कि उसका पुत्र सम्मान के साथ गाड़ा जाये। यूहन्ना 19:39 में, हमें पता चलता है कि सौ पाउंड गंधरस और ऐलुवा का समिश्रण मसीह के गाड़े जाने के लिये लाया। यह विशेष मात्रा थी और अत्यधिक महंगी भी थी।

2. चारों सुसमाचार लेखक यीशु के गाड़े जाने का वृतांत लिखने में सतर्क हैं (मत्ती 27:57–66; मरकुस 15:42–47; लूका 23:50–56; यूहन्ना 19:38–42)। इन वर्णनों को पढ़िये, और मसीह की मृत्यु और उसके गाड़े जाने की सत्यता की पुष्टि करने वाले प्रमाणों को पहचानिये।

   अ. वह एक मनुष्य अरमि_____निवासी यु_____ द्वारा दफनाया गया (मरकुस 15:42–43)। यही मनुष्य मसीह के गाड़े जाने के लिये उत्तरदायी था और जिसकी कब्र में मसीह को गाड़ा गया, वह उस यहूदी धर्मसभा (सेन्हेंद्रिन) का प्रतिष्ठित मनुष्य था जिसने मसीह को मौत की सजा सुनाई थी। लूका संकेत देता है कि वह एक भला व धर्मी पुरूष था और उसने मसीह को मृत्यु दंड दिये जाने के लिये सहमति नहीं दी थी (लूका 23:50–51) । उसकी गवाही बहुत वजन रखती है। संसार की कोई वस्तु उसके लिये अप्राप्य नहीं थी और मसीह का उचित अंतिम संस्कार नहीं करना, उसके लिये सब कुछ खो देने के बराबर था। युसुफ ने इतना बड़ा जोखिम सिर्फ मसीह के प्रति प्रेम के कारण लिया।

   ब. नीकु_____ भी युसुफ के साथ था और उसने यीशु के शव को गाड़े जाने की तैयारी में सहायता की (यूहन्ना 19:39)। यह व्यक्ति फरीसी था और यहूदियों का अधिकारी था (यूहन्ना 3:1) फरीसियों ने यहूदी धर्मसभा के साथ यीशु को क्रूस पर चढाये जाने का षड़यंत्र रचा था। युसुफ के समान, नीकुदेमस भी यीशु को सम्मान देने के कारण अपने साथी फरीसियों द्वारा बहिष्कृत किया जा सकता था। मसीह की मृत्यु के प्रति उसकी गवाही और उसके गाड़े जाने की क्रिया में उसका भाग लेना इन घटनाओं की सत्यता के समर्थन मे दिये गये विकट प्रमाण है।

   क. पी _____ ने युसुफ को यीशु का शव ले जाने की अनुमति दे दी (यूहन्ना 19:38) । यीशु की मृत्यु की पुष्टि इस तथ्य से होती है कि पोंतियुस पीलातुस ने केवल सावधानीपूर्वक जांच पड़ताल के बाद कि यीशु सच में मर चुका है, उसके शव को ले जाने की अनुमति दी (मरकुस 15:44–45) ।

   ड. जिस तरीके से यीशु के शव को गाड़े जाने की तैयारी की गयी थी, वह भी एक बड़ा प्रमाण था कि वह मर चुका था। यूहन्ना 19:38–40 के इस वर्णन को सारगर्भित कीजिये। किस प्रकार यह वर्णन प्रगट करता है कि मसीह सचमुच में मर चुका था और केवल बेहोश नहीं हुआ था?

_____

_____

टिप्पणियां: अगर मसीह जीवित होते, तो क्या इस बात को युसुफ और नीकुदेमस ने नहीं जान लिया होता? हरेक जन जो मसीह के शव के संपर्क में आया, वह उसकी मृत्यु से सहमत था – रोमी सिपाही (मरकुस 15:44–45; यूहन्ना 19:32–34), अरमितिया का युसुफ (लूका 23:50–53), नीकुदेमस (यूहन्ना 19:39), और कई महिलायें जिन्होंने क्रूसीकरण और गाड़े जाने की क्रिया को देखा था (लूका 23:55–56)।

मरने के उपरांत मसीह कहां गये?

मसीह की मृत्यु और उसके पुर्नजीवित होने के बीच के तीन दिनों का विषय अक्सर गलत समझा जाता है। किन्तु, बाइबल का सावधानीपूर्वक अध्ययन बाइबल के सभी लेखकों के विचारों की साम्यता को प्रगट करता है। उसकी मृत्यु और जी उठने के अंतराल में, मसीह का आत्मा कब्र में नहीं रह सका और न ही नर्क में गया। मसीह के स्वयं के शब्दों में जो उन्होंने प्रायश्चित करने वाले चोर को क्रूस पर कहे थे, उसके अनुसार, वह उसके पिता के महिमादायी निवासस्थान ''स्वर्ग'' में गया था (लूका 23:43)। निम्नलिखित पृष्ठों पर, हम इस विषय से संबंधित सर्वाधिक महत्वपूर्ण पाठों का परीक्षण करेंगें।

भजन 16:10 – *''क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा।''*

''अधोलोक'' शब्द इब्रानी शब्द का लिप्यंतरण है और इसका अनुवाद ऐसे भी किया जा सकता है, ''अधोलोक,'' ''कब्र,'' ''गढ्ढा'' या ''नर्क।'' इस संदर्भ में, भजनकार साधारणतः यह कह रहा है कि परमेश्वर मसीहा की शारीरिक देह को भौतिक रूप से सड़ने नहीं देगा, परंतु उसे मृतकों में से जीवित करेगा। यह पतरस (प्रेरितों के काम 2:27–31) और पौलुस (प्रेरितों के काम 13:34–35) के द्वारा दी गयी व्याख्या है।

पतरस प्रेरितों के काम 2:27 में इस पद को मसीह के पुनरुत्थान के पक्ष में उद्धृत करता हैः ''क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में नहीं छोड़ेगा।'' ***हेडिस*** शब्द ***शीओल*** का यूनानी अनुवाद है और उसी ओर संकेत देता है। इन पदों का साधारण अर्थ यह है कि पिता, यीशु के शरीर को मृत्यु के बंधनों में अपघटित नहीं होने देगा, परंतु उसे मुरदों में से जीवित करेगा। चार्ल्स हॉज लिखते हैं, ''धर्मशास्त्रिय भाषा में, इसलिये, अधोलोक में उतरने का अर्थ और कुछ नहीं बल्कि कब्र में उतरना है, दृश्य से अदृश्य में जाना, जैसे सभी मनुष्यों के साथ होता है जब वे मरते हैं और गाड़े जाते हैं।''[7]

रोमियों 10:7 – *'''अधोलोक में कौन उतरेगा? (मसीह को मुरदो में से जीवित लाने के लिये)''*

7 *Systematic Theology*, Vol.2, p.617

पौलुस की स्वयं की व्याख्या पर आधारित (''मुरदों में से जीवित उठना'') ''अधोलोक'' शब्द का प्रयोग मसीह के अधोलोक में उतरने की पुष्टि के बजाय, मृतकों के क्षेत्र की व्याख्या के रूप में उत्तम लगता है। मैथ्यू हैनरी लिखता है, ''साधारण रूप में मसीह का गहरे में, या ***अथाह*** गहराई में उतरना, और कुछ नहीं बल्कि, उसके मृतकों की अवस्था में चले जाने को दर्शाता है।''[8]

> इफिसियों 4:9 _____ *''अब (इस) कथन का कि वह ऊंचे पर चढ़ा, क्या अर्थ है? केवल यही कि वह पृथ्वी के निचले स्थानों में भी उतरा था।''*

यह संदर्भ बतलाता है कि पौलुस मसीह के देहधारण के विषय में लिख रहा है, किसी नर्क में उतरने के विषय में नहीं। मसीह जो स्वर्ग में चढ़ गया (स्वर्गारोहण) वह वही है जो स्वर्ग से निचे पृथ्वी पर उतरा (देहधारण)। यशायाह 44:23 में हम पढ़ते हैं, ''हे स्वर्गो, ऊंचे स्वर से आनंद मनाओ, क्योंकि यहोवा ने यह किया है! हे पृथ्वी के निचले स्थानों, जयजयकार करो। हे पर्वतों हे वन और उसमें के प्रत्येक वृक्ष, तुम सब गला खोलकर आनंद मनाओ, क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया है और इजरायल में महिमावान होगा।'' यहां पुनः वाक्यांश ''पृथ्वी के निचले स्थानों'' साधारण रूप में स्वर्ग के तुलना में पृथ्वी की ओर संकेत देता है।

> 1 पतरस 3:18–19 – *''मसीह भी सब पापों के लिये एक ही बार मर गया, अर्थात अधर्मियों के लिए धर्मी, जिस से वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए, शरीर के भाव से तो वह मारा गया, परंतु आत्मा के भाव से जिलाया गया। उसी में उसने जाकर उन बंदी आत्माओं को संदेश सुनाया, जो एक समय आज्ञा न मानने वाले थे, अर्थात उन दिनों में जब परमेश्वर का धैर्य ठहरा रहा और नूह का जहाज बन रहा था जिसमें कुछ ही लोग, अर्थात आठ व्यक्ति ही, जल से सुरक्षित निकले थे।''*

कुछ लोग इस पद की व्याख्या इस तरह करते हैं कि मसीह मरने के पश्चात् नर्क में उतरा ताकि वहां रहने वालों को उसकी विजय की घोषणा कर सके। सबसे अधिक सुसंगत व्याख्या यह है कि पवित्र आत्मा, जिसने मसीह को मृतकों में से जीवित किया, वही एकमात्र माध्यम था जिसके द्वारा मसीह ने नूह की पीढ़ी को प्रचार किया। मसीह ने नूह के प्रचार के माध्यम से, पवित्र आत्मा के द्वारा उनसे बातें की। नूह ने मसीह के जिन वचनों का प्रचार किया, उन्होंने उस पर अविश्वास किया; इसलिये, वे उनके पापों में मर गये और आज तक (नर्क में) बंदी ही बने हुए हैं।

> *1 पतरस 4:6 – ''इसलिए मरे हुओं को भी सुमसाचार इस अभिप्राय से सुनाया गया कि यद्यपि शरीर में उनका न्याय मनुष्यों के अनुसार हो – वे आत्मा में परमेश्वर के इच्छानुसार जीवित रहे।''*

यह पद कि मसीह का नर्क में उतरना इस कारण हुआ कि वहां बसने वालों को प्रचार करें, की व्याख्या करने का कोई कारण नहीं है जैसे बाइबल हमें स्पष्ट रूप में सिखाती है कि ''_____जैसे मनुष्यों के लिए एक ही बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया गया है'' (इब्रानियों 9:27) । इस पद की व्याख्या इस प्रकार होनी चाहिये जैसे एक सरल संदर्भ के रूप में सुसमाचार उन कुछ निश्चित व्यक्तियों को प्रचार किया गया, जो पतरस के लेखन के समय, पहले से ही मर चुके थे।

8 *Matthew Henry Commentary*, Vol.6, p.439

> लूका 23:43: ''उसने (यीशु ने) उससे (चोर से) कहा, "मैं तुझसे सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

अगर मसीह नर्क नहीं गये, तो फिर कहां गये थे? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये, मसीह के स्वयं के शब्दों को देखना उत्तम है। यीशु ने मरते हुए चोर से कहा, ''मैं तुझसे सच कहता हूं कि तू आज ही मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।'' मसीह की मृत्यु पर, उसकी आत्मा एकाएक परमेश्वर की उपस्थिति में चली गई। पुनरुत्थान होने पर, उसकी देह और आत्मा पुनः एक बार संयुक्त हो गये। यह महत्वपूर्ण है कि ''स्वर्गलोक'' शब्द नये नियम में केवल दो बार प्रयुक्त किया गया है, और दोनों बार यह स्पष्टतः स्वर्ग की ओर संकेत देता है (2 कुरिन्थियों 12:4; प्रकाशितवाक्य 2:7)।

> लूका 23:46: ''और यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकार कर कहा, "हे पिता, मैं अपना आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।" यह कहकर उसने प्राण त्याग दिया।''

इस संक्षिप्त किंतु सशक्त कथन में, हमें और भी प्रमाण मिलते हैं कि मसीह अपनी मृत्यु होने के बाद अपने पिता के पास गये थे। यह एक मजबूत विश्वास द्वारा दिया गया कथन है, जो इस कथन के समान नहीं है, ''तू आज ही मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।'' मैथ्यू हैनरी लिखते हैं, ''(मसीह) अपनी आत्मा को अपने पिता के हाथों में सौंपते हैं, कि वह स्वर्ग में ग्रहण की जाये और तीसरे दिन लौटे।''[9]

> यूहन्ना 20:17 – *''यीशु ने उससे (मरियम से) कहा, 'मुझे मत छू; क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया हूं; परंतु मेरे भाइयों के पास जा और उनसे कह, ''मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं।'''*

कभी कभी यह तर्क दिया जाता है कि मसीह कब्र में तीन दिन रहने के अंतराल में स्वर्ग पर नहीं चढ़ा जैसे कि उसके स्वयं के शब्दों में जो उसने इस अंश में मरियम मगदलीनी से कहे थे। किन्तु, ध्यानपूर्वक विचार करने पर, यह स्पष्ट है कि मसीह के चोर से कहे गये वाक्य (लूका 23:43) और मरियम मगदलीनी (यूहन्ना 20:17) से कहे गये कथनों में कोई विरोधाभास नहीं है। तीन दिनों बाद, मसीह अपनी देह के साथ संयुक्त हुए और मरे हुओं में से जीवित किए गये। मरियम ने परमेश्वर की योजना को गलत समझा था और अनभिज्ञ थी कि मसीह का स्वर्गारोहण पुनः होगा एवं इस बार देह सहित होगा और वह अपने लोगों के लिये मध्यस्थ बनकर पिता के दाहिने हाथ विराजमान होंगे। उसने तो यह आशा की थी कि वह पृथ्वी पर ही राज्य करेगा और जगत के मसीहा के रूप में राज्य करेगा। मरियम के साथ उसके परस्पर वार्तालाप में वह इस बात से इंकार नहीं कर रहा है कि क्रूस पर मृत्यु होने के बाद उसकी ***आत्मा*** पिता के पास ऊपर नहीं गयी, परंतु वह कह रहा है कि उसे अभी भी **देह *समेत*** स्वर्ग जाना आवश्यक है। यद्यपि मरियम ने इसे महसूस नहीं किया, किंतु देह सहित स्वर्गारोहण होना छुटकारें के कार्य के लिये परम आवश्यक था।

---

9 *Matthew Henry Commentary*, Vol.5, p.830

अध्याय 21: मसीह जीवित हुआ है

सुसमाचार के संदेश की पूर्णता को सारगर्भित करने के लिये निम्नांकित कथन को अक्सर प्रयुक्त किया जाता है: ''मसीह हमारे पापों के लिये मरे।'' यह एक बहुत बड़ी गलती है! 1 कुरिन्थियों 15:1–4 के अनुसार, यीशु मसीह का शुभ संदेश केवल इस बात में नहीं हैं कि वह परमेश्वर के लोगों के पापों के लिये मरे, परंतु वह तीसरे दिन जीवित भी हुए। मसीह के मृत्यु के अलावा उसका पुनरुत्थान भी मसीहत की दो बड़े खम्भों मे से एक है। पुनरुत्थान के बिना मसीह की मृत्यु शुभ समाचार नहीं होती।

किसी नश्वर या स्वर्गिक जबान द्वारा आशा प्रदान किये जाने वाला सबसे बड़ा कथन है – ''मसीह जी उठा है!'' उसका पुनरुत्थान उसके परमेश्वरत्व का सबसे बड़ा प्रमाण था, उसके व्यक्तित्व की पुष्टि और निश्चयता है कि परमेश्वर ने उसकी मृत्यु को उसके लोगों के पाप का मूल्य चुकाने के रूप में स्वीकार किया है। इस जगत में कुछ बहुत महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं उनमें से यीशु मसीह के पुर्नजीवित होने के ऊपर सबसे अधिक आक्षेप लगाया जाता है। मसीहत की विश्वसनीयता और जो मनुष्य इस सिद्धांत पर विश्वास करते हैं, उनका उद्धार प्राप्त करना, इसी सिद्धांत पर आधारित है।

एक ऐतिहासिक वृत्तांत

वेबस्टर का शब्दकोष ''ऐतिहासिकता'' को ''ऐतिहासिक होने की गुणवत्ता, विशेषकर पौराणिक या पारंपरिक होने से भिन्न'' कहकर परिभाषित करता है। परमेश्वर के पुत्र के आगमन का वृत्तांत चार सुसमाचारों में उल्लेखित (मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना) होकर, पौराणिक कथाओं से इसलिये बड़े रूप में भिन्न है क्योंकि यह एक सच्ची घटना थी जो मानव इतिहास के संदर्भ में घटी थी।

परमेश्वर का पुत्र हमारे संसार में सचमुच एक निश्चित समय और एक निश्चित स्थान पर आया था। वह एक वास्तविक और ऐतिहासिक व्यक्ति था और उसके जीवन का वृत्तांत उन लोगों के द्वारा लिखित में दर्ज किया गया जो उसे जानते थे और उसके जीवन व शिक्षा के गवाह थे। उनके लिये परमेश्वर का पुनरुत्थान न कोई मिथक था और न ही कोई आत्मिक घटना; वह तो एक ऐतिहासिक सच्चाई थी। सच्चे इतिहास से अलग हटकर, पुनरुत्थान को कुछ और ठहराना, धर्मशास्त्र की गवाही का इंकार करना है।

1. लूका 1:1–4 में, हमें सशक्त प्रमाण मिलते हैं कि सुसमाचार के लेखक इय बात पर पूर्णरूप से सहमत थे कि वे ऐतिहासिक सत्य को या तो अपनी व्यक्तिगत गवाही के आधार पर या अन्य लोगों की गवाही का सावधानीपूर्वक छानबीन कर उस में संबंध जोड़ रहे थे। लूका के सुसमाचार का यह परिचय किस प्रकार प्रगट करता है कि उसने यह विश्वास किया था कि वह सच्चे इतिहास को दर्ज कर रहा था?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''विवरण लिखना'' शब्द (पद 1) यूनानी भाषा के शब्द ***ऐनातासोमाय*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''क्रम में रखना या व्यवस्थित करना।'' लूका ने स्वयं यह दायित्व लिया था कि परमेश्वर के देहधारी पुत्र और उसके कार्यो का एक क्रमबद्ध और ऐतिहासिक रूप से सही वृत्तांत लिखे। ''प्राप्त हुई'' वाक्यांश (पद 2) यूनानी भाषा के शब्द ***पारादिदोमाय*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''किसी को कोई चीज सौंपना कि वह उसे रखे या उपयोग में लाये; किसी को कुछ वचन देना या समर्पित करना।'' प्रेरित जो मसीह के साथ ''प्रारंभ से'' थे, वे उसके व्यक्तित्व और कार्यो की सच्चाई को अन्यों को ''सौंपने में'' विश्वसनीय रहे। ''देखा था'' शब्द (पद 2) यूनानी भाषा के शब्द ***आटोटेस*** से निकला है, जो किसी चश्मदीद गवाह की ओर संकेत देता है। चिकित्सीय शब्द ''आटोप्सी'' जो एक विस्तृत परीक्षण की ओर संकेत देता है, इसी शब्द से निकला है। ''चश्मदीद'' और ''वचन के सेवक'' प्रेरितों के लिये प्रयुक्त संभावित संदर्भ हैं। ''ठीक ठीक जांच'' शब्द (पद 3) यूनानी भाषा के शब्द ***पेराकोलोथियो*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''अनुसरण करना'' या ''किसी के पीछे पीछे हो लेना।'' लाक्षणिक रूप से, किसी बात पर नजर रखना या उसे पूर्ण रूप से जांचना। लूका ने सावधानीपूर्वक सत्य का अनुसरण किया था और उसे सुसमाचार में दर्ज किया। वाक्यांश ''सब बातों कों_____क्रमानुसार'' (पद 3) बताता है कि लूका का परीक्षण व्यापक और चिंताशील दोनों था। उसने समस्त उपलब्ध सामग्री का परीक्षण कर लिया था। उसका उद्देश्य ऐतिहासिक सत्य को बिना अलंकरण के दर्ज करना था। वाक्यांश ''क्रमानुसार'' (पद 3) यूनानी शब्द ***कैथेक्सेस*** से निकला है, जो परंपरा और क्रम को प्रगट करता है। जरूरी नहीं कि यह क्रमबद्ध की ओर संकेत दे, परंतु यह तथ्यों के तर्कपूर्ण व व्यवस्थित समन्वय को प्रस्तुत करता है। शब्द ''वास्तविकता'' (पद 4) के यूनानी शब्द

ऐसाफालिया से निकलता है, जो दृढ़ता, स्थायीत्व या निंश्चितता की ओर संकेत देता है। लूका ने इसलिये लिखा ताकि थियोफिलुस को जो बातें सिखाई गयी थीं उनके प्रति वह पूर्ण रूप से निंश्चित हो सके।

2. लूका द्वारा प्रेरितों के काम के लेखन में, वह अपने सुसमाचार में मिलने वाले विवरण के समान ही एक परिचय देता है। तो प्रेरितों के काम 1:3 किस प्रकार प्रगट करता है कि लूका ने पुनरुत्थान के बारे में लिखते हुए, स्वयं को ऐतिहासिक तथ्य दर्ज करते हुए देखा?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः वाक्यांश ''ठोस प्रमाणों'' यूनानी शब्द ***तेकमेरियॉन*** से निकला है, जिसका अनुवाद ''ठोस प्रमाण'' या ''सीधा संकेत'' के रूप में किया जा सकता है। नये नियम में मसीह जी उठने के बाद तेरह बार प्रगट होने का उल्लेख है। अगर मसीह किसी एक व्यक्ति को एक बार अल्प समय के लिये प्रगट होता तो संशय करने के बहुत अवसर होते; पंरतु वह अनेक लोगों को कई बार चालीस दिनों तक दिखाई देते रहा, इस बात ने प्रारंभिक चेलों की गवाही को सशक्त बनाया। ''परमेश्वर के राज्य की बातों के विषय में बताता रहा,'' यह अति महत्वपूर्ण वाक्यांश है। मसीह ने केवल प्रगट होना या अदृश्य हो जाना नहीं किया; बल्कि वह अपने चेलों के साथ ठहरा रहा और उन्हें वैसे ही शिक्षा दी जैसे अपनी मृत्यु के पहले दिया करता था। प्रेरित और प्रारंभिक शिष्यों की गवाही फैंटम (मायावी मनुष्य) के समान प्रगट होने वाले अस्तित्व पर आधारित नहीं थी, परंतु पुनरुत्थित मसीह की सच्ची एवं व्यक्तिगत सहभागिता के आधार पर थी (लूका 24:27) को भी पढ़िये।

3. प्रेरितों के काम 10:38–42 में प्रेरित पतरस के संदेश उनके लिये दर्ज किये गये हैं जो पहली बार अन्यजाति से मन परिवर्तन होकर विश्वास में लाए जाने वाले थे। उस विवरण को पढ़िये और पद 40–42 में मसीह के पुनरूत्थानकी ऐतिहासिकता के बारे में प्रेरित द्वारा दिये गये विचार का अनुसरण कीजिये।

अ. परमेश्वर ने उसे ती_____ दिन जि_____ (पद 40)। यह परमेश्वर द्वारा नाजरथ के यीशु के व्यक्तित्व और कार्य की पुष्टि थी (रोमियों 1:4)। संपूर्ण मसीहत इसी सत्य पर आधारित है। इसी कारण से पुनरूत्थानको नये नियम में बार बार घोषित किया गया है।

ब. और उसे प्र_____ भी होने दिया (पद 40) । मसीह का प्रगट होना परमेश्वर की अपने लोगों के प्रति उदारता की अभिव्यक्ति थी।

क. सब लोगों पर नहीं, परंतु उ_____ पर जिन्हें परमेश्वर ने पहले से चु_____ था (पद 41) इस जगत में अपनी सेवकाई के दौरान किये गये आश्चर्यकर्मो के समान, मसीह का पुनरूत्थान के बाद प्रगट होना भी परमेश्वर के सर्वोच्च मार्गदर्शन में होता था और उसका एक विशिष्ट उद्देश्य था – अपनी कलीसिया का निर्माण करना। मसीह स्वयं को न्यायसंगत ठहराने के लिये अविश्वासियों के सामने प्रगट नहीं हुआ। फिर भी, ऐसा, उसके द्वितीय आगमन के समय होगा।

ड. अर्थात हम पर जिन्होंने उसके मृतकों में से जी उठने के पश्चात उसके साथ खा_____ और पि_____ (पद 41) मसीह मात्र एक लौकिक फैंटम के समान या क्षणभंगुर झलक के समान प्रगट नहीं हुआ; उसने अपने लोगों के साथ संगति की और अपने देह सहित पुनरूत्थान के निश्चित प्रमाण दिये (यूहन्ना 20:26–27; 21:9–14)।

*इ. उसने हमें आज्ञा दी कि_____ और दृढ़तापूर्वक सा_____ दें (पद 42)। यह वाक्यांश यूनानी शब्द **डायमरचुरोमाय** से निकला है, जो अत्यंत ईमानदारी, गंभीरता और आकर्षित भाव से गवाही देने को प्रगट करता है।*

ई. यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवितों और मृतकों का न्या_____ नियु_____किया है (पद 42)। पुनरुत्थान वह प्रमाण है कि मसीह उद्धारकर्ता है (प्रेरितों के काम 4:12), प्रभु है (प्रेरितों के काम 2:36) और न्यायी है (प्रेरितों के काम 17:31)।

ज. कैसे यह अंश प्रगट करता है कि पतरस ने मसीह के पुनरूत्थान को इतिहास की एक सच्ची घटना के रूप में देखा?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

4. 1 कुरिन्थियों 15:3–9 में भी एक दूसरा पर्याप्त प्रमाण मिलता है जो पुनरूत्थानकी वैधता की पुष्टि करता है। प्रेरित पौलुस द्वारा जिन लोगों का नाम लिया गया है कि उन्होंने पुनरूत्थित मसीह को देखा है, रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

अ. तब वह कै_____को (पद 5)। यह पतरस की ओर संकेत देता है (यूहन्ना 1:42)। यह प्रगटीकरण लूका 24:34 में दर्ज है और मसीह के पुनरूत्थान के दिन ही घटित हुआ था।

ब. और फिर बा_____ को दिखाई दिया (पद 5)। यद्यपि, यहूदा अब प्रेरितों में नहीं रहा और उनकी संख्या घटकर ग्यारह हो गयी, उन्हें अभी भी ''बारह चेले'' कहकर संबोधित किया जाता है। पुनरुत्थान के पश्चात अपने चेलों को दिखाई देने की कुछ घटनाओं में से एक घटना (पद 7) को पढ़िये। यह घटना पुनरुत्थान की संध्या को हुई और लूका 24:36–43 और यूहन्ना 20:19–23 में इसका उल्लेख मिलता है।

क. इसके पश्चात पां_____ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया (पद 6)। यह संभवतः प्रेरितों के काम 1:6–11 के संदर्भ में है। यह तथ्य कि मसीह पांच सौ एकत्रित लोगों को एक साथ दिखाई दिया (एक ही स्थान व एक ही समय में) इससे यह संभावना क्षीण हो जाती है कि उसे पहचानने में कोई चूक हुई हो या यह कोई मतिभ्रम हो। पुराने नियम की व्यवस्था के अनुसार, ''दो या तीन व्यक्तियों की गवाही पर अभियोग प्रमाणित किया जायेगा'' (व्यवस्थाविवरण 19:15)। यह वास्तविकता कि पौलुस के लेखन के समय पांच सौ जन अब भी जीवित ही थे और इसकी पुष्टि करने के लिये बुलाये जा सकते थे, पौलुस के तर्क को अतिरिक्त आधार देते हैं।

ड. तब वह या_____ को दिखाई दिया (पद 7)। यह यीशु के सौतेले भाई की ओर संकेत है (मत्ती 13:55)। वह पुनरूत्थान होने तक यीशु के मसीहा होने के दावे पर विश्वास नहीं करता था (यूहन्ना 7:5), फिर वह प्रेरितों के साथ सहभागी हुआ (प्रेरितों के काम 1:14) और प्रारंभिक मसीहियों के मध्य सबसे प्रमुख अगुआ बन गया (प्रेरितों के काम 15:13) ।

*इ. और सबसे अंत में मु_____का जन्मा हूं (पद 8)। यह वाक्यांश यूनानी शब्द **एक्ट्रोमा** से निकला है, जो गर्भ गिरने या अधूरे जन्म को दर्शाता है। पौलुस मूलतः मसीह की इस जगत की सेवकाई के दौरान उनके बारह चेलों में से एक नहीं था, परंतु वह बाद में परिवर्तित हुआ था, जब मसीह से दमिश्क के मार्ग में उसका सामना हुआ था (प्रेरितों के काम 9:3–6, 17) ।*

ई. आप के शब्दों में, यह समझाइये कि यह पद कैसे प्रगट करता है कि पौलुस ने पुनरूत्थान को सच्ची और ऐतिहासिक घटना माना था।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: कालक्रमबद्ध सूची अनुसार मसीह के पुनरूत्थान के बाद दिखाई देने से संबंद्ध, पौलुस ने भी प्रगट किया कि उसने मसीह के पुनरूत्थानको इतिहास में सच्ची घटना के रूप में देखा है – वह घटना जिसकी आंखों देखी गवाही से पुष्टी की गई।

बाइबल का विवरण

इसके पहले कि हम मसीह के पुनरूत्थान पर और अधिक विचार करें, बाइबल के वर्णन अनुसार, सारी ऐतिहासिक घटनाओं के सार पर मनन करना सहायक सिद्ध होगा।

यह यीशु मसीह की मृत्यु के तीसरे दिन की भोर की घटना है। महिलायें भयभीत सी बगीचे में पहुंचती हैं जहां मसीह की देह कब्र में रखी हुई है। उनके लिये यहां आने का कार्य किसी आशा से प्रेरित न होकर करूणा से भरा हुआ था। उनकी एकमात्र इच्छा थी कि उनके प्रिय यीशु का उचित रीति से अंतिम संस्कार हो। उनकी वार्ता घट कर संक्षिप्त तकनीकी हो गई थीः ''हमारे लिये पत्थर कौन लुढ़कायेगा?'' (मरकुस 16:2–4)। पुनरूत्थान तो उनके दिमाग के लिये बहुत दूर की बात है। यद्यपि, करूणा भय में बदल गई, भय अतृप्त आशा में और आशा बयान से बाहर आनंद और महिमा की पूर्णता में बदल गई! उनका स्वागत लुढ़के हुए पत्थर, खुला दरवाजा, खाली कब्र और एक स्वर्गिक शुभ संदेश ने कियाः ''तुम जीवित को मरे हुओं में क्यों ढूंढती हो? वह यहां नहीं है, परंतु वह जी उठा है'' (लूका 24:5–8)।

महिलायें ''भय और बड़े आनंद'' के साथ शीघ्रता से कब्र से भागी (मत्ती 28:8)। वे चेलों को यह बात सुनाने के लिये दौड़ी, किंतु उनकी साक्षी उन लोगों को मूर्खता और निरर्थक बात प्रतीत हुई, जिन्हें उन महिलाओं पर विश्वास कर लेना था (लूका 24:11)। तब, आशा के विपरीत विचार करते हुए, पतरस और यूहन्ना खाली कब्र की तरफ दौड़े। एक छोटे सी, हैरान कर देने वाली खोज के पश्चात, वे अन्य लोगों के पास बिना किसी ठोस बात के पहुंचेः ''अभी तक वे पवित्रशास्त्र की वह बात न समझे थे कि मृतकों में से उसका जी उठना अवश्य है'' (यूहन्ना 20:9)।

शीघ्रता से वहां से विदा होने में, वे रोती हुई मरियम मगदलीनी को पीछे छोड़ गये, जो सबसे पहले पुनरूत्थित प्रभु को देखती है। तब उसे प्रभु से आज्ञा मिलती है कि वह उन अविश्वासी चेलों के पास एक बार फिर लौट कर उन्हें बताये, यह उसके पुनरुत्थान की एक और पुष्टि है (यूहन्ना 20:11–18)। कब्र से लौटती महिलाओं के सामने यह दूसरा प्रगटीकरण था (मत्ती 28:9–10), और तब तीसरा प्रगटीकरण, एम्माऊस की सड़क पर, क्लियोपास और एक अन्य चेले के सामने हुआ (लूका 24:13–32)। आखिरकार, वह पतरस के सामने अकेले में प्रगट होता है (लूका 24:34); तब ग्यारह चेलों के सामने दो बार – पहली बार जब थोमा वहां नहीं था (यूहन्ना 20:19–25) और तब जब थोमा वहां उपस्थित था (यूहन्ना 20:26–29) – और पुनः गलील की झील पर उसके सात चेलों को दिखाई दिया (यूहन्ना 21:1–14) । वह अपने अविश्वासी सौतेले भाई याकूब को भी दिखाई देता है (1 कुरिन्थियों 15:7), जिसका जीवन उससे सामना होने के बाद इतना बदल गया कि वह चेलों के साथ प्रार्थना करने वाले समूह का एक भाग हो गया (प्रेरितों के काम 1:14) और यरूशलेम के चर्च का एक स्तंभ कहलाया (प्रेरितों के काम 15:13)। अंत में, वह दमिश्क के मार्ग पर तरसुस जाने वाली सड़क पर ''अधूरे समय के जन्मे'' शाऊल (बाद में पौलुस) के सामने प्रगट होता है (1 कुरिन्थियों 15:8)। इस मुठभेड़ या इसके प्रभाव के बारे में लिखना लगभग अनावश्यक है। वही मनुष्य जिसने मसीहत के विनाश की शपथ ली थी, मसीहत का सबसे उत्साही प्रचारक हो जाता है (प्रेरितों के काम 9:1–2; 1 कुरिन्थियों 15:10)।

अंत में, हमारे पास धर्मशास्त्र का ठोस वचन है कि अपने स्वर्गारोहण के पूर्व प्रभु अनेक लोगों के लिये साक्षी बना, वैयक्तिक से लेकर ''पांच सौ से अधिक लोगों को एक ही समय में'' दिखाई दिया (1 कुरिन्थियों 15:6)।

अध्याय 22: पुनरुत्थान में हमारे विश्वास की बुनियाद

इस अध्ययन में, यह अध्याय सबसे संक्षिप्त है, परंतु मसीह एवं उसके पुनरुत्थान पर विश्वासी के विश्वासी के संबंध में यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

मसीहत के प्रतिद्वंदी, मसीह के ऐतिहासिक पुनरूत्थान पर प्रहार करने पर केंद्रित होने में सही थे, क्योंकि पौलुस 1 कुरिन्थियों 15 में संकेत देता है, कि हमारे विश्वास की संपूर्णता इसी पर निर्भर करती है! अगर मसीह जिलाये नहीं जाता, तो हमारा विश्वास करना भी व्यर्थ होता (पद 14, 17): हममें से वे जो मानते हैं कि वे अभी पाप में हैं, और वे जो मसीह में सो गए हैं, सदा के लिए नाश हो चुके हैं (पद 17–18)। इससे भी बढ़कर, यह बात अवश्य होती कि हम जिस पुनरुत्थान का प्रचार करते हैं तो परमेश्वर की झूठी गवाही देते हैं, क्योंकि हम परमेश्वर के विषय में यह साक्षी देते हैं कि उसने मसीह को जिलाया जब कि उसने नहीं जिलाया (पद 15)। अंत में, अगर मसीह जिलाया नही गया, तो हमारा जीवन दयनीय रूप में निराशा से भरा हुआ होता: हम बिना किसी कारण से परेशानियां भोगते रहते और एक झूठे भविष्यवक्ता के कारण घृणायोग्य ठहरते, जिसमें बचाने की सामर्थ नहीं है। जैसे कि प्रेरित पौलुस लिखता है: ''यदि हमने केवल इसी जीवन में मसीह पर आशा रखी है तो हमारी दशा सब मनुष्यों से अधिक दयनीय है'' (पद 19)।

हमारी स्वयं की स्वीकारोक्ति से, मसीही विश्वास के लिये पुनरूत्थान सब कुछ है। अगर मसीह जिलाये नहीं गये हैं तो हमारा धर्म झूठा है। इसलिये, स्वयं से एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न पूछ कर हम अच्छा ही करेंगे: ''हम कैसे जानते हैं कि मसीह सच में जिलाया गया?'' अगले इन दो अध्यायों में, हम अभ्यासपुस्तिका के प्रारूप से बाहर निकलेंगें ताकि हम दो बहुत ही महत्वपूर्ण परंतु आधारभूत भिन्न माध्यम जिनके द्वारा पुनरुत्थान की सत्यता से हमारा परिचय करवाया गया, पर विचार करेंगे – यह हमारे सामने पवित्र आत्मा के प्रकाशन व पुनर्जन्म देने वाले कार्य के द्वारा ***प्रगट किया*** गया है, और हमारे लिये इसकी ***पुष्टि*** स्वयं घटना से जुड़े ऐतिहासिक प्रमाण के द्वारा होती है। *पहिला* पूर्णतः आवश्यक है। *बाद का* मसीही विश्वास की सशक्त पुष्टि करता है और इस अविश्वासी जगत के साथ संवाद के लिये प्रभावशाली हथियार है।

पवित्र आत्मा का कार्य

प्रोटेस्टैंट चर्च अक्सर पुनरुत्थान में अपने विश्वास को वैध ठहराने के लिये खाली कब्र, मृत शरीर प्रस्तुत न कर पाने में मसीह के शत्रुओं की असमर्थतता, चेलों का परिवर्तन, और कई दूसरे ऐतिहासिक और वैधानिक प्रमाणों को प्रस्तुत करता है। किन्तु, ये प्रमाण अवश्य इस बात को प्रगट करते हैं कि मसीही विश्वास असंगत या इतिहास विरोधी नहीं है, परंतु उन्हें मसीही विश्वास के ***आधार*** या ***नींव*** के रूप में नहीं देखा जाना चाहिये। ये निम्न तथ्यों से प्रगट किया जा सकता है।

पहले स्थान पर, चेलों ने इस प्रकार के तर्क का उनके प्रचार में प्रयोग नहीं किया। उन्होंने पुनरुत्थान को प्रमाणित करने के लिये संघर्ष नहीं किया, परंतु उसे घोषित करने के लिये प्रतिबद्ध रहे (प्रेरितों के काम 4:2, 33; 17:18; 24:21)। उनका विश्वास उनके सशक्त तर्कों में नहीं पाया जाता था, परंतु बचाने वाले सुसमाचार की सामर्थ में निहित था! प्रेरित पौलुस ने कुरिंथ के चर्च को लिखी, अपनी प्रथम पत्री में जो लिखा, उस पर विचार कीजियेः

> *''क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के लिये मूर्खता है, परंतु हम उद्धार पाने वालों के लिए परमेश्वर की सामर्थ है_____क्योंकि यहूदी चिन्ह मांगते हैं और यूनानी ज्ञान की खोज में रहते हैं; परंतु हम तो क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह का प्रचार करते हैं, जो यहूदियों की दृष्टि में ठोकर का कारण और गैरयहूदियों के लिए मूर्खता है''* (*1:18, 22–24*)।
>
> *''भाइयो, जब मैं तुम्हारे पास परमेश्वर 'के विषय में गवाही देता हुआ आया तो शब्दों या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया। क्योंकि मैंने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानू। मैं निर्बलता और भय के साथ थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा। मेरा सन्देश और मेरा प्रचार ज्ञान के लुभाने वाले शब्दों में नहीं था, परन्तु आत्मा और सामर्थ के प्रमाण में था, जिससे कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर के सामर्थ पर आधारित हो।''* (*1 कुरि. 2:1–5*)।

दूसरे स्थान पर, संपूर्ण चर्च इतिहास में जो बड़ी भीड़ मसीहत में परिवर्तित हुई, जिसमें इसके बड़े विद्वान भी सम्मिलित भी है, तो वे ऐतिहासिक और पुनरूत्थान के वैध प्रमाणों के अध्ययन करने से विश्वास में नहीं आये, परंतु सुसमाचार के प्रचार को सुनने के द्वारा विश्वास में आये।

तीसरे स्थान पर, पुनरुत्थान में अगर हमारा विश्वास इसके ऐतिहासिक और वैध प्रमाण पर आधारित है, तो हम कैसे उन असंख्य विश्वासियों के विश्वास को समझा सकते हैं जो ऐसे प्रमाण के थोड़े से ज्ञान के बिना भी अपने विश्वास के लिये मर गये? कैसे हम उस आदिवासी मसीही को समझा सकते हैं जो मुश्किल से पढ़ पाता है और पुनरूत्थान के लिये कोई एक ऐतिहासिक तर्क देने में असमर्थ है, तौभी वह सर्वाधिक निंदनीय प्रकार का सताव सहन करेगा और शहीद भी हो जायेगा पर अपने विश्वास से इंकार नहीं करेगा, उस विश्वास के लिये, जिसका बचाव वह तर्क के आधार पर नहीं कर सकता? इन सत्यों के प्रकाश में,

हमें यह निष्कर्ष निकालना आवश्यक है कि यद्यपि पुनरूत्थान के ऐतिहासिक और वैध प्रमाण कई रूप में ***सहायक*** है, तौभी यह पुनरूत्थान में हमारे विश्वास ***की नींव नहीं*** है।

तो पुनरूत्थान में विश्वासी के विश्वास रखने का आधार क्या है? कैसे वह जानता है कि मसीह जिलाया गया? धर्मशास्त्र से उत्तर स्पष्ट है। पुनरूत्थान के प्रति हमारा ज्ञान और अटल विश्वास पवित्र आत्मा के पुनर्जन्म देने और प्रकाशन के कार्य द्वारा संभव किया गया! यीशु मसीह के पुनरूत्थान की सत्यता के प्रति हमारा पूर्ण विश्वास करना और मसीही विश्वास की वैधता, अलौकिक रूप से नये जन्म के समय से हमारे भीतर ग्रहण कर ली जाती है (यूहन्ना 5:39; 1 यूहन्ना 5:6–10)। संक्षिप्त में, हम इसलिये विश्वास करते हैं क्योंकि आत्मा हमारे हृदयों को नया जन्म देता है, उन्हें विश्वास से भरता है और मसीह जिसका प्रकाशन हमें मिला है, उसके लिये नये लगाव को उत्पन्न करता है। प्रेरित पौलुस आत्मा के इस अदभुत कार्य का वर्णन 2 कुरिन्थियों 4:6 में करता है:

> *क्योंकि परमेश्वर जिसने कहा, ''अंधकार में से ज्योति चमके,'' वही है जो हमारे हृदय में चमका है कि हमें मसीह के चेहरे में परमेश्वर की महिमा के ज्ञान की ज्योति प्रदान करे''*

वे जिन्होंने नया जन्म पाया है, वे जिस प्रकार अपने स्वयं के अस्तित्व से इन्कार नहीं कर सकते, वैसे ही वे यीशु मसीह के पुनरूत्थान से अब इन्कार नहीं कर सकते। परमेश्वर के सार्वभौमिक विधान के द्वारा और पवित्र आत्मा की गवाही के द्वारा, यह उनके लिये एक निर्विवाद सत्यता हो गयी है (मत्ती 11:25)। जैसे मसीही विश्वास को सताव देने वालों ने यह बात जान ली है, ''जो यीशु के धर्म से ग्रसित है, उनका कोई ईलाज नहीं है''[10]

जो सत्य हमने सीखे हैं वे चेतावनी और एक निर्देश दोनों का कार्य करते हैं। यद्यपि, मसीही सिद्धांत का समर्थन करनेवाली धर्मविज्ञान की शाखा[11] (जिसे अपोलोजेटिक्स कहते हैं) का अपना एक स्थान है, फिर भी स्वर्ग के राज्य का विस्तार मुख्यतः सुसमाचार प्रचार द्वारा होता है। मनुष्य हमारी वाकपटुता या तर्कपूर्ण विवाद के द्वारा विश्वास में नहीं आयेगा, परंतु यीशु मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान की विश्वसनीय घोषणा के द्वारा विश्वास में सम्मिलित होगा। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि हमारा लक्ष्य एक मूर्ख के कार्य जैसा है और हमारा परिश्रम समय व प्रयास का अपव्यय ही कहलायेगा अगर जब तक परमेश्वर का आत्मा हमारे श्रोताओं के हृदयों और विचारों को प्रकाशन और पुनरुत्थान से न भर दे। इस कारण, हमें मानवीय बुद्धि के टूटे सोंटे सदृश्य सहारे पर आधारित होने से इंकार करना चाहिये (यशायाह 36:6); हमें केवल इस सत्य पर अटल रहना चाहिये कि एकमात्र सुसमाचार में परमेश्वर की सामर्थ है जो विश्वास करने वालों को उद्धार प्रदान करती है (रोमियों 1:16)।

---

10 यह सोवियत सैनिकों की गवाही मानी गयी है जिन्होंने सच्चे मसीहियों को जीवित मसीह पर विश्वास रखने से विमुख करना चाहा।

11 अपोलोजेटिक्स वह शाखा है जो अक्सर मसीही विश्वास की प्रतिरक्षा में काम आती है; इसके प्रचारक मसीहत के प्रतिद्वंदियों के इतिहास विरोधी तर्कों में गलतियों को प्रगट करते हैं और इसके लिये वे तर्क या सुसंगत विवादों का प्रयोग करते हैं।

अध्याय 23: मसीह के पुनरूत्थान के प्रमाण

मसीह के पुनरूत्थान संबंधी ऐतिहासिक या वैधानिक प्रमाण की व्याख्या करने की किसी की योग्यता एक व्यक्ति का मसीह पर विश्वास रखने का आधार नहीं है। एक व्यक्ति का मसीह पर विश्वास रखना, उसके द्वारा मसीही सिद्धांत को बचाने वाली किसी शाखा या किसी प्राचीनकालीन तर्क के प्रयोग से इसकी वैधता को बचाने वाली योग्यता के आधार पर निर्भर नहीं करता है।[12] तौभी, यह पहचानना व बताना महत्वपूर्ण है कि मसीह विश्वास इतिहास या तर्क के उच्चतम और सबसे आरंभिक प्रयोग से विरोधाभास नहीं रखता है। सच्ची मसीहत इसमें कोई विशेषता नहीं ढूंढती कि किसी पौराणिक कथा को एक उपयोगी कहानी में परिवर्तित कर दे कि संसार में किसी भली नैतिकता को बढ़ावा दे सके। बल्कि, मसीही विश्वास और मसीह के पुनरूत्थान में विश्वास इतिहास की सच्ची घटनाओं में बसे हुए हैं जिनकी एक ''संसारी इतिहासकार'' भी उसके द्वारा प्रयुक्त समान प्रमाणों के माध्यम से प्रचुरता से पुष्टि कर सकता है।

वे जो मसीही विश्वास को इतिहासरहित होने या पौराणिक होने के रूप में उस से इन्कार करते हैं, वे ऐसा पक्षपातपूर्ण पूर्वधारणा के कारण करते हैं जो किसी प्रमाण को स्वयं अपनी सत्यता को प्रगट करने से रोकती है; और वे ऐसा इसलिये करते हैं, जैसा रॉबर्ट रेमंड कहते हैं, ''सर्वाधिक प्रश्नोचित संकटपूर्ण और दार्शनिक आधार जिसके साथ वे मनोवैज्ञानिक व धार्मिक स्तर पर सरल रूप में और अधिक आनंददायक महसूस कर सके।[13] उनका तर्क जोखिमपूर्ण है: उन्होंने पहले ही तय कर लिया है कि पुनरूत्थान असंभव है; इसलिये इस घटना की वैधता के पक्ष में रखा गया कोई भी प्रमाण अवश्य भ्रामक ही है, और इसकी विश्वसनियता के पक्ष मे किया गया दावा किसी मूर्ख के दिमाग की उपज या किसी धूर्त का अविष्कार समझा जायेगा।

सुसमाचार के प्रति पापमयी मनुष्यों के अभागेपन के कारण दृढ़तापूर्वक यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर के अनुग्रह और पवित्र आत्मा के पुनरूत्थान के कार्य से परे, कोई मनुष्य मसीह के बारे में किये गये दावे को स्वीकार नहीं करेगा। जो दावे वह कर सकता है, मनुष्य उनकी उपेक्षा करेगा, दावों के विकृत किये जाने की उपेक्षा वह नहीं कर सकता और उन दावों के विरोध को वह विकृत नहीं कर सकता। दूसरे शब्दों में कहें तो वह सत्य का इंकार करने में अधिक ऊर्जा खर्च करेगा बजाय सरल रूप में उसे स्वीकार करने के।

---

12 I owe this insight to Pastor Charles Leiter.

13 *A New Systematic Theology of the Christian Faith*, p.581

यद्यपि, सारे प्रमाण जो मसीह के पुनरूत्थान की पुष्टि करते हैं पर विचार करना इस अभ्यासपुस्तिका के विषय–क्षेत्र से बाहर है, फिर भी हम इस अध्याय में कुछ वैध और तर्कपूर्ण प्रमाणों को खोजेंगे जो विश्वासी के विश्वास और खोजकर्ता की जांच दोनों के लिये लाभदायक होंगे।

घटना जिसकी पहले से भविष्यवाणि की गई

यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान ऐसी घटनाये नहीं थीं जिनके लिये भविष्यवाणी नहीं की गयी थी, जिसके लिये वह तैयार नहीं हो; परमेश्वर की इच्छा पूर्ण हो, इस कारण प्रत्येक घटना की स्पष्ट भविष्यवाणी की गयी थी। लूका की पुस्तक के अध्याय 24:25 –26 में यीशु ने अपने पुनरूत्थान के उपरांत अपने संशयी शिष्यों से जो कहा, उसके शब्दों से यह साफ प्रकट होता हैः

> ''हे निर्बुद्धियों, नबियों ने जो बातें कहीं उन सब पर विश्वास करने में मतिमंद लोगो! क्या मसीह के लिए यह आवश्यक न था कि यह सब दुःख उठाए और अपनी महिमा में प्रवेश करे?''

उसके आगमन से सेंकड़ों वर्ष पूर्व पुराने नियम में मसीह के पुनरूत्थान के लिये स्पष्ट भविष्यवाणी कर दी गयी थी। दाऊद ने भविष्यवाणी की थी कि परमेश्वर मसीहा को कब्र में न छोड़ेगा, न ही उसकी देह को सड़ने देगा (भजन 16:8–11)। यशायाह भविष्यवक्ता ने भी भविष्य को देखा था कि मसीह द्वारा अपने लोगों के पापों के लिये मृत्यु आने तक दुःख उठाने के कारण, परमेश्वर मसीहा को बहुत महिमा प्रदान करेगा (यशायाह 53:12)।

क्रूसीकरण से बहुत समय पहले, स्वयं मसीह ने अपनी मृत्यु एवं पुनरूत्थानकी भविष्यवाणी कर दी थी। जब अविश्वासी यहूदियों ने उससे मंदिर को साफ करने के उसके अधिकार के विषय में पूछा, तब उसने घोषित कर दियाः ''इस मंदिर को ढा दो और मैं इसे तीन दिन में फिर खड़ा कर दूंगा (यूहन्ना 2:19)। जब शास्त्रियों और फरीसियों ने उसके मसीहा संबंधित दावों के और अधिक प्रमाण मांगे, तो उसकी फटकार में भविष्य में होने वाले पुनरूत्थान का भी उल्लेख किया गया।

> मत्ती 12:39–40: परन्तु उसने उत्तर दिया, "यह दुष्ट और व्यभिचारिणी पीढ़ी चिह्न देखने को इच्छुक रहती है, फिर भी योना नबी के चिह्न को छोड़ और कोई चिह्न नहीं दिया जाएगा, क्योंकि जैसे योना तीन दिन और तीन रात विशाल मच्छ के पेट में रहा, उसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के गर्भ में रहेगा।

ये भविष्यवाणियां बताती हैं कि मसीह के शिष्यों ने मसीहाई स्वप्न को जीवित रखने के लिये किसी हताशा स्वरूप प्रयास द्वारा पुनरूत्थानकी खोज नहीं की थी। मसीह इसे अक्सर, इतना स्पष्ट घोषित करता रहता था (मत्ती 16:21) कि उसके शत्रु भी उसकी भविष्यवाणियों के बारे में जानते थे कि वह जी उठेगा।

> मत्ती 27:62–63: दूसरे दिन, अर्थात् तैयारी के दिन के एक दिन पशचात, मुख्य याजकों और फरीसियों ने पिलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा, "महोदय, हमें स्मरण है कि उस धोखेबाज ने अपने जीते–जी कहा था, 'तीन दिन के बाद मैं फिर जी उठूंगा।'

खाली कब्र

यीशु की मृत्यु हो जाने पर, उसके शव के ऊपर न केवल उसके चेले परंतु उसके प्रतिद्वंदियों द्वारा भी संपूर्ण ध्यान देने के बाद, कब्र खाली रहना और शव का नहीं मिलना, उसके पुनरूत्थानका सशक्त उदाहरण है। पहले ही दिन से, मसीहत को समाप्त करने के लिये जो सबसे अधिक आवश्यक, था अर्थात मानवरूपी यीशु के शव को ही आधार बनाकर प्रस्तुत किया गया। यहूदी अगुवे जिन्होंने उसकी मृत्यु की मांग की थी और रोमी अधिकारी जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था, जानते थे कि उसकी कब्र कहां स्थित थी और उनके पास उसकी देह को खोद निकालने के लिये पर्याप्त अवसर था। अगर कब्र खाली नहीं थी, तो एक निर्भिक कदम के साथ, वे संसार को यह सिद्ध कर सकते थे कि ईस्टर का संदेश केवल छलावा है और चेले कपटपूर्णता से एक दंन्त कथा को गढ़ने वाले दोषी व्यक्ति ठहरते। मसीहत अपनी प्रारंभिकवस्था में ही दम तोड़ देती। क्यों शव को कभी प्रस्तुत नहीं किया गया?

इस प्रश्न के प्रत्युत्तर में संशयवादियों ने तीन परिकल्पनाओं की खोज की। वे सब ही समान रूप से असंगत हैं। पहली परिकल्पना, जिसे अक्सर ''स्वून परिकल्पना'' (अचेतना या कोमा में जाना) कहा जाता है, के अनुसार यीशु रोमी क्रूस पर नहीं मरा था; बल्कि, वह केवल मूर्च्छित हो गया था और उसकी जांच ठीक ढंग से नहीं की गयी थी। बाद में, उसे एक ठंडी कब्र में रखा गया था, जहां उसे पुनः होश आ गया और वह बच निकला। इस परिकल्पना के विरूद्ध जो तर्क दिये जाते हैं वे स्वयं क्रूसीकरण की प्रकृति पर आधारित है – रोमी सैनिक द्वारा उसे भाला मारा गया और विशेषज्ञों के संपूर्ण परीक्षण के पश्चात मृतक घोषित किया गया (यूहन्ना 19:31–34)। अगर वह इस कठिन घड़ी में जीवित बच भी जाता, तो वह बिल्कुल भी ऐसी दशा में नहीं था कि कब्र के प्रवेश द्वार पर लगे भारी पत्थर को लुढ़का सके। इसके अतिरिक्त, यह संभावना बिल्कुल क्षीण हो जाती है कि उसके जैसा व्यक्तित्व फिलिस्तीन के किसी अनजान क्षेत्र में बच निकलता और शेष जीवन अज्ञात रहकर बिता देता।

दूसरी परिकल्पना यह है कि चेलों ने उसके शव को चुरा लिया हो और उसे किसी अज्ञात स्थल पर पुनः दफना दिया। इस परिकल्पना के विपरीत दिये गये तर्क दो स्त्रोतों से निकलते हैं। पहला स्त्रोत, रोमी पहरेदार का पद तीव्र ख्याति का पद होता था, जिसका दर्जा और कौशल प्रसिद्ध होता था। दूसरा तर्क यह रखा जाता है कि नये नियम में मसीह की मृत्यु के दौरान और बाद में भी चेलों के भयभीत होने का वर्णन मिलता है। बाइबल बताती है कि मसीह की मृत्यु के तुरंत बाद, महायाजकों और फरीसियों ने पीलातुस से उसकी कब्र की रखवाली एक प्रशिक्षित रोमी सैनिक के द्वारा किये जाने के लिये विनती की ताकि उसके चेले उसके शरीर को चुरा कर न ले जायें और इस मिथक को फैला सकें कि वह पुनरूत्थित हुआ है (मत्ती 27:64)। यह नितांत असंभव है कि मुट्ठी भर डरे हुए चेले पूर्ण रूप से रोमी पहरेदारों के ऊपर प्रबल हो जाते कि यीशु की देह को चुरा ले जायें। चेलें तो पूर्व में ही उनके भीतर साहस के अभाव को प्रदर्शित कर चुके थे जब क्रूसीकरण के समय उन्होंने मसीह को छोड़ दिया था (मरकुस 14:27; मत्ती 26:56), और उनका अगुवा, शिमौन पतरस, तो एक दासी द्वारा उसे मसीह के चेले के रूप में पहचानने पर, मसीह का इंकार कर गया (लूका 22:55–62)। यह भी बराबर से असंभव है कि सारे रोमी सिपाही अपने

कार्यस्थल पर सो जाते, जैसा कि महायाजकों ने पहरेदारों को सलाह दी (मत्ती 28:11–15)। वास्तव में, पुनरूत्थान पर विश्वास करने में इतने विश्वास की आवश्यकता नहीं होती जितना विश्वास इस परिकल्पना पर करने के लिये चाहिये!

यह तीसरी परिकल्पना यह है कि चेले शायद गलत कब्र पर चले गये थे। यह कब्र अरिमितिया के युसुफ की थी, जो सेन्हेंद्रिन महासभा का सदस्य था, तो इस तथ्य के प्रकाश में इस बात की संभावना भी कम थी (मत्ती 27:57–61; मरकुस 15:42–47; लूका 23:50–56)। वह और नीकुदेमस, फरीसियों में से एक जन और एक यहूदी शासक (यूहन्ना 3:1), ही थे जिन्होने यीशु के शरीर को गाड़ने के लिये तैयार कर उसे कब्र में रखा दिया (यूहन्ना 19:38–42)।

इसके अतिरिक्त बाइबल बताती है कि महिलायें जो गलील से यीशु के पीछे चल रही थीं, वे कब्र की सही स्थिति जानती थीं (मत्ती 27:61, मरकुस 15:47; लूका 23:55)। अगर चेले गलत कब्र पर जाते, तो चाहे मित्र हो या प्रतिद्वंदी, उन सब ने उन्हें सही कब्र तक पहुंचाकर यह गलती सुधार दी होती, उन्हें शव खोलकर, यीशु के अवशेष दिखा दिये होते।[14] पुनः यह परिकल्पना अन्य परिकल्पनाओं के समान असंगत है।

विश्वसनीय साक्षी

किसी घटना के ऐतिहासिक या सच्चा होने की पुष्टि के लिये तीन बातें आवश्यक हैं: 1. कोई चश्मदीद गवाह होना चाहिये; 2. ये चश्मदीद गवाह पर्याप्त संख्या में होना आवश्यक हैं; और 3. उन्हें ईमानदारी या विश्वसनीयता का प्रदर्शन करना आवश्यक है।[15] यह महत्वपूर्ण है कि ये सभी आवश्यकतायें बाइबल में यीशु मसीह के पुनरूत्थानसंबंधी गवाही के परिप्रेक्ष्य में पूर्ण होती हैं।

पहले स्थान पर, बाइबल की गवाही मसीह की सेवकाई, उसके पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण की आंखों देखी गवाही पर आधारित है। नये नियम का प्रत्येक लेखक प्रेरित पतरस के साथ है जब वह 2 पतरस 1:16 में यह घोषित करता हैं:

> ''जब हमने तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के सामर्थ और आगमन का समाचार दिया, तो हमने चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का सहारा नहीं लिया, क्योंकि हम उसके माहात्म्य के आंखों देखे गवाह थे।''

नये नियम के लेखकों द्वारा प्रत्यक्ष या चश्मदीद गवाही का महत्व स्पष्ट रूप से पहचाना गया। ग्यारह के साथ सम्मिलित होने पर, मत्तियाह को मसीह के जीवन व सेवकाई का आंखों देखी साक्षी बनने का अवसर मिला था – यूहन्ना के बपतिस्में से लेकर, पुनरूत्थान तक निरंतर बने रहने और मसीह के स्वर्ग पर चढ़ाये जाने के दिन तक, वह साक्षी बना रहा (प्रेरितों के काम 1:21–26)। उसके सुसमाचार को लिखने में, लूका को बहुत समस्या का सामना करना पड़ा जब वह सब बातों का लेखा तैयार कर रहा था जो ''उन लोगों से प्राप्त हुई_____जिन्होंने इन बातों को प्रारंभ से देखा था'' (लूका 1:1–4)। प्रेरित यूहन्ना अपनी प्रथम पत्री (पद 1–4) को, मसीह परमेश्वर के पुत्र के साथ अपने व्यक्तिगत संबंध की सशक्त और गंभीरता से पुष्टि करता हुआ

14 Robert Reymond, *A New Systematic Theology of the Christian Faith*, p.566.

15 Henry Thiessen, *Lectures in Systematic Theology*, p.246.

आरंभ करता है, जिसके साथ सभी चेलों को रहने का सौभाग्य मिला – एक संबंध जिसने लोगों के सामने, उनके सिद्धांत और कथनों दोनों के लिये आधार स्थापित किया:

> 1 यूहन्ना 1:1–4: उस जीवन के वचन के सम्बन्ध में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, जिसे हमने अपनी आंखों से देखा, वरन् जिसे ध्यानपूर्वक देखा और हमारे हाथों ने स्पर्श किया–वह जीवन प्रकट हुआ हमने उसे देखा है और उसकी साक्षी देते है, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार सुनाते हैं जो पिता के साथ था और हम पर प्रकट हुआ–जिसे हमने देखा और सुना, उसी का समाचार हम तुम्हें भी सुनाते हैं, कि तुम भी हमारे साथ सहभागिता रखो वास्तव में हमारी यह सहभागिता पिता के और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए।

किसी भी ईर्ष्यारहित जांचकर्ता को यह स्पष्ट होना चाहिये कि चेलों को मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थानका प्रत्यक्ष ज्ञान था और उन्होंने अपने इस ज्ञान की प्रकृति की पुष्टि करने के महत्व को पहचाना। वे चाहते थे कि संसार जान ले कि वे किसी भ्रामक बातों द्वारा गुमराह नहीं किये गये थे, परंतु उन्होंने पुनरूत्थित मसीह के हाथ, पैरों और बाजू का स्पर्श किया था (लूका 24:39; यूहन्ना 20:27)। उन्होंने उसके साथ संगति की थी (लूका 24:13–32, 36–43; यूहन्ना 21:12–14) और उन्हें उससे आज्ञा मिली थी (लूका 24:44–49)। अंततः, उन्होंने उसकी आराधना की जब वह उनकी दृष्टि से ओझल होकर स्वर्ग पर चला गया (लूका 24:50–53) ।

दूसरे स्थान पर, एक घटना की ऐतिहासिक या सच्ची घटना के रूप में पुष्टि के लिये चश्मदीद गवाहों की पर्याप्त संख्या होनी चाहिये। इसे सीधे तौर पर कहें तो, जितनी अधिक आंखों देखें गवाह होंगे, वह घटना उतनी अधिक विश्वसनीय बन जाती है। पुराने नियम की व्यवस्था में और नये नियम में कलीसिया को दिये निर्देशों में भी यही सिद्धांत पाया जाता है – एक घटना की पुष्टि कम से कम दो या तीन गवाहियों द्वारा की जाती है (व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15; मत्ती 18:16) ।

मसीह के पुनरूत्थान के संबंध में, इस मांग को भी संतुष्ट किया गया। बाइबल बताती है कि सैकड़ों विश्वसनीय गवाहियां थी जिन्होंने पुनरूत्थित मसीह को अलग अलग प्रकार की स्थितियों और परिस्थितियों में देखा था। पुनरूत्थान रविवार के दिन, वह बगीचे में मरियम मगदलीनी के सामने प्रगट हुआ (यूहन्ना 20:11–18), तब कब्र से लौटती महिलाओं के छोटे झुंड को दिखाई दिया (मत्ती 28:9–10)।

उसी दिन, वह क्लियोपास और दूसरे चेले के साथ एम्माऊस की सड़क पर उनके साथ मार्ग में था (मरकुस 16:12–13; लूका 24:13–32)। दिन बीतते, उसने स्वयं को पतरस के सामने प्रकट किया (लूका 24:34) और तब ऊपरी कोठी में दस चेलों को दिखाई दिया (लूका 24:36–43; यूहन्ना 20:19–25)।

अगले रविवार, वह सभी ग्यारह चेलों के सामने प्रकट हुआ और उसका प्रसिद्ध संवाद शंकालू थोमा के साथ हुआ (मरकुस 16:14; यूहन्ना 20:26–29; 1 कुरिन्थियों 15:5)। उसके पश्चात वह एक ही समय में पांच सौ से अधिक लोगों को दिखाई दिया (1 कुरिन्थियों 15:6) और उसके सौतेले भाई याकूब को दिखाई दिया (1 कुरिन्थियों 15:7)। वह किसी अज्ञात समय पुनः

पतरस, यूहन्ना और दूसरे पांच चेलों के पास आया जब वे तिबिरयास झील में मछली पकड़ रहे थे (यूहन्ना 21:1–14)। अंततः, वह जैतून पर्वत से अपने चेलों की उपस्थिति में स्वर्ग पर उठा लिया गया (लूका 24:50–53; प्रेरितों के काम 1:9–11)।

बाइबल की गवाही की रोशनी में, मसीह के पुनरूत्थान के वर्णन को, किसी गलत धारणा के आधार पर कि आंखों देखी साक्षी पर्याप्त नहीं थीं, बदनाम करना असंभव है। इस सत्य के लिये, महान अंग्रेज प्रचारक चार्ल्स स्पर्जन गंभीरतापूर्वक गवाही देते हैं:

> ''क्या आप इस बात से प्रभावित नहीं होते कि इतिहास की कई सबसे अधिक महान और सामान्य तौर पर विश्वसनीय घटनायें, मसीह के पुनरूत्थान की गवाहियों की तुलना में एक दसवें भाग के बराबर भी गवाही नहीं प्रस्तुत कर सकीं थी? राष्ट्रों को प्रभावित करने वाली संधियों पर हस्ताक्षर, राजकुमारों का जन्म स्थान, केंद्रिय मंत्रियों की टिप्पणियां, षड्यंत्रकारियों की कार्ययोजना और हत्यारों के दस्तावेज – और इन सब ने इतिहास की धारा को मोड़ दिया था परंतु उन के तथ्यों पर कभी प्रश्न खड़े नहीं किये गये, पर इसके बावजूद उनके आंखों देखी गवाह भी बहुत कम है_____'' अगर इस तथ्य का (पुनरूत्थान) का इंकार किया जाता है, तो सारी गवाहियां भी समाप्त मानी जाती और हम विचारपूर्वक कह सकते, जैसा दाऊद ने शीघ्रतापूर्वक कहा थाः 'सभी मनुष्य झूठे हैं; और इस दिन के बाद मनुष्य अपने पड़ोसी के प्रति भी इतना शंकित हो जायेगा, कि जो उसने अपनी आंखों से नहीं देखा है, उस पर कभी विश्वास नहीं करेगा; अगला कदम स्वयं अपने द्वारा महसूस किये गये प्रमाणों पर संशय करने लगेगा; मनुष्य और क्या क्या गलतियों की ओर कदम बढ़ा सकता है, मैं और इसके आगे नहीं बताऊंगा।''[16]

अंत में, एक घटना की ऐतिहासिक या सच्ची घटना के रूप में पुष्टि के लिये, चश्मदीद गवाहों को अपनी ईमानदारी प्रगट करना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, उन्हें स्वयं को विश्वसनीय सिद्ध करना चाहिये। यह कोई छिपी बात नहीं है कि संपूर्ण मसीहत के इतिहास में, असंख्य संशयवादियों ने नये नियम की गवाहियों को बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी; किन्तु, वे नैतिक आधार पर उन गवाहियों की गंभीरता को असत्य सिद्ध करने या अयोग्य ठहराने में कभी भी सफल नहीं हुए। इस कारण, संशयवादी अपने प्रहारों को आत्म भ्रांति और सामूहिक उन्माद की संभावना पर केंदित करने के लिये बाध्य हुए। यह विवाद किया जाता है कि चेले और पहली सदी के कई यहूदी जन पुनरूत्थान पर विश्वास करने के लिये प्रवृत्त हुए; इसलिये उन्होंने सीधे वही देखा जो वे देखना चाहते थे। इस दृष्टिकोण को माननेवाले निम्ननुसार तर्क देते हैं। पहले स्थान पर, यहूदी राष्ट्र ने रोमी साम्राज्य की असहनीय प्रताड़ना के अधीन होकर संघर्ष किया।

इस कारण यीशु के समय के यहूदी, मसीहा के आगमन के लिये बेसब्री से बाट जोह रहे थे और आसानी से छले जा सकते थे। यहूदियों में से कईयों ने पहले से ही कई झूठे मसीहा जो लोगों के बीच उठ खड़े हुए थे, उनका अनुसरण किया था (प्रेरितों के काम 5:36–37), यह सिद्ध करता है कि वे लगभग किसी भी बात पर विश्वास करने के इच्छुक थे। दूसरे स्थान पर, यीशु ने आगे आने वाले अपने पुनरूत्थान के बारे में कई भविष्यवाणियां की थी। अपने प्रिय शिक्षक के लिये चेलों का अगाध प्रेम मिलकर, ऐसी भविष्यवाणियों के प्रति आत्म भ्रांति और सामूहिक उन्माद को अंकुरित करने के लिये अच्छी भूमि सिद्ध होता।

16 *The Metropolitan Tabernacle Pulpit*, Vol.8, pp.218-219.

इस प्रचलित परिकल्पनाओं के विरूद्ध कई तथ्य प्रगट होते हैं। पहले तो, यहूदी राष्ट्र के बहुसंख्यकों ने नाजरथ के यीशु को मसीहा के रूप में अस्वीकार कर दिया था। उसकी इस जगत की सेवकाई और मृत्यु उनके लिये ठोकर खाने का कारण बनी (1 कुरिन्थियों 1:23)। क्रूस के पहले से ही विक्षोभकारी संदेश में पुनरूत्थान को जोड़कर, यीशु के मसीहा होने के दावें यहूदियों के लिये और अधिक सम्मोहक नहीं सिद्ध नहीं हुए। इससे बढ़कर, यह परिकल्पना इस सिद्धांत पर विचार नहीं करती कि कुछ दशकों के भीतर विश्वासियों की बड़ी संख्या जो पहले अन्यजाति से थे, सुसमाचार पर विश्वास करने की ओर उनका कोई झुकाव नहीं था। जैसे लैविस ओर देमारेस्ट लिखते हैं:

> ''धर्मवैज्ञानिक आधार पर उन्होंने (यहूदियों ने) जो आशा की थी, यह घटना उस आशा के बिल्कुल तीव्र विरोध में घटित हुई और इस उस समय के दुनियावी दृष्टिकोण के प्रारूप से इसका यथार्थवादी संघर्ष चलता था। यहूदियों के लिये यह ठोकर का कारण और यूनानियों के लिये बकवास थी क्योंकि उनके धर्मविज्ञान और खगोलशास्त्र में प्रमाण कोर्पिनकन परिक्रमा की मांग करते थे।''[17]

दूसरी बात, यहूदी और अन्यजाति पहले लोगों में से नहीं थे जो पुनरूत्थान पर विश्वास करने के लिये प्रवृत्त हुए; ऐसा तो चेलों के लिये बिना किसी शर्त के कहा जा सकता है। फिर भी मरियम मगदलीनी प्रथम महिला थी जिसने पुनरूत्थान के पश्चात मसीह को देखा था जब उसका सामना खाली कब्र से हुआ, उसने यही मान लिया था कि किसी ने प्रभु की देह को चुरा लिया था और किसी अज्ञात स्थान पर उसे रख दिया है (यूहन्ना 20:2, 13, 15)। जब मसीह के पुनरूत्थान की खबरें उठना आरंभ हुई, तब भी चेलों ने विश्वास नहीं किया।

लूका यह दर्ज करता है कि मसीह के पुनरूत्थान का समाचार ''उन्हें बकवास प्रतीत हुआ'' (लूका 24:10–11) मरकुस लिखता है कि उन्होंने ''मानने से इंकार कर दिया'' (मरकुस 16:11)। पुनरूत्थित मसीह के साथ पहली बार जब उनका सामना हुआ, उन्होंने उसे माली समझा (यूहन्ना 20:15), भूत समझा (लूका 24:37), एम्माऊस की सड़क का मुसाफिर समझा (लूका 24:13–16)। इन अशिष्ट और बल्कि हास्याप्रद गलत व्याख्याओं को मसीह के और अधिक प्रकट होने और व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के कथन को उसके द्वारा सावधानी पूर्वक प्रतिपादित करते हुए निष्क्रिय किया जा सकता था (लूका 24:25–27, 44–46)।

इसके पहले कि थोमा का संशय दूर किया जाता, उसने यह आवश्यक समझा कि मसीह के हाथों में कील के निशान देखे, उसके घावों में अपनी उंगली डाले और उसके पांजर में अपना हाथ डाले (यूहन्ना 20:24–29)! मसीह उनके अविश्वास और हृदय की कठोरता के लिये उनको फटकारता भी हैं'' (मरकुस 16:14), और वह उन्हें वह यह कहकर डांटता है कि, ''हे निबुद्धियों, नबियों ने जो बातें कहीं उन सब पर विश्वास करने में मतिमंद लोगों!'' ये तथ्य मुश्किल से इस दावे की पुष्टि करते हैं कि चेले पुनरूत्थान पर विश्वास करने के लिये पहले से ही प्रवृत्त हुए थे!

---

17 *संपूर्णात्मक धर्मविज्ञान*, वाल्यूम 2, पेज 466, निकोलोउस कोपर्नीकस (1473–1543) सूर्यकेंद्रिय पद्धति का सुझाव देने वाला प्रथम व्यक्ति था – सौर मंडल का वह नमूना जिसमें सूर्य केंद्र में पृथ्वी का स्थान ले लेता है। उसकी यह परिकल्पना उस समय की यथा स्थिति के लिये एक क्रांतिकारी कदम था और इसे आधुनिक विज्ञान के इतिहास में कोपर्नीकन परिक्रमा के नाम से जाना जाता है। इसलिये, ऐसी कोई भी परिकल्पना जो इसी प्रकार से क्रांतिकारी प्रकृति की हो, उसे ''कोपर्नीकन'' या ''कोपर्नीकन परिक्रमा'' के नाम से जाना जाता है।

अंत में, विशेष मतिभ्रम या भ्रम अक्सर केवल एक व्यक्ति तक ही सीमित होता है। सैकड़ों लोगों को जो मसीह के पुनरूत्थित होने के चश्मदीद गवाह थे, उन्हें इस तरह का मतिभ्रम होना बिल्कुल ही असंभव लगता है। इससे बढ़कर, समूह उन्माद अक्सर बलशाली राजनीतिक या धार्मिक संस्थाओं के द्वारा उत्पन्न किया जाता है जो लोगों के समूह को बहला लेता है। किन्तु, मसीह के पुनरूत्थान और सुसमाचार के संबंध में, उस समय की शक्तिशाली संस्थायें उसके संदेश का विरोध करने के लिये एकजुट हो गयी थीं और अपनी सामर्थ में जितना हो सके उतना उसे झुठा ठहराने का यथासंभव प्रयत्न किया। यह संदेश फैलाने वाले अधिकतर, अशिक्षित और अप्रशिक्षित मनुष्य थे (प्रेरितों के काम 4:13) जिनके पास अपना उद्देश्य स्थापित करने का कोई राजनीतिक, धार्मिक या आर्थिक सामर्थ नहीं थी।

बिना उद्देश्य का झूठ

इस बात को अक्सर उपेक्षित कर दिया जाता है, तौभी पुनरूत्थान की ऐतिहासिक सच्चाई के लिये प्रेरितों का जीवनपर्यंत समर्पण अत्यधिक प्रतीतियुक्त तर्क दिखाई देता है, बावजूद इसके कि उन पर सुसमाचार प्रचार के कारण अनेक कष्ट आये। अगर मसीह पुनरूत्थित नहीं हुए होते और चेलों ने साधारणतः कोई कहानी गढ़ ली होती, तब हमें उस छल के पीछे का प्रयोजन ढूंढ पाने के योग्य होना चाहिये था। किसी झूठ का प्रचार करने से वे क्या प्राप्त कर लेते? यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि प्रेरितों और पूर्वी चेलों की बड़ी संख्या ने गरीबी, बदनामी, सताव और तिरस्कार में ही दम तोड़ दिया। जैसा प्रेरित पौलुस ने घोषित किया था, ''हम अब तक मानों संसार का मैल व सब वस्तुओं का कूड़ा करकट बने हुए हैं'' (1 कुरिन्थियों 4:13) और ''यदि हमने केवल इसी जीवन में मसीह पर आशा रखी है तो हमारी दशा सब मनुष्यों से अधिक दयनीय है'' (1 कुरिन्थियों 15:19)

अगर इन मनुष्यों ने पुनरूत्थान की कहानी कुछ विशेष कारणों से गढ़ी होती, ऐसे कारण जिनके लिये मनुष्य झूठ रचता है और उसे प्रचारित करता है – जैसे दौलत, प्रसिद्धी और ताकत पाने के लिये – तो फिर जब वे देखते है कि ऐसी कहानियां इच्छित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर रही हैं, तो वे उनका खंडन करना आरंभ कर देते। तथापि, इतिहास यह सिद्ध करता है कि सुसमाचार पर विश्वास या मसीह के पुनरूत्थान के विश्वास का त्याग करने के स्थान पर उनमें से अधिकतर ने भयानक सताव का चुनाव किया और यहां तक कि शहीद भी हो गये। कष्ट और मृत्यु सहने का ऐसा हठ और ऐसी धुन के पीछे एकमात्र स्पष्टीकरण यही हो सकता है कि पुनरूत्थान की कहानी सच्ची है – एक ऐतिहासिक सच्चाई – और चेले एवं अन्य मसीही जन सीधे वही बता रहे थे, जो उन्होंने वास्तव में देखा था। जैसे प्रेरित यूहन्ना ने लिखा था, ''जिसे हमने देखा और सुना, उसी का समाचार हम तुम्हें भी सुनाते हैं'' (1 यूहन्ना 1:3)

इस समीकरण में गणना करने का एक ओर तथ्य गवाही के रूप में महिलाओं का उपयोग है। नये नियम के समय और संस्कृति में, महिलाओं को कानूनी मामलों में वैध गवाही नहीं माना जाता था। तथापि, चारों सुसमाचारों में, महिलायें यीशु मसीह के पुनरूत्थान तक ''प्राथमिक गवाही'' बनकर प्रमुख भूमिका का निर्वाह करती रहीं (मत्ती 28:1–10; मरकुस 16:1–8; लूका 24:1–12; यूहन्ना 20:1–18)।

प्रभु को पुनरूत्थान के पश्चात देखने वाली मरियम मगदलीनी पहली महिला थी और उसके पुनरूत्थान की गवाही दूसरों को बताने वाली भी पहली महिला थी। वास्तव में, उसका चित्रण एक नायिका के समान किया गया है कि जब प्रेरित अविश्वास में पड़े हुए थे, तब उसने विश्वास किया और आज्ञा मानी (मरकुस 16:9–11; यूहन्ना 20:11–18)। जो महिलाये मरियम मगदलीनी के साथ रविवार की भोर कब्र पर गयीं हुई थी, उन्होंने भी मरियम के बाद प्रभु को देखा और प्रभु के द्वारा उन्हें कार्य सौंपा गया कि यह शुभ सुसमाचार दूसरों तक पहुंचाये (मत्ती 28:8–10)।

अगर नये नियम के लेखक भीड़ को धोखा देने का प्रयास कर रहे थे, तो उन्होंने महिलाओं को प्रारंभिक गवाही के रूप में प्रयोग नहीं किया होता; बल्कि, उन्होनें पुरूषों को चुना होता, जो दूसरों की दृष्टि में अधिक विश्वसनीय प्रतीत होते।

चेलों का परिवर्तन

पुरूत्थित यीशु मसीह का इंकार करने में सब बड़ी रूकावटों में से एक रूकावट जिसे एक नास्तिक अवश्य पार कर सकता है, वह है, चेलों में दिखाई देने वाला परिवर्तन। अगर पुनरूत्थान कोई ऐतिहासिक सच्चाई नहीं है – या बुरे रूप में, यह कोई अफवाह है –तो चेलों और दूसरे चश्मदीद गवाहों के व्यक्तित्व और कार्यो में दिखाई देने वाला आश्चर्यजनक परिवर्तन समझ से बाहर है। पुनरूत्थान के पूर्व, चेले कायर, भयभीत और स्वयं बचे रहने की इच्छा से प्रेरित थे। यीशु के बंदी बनाये जाते ही, उन्होंने उसे छोड़ दिया (मत्ती 26:56) ; उसके मुकदमें के दौरान, उन्होंने उसका इंकार किया (मत्ती 26:69–75) ; और उसकी मृत्यु के बाद तीन दिन तक उन्होंने अविश्वासी बने रहकर स्वयं को छिपाये रखा (मरकुस 16:14); (यूहन्ना 20:19) और दुःख में डूबे रहे (लूका 24:17) । महिलाओं ने, उन पुरूषों से बढ़कर बड़ा नैतिक साहस व आशा प्रगट की, जिन्हें मसीह ने व्यक्तिगत रूप से अपने चेले होने का उत्तरदायित्व सौंपा था! वे महिलायें थीं जो रविवार सुबह कब्र पर गयी थीं जबकि पुरूष डर के मारे ऊपर के कमरे में बैठे रहे। वे महिलायें थीं जिन्होंने पुनरूत्थान पर पहले विश्वास किया और उसे घोषित किया जबकि पुरूष तो संशय के मारे चुप्पी साधे बैठे थे।

फिर भी, पुनरूत्थान के पश्चात, ये ही पुरूष दिलेर और अजेय बने रहकर विश्वास की रक्षा करने वाले ठहरे। प्रेरितों के काम की पुस्तक से, हमें ज्ञात होता है, कि वे संसार के विरूद्ध खड़े हुए थे और सुसमाचार के संदेश एवं यीशु मसीह के पुनरूत्थान द्वारा "(इसे) उलट पलट कर दिया था" प्रेरितों के काम 17:6 केजेवी/एनकेजेवी/ईएसवी)। जब यहूदियों की धार्मिक और राजनीतिक संस्थाओं ने उन्हें "यीशु के नाम में बोलने या शिक्षा देने के लिये मना किया" (प्रेरितों के काम 4:18), तब चेलों ने उनके अधिकारों को तुच्छ जानते हुए मसीह के व्यक्तित्व व संदेश के प्रति दृढ़ समर्पण बनाये रखा। यह पतरस और यूहन्ना के यहूदी धर्मसभा के समक्ष उनके विश्वास को प्रगट किये जाने से सिद्ध होता है (प्रेरितों के काम 4:19–20):

> "तुम ही न्याय करोः क्या परमेश्वर की दृष्टि में यह उचित है कि हम परमेश्वर की आज्ञा से बढ़कर तुम्हारी बात मानें? क्योंकि यह तो हमसे हो नहीं सकता कि जो हमने देखा और सुना है, उसे न कहे"

यद्यपि उन्हें धमकाया गया, पीटा गया, कैदखाने में डाला गया और वे शहीद भी हुए, फिर भी मसीह के चेलों ने जो ''आंखों से देखा और सुना'' था उसका इंकार करने या उसे सुनाना बंद करने से मना कर दिया (1 यूहन्ना 1:1,3)। ये पुरूष और स्त्रियां, यीशु के पुनरूत्थान के सच से साहसी बनाये गये थे, उन्होंने एक पीढ़ी के अंतराल में संपूर्ण संसार में शुभ संदेश फैला दिया (कुलुस्सियों 1:5–6)। उनके पास किसी प्रकार की राजनीतिक, धार्मिक या आर्थिक ताकत नहीं थी; और न उनके पास कोई संसारीक शैक्षणिक योग्यता भी नहीं थी; तौभी उन्होंने जगत को इस दर्जे तक बदल कर रख दिया कि कोई राजनीतिक या सैन्य दल इसकी बराबरी नहीं कर सकता था। अगर मसीह पुनरूत्थित नहीं हुए होते, तो इसे किस तरह समझाया जा सकता था? उनके मिशन की सफलता को कैसे समझा जा सकता था? आर.ए. टोरी लिखते हैं:

> ''कुछ अद्‌भुत बात हुई होगी जिसने विलक्षण और विस्मयकारी नैतिक परिवर्तन को जन्म दिया। पुनरूत्थान का पूरा सच, जिसमें उन्होंने प्रभु को जीवित देखा था, इस बदलाव को परिभाषित करता है।''[18]

शत्रुओं का परिवर्तन

यीशु मसीह के पुनरूत्थान के बाद अनुयायियों का समुल परिवर्तन ही संशयवादी की समस्या नहीं थी। उसे यीशु का विरोध करने वाले और उसके अनुयायियों को सताने वाले के उत्तरगामी परिवर्तन की भी व्याख्या देनी थी। पुनरूत्थान से परे, मसीहत कैसे कुछ प्रारंभिक बड़े विरोधियों को प्रभावित कर सकती थी– विशेषकर यीशु के सौतेले भाइयों और तरसुस के दुष्ट शाऊल को?

बाइबल स्पष्ट बताती है कि यीशु के जीवन और सेवकाई के दौरान, न तो याकूब और न यहूदा (यीशु के सौतेले भाई) उन पर विश्वास करते थे परंतु उसके व्यक्तित्व और सेवकाई के खुले रूप में विरोधी थे (यूहन्ना 7:3–5)। वास्तव में, यीशु का परिवार उन्हें नाजरथ से कफरनहूम इसलिये लेने आया था कि उन्हें अपने साथ ले जाये क्योंकि उन्हें ऐसा लगता था कि ''उसका चित्त ठिकाने नहीं'' है (मरकुस 3:21)। फिर भी, पुनरूत्थान के बाद, दोनों भाई मूल रूप से परिवर्तित हो गये और प्रारंभिक कलीसिया के अगुवे कहलाये।[19] मसीह एवं उसकी प्रभुता के प्रति उनका समर्पण उनकी पत्रियों में दिखाई देता है, जहां वे अपने आप को प्रभु यीशु मसीह के दास प्रगट करते हैं (याकूब 1:1; यहूदा 1)। वे अविश्वासी विरोधी से विश्वसनीय दास में परिवर्तित हो गये, जो अपने जीवन को उसकी प्रभुता के प्रति समर्पित करने के लिये इच्छुक थे। बाइबल में लिखी बातों का मानने से अलग हटकर, यह परिवर्तन कैसे संभव हुआ? उन्होने पुनरूत्थित मसीह को देखा था (1 कुरिन्थियों 15:7)!

प्रारंभिक चर्च के एक और प्रतिद्वंदी तरसुस के शाऊल (उसे बाद में प्रेरित पौलुस के नाम से जाना गया) जिसका परिवर्तित होना, प्रेरितों द्वारा पुनरूत्थान के कथन को और महत्व का बना देता है । प्रेरितों की पुस्तक में और उसके स्वयं के लेखन में, शाऊल आरंभिक मसीहत का एक सबसे बड़ा और अति क्रूर प्रतिद्वंदी था। उसने अपनी अज्ञानता और अविश्वास में, नाजरथ के

---

18 *The Bible and Its Christ* (Old Tappan, N.J.: Fleming H. Revell, n.d.), p.92.

19 James (James 1:1; Acts 1:14; 12:17; 15:13ff; I Corinthians 9:5; 15:7; Galatians 1:19; 2:9) and Jude (Jude 1; Acts 1:14; I Corinthians 9:5).

यीशु को मात्र एक बहुरूपिया और ईश निंदक के रूप में देखा, और उसने सोचा कि वे सब जो उसके पीछे हो लिये हैं, वे बंदी बनाये जाने और मृत्युदंड के योग्य हैं (1 तिमुथियुस 1:13)। हम उसे पहले प्रेरितों की पुस्तक में देखते हैं कि कैसे वह स्तिफनुस को मारे जाने के लिये सहर्ष सहमति देता है (प्रेरितों के काम 7:58; 8:1)। उसके पश्चात, वह महायाजक के पास जाता है, ''कि प्रभु के चेलों को धमकी दे और उन्हें मार डाले'' (9:1), और उससे इस अभिप्राय से पत्र प्राप्त करता है ताकि ''यदि उसे इस पंथ का कोई अनुयायी मिले, वे चाहे स्त्री हो या पुरूष, उन्हें बांध कर यरूशलेम ले आये'' (9:2)। किन्तु, दमिश्क के मार्ग पर, शाऊल का क्रांतिकारी परिवर्तन हो जाता है – और वह सहमत हो जाता है कि यीशु ही इजरायल का मसीहा है! वह तुरंत उसके नाम में बपतिस्ता ग्रहण करता है और एकाएक आराधनालयों में यीशु के नाम का प्रचार करना आरंभ कर देता है, यह कहते हुए कि, ''वह परमेश्वर का पुत्र है'' (9:18–20)। उसके यहूदी मित्र आश्चर्य से प्रतिक्रिया देते हुए कहते हैं:

> ''क्या यह वही नहीं जो यरूशलेम में इस के नाम लेने वालों को नाश करता था और यहां इसी अभिप्राय से आया था कि उन्हें बांधकर मुख्य याजकों के पास ले जाए?'' (प्रेरितों के काम 9:21)।

इन घटनाओं के बाद, यह समाचार यहूदीया की कलीसियाओ में तेजी से फैल गया कि वह जो किसी समय सताता था और विश्वास को मिटा देने पर तुला था, अब प्रचार करता और उसी विश्वास को प्रगट कर रहा है (गलातियां 1:22–33)! फिर भी, शाऊल कलीसिया के विरोध मे ऐसा एक हिंसक शत्रु रह चुका था कि कोई विश्वासी उससे जुड़ने का साहस नहीं कर सका। सब उससे भयभीत रहते थे जब तक कि बरनबास उसे प्रेरितों के पास लेकर आया और उसकी गवाही को पक्का ठहराया (प्रेरितों के काम 9:26–27)। इस प्रकार तरसुस का शाऊल, मसीही विश्वास का सबसे बड़ा विरोधी, उसी विश्वास की रक्षा करने वाला और उसे फैलाने वाला बन गया। विलियम नील लिखते हैं:

> ''जो ऐतिहासिक रूप से प्रश्न से परे है, वह यह बात है कि नाजरथ वासियों का सबसे बड़ा कट्टर उत्पीड़क, जिसने यरूशलेम में 'धमकाने और मार डालने' का आतंक मचा रखा था, उसने दमिश्क में मानसिक रूप से बिखरे हुए और शारीरिक स्तर पर अंधे होकर प्रवेश किया और जब अच्छा हुआ, तब जिस विश्वास को मिटाने (नष्ट करने) चला था, उसी विश्वास का सबसे अग्रणी समर्थक बन गया।''[20]

चूंकि संशयवादी, शाऊल के परिवर्तन की ऐतिहासिक सच्चाई और उसके समुल जीवन–परिवर्तन से इंकार नहीं कर सकता है इसलिये वह तर्कयुक्त व्याख्या देने के लिए मजबूर है। दो हजार साल बाद, कलीसिया आज भी बाट जोह रही है!

संपूर्ण इतिहास में लोगों की बड़ी भीड़

मसीहत के पहले साल में, एक प्रतिष्ठित फरीसी गमलिएल ने सेनहेंद्रिन को बड़ी विद्वत्ता के साथ यीशु के अनुयायियों के संबंध में नसीहत दी। इसे यहां उद्धृत करना योग्य होगा।

---

20 *New Century Bible Commentary – The Acts of the Apostles*, p.128.

> प्रेरितो के काम 5:35–39: और उसने उनसे कहा, "हे इस्राएलियो, तुम इन लोगों से जो कुछ करना चाहते हो उसे सोच समझकर करो। क्योंकि कुछ समय पहिले थियूदास यह दावा करते हुए उठ खड़ा हुआ था कि मैं भी कुछ हूँ और लगभग चार सौ मनुष्य उसके पीछे चल पड़े। परन्तु वह मार डाला गया तथा उसके सब अनुयायी तितर–बितर हुए और उनसे कुछ बन न पड़ा। उस व्यक्ति के बाद जनगणना के दिनों में गलील निवासी यहूदा उठ खड़ा हुआ और उसने कुछ लोगों को अपनी ओर कर लिया। वह भी मिट गया और उसके सब अनुयायी तितर–बितर हो गए। अतः इस मामले में भी मैं तुमसे कहता हूँ कि इन मनुष्यों से दूर रहो और इनसे कोई मतलब न रखो क्योंकि यदि यह योजना या कार्य मनुष्यों की ओर से हो तो मिट जाएगा परन्तु यदि यह परमेश्वर की ओर से है तो तुम उन्हें मिटा न सकोगे। कहीं ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो!"

यीशु मसीह के आगमन से पूर्व, दो झूठे मसीहा इजरायल राष्ट्र में प्रगट हुए और उनमें से प्रत्येक के पीछे लोग चल पड़े थे। यद्यपि, उनकी मृत्यु के पश्चात, उनके अनुयायी जल्द ही बिखर गये और फिर कभी उनके इन अभियानों के पीछे चलते हुए नहीं पाये गये। इसलिये, गमालियल ने तर्क किया कि नाजरथ का यीशु अगर मात्र एक मनुष्य था और उसका पुनरूत्थान केवल झांसा था, तो उसके अनुयायियों के साथ भी यही होना चाहिये था। किन्तु, गमालिएल ने विद्वता के साथ यह निष्कर्ष निकाला कि अगर पुनरूत्थान की कहानी सच है और यीशु ही मसीहा है, तो यह अभियान निरंतर रहेगा और जिन्होंने इसका विरोध किया वे परमेश्वर से लड़ने वाले ठहरेंगे। इतिहास के ये अंतिम दो हजार साल गमालिएल के तर्क की पुष्टि करते हैं।

यीशु मसीह के पुनरूत्थान का सबसे बड़ा प्रमाण संपूर्ण इतिहास, संपूर्ण राष्ट्र, जाति, और संसार के लोगों के अंदर मसीही विश्वास की निरंतरता का बना होना है। पुनरूत्थान के काल से लाखों लोगों ने यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत संबंधों की साक्षी दी है और यह दावा किया है कि उसने उनकी जीवन शैली को अद्‌भूत रीति से बदल दिया है। यह देखना महत्वपूर्ण है कि ऐसे समूह के लोग किसी विशेष संस्कृति, राजनीतिक या शैक्षणिक उप समूहों से जुड़े हुए नहीं होते हैं; बल्कि, इसके अंर्तगत प्रत्येक संस्कृति, आर्थिक वर्ग और शैक्षणिक स्तर के लोग पाये जाते हैं। आरम्भिक कलीसिया उन लोगों से मिलकर बनी थी, जो कभी भी किसी दूसरी परिस्थति में एक साथ रह ही नहीं सकते थे। उनमें यूनानी और यहूदी, खतने और खतनारहित, बर्बर, स्कूती, दास और स्वतंत्र लोग सम्मिलित थे; परंतु मसीह सब कुछ और सब मे था (कुलुस्सियों 3:11) । यही बात आज मसीहत के लिये कही जा सकती है।

यह देखना भी महत्वपूर्ण है कि असंख्य पुरूष, महिला और बच्चे जिन्होंने मसीह का अनुसरण किया, उन्होंने ऐसा किसी बड़े व्यक्तिगत त्याग के आधार पर किया। कुछ सांख्यकीविद ऐसा अनुमान लगाते है कि शहीदों की संख्या पचास लाख से अधिक विश्वासियों तक पहुंच गई है। दूसरे कहते हैं कि संख्या इससे भी बढ़कर है।

यह सारे प्रमाण अनवरत तौर पर हमें कई ऐसे मन को उकसानेवाले प्रश्नों की ओर ले चलते हैं। ऐसी भक्ति और त्याग के पीछे क्या कारण है? असंख्य प्रतिद्वंदी जिन्होंने मसीहत को जड़ से उखाड़ने की शपथ ले रखी है, उसके बावजूद चर्च द्वारा इतना कष्ट सहन करने के पीछे कौनसी व्याख्या है? यह किसी को यह सोचने के लिये अवश्य प्रेरित करती है कि रविवार की सुबह सच में कुछ घटना घटी थी जब पत्थर कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया गया है!

अध्याय 24: मसीह के पुनरूत्थान का गुणस्वभाव

मसीह के पुनरूत्थान की ऐतिहासिकता पर विचार करने के बाद, अब इसे बाइबल के प्रकाश में जांचना महत्वपूर्ण है। पुनरूत्थान की प्रकृति किस प्रकार की थी? अंग्रेजी शब्द "पुनरूत्थान" लैटिन भाषा की क्रिया ***रैसरजयरे*** से निकला है (***रे*** = पुनः + ***सरेजयरे*** = उठना)। नये नियम में, यह यूनानी भाषा की संज्ञा ***आनास्टासिस*** से निकला है (***आना*** = उठना, पुनः +***स्टासिस*** खड़े होना)।

मसीह का पुनरूत्थान मात्र पुनरूज्जीवन नहीं था

पुराने नियम में, सारपत की विधवा का पुत्र (1 राजा 17:17–24) और शूनेमिन का पुत्र (2 राजा 4:18–37) अलौकिक प्रकार से पुर्नजीवित किये गये। नया नियम हमें बताता है कि लाजर भी जिलाया गया था (यूहन्ना 11:23–25, 43–44), इसके साथ ही याईर की पुत्री जिलाई गयी (मरकुस 5:41–42; लूका 8:54–55) नाईन नगर का एक जवान (लूका 7:14–15), तबिता (प्रेरितों के काम 9:36– 43), और युतुखुस (प्रेरितों के काम 20:7–12)। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि ये सब मुरदा अवस्था से जीवित किये गये, परंतु अभी भी उन्हें मृत्यु तो आनी ही थी – उन्हें कभी न कभी फिर से मरना था। मसीह का पुनरूत्थान उनसे इस प्रकार भिन्न था कि वह पाप के लिये एक बार मरा परंतु सदाकाल के लिये जीवित है, ताकि पुनः न मरे। जैसा उसने प्रकाशितवाक्य 1:17–18 में घोषित कियाः " _____मै ही_____जीवित हूं; मैं मर गया था और देख, मैं युगानुयुग जीवित हूं _____।"

मसीह का पुनरूत्थान सदेह पुनरूत्थान था

बाइबल और समस्त प्राचीन मसीहत की यह सीधी शिक्षा थी कि मसीह का पुनरूत्थान सदेह पुनरूत्थान था। वही देह जो क्रूस पर चढ़ाई गयी थी, कफन में लपेटी गयी थी और कब्र में रखी गयी थी, बाइबल के अनुसार तीसरे दिन जीवित की गयी थी। यद्यपि यह पुनरूत्थित देह वही देह थी जो मर गयी थी, इसके कई अंतर भी थे। यह दुर्बल अवस्था में बोई गयी थी, परंतु सामर्थ में जिलाई गयी।

1. ''पुनरूत्थान'' क्या है इस पारिभाषिक शब्द को सिद्ध करना महत्वपूर्ण है। बाइबल सिखाती है कि यीशु का पुनरूत्थान न केवल आत्मिक था परंतु सांसारिक, भौतिक और दैहिक था। यीशु की वास्तविक देह और हड्डीयुक्त देह जी उठी थी। हम लूका 24:36–43 से इस सच्चाई के बारे में क्या सीखते हैं? इस पद को पढिये और तब निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

   अ. कैसे पद 36–37 की व्याख्या की जानी चाहिये? क्या मसीह के भीतर किसी अलौकिक तत्व ने प्रवेश किया था? यह हमें उसकी पुनरूत्थित देह के बारे में क्या बताता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः यूहन्ना 20:19 के अनुसार, चेले दरवाजे ''बंद'' कर यहूदियो के डर से एकत्रित बैठे हुए थे। यह तथ्य, चेलों की भयमिश्रित प्रतिक्रिया के साथ जुड़कर, बताता है कि यीशु उस कमरे में अलौकिक रूप में प्रगट हुए और उसकी पुनरूत्थित देह अलग प्रकार की थी। यह सत्य एम्माऊस के मार्ग पर यीशु की दो चेलों के साथ आकस्मिक भेंट में भी देखा जा सकता है, जहां वह ''आंखों से ओझल हो गया था'' (लूका 24:31)। ये पद ''चौंक गये'' और ''डर गये'' यूनानी भाषा के शब्द ***पेटूह*** और ***ऐंफोबॉस*** से निकले हैं। दोनों पद एक बड़े भारी डर को प्रगट करते हैं। उन्होंने सोचा कि वे एक अदृश्य आत्मा को देख रहे थे।

ब. किस प्रकार पद 39–40 के अनुसार, यीशु ने अपने चेलों को सहमत करवाने के लिये क्या प्रमाण दिये कि वह एक आत्मा नहीं है? यह हमें उसकी पुनरूत्थित देह के बारे में क्या बताता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः यीशु उसकी पुनरूत्थित देह के बारे में दो महत्वपूर्ण घोषणायें करता हैः 1 उसके मांस और हड्डी थी; और 2 वह एक अदृश्य आत्मा नहीं थी, जैसा उन्होनें पहले मान लिया था। यीशु ने और अधिक प्रमाण देने के लिये, अपने चेलों से कहा कि वे आएं और देखें यहां तक कि उसके हाथ और पैरों को स्पर्श भी करे। यह तथ्य कि, मसीह की पुनरूत्थित

देह में अभी भी क्रूसीकरण के घाव थे, ने सिद्ध किया कि यह वास्तव में वही देह थी जो क्रूस पर चढ़ायी गयी थी। यह तथ्य कि मसीह ने इतने स्तर तक जाकर यह सिद्ध किया कि वह मात्र आत्मा नहीं था, उसके सदेह पुनरूत्थान के सिद्धांत का अत्यधिक महत्व बताता है।

क. कौनसे प्रमाण यीशु ने पद 41–43 में चेलों को यह सिद्ध करने के लिये दिये कि वह आत्मा नहीं था? यह हमें उसकी पुनरूत्थित देह के बारे में क्या बताता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: उनके बीच में यीशु का एकाएक प्रगट होना चौंका देने वाला अनुभव था। वे अनिश्चय की स्थिति में थे कि वे क्या देख रहे थे और उनके बीच क्या चल रहा था। जब कुलपिता याकूब को बताया गया कि उसका पुत्र युसुफ जीवित है, बाइबल बताती है कि उसने भी इसी तरीके से प्रतिक्रिया व्यक्त की थी: ''वह स्तब्ध रह गया, क्योंकि उसने उनका विश्वास नहीं किया'' (उत्पत्ति 45:26)। चेलों के अविश्वास के कारण, मसीह भी इतने स्तर तक जाकर सिद्ध करता है कि उसकी देह, यद्यपि आश्चर्यजनक रूप में परिवर्तित हुई, तौभी वह वास्तविक देह है जो क्रूस पर चढ़ायी गयी थी–उसने उनसे मछली का एक टुकड़ा मांगा और उनकी आंखों के सामने खाया।

2. यूहन्ना 20:19–23 में, हमें यूहन्ना द्वारा मसीह के चेलों के सामने प्रगट होने का विवरण मिलता है जब थोमा वहां नहीं था। इसके बाद के पदों में, हमें मसीह के चेलों के सामने प्रगट होने का उल्लेख मिलता है, जिनमें थोमा भी था। इस पद को पढ़िये और तब निम्न उत्तरों को दीजिये।

अ. पद 24–25 के अनुसार, थोमा की प्रतिक्रिया क्या थी जब दूसरे चेलों ने उसके सामने बता दिया कि उन्होंने प्रभु को देखा है? थोमा की प्रतिक्रिया क्यों महत्वपूर्ण है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: थोमा की प्रतिक्रिया संशय या अविश्वास की प्रतिक्रिया थी। यह प्रमाणित करता है कि चेले उन मनुष्यों में से नहीं थे जिन्होंने मसीह के जीवित उठने की आशा की थी। इसलिये वे पुनरूत्थान की कहानी की सीधे तौर पर कल्पना नहीं कर सके कि यह सच हो सकती है, क्योंकि प्रारंभ में तो उन्होंने स्वयं इस पर विश्वास नहीं किया! यह ऐसा भी प्रगट करता है वे आसानी से मूर्ख बनने वाले मनुष्य नहीं थे जो पर्याप्त प्रमाण के बिना विश्वास कर लेते। मसीह के पुनरूत्थान का समाचार आने के बाद भी, चेलों ने विश्वास नहीं किया। लूका उल्लेख करता है कि मसीह के पुनरूत्थान का समाचार ''उन्हें अर्थहीन लगा'' (लूका 24:9–11), और मरकुस लिखता है कि ''उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ'' (मरकुस 16:11)।

ब. पद 26 में, हम सीखते हैं कि यीशु चेलों के सामने दूसरी बार प्रगट हुए, जबकि थोमा इस बार उपस्थित था। पद 27–28 के अनुसार, यीशु ने थोमा को क्या करने की आज्ञा दी, और थोमा की क्या प्रतिक्रिया थी? यह हमें मसीह के पुनरूत्थान के दृढ़ प्रमाण और प्रकृति के बारे में क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यह तथ्य कि थोमा को यीशु की शारीरिक देह को जांचने की आज्ञा दी गयी, कम से कम दो बातों की ओर संकेत करता है: 1. थोमा किसी मतिभ्रम में नहीं पड़ा हुआ था, परंतु उसके सामने खड़े हुए एक सच्चे मनुष्य को देख रहा था; और 2. यीशु उसी देह समेत जीवित हुआ था जो क्रूस पर चढ़ायी गयी थी– इस देह में क्रूसीकरण और बरछे की चुभन के निशान थे। जिस देह में मसीह क्रूस पर चढ़ाया गया था, उसी देह में प्रगट होने पर थोमा के विश्वास में परिवर्तन आया। वह यीशु को एक शहीद भविष्यवक्ता मानने के स्थान पर यह घोषणा करने लगा कि वह प्रभु और सृष्टि के रचनाकार हैं!

3. 1 कुरिन्थियों 15:42–44 में, प्रेरित पौलुस एक नश्वर मानवीय देह और वही देह जो पुनरूत्थित होती है, के बीच अंतर बताता है। इस पद में, हम मसीह के मृत्यु पूर्व की शारीरिक देह और उसकी पुनरूत्थित देह के मध्य अंतर के बारे में कई सच्चाइयों को देखते हैं। इन पदों के अनुसार, निम्न रिक्त स्थान भरे।

*अ. न _____ देह बोई जाती है और अ_____ देह जिलायी जाती है_____ (पद 42)। ''नश्वर'' शब्द यूनानी भाषा के वाक्यांश **एन फथोरह** से निकलता से है, जिसका **शाब्दिक** अनुवाद है, ''सड़ जाना।'' मसीह की सांसारिक देह प्रौढ़ होने, क्षय पाने और मृत्यु के अधिन थी। ''अविनाशी'' शब्द यूनानी भाषा के वाक्यांश **एफथार्सिह** से निकलता से है, अर्थात*

जो सड़ने या नाश पाने के अधिन नहीं है। मसीह की पुनरूत्थित देह नष्ट होने या मृत्यु होने के लिये नहीं बनी थी; बल्कि, यह अनंतकाल के लिये उपयुक्त थी।

ब. अनाद_____ के साथ बोई जाती है और महि_____ के साथ जिलाई जाती है (पद 43)। "अनादर" शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***अतीमिया*** *से निकला है, जो अनादर या शर्म को प्रगट करता है। मसीह की इस संसार में सेवकाई के दौरान, मसीह का "कोई रूप या सौंदर्य नहीं था" (यशायाह 53:2); और क्रूस पर उसने बहुत अपमान सहा (फिलिप्पियों 2:8)। परन्तु, उसकी देह महिमा के साथ जीवित हुई। यूनानी शब्द* ***डॉक्सा,*** *महिमा, सम्मान और प्रताप को प्रगट करता है।*

क. नि_____दशा में बोई जाती है और सा_____ में जिलाई जाती है (पद 43) । "निर्बल" शब्द यूनानी शब्द ***ऐस्थेनीह*** *से निकला है, जिसका अनुवाद "दुर्बलता" किया जा सकता है। देहधारण में, मसीह ने एक ऐसी देह धारण की थी जिसमें एक पतित जन की सारी दुर्बलता पाई जाती है – जैसे भूख, प्यास, दर्द, बीमारी, पीड़ा और मृत्यु (रोमियों 8:3)। फिर भी, उसकी देह सामर्थ के साथ जीवित की गयी। "सामर्थ" शब्द यूनानी भाषा के शब्द* ***डूनामिस*** *से निकला है, जो सामर्थ, बल और ताकत को प्रगट करता है। इब्रानियों का लेखक कहता है कि मसीह अब "अविनाशी जीवन की सामर्थ के अनुसार नियुक्त हुआ होता" (इब्रानियों 7:16)।*

ड. स्वा_____दशा में बोई जाती है और आ_____ में जिलाई जाती है (पद 44)। "स्वाभाविक" शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***सायजीकॉस*** *से निकला है, अर्थात जो स्वाभाविक क्षेत्र से संबंद्ध है और दुर्बलता, नष्ट होने और मृत्यु से जुड़ा है। "आत्मिक" शब्द यूनानी भाषा के शब्द* ***न्यूमेतीकॉस*** *से निकला है, अर्थात जो स्वर्गिक क्षेत्र की ओर संकेत देता है और सामर्थ व अनंतकाल से जुड़ा हुआ है। मसीह की पुनरूत्थित देह "स्वाभाविक देह" के विपरीत पाई जाती है। यह ध्यान देना आवश्यक है कि "आत्मिक देह" "गैर भौतिक देह" के समानार्थी नहीं है; इसके विपरीत, यह उस स्वाभाविक देह की ओर संकेत देती है जो परिवर्तित हो गयी है और सामर्थ को धारित किये हुए है, एक ऐसी देह जो अनंतकाल और स्वर्गिक क्षेत्र के लिये उपयुक्त है।*

4. फिलिप्पियों 3:21 में, मसीह की पुनरूत्थित देह के बारे में हम एक बहुत महत्वपूर्ण संदर्भ पाते हैं। इसे कैसे वर्णित किया जा सकता है?

अ. महि _____ दे _____। इस वाक्यांश को इस तरह भी अनुवादित किया जा सकता है, "तेजस्वी देह" (केजेवी/ एनकेजेवी/ईएसवी)। यह वही देह है जो क्रूस पर दुर्बलता की अवस्था में चढ़ायी गयी थी परंतु अब गौरवान्वित और महिमादायक अवस्था में है। मसीह की इस पृथ्वी की यात्रा के दौरान, उसके परमेश्वरत्व की महिमा उसकी स्वाभाविक देह के पीछे छिपी हुई थी, वह पापरहित मानव था परंतु नश्वर मनुष्य की दुर्बलता और मृत्यु के वश में था (रोमियों 8:3)। हालांकि, पुनरूत्थान के पश्चात, मसीह की देह अब अपने प्रताप को छिपा न सकी; उसने इसे तेज को व्यक्त और प्रगट कर दिया! मसीह की पुनरूत्थित देह वर्तमान में हमारी "नश्वर देह" (ईएसवी/एनकेजेवी), "हमारी दीन हीन देह" (एनएएसबी) या "अनादर की देह" (एएसवी) के विरोध में है।

अध्याय 25: मसीह के पुनरूत्थान का महत्व

यीशु मृतकों में से जी उठे, परंतु पुनरूत्थान का महत्व क्या है? संसार, कलीसिया, विश्वासी और अविश्वासी के लिये इसका क्या अर्थ है? हम इस अध्याय में सीखेंगे कि क्रूस समेत, यीशु मसीह का पुनरूत्थान निर्विवाद रूप से मानव इतिहास में सबसे बड़ी घटना है और समस्त मनुष्यों के लिये बड़े महत्व की बात है।

पुनरूत्थान ने यीशु को प्रमाणित किया

यीशु मसीह के बारे में पहले स्थान पर आने वाली सच्चाईयों में से एक सच्चाई जो हमें यीशु के पुनरूत्थान के बारे में समझना चाहिये कि इस घटना ने उसके मसीहा होने के दावे को प्रमाणित किया। पुनरूत्थान के समय यीशु परमेश्वर का पुत्र नहीं ***बना***; बल्कि, पुनरूत्थान इस बात का सशक्त प्रमाणिकरण था कि वह ***सनातन काल से*** परमेश्वर का पुत्र और मसीह था।

1. रोमियों 1:3–4 हमें यीशु के पुनरूत्थान के बारे में सिखाता है कि इसके द्वारा वह परमेश्वर के पुत्र और मसीह होने के अपने दावे को प्रमाणित करता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''घोषित किया'' शब्द यूनानी भाषा के ***हराइजो*** शब्द से निकला है, अर्थात, ''परिभाषित करना, सीमायें चिंन्हित करना, या नियत करना।'' मृतकों में से यीशु के पुनरूत्थान के द्वारा, परमेश्वर व्यक्तिगत और सार्वजनिक रूप से यह नियत ठहरा देता है कि यीशु कौन था – अर्थात परमेश्वर का पुत्र था। पुनरूत्थान परमेश्वर द्वारा मसीह के पुत्रत्व और

परमेश्वरत्व के लिये दिया गया सशक्त और सार्वजनिक प्रमाणपत्र था। यह प्रारंभिक प्रेरिताई प्रचार में भी दिखाई देती है, जिसमें यहूदियों द्वारा यीशु को अस्वीकार करने और परमेश्वर द्वारा उसे पुनरूत्थित करके उस की निर्दोषता को प्रामाणित करने पर बल दिया जाता थाः ''तुमने विधर्मियों के हाथों (उसे) क्रूस पर कीलों से ठुकवा कर मार डाला। परंतु परमेश्वर ने मृत्यु की पीड़ा को मिटा कर उसे पुनः जीवित कर दिया'' (प्रेरितों के काम 2:23–24)। तुमने उस पवित्र और धर्मी को अस्वीकार किया और एक हत्यारे के लिये विनती की कि वह तुम्हारे लिए छोड़ दिया जाए, परंतु जीवन के कर्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मृतकों में से जिलाया, जिसके हम गवाह हैं'' (3:14–15)। वाक्यांश, ''पवित्रता की आत्मा के अनुसार,'' यह प्रगट करता है कि परमेश्वर ने यीशु को अपने सामर्थशाली माध्यम अर्थात पवित्र आत्मा के द्वारा जिलाया है।

2. 1 तीमुथियुस 3:16 में, हमें एक अत्यधिक महत्वपूर्ण कथन यीशु मसीह के पुनरूत्थान के बारे में मिलता है। इस पद के अनुसार, पुनरूत्थान किस प्रकार मसीह के दावे की पुष्टि करता है?

अ. अपने संपूर्ण जीवन और अपने पुनरूत्थान के द्वारा, यीशु आत्मा में प्रा_____था। ''प्रामाणिक'' शब्द यूनानी भाषा के ***दिकायू*** *से निकला है, जिसका अर्थ है, ''घोषित करना, व्यक्त करना, किसी को उचित या धर्मी घोषित करना।'' वाक्यांश ''आत्मा में'' का अनुवाद इस तरह भी किया जा सकता है, ''आत्मा द्वारा'' (ईएसवी)। पवित्र आत्मा यीशु मसीह के व्यक्तित्व और दावे को, उसकी इस जगत की सेवकाई के दौरान उसके द्वारा किये जाने वाले चिंन्ह और आश्चर्योकर्मो से प्रामाणित करता है (लूका 5:17), और आखिरकार, उसे मृतकों में से जीवित करके उसे निर्दोष प्रामाणित करता है।*

मसीह का पुनरूत्थान हमें धर्मी ठहराए जाने की पुष्टि करता है

पुनरूत्थान ने प्रगट कर दिया कि पिता ने यीशु के बलिदान को उसके लोगों के पाप के मोल स्वरूप स्वीकार कर लिया। हम जानते हैं कि हमारे पाप का प्रायश्चित कर दिया गया है क्योंकि मसीह जीवित किया गया। पुनरुत्थान हमारे धर्मी ठहराये जाने का प्रमाण है।

1. रोमियों 4:25 हमें क्या इस विषय मे क्या सिखाता है कि मसीह का पुनरूत्थान विश्वासी के धर्मी ठहराये जाने का प्रमाण है?

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः रोमियों 4:25 के दोनों वर्णनों में, वाक्यांश ''क्योंकि'' यूनानी भाषा के शब्द ***दिया*** से अनुवादित किया गया है, जो उन आधार या कारण को बताता है जिसके लिये कुछ किया गया या नहीं किया गया, बताया जाता है। इसका अनुवाद ऐसे भी किया जा सकता है, ''इस कारण से' अथवा ''के वजह से।'' इसका अर्थ हैः मसीह हमारे अपराधों ***के वजह से*** मृत्यु के अधीन किया गया और परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया ***क्योंकि*** उसने हमारे अपराधों का पूरा मोल यीशु के बलिदान द्वारा स्वीकार किया। यीशु मसीह का मृतकों में से पुनरूत्थान एक बड़ा चिंन्ह है कि हमारे पापों का पूरा दाम चुका दिया गया है। अगर परमेश्वर ने मसीह के बलिदान को मोल के रूप में स्वीकार नहीं किया होता, तो वह उसने मसीह को मृतकों में से जिलाया भी नहीं होता।

मसीह का पुनरूत्थान हमारे पुनरूत्थान का प्रतीति देता है

पाप की मजदूरी मृत्यु है। मसीह का पुनरूत्थान इस बात की पुष्टि थी कि परमेश्वर ने हमारे पाप ऋृण की संतुष्टि के लिये उसके बलिदान को स्वीकार किया, इस तरह हमें मृत्यु के दंड से मुक्त कर दिया। ***उसका*** पुनरूत्थान ***हमारे*** पुनरूत्थान को पक्का ठहराता या उसका दायित्व लेता है। खाली कब्र विश्वासी को मजबूत निश्चयता से भर देती है कि न्याय संतुष्ट हुआ और मृत्यु पर विजय प्राप्त की गयी। यह प्रत्येक विश्वासी की एक महान आशा है।

1. संपूर्ण सुसमाचार और नये नियम की पत्रियों में यीशु के पुनरूत्थान को लेकर कई बड़ी प्रतिज्ञायें की गयी है। निम्न पदों पर सावधानीपूर्वक मनन कीजिये, और तब अपने विचारों को लिखिये।

   अ. युहन्ना 14:19

   _____

   _____

   _____

   _____

टिप्पणियांः पुनरूत्थान के बाद, मसीह ने स्वयं को ''उन गवाहों पर जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से चुन लिया था'' प्रगट किया (प्रेरितों के काम 10:40–41)। वे विश्वासी जिन्होंने सबसे पहिले उसे देखा था और वे जिन्होंने उनकी आंखो देखी गवाही पर विश्वास किया, मसीह का पुनरूत्थान इस बात की पुष्टि करता है कि भविष्य में उनका स्वयं का भी पुनरूत्थान होगा।

ब. 1 कुरिन्थि. 6:14

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: इस कथन का महत्व समझने के लिये, हमें सिर्फ यह विचार करने की आवश्यकता है कि अगर परमेश्वर ने मसीह को नहीं जिलाया होता तो हमारे पुनरूत्थान की प्रतिज्ञा कितनी दुर्बल सिद्ध होती। यीशु मसीह का पुनरूत्थान परमेश्वर की हमसे की गई निश्चित प्रतिज्ञा है कि निश्चित हमारा अपना पुनरूत्थान भी होगा।

क. 2 कुरिन्थि. 4:14

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: विश्वासी का विश्वास अपने स्वयं के पुनरूत्थान में इस निर्विवाद तथ्य से उपजता है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह को मृतकों में से जीवित किया।

2. 1 कुरिन्थियों 15:20–23 में, मसीह के पुनरूत्थान और उसके लोगों से प्रतिज्ञा किये गये पुनरूत्थान से संबंधित दूसरा महत्वपूर्ण पद मिलता है। इन पदों को बारंबार पढ़िये और निम्न लिखित भागों के ऊपर अपने विचारों को प्रगट कीजिये। किस प्रकार मसीह का पुनरूत्थान नमूना और प्रतिज्ञा दोनों है?

अ. पर अब मसीह तो मृमकों मे से जिलाया गया है, और जो सोए हुए हैं उनमें वह पहला फल है (पद 20)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः मसीह का पुनरूत्थान मसीही विश्वास के महान स्तंभों में से एक है। इस सत्य पर विश्वासी की आशा ठहरी रहती है। लैव्यव्यवस्था 23:10 में, बाइबल यह कहती है इजरायलियों को अपनी कटनी का पहला हिस्सा बलि के रूप में अर्पित करना है। इस ''पहिले फल'' का समर्पण इस तथ्य को स्वीकार करता है कि शेष कटनी भी प्रभु की है। उसी तरह, मसीह का पुनरूत्थान कटनी का प्रथम फल है – और उसके पश्चात मसीह में एकत्रित की जाने वाली संपूर्ण कटनी का प्रतिनिधित्व करता है। उसका पुनरूत्थान उसके लोगों के पुनरूत्थान का भी अग्रणी है और उनका दायित्व लेता है।

ब. ''क्योंकि जब एक मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई तो एक मनुष्य के द्वारा मृतकों का पुनरूत्थान भी आया। जिस प्रकार आदम में सब मरते हैं उसी प्रकार मसीह में सब जिलाये जायेंगे'' (पद 21–22)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः यह अवश्य था कि मनुष्य जगत में पाप और मृत्यु एक मनुष्य के द्वारा आयी और दूसरे मनुष्य के द्वारा उसे उलट दिया गया। आदम में, सबने पाप किया और मृत्यु के द्वारा दंडित हुए। मसीह में, वे सब जो विश्वास करते हैं, निर्दोष ठहराये गये और पुनरूत्थित ठहरे। मसीह का पुनरूत्थान वर्तमान में उसके लोगों के धर्मी ठहरने और आगे आने वाले पुनरूत्थान का दायित्व लेता है।

क. पर हर एक अपने क्रम के अनुसार प्रथम फल मसीह है तब मसीह के आगमन पर उसके लोग (पद 23)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''क्रम'' शब्द यूनानी शब्द ***टैगमा*** से निकला है, अर्थात, सैन्य क्रम या सैनिकों या टुकड़ियों की व्यवस्था। कुरिन्थ में कुछ लोग किसी दोषपूर्ण तर्क के आधार पर पुनरूत्थान के सिद्धांत का इन्कार कर रहे थेः ''अगर विश्वासी मसीह के पुनरूत्थान के साथ इतना संयुक्त हो जाता है, तो ऐसा क्योंकर है कि मसीह जीवित हुआ किन्तु विश्वासियों की देह मिट्टी में सड़ती रहती है?'' पौलुस कहता है कि हरेक चीज का अपना क्रम होता हैः मसीह सब विश्वासियों के लिये अंतिम दिन में पुनरूत्थान का प्रथम फल ठहराया गया है। यह अवश्य है कि मसीह सब बातों में श्रेष्ठता रखे। पौलुस ने कुलुस्से के चर्च को लिखा था, ''वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है। वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में से पहिलौठा है, जिससे के सब बातों में उसी को प्रथम स्थान मिले'' (कुलुस्सियों 1:18)।

अध्याय 26: मसीह के पुनरूत्थान की अनिवार्यता

मसीह के पुनरूत्थान के महत्व को बढ़ा–चढ़ाकर बताना असंभव है। बाइबल की बातों के प्रकाश में, यह अतिश्योक्ति नहीं है। पुनरूत्थान मसीहत का आधारभूत सिद्धांत है और एक सत्य है जिस पर संपूर्ण मसीही विश्वास की बुनियाद स्थिर है। इस लिये, यह एक नितांत आवश्यक सिद्धांत और विनिमय विहीन सत्य है। मसीह के पुनरूत्थान का इंकार करना सुसमाचार का इंकार करना है।

1. यीशु मसीह का पुनरूत्थान मसीही विश्वास के लिये इतना आवश्यक है कि पुनरूत्थित प्रभु की गवाही होना प्रेरिताई के लिये अनिवार्यता थी। इस सत्य के विषय में निम्नलिखित पद क्या सिखाते हैं?

   अ. प्रेरितों. 1:21–22

   _____

   _____

   _____

   _____

टिप्पणियां: ''आवश्यक'' शब्द यूनानी शब्द **डे** से निकला है, जो आवश्यकता को प्रगट करता है और ''आवश्यक है'' या ''होना चाहिये'' के रूप में भी अनुवादित किया जा सकता है। इस पद में, दो प्रेरिताई के लिये दो आवश्यकतायें बताई गयी हैं। पहला, यीशु की इस जगत की सेवकाई के विषय में गवाही होना। दूसरा, पुनरूत्थित मसीह की आंखों देखी साक्षी हो। यहां तक कि मसीहत के सबसे कट्टर माने जाने वाले प्रतिद्वंदी भी इतिहास के तथ्यों को मानने के लिये बाध्य हुए और उन्होनें मसीह के विलक्षण जीवन को पहचाना; साथ ही, पुनरूत्थान के ऊपर बड़ा संघर्ष भी जारी रहता है। इसलिये, एक प्रेरित के पास ऐसा प्रभुत्व होना चाहिये कि उसने वास्तव में पुनरूत्थित प्रभु को देखा हो। प्रेरित मसीह की शिक्षा और कार्य को फैलाने के लिये बुलाये गये थे और यह केवल उसके पुनरूत्थान के द्वारा ही वैध ठहराया जाता। इस कारण, उनके पास इस महान और निर्णायक घटना की गवाही होना आवश्यक माना गया।

ब. 1 कुरिन्थि. 9:1

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः पौलुस ने अपनी बुलाहट और प्रेरित होने के अधिकार को कुरिन्थियों को यह स्मरण दिलाने के द्वारा स्थिर किया कि उसने जीवित प्रभु को देखा था (प्रेरितों के काम 9:1–9; 22:6–16; 26:12–18)। पुनरूत्थान वह सिद्धांत है जिस पर मसीहत के अन्य दावे या तो स्थिर हैं या विफल हो जाते हैं। इसी कारण से पुनरूत्थान पर मसीहत के प्रतिद्वंदियों द्वारा सबसे अधिक प्रहार किये गये।

2. 2 तिमुथियुस 2:8 में, हमें एक महत्वपूर्ण पद मिलता है जो सुसमाचार को सारगर्भित करता है और शुभ संदेश के प्रचार के केंद्र में यीशु मसीह के पुनरूत्थान के महत्व को प्रगट करता हैं

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''स्मरण करना'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***नेमॉनयो*** से निकला है, अर्थात, ''किसी बात का ध्यान रखना, दिमाग में रखना, सोचना।'' क्रिया ''जीवित हुआ'' यूनानी क्रिया ***इगेरो*** से लिया गया है। क्रिया का पूर्ण काल प्रभु के पुनरूत्थान की सतत अवस्था को प्रगट करता है। प्रकाशितवाक्य 1:18 में, यीशु स्वयं को ''जीवित'' संबोधित करता है, वह जो मर गया था और अब सदा के लिये जीवित है। वाक्यांश ''मेरे सुसमाचार के अनुसार'' प्रगट करता है कि यीशु मसीह का पुनरूत्थान प्रेरितों के द्वारा सुनाये जाने वाले शुभ संदेश का आधार था। एकमात्र यीशु जिसे प्रेरित परमेश्वर

का शाश्वत पुत्र मानते थे, जो दाऊद का देहधारित पुत्र हो गया और अपने लोगों के पाप के लिये क्रूस पर मरा और मृतकों में से जीवित किया गया।

3. पुनरूत्थान का महत्व इस तथ्य में भी देखा गया कि इसे किसी व्यक्ति के उद्धार पाने के लिये एक आवश्यक विश्वास माना गया है। रोमियों 10:9 के अनुसार, क्या किसी मनुष्य के लिये यह संभव है कि वह पुनरूत्थान पर विश्वास से परे बचाया जाये? कैसे इस प्रश्न का उत्तर पुनरूत्थान के महत्व को प्रगट करता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''अंगीकार करना'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***होमोलोगियो*** से निकला है, अर्थात, किसी अन्य चीज के समान बात को कहना।'' वाक्यांश ''अपने मुंह से'' यीशु को प्रभु मानने की सार्वजनिक स्वीकारोक्ति या पहचान बताना है। पौलुस किसी एक मत द्वारा सतही अंगाकार या मात्र बौद्धिक स्वीकारोक्ति के विषय मे नहीं कह रहा है, बल्कि एक प्रामाणिक प्रायश्चित करने वाले हृदय से आने वाला खुल्लमखुल्ला अंगीकार है। ''हृदय'' में विश्वास करना पुनरूत्थित मसीह के ऊपर गहन और ईमानदार विश्वास को प्रगट करता है। यह बिल्कुल निरर्थक बकवास होगी कि मसीह के पुनरूत्थान से परे हम उसके ऊपर विश्वास का दावा करें।

4. पुनरूत्थान के बड़े महत्व को समझने में, कुछ गंभीर अनुमानों पर विचार करना आवश्यक है जो हमारे सामने इस प्रकार रखे गये हैं मानों यह घटना कभी हुई ही नहीं थी। 1 कुरिन्थियों 15:14–19, 32, के अनुसार, अगर मसीह जीवित नहीं हुआ, तो कौन से सत्य सामने आने चाहिये थे? प्रत्येक महत्व पर अपने विचारों को लिखिये।

अ. और यदि मसीह जिलाया नहीं गया तो हमारा प्रचार करना _____ है (पद 14)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''व्यर्थ'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***केनॉस*** से निकला है, शब्दशः जिसका अर्थ है, ''खाली।'' यह शब्द खाली पात्र या स्थानों को प्रगट करता है। इसका प्रयोग आलंकारिक रूप से अलाभकारी, व्यर्थ, भ्रामक, झूठे, निरर्थक या महत्वहीन को दर्शाता है। यह एक अदभुत कथन है – समस्त मसीही कथन की वैधता मसीह के पुनरूत्थान पर निर्भर करती है। अगर मसीह जिलाया नहीं जाता तो कोई भी मसीही कथन किसी मूल्य का नहीं ठहरता।

ब. मसीह विश्वास व्य_____ कहलाता (पद 14)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''व्यर्थ'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***केनॉस*** से निकला है, (इसकी परिभाषा पढ़िये)। मसीह, मसीही विश्वास का कर्ता, रचयिता और सिद्ध करने वाला है (इब्रानियों 12:2)। अगर वह जीवित नहीं होता, तो उस पर विश्वास रखना व्यर्थ, झूठ और उद्देश्यहीन ठहरता।

क. मसीह विश्वास व्य_____ कहलाता (पद 17)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''व्यर्थ'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***माटियॉस***, से निकला है, जो निष्फल और शक्तिहीन या सच से परे है।

ड़. वे जो सुसमाचार का प्रचार करते हैं, परमेश्वर के झु_____ सा_____ है (पद 15)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः परमेश्वर की व्यवस्था आज्ञा देती है, ''तू अपने पड़ोसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना'' (निर्गमन 20:16)। जो परमेश्वर के विरूद्ध झूठी गवाही देते हैं उनका दंड कितना अधिकतम होगा! 1 शमूएल 2:25 में, हम पढ़ते हैंः ''यदि एक व्यक्ति दूसरे के विरूद्ध पाप करता है तो परमेश्वर उसकी मध्यस्थता करेगा। परंतु यदि कोई व्यक्ति यहोवा के विरूद्ध पाप करता है, उसके बचाव के लिये कौन विनती कर सकता है?''

इ. वे जिन्होने मसीह पर विश्वास किया अब भी अपने पा_____ मे पड़े है।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः पुनरूत्थान एक बड़ा प्रमाण है कि परमेश्वर ने मसीह के बलिदान को स्वीकार कर लिया है और उसके न्याय की मांगे संतुष्ट की गयी (रोमियों 4:25)। यदि मसीह जिलाया नहीं गया, तो हमारे पास क्षमा, अध्यारोपित धार्मिकता या अनंत जीवन का कोई प्रमाण नहीं है।

ई. मसीह पर विश्वास करने वाले ना_____ हो गए (पद 18)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''नाश होना'' शब्द यूनानी शब्द ***एपोलूमी*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''खो जाना, बर्बाद हो जाना या विनाश होना।'' यदि उद्धार का नायक ही कब्र पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता, तो हम जो उसके अनुयायी हैं हमें किसकी आशा होती?

उ. जिन्होने मसीह पर विश्वास किया है उनकी दशा सब मनुष्यों से अधिक द_____ है (पद 19)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''दयनीय'' शब्द यूनानी शब्द ***इलियानॉस*** से निकला है, जिसका अनुवाद ''अभागा'' किया जा सकता है। यदि मसीह जिलाया नहीं गया, तो मसीही जन अभागे मूर्ख कहलाते जो इस संसार में हानि उठाते और इस जगत के सारे अनुभव के बदले उन्हें कुछ हासिल नहीं होता!

ऊ. तो आओ, खा_____ और पि_____ क्यों कि कल तो म_____ ही है (पद 32)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ये शब्द यशायाह 22:13 से लिये गये हैं। यदि पुनरूत्थान नहीं है तो मनुष्यों के लिये कोई आशा नहीं होती। मनुष्य के पास कुछ शेष नहीं होता, सिवाय इसके कि वह मृत्यु तक अपनी स्वार्थी कामनाओं को संतुष्ट करे।

अध्याय 27: पुत्र का स्वर्गारोहण हुआ

बाइबल बताती है कि यीशु मसीह परमेश्वर के शाश्वत पुत्र हैं जिन्होंने स्वर्ग के वैभव को छोड़ा, कुंवारी से उत्पन्न हुए और देह में सिद्ध जीवन जिया। और परमेश्वर की अनंत इच्छा के अनुसार, तब वह क्रूस पर कीलों से ठोक दिये गये। उन्होंने अपने लोगों के पाप को वहन किया और परमेश्वर के क्रोध को भोगा और मर गये। तीसरे दिन वह मृतकों में से पुनजीवित किये गये, इससे यह प्रगट हुआ कि वह परमेश्वर के पुत्र था और उसकी मृत्यु ने परमेश्वर के लोगों को उद्धार दिलवाया। उसके पुनरूत्थान के चालीस दिन के बाद, मसीह का स्वर्गारोहण हुआ, जहां वह पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं और उन्हें महिमा, सम्मान और सबके ऊपर अधिकार प्राप्त है। परमेश्वर की उपस्थिति में, वह लोगों को प्रस्तुत करते हैं और उनके लिये विनती करते हैं और उनकी ओर से विशेष याचना परमेश्वर से मांगते हैं। मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान मसीह के कार्य के दो बड़े स्तंभ हैं। उनका स्वर्गारोहण और उंचा उठाया जाना इसका महिमामयी चरमबिंदु है।

स्वर्गारोहण

बाइबल बताती है कि मसीह उसके पुनरूत्थान के चालीस दिन बाद अनेक लोगों की उपस्थिति में स्वर्ग में चढ़ गया। यह स्वर्गारोहण कोई मिथक नहीं है: यह ऐतिहासिक सच्चाई है जो चश्मदीद गवाहों द्वारा एक सत्य घटना के रूप में दर्ज की गयी। स्वर्गारोहण को वास्तविक इतिहास से अलग हटकर मानना बाइबल की गवाही का इंकार करना है।

1. मसीह के स्वर्गारोहण को जो तथ्य विश्वसनीयता प्रदान करता है, वह यह है कि स्वर्गारोहण के विषय मे पहले से भविष्यवाणी की गयी थी। यूहन्ना 16:28 इस सत्य के विषय में क्या बताता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः इस एक पद में, यीशु अपनी पूर्व अनंत महिमा, उसके वर्तमान के देहधारण, और भविष्य में स्वर्गारोहण के विषय में चर्चा करता है।

2. लूका 1:1–4 और प्रेरितों के काम 1:1–3 में, हमारे पास सशक्त प्रमाण है कि सुसमाचार लेखक इस बात पर यकिन करते थे कि वे ऐतिहासिक तथ्यों को जोड़ रहे थे। किस प्रकार प्रेरितों के काम 1:9–11 यह प्रगट करता है कि उन्होंने मसीह के स्वर्गारोहण को इतिहास की एक वास्तविक घटना के रूप में देखा?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः पद 9 और 10 में, लूका लिखता है कि चेलों के ''देखते देखते'' और वे ''आकाश की ओर एकटक देख रहे थे।'' दोनों वाक्यांश आंखों देखी साक्षी के वर्णन की ओर संकेत देते हैं, जिसे लूका अपने सुसमाचार के स्त्रोत के रूप में प्रयुक्त करता है। वाक्यांश ''एकटक देख रहे थे'' यूनानी भाषा के शब्द ***अनतेनिजो*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''अपनी आंखे केंद्रित करना, सीधे देखना या घूरना।'' यही शब्द लूका 4:20 में प्रयुक्त किया गया है, जब बाइबल घोषित करती है कि ''आराधनालय में सब लोगों की आंखें उस (यीशु) पर लगी (केंद्रित) थीं। चेलों ने मात्र किसी चीज की कोई क्षणिक झलक नहीं देखी थी जिसे उन्होंने यीशु मान कर बताया हो। उनके पास पर्याप्त समय था कि वे घटना का निर्धारण कर सकते थे, भले ही वे उसकी गवाही दे रहे हों। पद 11 में, चेलों को हल्की सी फटकार स्वर्गदूतों द्वारा सुनने को मिली क्योंकि वे यीशु के ओझल हो जाने के बाद भी लगातार आकाश की ओर देखते रहे। पुनः इससे पता चलता है कि कितनी विस्तारपूर्वक उन्होंने घटना को देखा होगा। संशयवादियों ने यह कहकर लूका के इस वर्णन पर सन्देह जगाने का प्रयास किया, कि लूका का वाक्यांश ''उठा लिया गया'' विश्व के विषय में हमारे ज्ञान से परस्पर विरोधी है। ऐसी आलोचना अनावश्यक है। लूका उसी शब्दावली का प्रयोग करता है जो आधुनिक वैज्ञानिक रॉकेट के उपर ''उठाये जाने'' के लिय प्रयुक्त करते हैं।

3. यह स्पष्ट है कि नये नियम के लेखकों ने यीशु के स्वर्गारोहण को एक ऐतिहासिक घटना के रूप में देखा था। पुनरूत्थान के चालीस दिन पश्चात, यीशु पृथ्वी पर से उठाये गये, किंतु कहां उठाये गये? निम्नलिखित पद हमें क्या सिखाते हैं?

*अ. वह स्वर्ग पर उ_____ गया (लूका 24:51)। वाक्यांश "उठा लिया गया" यूनानी भाषा के शब्द **अनॉफेरो** से निकलता है, जिसका अर्थ है, "ले जाना, उठाना या बढ़ाना।" इस संदर्भ में "स्वर्ग" शब्द (यूनानीः **ऑरानॉस**) से निकला है जो परमेश्वर के निवास स्थान की ओर संकेत देता है। मैथ्यू हैनरी लिखता है, "वह स्वर्ग में ऊपर उठाया गया; किसी बल के द्वारा नहीं परंतु अपने स्वयं के चरित्र और कार्य द्वारा_____। किसी अग्नि रथ या अग्निमय घोड़ों की आवश्यकता नहीं थी; वह मार्ग को जानता था।"[21]21*

*ब. जो स्वर्गो से हो_____ (इब्रानियों 4:14)। वाक्यांश "होकर गया" यूनानी भाषा के शब्द **डायारकोमाय** से निकला है, जिसका अर्थ है, "जाना या होकर गुजरना या किसी स्थल से यात्रा करना।" मसीह समस्त स्वर्गो में से होकर गया जब तक कि वह उच्चतम स्थानों में नहीं पहुंचा, जहां परमेश्वर की उपस्थिति बनी होती है।*

*क. वह सब आकाशों से भी उ_____च_____ कि सब कुछ परि_____ करे (इफिसियों 4:10) । "चढ़ गया" यूनानी शब्द **अनाबायनो** से निकला है अर्थात "उपर की ओर उठना, चढ़ना, या उंचे होना।" मसीह स्वर्गो के सबसे उच्चतम स्वर्ग में चढ़ाया गया।*

*ड. म_____ में उ_____उठ_____ गया (1 तिमुथियुस 3:16)। वाक्यांश "उठाया गया" यूनानी शब्द **अनालैंबानो** से निकला है, जिसका अर्थ है, "ले लेना या ग्रहण करना।" मसीह परमेश्वर के महिमादायक निवास में चढ़ाये गये। वह इस स्थान तक ले जाये गये और उत्तम ढंग से ग्रहण किये गये।*

*इ. वह स्वर्ग में उठा लिया गया और परमेश्वर की दा_____ हाथ बैठ गया (मरकुस 16:19)। वाक्यांश "उठा लिया गया" यूनानी शब्द **अनालैंबानो** से निकला है (इसकी परिभाषा देखिये)। मैथ्यू हैनरी लिखता है, "उसे न केवल प्रवेश मिला परंतु उसके राज्य में परिपूर्ण प्रवेश मिला।"[22]22 उपर चढ़ाया जाकर, मसीह "परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गया।" परमेश्वर का दाहिना हाथ जो उसकी कृपा और अधिकार का स्थान है, उससे बढ़कर कोई स्थान इतना उन्नत नहीं है।*

उ. वह पि_____ के पास जाता है (यूहन्ना 14:28)। मसीह अपने महानतम प्रेम के पास पहुंचा, उसके पास, जिसने छुटकारे के महान कार्य को संपन्न किया था – अर्थात पिता। उसने पिता को सब बातों में प्रसन्न किया था, अतः वह अपने पिता के पास अनारक्षित समर्थन के साथ पहुंच गया।

*ऊ. मनुष्य के पुत्र को उ_____ जाते देखों जहां वह प_____ था (यूहन्ना 6:62)। "उपर गया" शब्द यूनानी भाषा के शब्द **अनाबायनो** से निकला है, जिसका अर्थ है, "उपर चढ़ना, आरोहण, उंचे होना।" दो बातें जो इस पद में सिखाई गयी*

---

21 *Matthew Henry Commentary*, Vol.5, p.846

22 *Matthew Henry Commentary*, Vol.5, p.572

हैं: 1. पुत्र की शाश्वत महिमा जो उसके देहधारण से पूर्व थी; और 2. पुत्र अपने पूर्व की महीमामय अवस्था में लौट गया, पर इस बार परमेश्वर–मनुष्य के रूप में।

सर्वोच्च स्थान पर बैठाया जाना

बाइबल बताती है कि यीशु मसीह न केवल स्वर्ग में चढ़ायें गयें, परंतु वह सर्वोच्च सम्मान एवं प्रभुत्व के साथ परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठाये गये। यह देखना अत्यंत महत्वपूर्ण था कि यह महीमान्वित किया जाना परमेश्वर के पुत्र के लिये ''नया'' या ''अन्जाना अनुभव'' नहीं था। बाइबल स्पष्ट सिखाती है कि वह पिता के साथ महिमामंडित हुआ और वह, पिता की महिमा जो सृष्टि के आरंभ से थी, उसमें सहभागी हुआ (यूहन्ना 17:5)। पुत्र के पुनः महिमामंडित होने का अनूठापन इसमे मिलता हैः वह पिता के दाहिने हाथ बैठाया गया, वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों है। देहधारण में, पुत्र ने स्वयं को अपने सम्मान और अधिकारों से खाली कर दिया था (यद्यपि तत्व से नहीं) उसने हमारी मनुष्यता को अपने उपर धारण कर लिया, पिता की इच्छा के प्रति क्रूस पर मृत्यु होने तक आज्ञाकारी बना रहा। इसी कारण से, उसने परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठने के अधिकार को ''जीत लिया''। वह जो परमेश्वर के सिंहासन के समीप महिमा और गौरव के साथ विराजमान हुआ, वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों था। मसीहा और राजा जो उंचा उठाया गया, परमेश्वर के साथ संयुक्त हुआ और उसके लोगों के साथ भी संयुक्त हुआ।

1. यशायाह 52:13–14 में एक सशक्त भविष्यवाणी, अपने लोगों के पाप के लिये दुःख उठाने के बाद मसीहा के सर्वोच्च स्थान पर विराजमान होने से संबंधित पाई जाती है। इस पद के महत्वपूर्ण सत्यों को सारगर्भित करें।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''मेरा सेवक'' मसीहा को प्रगट करता है। परमेश्वर का केवल एक ही सच्चा सेवक रहा है – उसका पुत्र यीशु मसीह। ''उन्नत होना'' शब्द इब्रानी भाषा के ***साकाल*** से निकलता है, जो समृद्धि या सफलता की ओर इशारा करता है। यह परमेश्वर की कृपा व आशीष को बताता है और यह अक्सर आज्ञाकारिता का प्रतिफल है (यहोशु 1:8)। उसके पुत्र के समान इतना आज्ञाकारी या परमेश्वर को हर्ष से भरने वाला कोई भी नहीं था _____ वह क्रूस पर मरने

की हद तक आज्ञाकारी बना रहा। (पद 14: इसके साथ फिल्लिपियों 2:8 को पढ़िये) । इसलिये, कोई इतने उच्चतम रूप में उठाये जाने वाला नहीं होगा।

2. यशायाह 53:10–12 में विस्तारपूर्वक एक और भविष्यवाणी मसीहा के आगमन, उसके कष्ट भोगने और उसके महिमामंडित होकर स्वर्ग में विराजमान होने के संबंध में मिलती है। प्रत्येक पद परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान होने की महिमा को किस प्रकार बताता है, इसे अपने शब्दों में संक्षेप में लिखिये।

अ. वह अपना वंश देखेगा। वह बहुत दिन जीवित रहेगा और यहोवा की भली इच्छा उसके हाथ से पूरी हो जाएगी (पद 10)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: उसकी आज्ञाकारिता के परिणामस्वरूप, पुत्र पुनरूत्थित होगा और सदा काल के लिये जीवित रहेगा (''उसके दिन दीर्घ किये जायेंगे''); उसे एक आत्मिक वंश दिया जायेगा (''वह अपना वंश देखेगा''); और परमेश्वर की इच्छा या ''भली इच्छा'' उसके द्वारा ''समृद्ध होगी।''

ब. अपनी मनोव्यथा के परिणामस्वरूप वह उसे देखेगा और संतुष्ट होगा (पद 11)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''मनोव्यथा'' शब्द इब्रानी भाषा के शब्द ***अमाल*** से निकला है, जो कठिन मेहनत, परेशानी, घोर श्रम, दारूण परिश्रम, संताप, दुर्गति और दर्द को प्रगट करता है। मसीहा इन बातों को अपने भीतर (शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और आत्मिक रूप में) गहराई तक सहन करेगा। फिर भी, उसकी मनोव्यथा के कारण, कई लोग धर्मी ठहराये जायेंगे; और वह अपने इस पारितोषिक से संतुष्ट होगा। ''संतुष्ट होना'' शब्द इब्रानी भाषा के शब्द ***सबा*** से निकला है, जिसका अर्थ है ''संतुष्ट होना, संतृप्त होना या अतिरेक बिंदु तक पूर्ण होना।''

क. इसलिये मैं उसे महान लोगों के साथ भाग दूंगा और वह सामर्थियों के संग लूट को बांट लेगा (पद 12)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः मसीह को मृत्युपर्यंत आज्ञाकारी होने के कारण, यहां तक कि क्रूस की मृत्यु सहने के कारण, परमेश्वर द्वारा उंचा उठाया गया और प्रतिफल प्रदान किया गया। भाग देना और लूट को बांट लेना इस ओर संकेत देता है कि कलवरी क्रूस एक महान सैन्य विजय है। मसीह जो जयवंत है उसे उसकी जय के विजयोपहार दिये गये हैं।

3. फिलिप्पयों 2:6–11 में बाइबल के समस्त महत्वपूर्ण पदों में से एक महत्वपूर्ण पद पाया जाता है जो परमेश्वर के पुत्र की दीनता और उंचे उठाये जाने से संबंद्ध है। इस पद को कई बार पढ़िये जब तक कि आप इसकी विषय वस्तु से परिचित न हो जायें और तब निम्नलिखित प्रत्येक भाग पर अपनी व्याख्या लिखिये। मसीह को उसके द्वारा ऐच्छिक दीनता को ग्रहण करने का पारितोषिक क्या मिला?

अ. इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान किया और उसको वह नाम प्रदान किया जो सब नामों में श्रेष्ठ हैं (पद 9)

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''इस कारण'' वाक्यांश महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने ''क्योंकि'' अथवा ''के कारण'' (यूनानीः **दियो**), यीशु को उसके ऐच्छिक समर्पण के कारण प्रत्येक नामों में उंचा उठाया, वह समर्पण जो उसने अपने देहधारण में, आज्ञाकारिता, बलिदानी मृत्यु में प्रगट किया। उसके स्वर्ग पर चढ़ाये जाने पर, परमेश्वर के पुत्र और मनुष्य के पुत्र ने वह स्थान ले लिया जो जगत की नींव डालने के पूर्व से उसके लिये सुरक्षित था। वह न केवल अलौकिक अधिकार के द्वारा उंचा उठाया गया, परंतु मनुष्य के रूप में उसकी सिद्ध आज्ञाकारिता का प्रतिफल भी उसे प्रदान किया गया। वाक्यांश ''बहुत उंचा उठाया गया'' यूनानी शब्द ***हूपेरूपसो*** से निकला है, जो किसी को सर्वोच्च पद और सामर्थ तक पहुंचाने के लिये प्रयुक्त होता है। ''प्रदान किया जाना'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***कैरीजोमाय*** से निकला है, जो किसी को कुछ आनंददायक

देने से संबंधित है या किसी के प्रति सहमत होने और उसके प्रति उदारता और मुक्त भाव से दिये जाने को बताता है। वाक्यांश ''प्रत्येक नाम से उंचा'' स्वर्ग और पृथ्वी की प्रत्येक रचना के उपर पुत्र के उंचे स्थान को प्रगट करता है।

ब. कि यीशु के नाम पर प्रत्येक घुटना टिके, चाहे वह स्वर्ग में हो या पृथ्वी पर या पृथ्वी के नीचे, और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए प्रत्येक जीभ अंगीकार करे कि यीशु मसीह ही प्रभु है (पद 10–11)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः यशायाह 45:23 में, परमेश्वर निम्न प्रकार से स्वयं के लिये घोषित करता हैः ''मैंने अपनी ही शपथ खाई, मेरे मुख से धार्मिकता में ही यह वचन निकला है जो नहीं टलने काः प्रत्येक घुटना मेरे आगे टिकेगा और प्रत्येक जीभ मेरी ही निष्ठा की शपथ खाएगी।'' मसीह के उपर यह पद लागू होता है और उसके परमेश्वरत्व का यह सबसे बड़ा प्रमाण है। घुटने का झुकना मूल्य की पहचान, सम्मान देने और प्रभुत्व के प्रति समर्पण को प्रगट करता है। यह पद दो बड़े महान सत्यों को प्रगट करता है। पहला सत्य, मसीह, समस्त आदर और श्रद्धा के योग्य है। दूसरा सत्य, एक दिन आयेगा, जब सारी सृष्टि उसे पहचानेगी और मसीह को प्रभु स्वीकार करेगी।

4. नये नियम के निम्न पद मसीह के उंचे उठाये जाने और उसके उद्देश्य के बारे में हमें कुछ महत्वपूर्ण अंतदृष्टि प्रदान करते हैं। प्रत्येक पद के उपर अपने विचारों को लिखिये।

अ. इब्रानियों 1:3

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''पापों को धोकर'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***कथारिसमॉस*** से निकला है, जिसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है, ''शुद्ध करना।'' यह मसीह के कलवरी पर प्रायश्चित को बताता है जिससे उसके लोग पाप से

शुद्ध होते हैं। वाक्यांश ''स्वर्ग में महिमा'' परमेश्वर और उसकी महानता को दर्शाता है। यह सत्य कि मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गया, यह प्रगट करता है कि उसे सर्वोच्च आदर और कृपा प्रदान की गयी, एक स्थान और पद जो परमेश्वर के बराबर है।

ब. इब्रानियों 2:9

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः पुनः मसीह की दीनता और प्रायश्चित मृत्यु उसके उंचे उठाये जाने के लिये एक कारण या आधार के रूप में देखे जाते है। इब्रानियों का लेखक ''महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए'' इससे बढ़कर ऐश्वर्ययुक्त वाक्यांश नहीं चुन सका। किन्तु, यह भी उस महिमा को वर्णित करना आरंभ नहीं करता जो मसीह पर उण्ड़ेली गयी थी।

क. प्रकाशितवाक्य 3:21

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''जय पाना'' शब्द यूनानी भाषा के ***निकाओ*** से निकला है, जिसका अर्थ है ''जीत हासिल करना'' या ''जयवंत होना।'' मसीह का पिता की इच्छा के प्रति समर्पण और उसकी सिद्ध आज्ञाकारिता उसके उंचे उठाये जाने के पहले आवश्यक प्रणेता थे। उसकी आज्ञाकारिता और समर्पण में, मसीह ने पाप, शैतान और मृत्यु को जीत लिया। उसका उंचा उठाया जाना उसकी आज्ञाकारिता के प्रतिफल का चित्रण है।

अध्याय 28: हमारा महामहिमन् उद्धारकर्ता

परमेश्वर के शाश्वत पुत्र ने स्वयं को परमेश्वरत्व के गौरव से वंचित कर दिया और मनुष्यता को धारण कर लिया। उसने इस पृथ्वी पर जीवन बिताया और परमेश्वर की इच्छा के प्रति अविचल समर्पण के साथ एक सिद्ध जीवन जीया। परमेश्वर की पूर्व अभिषिक्त योजना के अनुसार, वह दुष्ट जनों के हाथों रोमी क्रूस पर कीलों से ठोका गया। उस क्रूस पर, उसने अपने लोगों के पाप को वहन किया और उनके स्थान पर परमेश्वर के क्रोध को सहन किया। अपनी मृत्यु से, उसने परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट किया और एक न्यायी परमेश्वर के लिये उसके लोगों के पाप को क्षमा करना और उन्हें उसकी परम उपस्थिति में आने को संभव बनाया। उसकी आज्ञाकारिता के फलस्वरूप, देहधारित पुत्र मृतकों मे से जी उठा और मसीहा के रूप में परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजित हुआ। एकमात्र वही मसीहा कहलाता है, और केवल उसके नाम में उद्धार मिलता है।

बाइबल बिना किसी खेद के कहती है कि उद्धार केवल यीशु मसीह के नाम में मिलता है। कोई दूसरा मसीहा, मध्यस्थ या साधन नहीं है जिसके द्वारा मनुष्य अपने पाप की क्षमा प्राप्त कर सके और परमेश्वर से उसका मेल हो जाये; यह कार्य केवल यीशु मसीह के व्यक्तित्व और उसके कलवरी क्रूस पर किये गये सिद्ध कार्य से ही पूर्ण हो सकता है। यह मसीहत के सबसे अद्वितीय सत्यों में से एक सत्य है; हालांकि, इस सत्य के लिये थोड़ा सा भी समझौता करना बाइबल का इंकार करना है और मसीह की महिमा को घटाना है, क्रूस को शून्य बनाना है और सुसमाचार के केंद्र स्थल पर कटार चलाने जैसा है। सुसमाचार का एकमात्र विश्वसनीय कथन वह है, जो निर्भिक होकर स्पष्ट कहता है कि यीशु मसीह ही एकमात्र मसीहा है!

1. यूहन्ना 14:6 में, यीशु ने परमेश्वर के सत्य, जीवन और मेल के प्रति स्वयं की भूमिका के लिये निर्भिक कथन दिया। मसीह के विचार से, क्या सत्य, जीवन या उद्धार को मसीह के अतिरिक्त किसी और से पाया जा सकता है? निम्नलिखित वाक्यांशों में से प्रत्येक पर अपने विचार लिखिये।

   अ. मैं मार्ग हूं

   _____

   _____

   _____

   _____

टिप्पणियां: मसीह ''पवित्रता का राजमार्ग'' है, यशायाह 35:8 में इसकी भविष्यवाणी की गयी है और इब्रानियों 10:20 में ''नया और जीवित मार्ग'' बताया गया है। वह एकमात्र मार्ग है जिस पर मनुष्य और परमेश्वर मिलते हैं। रोम ले जाने वाले मार्ग अनेक हो सकते हैं, परंतु पाप की क्षमा और परमेश्वर के साथ सही संबंध के लिये एक ही मार्ग है यीशु मसीह।

ब. और सत्य

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह सत्य के शिक्षक से बढ़कर हैं; वह सत्य है मनुष्यों के लिये और उस मानक के अनुसार, जिसमें दूसरे विचार, शब्द और कार्यो का न्याय किया जाता है, वह सत्य का सबसे बड़ा प्रगटीकरण है। उसका व्यक्तित्व और शिक्षा सत्य का बहुत बड़ा मूर्तरूप है जो पहले मनुष्यों को कभी नहीं दिया गया। कोई भी शिक्षा जो मसीह के विरोध में है या स्वयं को मसीह से बढ़कर प्रगट करती है, झूठी शिक्षा है।

क. और जीवन हुं

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यूहन्ना अपने सुसमाचार को यह घोषित करते हुए प्रारंभ करता है, ''उसमें (अर्थात पुत्र) में जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था'' (1:4)। यूहन्ना 5:26 में, यीशु ने न केवल यह सिखाया कि जीवन उसके द्वारा है, पंरतु यह भी बताया कि ''स्वयं उसमें जीवन'' है। प्रारंभ से ही, पुत्र मनुष्यों के लिये संपूर्ण जीवन का मध्यस्थ रहा है, दोनों

शारीरिक और आत्मिक रूप में। वह सच्ची दाखलता है, एकमात्र वही है, जो उसमें बने रहने वालों को आत्मिक जीवन प्रदान करता है (यूहन्ना 15:1–6)। उससे अलग हटकर, कोई सच्ची आत्मिकता नहीं है।

ङ. बिना मेरे कोई पिता के पास नहीं आ सकता।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यह मसीही विश्वास की सबसे बड़ी अद्वितीयता है। सच्ची मसीहत बहुत विशिष्ट है कि यह मसीह और कलवरी पर उसके बलिदानी कार्य के बिना किसी को स्वर्ग में प्रवेश नहीं देती है। पुराने नियम के संत परमेश्वर के प्रकाशन में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरे थे कि उन्हें मसीहा के द्वारा भविष्य की आशा की प्रतिज्ञायें प्राप्त हुईं थीं। अब मसीहा आ चुका है और पुराने नियम की भविष्यवाणियां और प्रतिज्ञायें पूर्ण हो चुकी हैं, और उद्धार केवल उसके नाम और उसके द्वारा किये गये छुटकारे के कार्य में ही मिलता है।

2. यह निश्चित करने के लिये कि यीशु के शब्दों की हमारे द्वारा की गयी व्याख्या सही है, हमें केवल कुछ साहसिक कथनों को देखने की आवश्यकता है जो प्रेरितों के प्रचार और लेखन में दिये गये हैं। निम्नलिखित पदों के अनुसार, कैसे वे यीशु मसीह के व्यक्तित्व और बचाने वाले कार्य की व्याख्या करते थे? क्या वह ***एक*** मसीहा है या ***एकमात्र*** मसीहा है?

अ. प्रेरितों के काम 4:12

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: पतरस के लिये मुश्किल से संभव हुआ होगा कि वह मसीह के अनूठेपन और उसकी बचाने वाली योग्यता के विषय में और स्पष्ट बोले। उसके शब्द परमेश्वर के महान कथनों का स्मरण दिलाते हैं जो उसने भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा कहे थे: "मैं, हां, मैं ही यहोवा हूं और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं" (यशायाह 43:11); और, "मुझे छोड़ कोई

अन्य परमेश्वर नहीं, धर्मी और उद्धारकर्ता ईश्वर मुझे छोड़ और कोई नहीं है (यशायाह 45:21 ब)। यह मसीहत का बड़ा ध्वज है। सृष्टि के प्रत्येक क्षेत्र को खोजा जा सकता है, परंतु मसीहा के शीर्षक के योग्य परमेश्वर के मेम्ने के अतिरिक्त कोई नहीं मिल सकता।

ब. 1 कुरिन्थियों 3:11

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: संपूर्ण बाइबल में, मसीह को नींव और सिरे का पत्थर कहा गया है जिसके उपर उद्धार और कलीसिया निर्भर करती है (यशायाह 28:16; मत्ती 21:42; प्रेरितों के काम 4:11; इफिसियों 2:20; 2 तिमोथीयुस 2:19; 1 पतरस 2:6)। परमेश्वर ने केवल एक नींव का पत्थर रखा, और वह मसीह है। एकमात्र उसके पास परमेश्वर की मुहर है।

क. 1 तिमुथीयुस 2:5

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: केवल मसीह में उद्धार का सिद्धांत बाइबल आधारित मसीहत के लिये उतना ही आधारभूत है जितना एकेश्वरवाद का सिद्धांत (अर्थात केवल एक परमेश्वर में विश्वास)। ''मध्यस्थ'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***मेसीटेस*** से निकला है, जो एक मध्यस्थ या बिचवई को बताता है। हमारे वर्तमान संदर्भ में, यह परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक मध्यस्थ को बताता है। ''मनुष्य'' के रूप में यीशु का परिचय उसके परमेश्वरत्व से इंकार नहीं है, परंतु यह उसकी मनुष्यता पर जोर देने के लिये निर्मित किया गया है ताकि विश्वासी को ढाढ़स मिल सके। हमारा मध्यस्थ हमारे जैसा है और वह हमें भाई कहने से लजाता नहीं है (इब्रानियों 2:11)।

ङ. 1 यूहन्ना 5:12

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: पुनः इस पद की स्पष्टता पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता। परमेश्वर के साथ मेल के फलस्वरूप, समूचा वास्तविक आत्मिक जीवन और शाश्वत जीवन की आशा, मसीह के साथ एक व्यक्ति के संबंध के द्वारा निधारित होता है। नये नियम के लेखकों का अटल सुभाषित ''एकमात्र मसीह में'' है। एक व्यक्ति अपनी गवाही में असहमत हो सकता है कि मसीह ही एकमात्र मार्ग है परंतु वह इस बात से असहमत नहीं हो सकता कि ये उनकी गवाही है!

3. प्रेरितों के काम 5:31 और 11:17–18 मे इस संबंध में कि उद्धार केवल मसीह में है, दो महत्वपूर्ण कथन मिलते हैं। वे प्रमाणित करते है कि मसीह न केवल यहूदियों का मसीहा है जिसमें अन्यजाति के लोग अपवाद हैं, न ही वह अन्यजातियों का मसीहा है जिसमें यहूदी अपवाद हैं, परंतु वह समस्त लोगों के लिये परमेश्वर द्वारा नियुक्त मसीहा है।

अ. प्रेरितों के काम 5:31 में, प्रेरित पतरस, मसीह के यहूदियों के साथ संबंध में क्या घोषित करता है?

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: परमेश्वर द्वारा यीशु को महिमादायक स्थान प्रदान करना इस बात का प्रमाण है कि वह परमेश्वर द्वारा नियुक्त मुक्तिदाता है जो उसके प्राचीन यहूदी लोगों के लिये उद्धार लाता है।

ब. प्रेरितों के काम 11:17 – 18 में, यहूदी मसीही क्या मान लेते हैं जब वे पतरस से परमेश्वर द्वारा अन्यजातियों को बचाये जाने का वर्णन सुनते हैं? क्या मसीह केवल यहूदियों के लिये परमेश्वर द्वारा ठहराये हुए मसीहा हैं या अन्यजातियों के लिये भी मसीहा कहलाते हैं?

_____

_____

_____

_____

4. रोमियों 1:16 में प्रेरित पौलुस, यीशु मसीह के सुसमाचार के संबंध में एक बहुत महत्वपूर्ण कथन कहता है कि सब लोगों के उद्धार के लिये वह ही एकमात्र साधन है। इस पद पर विचार कीजिये और अपने विचारों को लिखिये।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः आत्मिक रूप से मृतक को पुनर्जीवन देने में, पापी को धर्मी ठहराने में और अशुद्ध को शुद्ध करने में बड़ी सामर्थ (यूनानीः ***डूनामिस***) लगती है। ऐसी सामर्थ ***केवल सुसमाचार*** में पायी जाती है, जो ***सिर्फ मसीह*** की ओर संकेत देता है कि वह एकमात्र मसीहा है जिसके द्वारा मनुष्य बचाये जा सकते हैं।

अध्याय 29: हमारा महामहिमन् मध्यस्थ

मसीह का छुटकारा देने का कार्य क्रूस पर उसकी मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होता है; यह उसके महिमामंडित होने के साथ निरंतर बना रहता है। मसीह एक महान महायाजक है जिसने परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट करने के लिये और उसके लोगों को क्रोध से बचाने के लिये स्वयं को एक सिद्ध बलिदान बनाकर प्रस्तुत किया; परंतु वह एक महान महायाजक भी है जो उसके लोगों के जीवन के लिये सदैव उनका मध्यस्थ बनकर स्वर्ग में परमेश्वर से विनती करता है। देहधारण में, पुत्र ने उसके लोगों की मनुष्यता अपने उपर ग्रहण कर ली ताकि वह उनके स्थान पर मर सके। पुत्र, अब स्वर्ग में उसी मनुष्यता को धारित किये हुए महिमा के साथ, उसके लोगों को, परमेश्वर के समक्ष उनका मध्यस्थ और सहायक बनकर प्रस्तुत करता है। अगले दो अध्यायों में, हम इन दो भूमिकाओं को ध्यान से देखेंगे– (मध्यस्थ) इसी अध्याय में और (सहायक) अगले अध्याय में।

''मध्यस्थ'' शब्द लेटिन भाषा की क्रिया ***मीडियार*** से निकला है, जिसका अर्थ है, ''मध्य में होना।'' ''मध्यस्थ'' के लिये यूनानी शब्द ***मेसीटेस*** है (जो क्रिया ***मेसीटियो*** से लिया गया है अर्थात ''समझौता करना'') । ''मध्यस्थ'' की निम्न लिखित परिभाषायें सहायक है।

> ''जो साझेदारों को एक समझौते में आने के लिये प्रेरित करता है, जिसमें व्यवस्था की निंश्चितता की जिम्मेदारी निहित है'' (*लौ व निडा यूनानी लैक्सिकन*)

> ''जो दो साझेदारों के मध्य में कार्य करता है; वह जो दो विरोधी साझेदारों में मेल करवाता है; एक मध्यस्थ; जो दो साझेदारों के बीच वार्तालाप का साधन है, एक मध्यस्थ साझेदार।'' (*माउंस ग्रीक डिक्शनरी*)

वेबस्टर एक मध्यस्थ की परिभाषा देते है जो ''दो साझेदारों के मध्य परस्पर समझौता करवाने के लिये अर्हताप्राप्त है।'' परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक उचित मध्यस्थ होने के लिये, नाजरथ के यीशु का परमेश्वर और मनुष्य के अस्तित्व को एक ही व्यक्ति में होना आवश्यक था। उसे पूर्ण मनुष्य होना आवश्यक था ताकि वह अपना हाथ मनुष्य पर रख सके, उसे परमेश्वर के बारे में प्रकाशन दे सके और उसे ढाढ़स दिला सके। उसे पूर्ण परमेश्वर होना आवश्यक था ताकि अपना हाथ परमेश्वर पर रखे, और ईश्वरीय वैभव का पूर्ण प्रकाशन हो सके और मनुष्यों के लिए विनती कर सके। यह सबसे बुरे रूप वाली ईशनिंदा होगी अगर ऐसी कोई सामर्थ सबसे महिमाशाली प्राणी को दी जाये। तेजस्वी सराफीम जो परमेश्वर के सिंहासन के सामने उपस्थित रहते हैं, वे भी कभी उसके प्रताप को पाने का दावा नहीं करते, न ही उसके मध्यस्थ होने के लिये भी अपने हाथों का जरा सा भी विस्तार करते! जितने भव्य वे हैं, उतना ही वे अपना सिर झुकाने से बढ़कर, दीन बने होते हैं, स्वयं को ढांपे रहते और पुकारते

रहते हैं कि वह एकमात्र पवित्र, पवित्र और पवित्र है (यशायाह 6:2–3)। ध्यान करना किसी प्राणी के अधीन नहीं है। यह एकमात्र मसीह का कार्यक्षेत्र है! वह एकमात्र परमेश्वर के समक्ष खड़े होने के लिये आवश्यक है। एकमात्र वही, परमेश्वर के समक्ष हमारे बदले में खड़े होने की अर्हताप्राप्त है, क्योकि एकमात्र परमेश्वर का संपूर्ण रूप, वह अपने दैहिक शरीर में धारण करता है। अपने विशुद्ध रूप में कहें तो वह परमेश्वर है, और वह हमारे जैसा मनुष्य था केवल उसमें कोई पाप नहीं था।

1. आदम के पतन से ही, मनुष्य जगत ऐसे किसी जन की घोर आवश्यता में है, ऐसा प्रतिनिधि जो परमेश्वर के सामने उनको प्रस्तुत कर सकें और बिचवई का कार्य करते रहे। परमेश्वर से मेल करवाने की एकमात्र आशा ऐसे ही प्रतिनिधि के द्वारा पूर्ण की जा सकती थी। अय्यूब की पुस्तक में इस प्राचीन प्रकार के द्वंद का स्पष्ट चित्रण है। अय्यूब द्वारा अध्याय 9:29–33 में की गयी बड़ी शिकायत क्या थी? इस अंश में से निम्नलिखित उद्धरणों के उपर अपने विचार लिखिये।

   अ. मैं तो दुष्ट गिना गया हूं, तो फिर मैं क्यों व्यर्थ परिश्रम करूं? चाहे मैं हिम के जल से स्नान करता और अपने हाथ सज्जीदार पानी से साफ करता, फिर भी तू मुझे गड्ढे में ही डालता, और मेरे अपने ही वस्त्र मुझसे घृणा करते। (पद 29–31)।

   _____

   _____

   _____

   _____

टिप्पणियां: अय्यूब ने दो महत्वपूर्ण सत्यों को पहचाना। पहला सत्य, सब मनुष्यों के समान, वह परमेश्वर के समक्ष एक पापी था। दूसरा सत्य, परमेश्वर के समक्ष उसका सारा परिश्रम व्यर्थ था। यिर्मयाह 2:22 में, परमेश्वर घोषित करता है, ''यद्यपि तू अपने को सज्जी से धोए और बहुत साबुन लगाए फिर भी तेरे अधर्म का धब्बा मेरे सामने बना हुआ है।'' वे जो परमेश्वर की पवित्रता और अपनी अतिशय नैतिक विफलता, दोनों के संबंध में कुछ समझ रखते हैं, यह उनके लिये बड़ी भयानक सच्चाई है। मसीह से परे, उसके प्रायश्चित बलिदान, उसकी अभ्यारोपित धार्मिकता व उसके सतत मनन, के बिना मनुष्य को कोई आशा नहीं है।

   ब. क्योंकि वह तो मेरे समान मनुष्य नहीं, जिसके साथ मैं वाद विवाद कर सकूं और हम दोनों का न्याय हो सके (पद 32)

   _____

   _____

   _____

   _____

टिप्पणियांः अय्यूब ने स्वीकार लिया कि परमेश्वर पवित्र है – पापियों से अलग है और मनुष्य की पहुंच से बाहर है। परमेश्वर के सच्चे ज्ञान के तहत यह महान ''पहले सत्यों'' या ''आधारभूत सत्यों'' में से एक है। परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''तू मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता!'' (निर्गमन 33:20)। अय्यूब ने इस सत्य को पहचान लिया। कैसे वह कल्पना भी कर सकता था कि वह परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर सकता था? अय्यूब के लिये और हमारे लिये भी यह प्रश्न अनुत्तरित हैः ''कैसे हम परमेश्वर तक पहुंच सकते हैं?'' एक मध्यस्थ की आवश्यकता हैः जो परमेश्वर की परम उपस्थिति में सहज हो और जिसमें हमें विश्राम मिल सके।

क. हमारे बीच कोई निर्णायक नहीं जो हम दोनों पर अपना हाथ रख सके (पद 33)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''निर्णायक'' शब्द इब्रानी भाषा के शब्द ***याखा*** से अनुवादित है, जो एक निर्णायक (umpire), मध्यस्थ, या न्यायकर्ता की ओर संकेत देता है। अय्यूब ने एक मध्यस्थ की आवश्यकता को पहचाना जो उसके और परमेश्वर के मध्य खड़े होने की अर्हताप्राप्त हो। 1 शमूएल 2:25 में, हम पढ़ते हैं, ''यदि एक व्यक्ति दूसरें के विरूद्ध पाप करता है तो परमेश्वर उसकी मध्यस्थता करेगा। परंतु यदि कोई व्यक्ति यहोवा के विरूद्ध पाप करता है, उसके बचाव के लिये कौन विनती कर सकता है?'' यह सत्य अय्यूब की शिकायत का आधार है। सही मध्यस्थ को मनुष्य होना आवश्यक है ताकि उसका हाथ अय्यूब पर रख सके, परंतु उसे परमेश्वर भी होना आवश्यक है ताकि वह अपना हाथ परमेश्वर पर भी रख सके। ये दोनों अर्हतायें यीशु में पूर्ण होती हैं। वह एक मनुष्य है जो हमारी दुर्बलताओं में हमारे साथ सहानुभूति रख सकता है; और वह परमेश्वर का पुत्र भी है जो स्वर्गो से होकर गया है और परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजित है, प्रतिदिन उसके लोगों के बदले में बिनती करता है।

2. बाइबल कहती है कि सभी मनुष्यों की सबसे बडी आवश्यकता, एक मध्यस्थ की उपस्थिति होती है जो उनके और परमेश्वर के मध्य खड़ा हो। बाइबल यह भी सिखाती है कि परमेश्वर ने इस आवश्यकता को यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूर्ण किया। 1 तिमुथियुस 2:5 हमें इस सत्य के विषय में क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''एक परमेश्वर'' का कथन इजरायल और मंडली की सबसे बड़ी उपलब्धि है (व्यवस्थाविवरण 6:4)। मसीह ***एकमात्र*** मध्यस्थ है, इसका इंकार करना बाइबल के ***एकमात्र*** परमेश्वर के इंकार के बराबर है। जैसा उपर बताया गया, शब्द ''मध्यस्थ'' यूनानी भाषा के शब्द ***मेसीटेस*** से निकला है, जो एक मध्यस्थ या बिचवई की ओर संकेत देता है। यह उस व्यक्ति को प्रगट करता है जो दो पक्षों के मध्य हस्तक्षेप करता है ताकि शांति स्थापित करे, संधि करवाने के लिये, किसी वाचा को दृढ़ करने के लिये। दो पक्षों का एक संयुक्त संबंध में वर्णन करना (''परमेश्वर और मनुष्य''), पौलुस मध्यस्थ की अनूठी अर्हताओं को व्यक्त करता है। उसके पास परमेश्वरत्व की पूर्णता होनी चाहिये ताकि परमेश्वर के पास आ सके और हमारा सहायक हो (1 यूहन्ना 2:1)। यद्यपि, उसे पूर्ण मनुष्य भी होना चाहिये ताकि वह वैधानिक रूप में उचित स्थान पर खड़ा हो सके और हमारे पाप के लिये प्रायश्चित कर सके, ताकि वह हमें अपने प्रताप से पराजित न कर सके, वह हमें परमेश्वर का ज्ञान प्रदान करे और ताकि हमारी दुर्बलताओं में हमारे साथ सहानुभूति रख सके (इब्रानियों 4:15)। ''मनुष्य'' को ''मसीह यीशु'' के पहले स्थान देने से, प्रेरित पौलुस मसीह के ईश्वरत्व से इंकार करने का इरादा नहीं रखता न ही मसीह के ईश्वरत्व को घटाता है; इसके बदले, वह मध्यस्थ के रूप में, सीधे मसीह की मनुष्यता पर और अधिक बल देता है जिसके द्वारा दुर्बल मनुष्य परमेश्वर के समीप आ सके। मसीह के ईश्वरत्व का इंकार किये बिना, पौलुस की मंशा यह व्यक्त करने की है कि मसीह हमारे समान है।

3. बाइबल यह सिखाती है कि यीशु मसीह परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ होने के लिये अनूठे रूप में योग्य है। परमेश्वर मनुष्य के रूप में, वह दोनों पक्षों को प्रस्तुत करता है और उनके बीच मेल करवाता है। इब्रानियों 4:15–16 हमें इस सत्य के विषय में क्या सिखाता है?

   अ. क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमसे सहानुभूति न रख सके। वह तो सब बातों में हमारे ही समान परखा गया, फिर भी निष्पाप निकला (पद 15)।

   _____

   _____

टिप्पणियांः मसीह महायाजक है, लेवीय महायाजकों का सर्वश्रेष्ठ और महान परिपूर्णता है (इब्रानियों 4:14)। ''सहानुभूति'' शब्द यूनानी शब्द ***सूमपाथियो*** (***सूम*** = के साथ + ***पास्को*** = सहन करना) से अनुवादित है, ''किसी की भावनाओं या दुर्बलताओं से उन्हीं के समान प्रभावित होना।'' के.जे.वी. का अंग्रेजी अनुवाद इसे इस तरह अनुवादित करता है, ''हमारी दुर्बलताओं की भावनाओं से व्याकुल होना।'' ''दुर्बलता'' शब्द यूनानी शब्द ***ऐस्थेनिया*** (***ऐ*** = नहीं + ***स्थेनोस*** = ताकत) से अनुवादित है, जो दुर्बलता, रूग्णता, क्षीणता, अक्षमता या अयोग्यता को दर्शाता है। बाइबल सिखाती है कि मसीह पापमयी देह की समानता में आये (रोमियों 8:3)। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि उसकी देह पापमयी थी, परंतु उनकी देह भी पतित मानवता की समस्त दुर्बलताओं से प्रभावित होने के लिये विवश थी। मसीह की देह एक तेजस्वी, आकर्षक, आदममय देह नहीं थी जैसा कि अक्सर त्रुटिपूर्ण रूप से मान लिया जाता है। ''परीक्षा में पड़े'' यूनानी शब्द ***पैराजो*** से निकला है। सकारात्मक रूप में, यह शब्द किसी चीज की गुणवत्ता की परीक्षा या जांच की ओर संकेत देता है। नकारात्मक रूप में, यह प्रलोभित करने को प्रदर्शित करता है ताकि किसी को पाप करने के लिये उकसा सके। उत्तरवर्ती अर्थ यहां स्पष्ट रूप से निहित है। मसीह, शैतान और प्रत्येक पतित कारक (मनुष्य और दुष्टात्मा) द्वारा उनकी व्यवस्था अनुसार, सब बातों में परखा गया। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि क्रिया ***पैराजो*** पूर्ण काल है। जैसे सब बातों में हमारी परीक्षा होती है, वैसे ही मसीह संपूर्ण रूप में सभी बातों में पहिले ही हमारे समान परखा गया। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम प्रत्येक परीक्षा या काल्पनिक परीक्षा का सामना कर चुके हैं, परंतु वह तो सामना ***कर चुका*** है। इसलिये, वह ***सब*** परिस्थितियों में हमारी सहायता करने में समर्थ है। ऐसी कोई परीक्षा नहीं है जिसका उसने पहिले ही सामना नहीं किया हो और उस पर प्रबल नहीं हुआ हो। इस कारण से, उसे ''निष्पाप'' कहा गया है। नाजरथ के यीशु का संभवतः यह सबसे अधिक विस्मयकारक गुण है – पूर्णरूपेण वह निष्पाप था! मसीह समस्त मानवता के एकमात्र व्यक्ति है जिसके लिये यह दावा किया जा सकता है।

ब. अतः हम साहस के साथ अनुग्रह के सिंहासन के निकट आएं कि हम पर दया हो और अनुग्रह पाएं कि आवश्यकता के समय हमारी सहायता हो (पद 16)।

टिप्पणियांः ''साहस'' शब्द यूनानी भाषा के ***पारेहसियास*** शब्द से निकला है, जिसका अर्थ खुलापन, स्वतंत्रता, पूर्ण आश्वासन और यहां तक कि ***निर्भिकता*** है। क्योंकि मसीह ने वास्तव में हमारी पतित मनुष्य वाली सच्चाई में प्रवेश किया है, क्योंकि वह सब बातों में परखा गया, क्योंकि उसने हमारे पाप का दंड कलवरी पर पूरा भर दिया, और क्योंकि वह हमारी दुर्दशा के प्रति पूरी सहानुभूति रखता है, इसलिए हम अब साहस के साथ परमेश्वर के समीप आ सकते हैं! न्याय का सिंहासन अनुग्रह के सिंहासन में परिवर्तित हो गया है। चूंकि मसीह पापमय देह की समानता में आया (रोमियों 8:3) और सब बातों में परखा गया, तौभी निष्पाप निकला, वह हमारी दुर्बलता में हमसे सहानुभूति रखने के लिये अनूठे रूप में योग्य है और हमें उसी प्रकार व उस मात्रा की सहायता प्रदान करता है जो हमें हमारे विश्वास को जांचने और शैतान की प्रत्येक परीक्षा का सामना करने के लिये आवश्यक है।

अध्याय 30: हमारा महामहिमन् सहायक

अपने मध्यस्थ की भूमिका में, मसीहा अपने लोगों के लिये सहायक की भूमिका का निर्वाह करता है। ''सहायक'' शब्द लेटिन भाषा के ***एडवोकेटस*** से निकला है (***एड*** = ओर, तरफ + ***वोकेर*** = पुकारना) और उस की ओर संकेत देता है जो किसी के मामले का निवेदन करने के लिये बुलाया गया हो। यूनानी भाषा में, ''एडवोकेट'' शब्द का अनुवाद ***पराक्लिोटॉस*** के रूप में किया गया है। यह उस व्यक्ति को प्रगट करता है जो एक न्यायाधीश या राजा के समक्ष किसी के मामले में निवेदन करता है। इस शब्द का अनुवाद ''अधिवक्ता,'' ''वकील'' ''प्रतिवादी अधिवक्ता'' या ''वकील'' के रूप में किया जा सकता है। यीशु मसीह अपने लोगों के लिये सहायक है और वह परमेश्वर के सिंहासन के समक्ष उन लोगों लिये विनती करने के लिये अनंतकाल तक जीवित है। मसीह के सहायक की भूमिका की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या वेस्टमिंस्टर लार्जर कॅटकीज्म के प्रश्न क्रमांक 55 में मिलती है:

> **प्रश्नः** मसीह किस प्रकार निवेदन करता है?
>
> ***उत्तरः*** मसीह हमारे स्वभाव में प्रगट होकर अपनी आज्ञाकारिता और पृथ्वी पर किये गये त्याग की योग्यता के बल पर निरंतर निवेदन करता रहता है; यह घोषणा करता है कि उसकी इच्छा सब विश्वासियों पर व्यावहारिक रूप में लागू की जाये; उनके विरूद्ध सब आरोपों का उत्तर देता है; प्रतिदिन की उनकी दुर्बलता के बावजूद भी, उनके लिये, विवेक की शांति उपलब्ध करवाता है (प्राप्त करना या हासिल करना), अनुग्रह के सिंहासन के सामने निर्भिक पहुंच को संभव करता है, और उनके व्यक्तित्वों और सेवाकार्य (परमेश्वर के लिये) को स्वीकार करता है।

इसके पूर्व हम बाइबल के अध्ययन को जारी रखें, यह बताना महत्वपूर्ण है कि मसीह का उसके लोगों के लिये निरंतर निवेदन करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के समक्ष अपने घुटनों पर बैठ हमारे लिये दया की याचना करता है। वह परमेश्वर के दाहिने हाथ ही विराजित होकर विनती करता है, वह जो सर्वज्ञ है और उसके लोगों की प्रत्येक आवश्यकता को जानता है, वह जो उनकी ओर से बोलने का संपूर्ण अधिकार रखता है और वह जो उनके विरूद्ध प्रत्येक आरोप को निष्फल करता है। जे.आय. पैकर (1926–), विलियम एमेस (1576–1633) और लूईस बर्खाफ (1873–1957) की ओर से ये उद्धरण सहायक हैं:

> जे. आय. पैकर लिखते है: ''मसीह द्वारा की जाने वाली मध्यस्थता का मूलतत्व हमारे हित में विनती करना है (उसके सिंहासन से) बजाय हमारी ओर से अनुनय करने के (कि मानों बिना स्तर या अधिकार के उसकी दशा कोई सहानुभूति की दशा हो)''[23]

23 *Concise Theology*, p.128

विलियम एमेस लिखते हैः "उसकी राजसी महायाजकियता हमारे लिये की गयी विनती है, परंतु यह घुटनों के बल बैठकर कष्ट और दीनता के साथ की गई अनुनय नहीं है, जैसे पहले की जाती थी, परंतु अब जो विनती की जाती है, वह महिमा के साथ उन बातों को विचार में रखते हुए की जाती है जो उसने हमारे लिये की और सही।"[24]

लूईस बर्खाफ लिखते हैः "मसीह स्वयं को हमारे प्रतिनिधि के रूप में परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत करता है। उसकी सिद्ध मनुष्यता, उसका आधिकारिक व्यक्तित्व, उसका पूर्ण किया गया कार्य परमेश्वर के सिंहासन के समक्ष हमारे लिये विनती करता है। परमेश्वर का पुत्र जो देहधारित है, जो कुछ उसने पृथ्वी पर किया, वह जो वर्तमान में है और जो उसने हमारे लिये किया; ताकि परमेश्वर हमें सब प्रकार की कृपा जो वह हमें देना चाहता है प्रदान करे। इसलिए उसकी उपस्थिति, इसलिये, अपने लोगों की तरफ से की जाने वाली निरंतर और प्रबल याचना है, जो उनके लिये छुटकारे के समस्त लाभों को सुरक्षित करती है।"[25]

1. इब्रानियों 9:24 मसीह की अपने लोगों के लिये विनती करने वाली सेवकाई की सामर्थ और उसकी प्रभावोत्पादकता के बारे में उल्लेख करता है। इस पद के अनुसार, कैसे मसीह की सेवकाई पुरानी वाचा के याजकों से भिन्न है? मसीह परमेश्वर के कितने समीप है? यह किस प्रकार, उसके लोगों के लिये किये गये, उसके पक्ष समर्थन की सामर्थ को सिद्ध करता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः पुराने नियम में याजक वर्ष में एक बार पृथ्वी पर बने मंदिर मे जानवरों का बलिदान लेकर प्रवेश करते थे और लोगों की तरफ से विनती करते थे। उसने स्वयं को एक बार बलिदान करके हमेशा के लिये उस बलिदान को पूर्ण किया और यह बलिदान अनमोल है, जिसके कारण वह सीधे परमेश्वर के सिंहासन कक्ष में प्रवेश कर गया और अब हमारी ओर से परमेश्वर से विनती करता है।

24 *The Marrow of Theology*, p.148

25 *Systematic Theology*, Vol.2, p.593

2. 1 यूहन्ना 2:1–2 बाइबल के सब महत्वपूर्ण पदों में से एक महत्वपूर्ण पद है जिसमें मसीह द्वारा विनती करने वाले कार्य का वर्णन है। इस पद को तब तक पढ़िये जब तक कि आप इसकी विषय सामग्री से परिचित न हो जायें, और तब निम्नलिखित वाक्यांशों पर अपने विचारों को प्रगट कीजिये।

अ. मेरे बच्चों, मैं तुम्हें ये बातें इसलिए लिख रहा हूं कि तुम पाप न करो।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां:यह तथ्य कि पिता के सामने हमारा एक सहायक है हमें पवित्रता के प्रति उत्साहविहीन या पाप के प्रति लापरवाह नहीं बनाने पाये। उसके विपरीत, मसीह ने जो महान कार्य हमारे लिए पुरा किया इस कारण हमें आज्ञा पालन की प्रेरणा मिलनी चाहिए।

ब. परंतु यदि कोई पाप करता है तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात यीशु मसीह जो धर्मी है;

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यह देखने में आता है कि सबसे परिपक्व मसीही जन भी नैतिक कमजोरी और पाप के अधीन है। इसलिये, यह हमारे लिये बड़ी सांत्वना है कि पिता के सामने हमारे लिये एक सहायक है। ''सहायक'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***पराक्लिोटॉस*** से आता है, जो एक ''सहायक'' को प्रगट करता है या वह व्यक्ति जो दूसरों की ओर से बोलता है। यीशु इस भूमिका के लिये अतुल्य रूप में योग्य है क्योंकि वह धर्मी है और परमेश्वर के सामने खड़े होने के योग्य है।

क. वह स्वयं हमारें पापों का प्रायश्चित है और हमारा ही नहीं वरन समस्त संसार के पापों का भी।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''प्रायश्चित'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द ***हिलॉसमॉस*** से निकला है, जो क्रोध को शांत करना या संतुष्ट करने को प्रगट करता है; यह उस बलिदान को प्रगट करता है जो एक क्रोधी पक्ष को शांत करने के लिये दिया जाता है। मसीह हमारा प्रायश्चित है कि उसने पाप के मोल को चुकाने के लिये हमारे स्थान पर अपने जीवन का बलिदान दिया। उसके बलिदान ने, हमारे विरूद्ध परमेश्वर के न्याय की मांगों को संतुष्ट किया और उसके क्रोध को शांत किया। मसीह का बलिदान यहूदियों तक या कोई दूसरे समूह के लोगों तक ही सीमित नहीं था, परंतु वह प्रत्येक जाति और भाषा, लोग और राष्ट्र के लिये सुरक्षित है (प्रकाशितवाक्य 5:9)।

3. रोमियों 8:33–34 में, हमें दूसरा महत्वपूर्ण अंश मिलता है जो मसीह के विनती करने वाली सेवकाई से संबंधित है। इस पद के अनुसार, मसीह द्वारा बचाये जाने वाले कार्य और विनती करने वाली सेवकाई का क्या परिणाम है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियांः ''परमेश्वर के चुनों के विरूद्ध कौन दोष लगायेगा?'' और ''कौन है जो दोषी ठहराता है?'' ये प्रश्न एक ही है और समान हैं। ये ऐसे प्रश्न हैं मानों परमेश्वर इस जगत के हरेक जन को चुनौती जारी कर रहा हो, जिसमें शैतान स्वयं सम्मिलित है। क्यों परमेश्वर के लोगों के विरूद्ध कोई आरोप या दोष नहीं लगाया जा सकता, इसका कारण द्विस्तरीय है। प्रथम, परमेश्वर ने अपने लोगों को धर्मी ठहराया है या अपने सामने उन्हें एक पूर्ण वैधानिक स्थान प्रदान किया है। यह मसीह के सिद्ध जीवन द्वारा पूर्ण किया गया, जो जीवन उसने पृथ्वी पर बिताया और अपने लोगों के स्थान पर वह मर गया। दूसरा, मसीह अब, अपने लोगों के लिये विनती करने वाले और उन्हें बचाने वाले के रूप में परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है।

4. इब्रानियों 7:23–25 के अनुसार, लेखक न केवल मसीह की विनती करने वाली सेवकाई की सामर्थ और प्रभावोत्पादकता के बारे में वर्णन करता है परंतु उस सेवकाई के स्थाईत्व के लिये भी कहता है। अपने शब्दों में इस पद को संक्षेप में लिखिये।

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: इस पद से हमें थोड़ी व्याख्या प्राप्त होती है। मसीह के अंतहीन जीवन की सामर्थ द्वारा, वह उन लोगों को सदाकाल के लिये बचाने में समर्थ है जो उसके द्वारा परमेश्वर के समीप आते हैं। धर्मसुधारक फ्रांसिस ट्युरेटीन ने लिखा था कि मसीह स्वर्ग में एक मेम्ने के समान प्रगट होता है "मारे गये मेम्ने के रूप में" (प्रकाशितवाक्य 5:6) क्योंकि "उसका रक्त निर्मल और जीवित है–शाश्वत मूल्य और प्रभावोत्पादकता के साथ।"[26]

5. यद्यपि बाइबल मसीह द्वारा परमेश्वर के सिंहासन के सामने, स्वर्गिक विनती करने की उचित प्रकृति को प्रगट नहीं करती है। परंतु उसकी "महायाजकीय प्रार्थना" में कुछ सूत्र मिलते है कि उसने इस जगत की सेवकाई के दौरान अपने चेलों के लिये प्रार्थना की थी (यूहन्ना 17:1–26)। मसीह ने अपने लोगों के लिये प्रार्थना में जो याचनायें की उसकी सूची निम्नानुसार है। प्रत्येक याचिका का उसके समांतर पद से मिलाइये।

_____ यूहन्ना 17:11–12	अ. मसीह अपने लोगों के भविष्य में महिमामंडित होने के लिये विनती करता है
_____ यूहन्ना 17:13	ब. मसीह अपने लोगों की एकता के लिये विनती करता है।
_____ यूहन्ना 17:15	क. मसीह अपने लोगों के पवित्रीकरण के लिये प्रार्थना करता है।
_____ यूहन्ना 17:17	ड. मसीह अपने लोगों की शैतानी ताकतों से सुरक्षा के लिये विनती करता है पढ़िए (लूका 22:32)।
_____ यूहन्ना 17:21–23	इ. मसीह अपने लोगों की अटलता के लिये विनती करता है।
_____ यूहन्ना 17:24	ई. मसीह अपने लोगों के आनन्द के लिए बिनती करता है।

26 *Institutes of Elenctic Theology*, Vol.2, p.485

अध्याय 31: मसीह राजा है

बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर के पुत्र ने स्वयं को उसकी स्वर्गिक महिमा और सारे अधिकारों से रिक्त किया, हमारी निम्न मनुष्यता को धारण किया और निंदात्मक रूप में पाप का बलिदान बनकर रोमी क्रूस पर चढ़ाया गया। बाइबल यह भी सिखाती है कि यही यीशु मुरदों में से जीवित किया गया और स्वर्ग मे उपर उठाया गया एवं राजाओं का राजा व प्रभुओं का प्रभु बनकर परमेश्वर के उस सिंहासन पर गौरवांवित हुआ।

स्वर्ग पर उठाए जाने के पश्चात, मसीह उस महिमा से सम्मानित किया गया जो महिमा जगत की नींव पड़ने से पूर्व उसकी पिता के साथ थी (यूहन्ना 17:5)। फिर भी, देहधारण के पूर्व उसकी अवस्था और वर्तमान में उसकी गौरवान्वित अवस्था के मध्य में महत्वपूर्ण अंतर हैं। सबसे पहले, मसीह अब परमेश्वर मनुष्य के रूप में राज्य करता है। वह जो जगत के सिंहासन पर बैठता है वह अपने लोगों की देहों में से एक देह है और उनकी हड्डी में से एक हड्डी के समान है। दूसरे स्थान पर, मसीह अब मुक्तिदाता राजा के रूप में राज्य करता है। उसकी मृत्यु के द्वारा, उसने स्वयं के लिये हर जाति, भाषा, कुल और राष्ट्र को मुक्ति प्रदान की है और वे सदा सदा के लिये उसके साथ राज्य करेंगे (प्रकाशितवाक्य 5:9–11)।

यीशु मसीह राजा है

प्रारंभ से यह समझना महत्वपूर्ण है कि मसीह मात्र कई राजाओं मे से ***एक*** राजा या राजा के ***समान*** नहीं है; परंतु वह एकमात्र राजा (सम्राट) है! वास्तव में, वह एकमात्र अभी तक का सच्चा राजा हुआ है! अन्य सभी राजा जिन्होंने राज्य किया या करेंगे केवल उसके व्यक्तित्व और कार्य की धुंधली परछाईयां हैं।

1. यह पुराने नियम की अनेक भविष्यवाणियां है जिन्होंने पूर्व घोषणा कर दी थी कि मसीहा एक महान राजा होगा जो राष्ट्रों पर राज्य करेगा। निम्नलिखित भविष्यवाणियों पर अपने विचार लिखिये।

   अ. उत्पत्ति 49:10

   _____

   _____

_____

_____

टिप्पणियां: राजा दाउद और उसके बाद आने वाले राजा यहूदा वंश के थे। मसीहा को इसी वंश से उत्पन्न होना था (2 शमूएल 7:12–17)। नाजरथ का यीशु दाउद का वंशज था (मत्ती 1:1, 6; रोमियों 1:3)। इब्रानी शब्द ***शिलोह*** एनएएसबी संस्करण में साधारणतः प्रतिलिपि है। अधिकतर विद्वान इसे इस तरह अनुवादित करते हैं ''जब तक वह संबंद्ध स्थान तक न पहुंचे'' और वे इसे मसीहा के संदर्भ में प्रयुक्त करते हैं, वह महान राजा, कि दाऊद भी केवल जिसकी परछाई या प्रतिछाया मात्र था।

ब. गिनती 24:17–18।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: बालाम की अंतिम भविष्यद्वाणी में, परमेश्वर ने उसे सुदूर भविष्य में मसीहा के उदय होने के विषय के प्रकाशन दिया था। वह न केवल मोआब और ऐदोम पर जीत हासिल करेगा, परंतु समस्त राष्ट्रों पर राज्य करेगा।

क. मीका 5:2

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: भविष्यवक्ता मीका ने एक मसीहाई ''शासक'' की भविष्यवाणी की थी, जो राजा दाऊद के शहर में उत्पन्न होगा (1 शमूएल 16:1–13)। किन्तु, मसीहा दाऊद से भी बढ़कर होगा। दाऊद के वंश से उत्पन्न होने के बावजुद, वह परमेश्वर भी होगा, जिसका आना अनादिकाल अभिव्यक्त है।

2. 2 शमूएल 7:16 में, एक बहुत विशेष प्रतिज्ञा दाऊद और उसके घराने को (अर्थात उसके वंशजों को) उसके राज्य के स्थापित होने और उसके धैर्य पूर्ण स्थायित्व के लिये दी गयी है। लूका 1:31–33 में, यह स्पष्ट है कि यह प्रतिज्ञा यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण हुई। दोनों पदों को पढ़िये; और स्पष्ट करे कि कैसे यीशु मसीह दाऊद से की गयी प्रतिज्ञा की पूर्ति है।

3. पुराने और नये नियम दोनों के लेखकों ने नाजरथ के यीशु के राजा होने के संदर्भ में उल्लेख किया है। फिर भी, यह पूछना महत्वपूर्ण होगा कि स्वयं यीशु ने इस संबध में क्या सिखाया था? उसने पीलातुस को यूहन्ना 18:37 में क्या कहा था? उसके शब्दों का क्या महत्व है?

4. बाइबल में, एक नाम या पदवी अक्सर एक व्यक्ति के बारे में महत्वपूर्ण सत्यों को प्रगट करती है। निम्नलिखित अंशों में, यीशु मसीह को कौन से नाम और शीर्षक दिये गये हैं, और वे उसके राजाधिकार के विषय में क्या प्रगट करते हैं?

   अ. यहू_____ का रा_____ (मत्ती 2:2)। यीशु, यहूदा जाति के राजा दाऊद का वंशज था। यद्यपि वह अधिकांश यहूदियों के द्वारा अस्वीकार कर दिया गया, वह अभी भी परमेश्वर द्वारा नियुक्त इजरायल का राजा है (भजन संहिता 2:6; यूहन्ना 1:49)।

ब. मैं उसे ज_____ के सब रा_____ का प्र_____ बनाऊंगा (भजन संहिता 89:27)। मसीहा का राजसी न्यायाधिकार क्षेत्र इस्राएल राष्ट्र तक ही सीमित नहीं है परंतु इस पृथ्वी पर प्रत्येक राष्ट्र और उसके उपर की सारी सामर्थ को घेरे रखता है।

क. और पृ_____ के रा_____का शा_____ (प्रकाशितवाक्य 1:5)। पृथ्वी के महानतम राजा उप राज्याधिकारी हैं। वे केवल इस अधिकार का अभ्यास मसीह द्वारा उन्हें सौंपे जाने पर ही करते हैं।

ड. राजा _____ का रा_____ (प्रकाशितवाक्य 17:14; 19:16)। समस्त सृष्टि उसकी प्रधानताओं पर मसीह की सर्वश्रेष्ठता को समझाने के लिये इस पदवी से बढ़कर कोई पदवी नहीं है।

मसीह का राज्याभिषेक

''राज्याभिषेक'' शब्द लैटिन क्रिया ***कोरोनेर*** से निकलता है, अर्थात, ''मुकुट या पुष्पहार से विभूषित करना।'' बाइबल के अनुसार, मसीह जो उसके लोगों के पापों के लिये मर गया, मुरदों में से जीवित किया गया और परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजित हुआ। वह स्वर्ग और पृथ्वी के महान राजा के पद पर अभिषिक्त हुआ और उसका प्रभुत्व सभों पर राज्य करता है।

1. प्रत्यक्ष यीशु को स्वर्गारोहित हुआ देख, प्रेरित इस सत्य को सुनने वालों के सामने, बताने में निर्भिक थे। प्रेरितों के काम 2:36 में एक बहुत महत्वपूर्ण कथन पतरस ने दिया। मसीह के अधिकार के विषय में यह हमकों क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: विश्व का सर्वशक्तिशाली परमेश्वर ने नाजरथ के यीशु को प्रभु और मसीह दोनों होने के लिये नियुक्त किया। उसके निर्णय बदले नहीं जा सकते (भजनसंहिता 2:1–6)। यीशु इजरायल का मसीहा है और वह समस्त रूप में प्रभु हैं।

2. भजनसंहिता 110:1 में एक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी, मसीहा के परमेश्वर के दाहिने हाथ, प्रभु और राजा के रूप में विराजित होने के संबंध में पायी जाती है।[27] इस पद पर सावधानीपूर्वक ध्यान दीजिये और तब अपने विचारों को लिखिये।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: परमेश्वर (याहवे) ने दाऊद के प्रभु (मसीह) से कहा और उसे उसके दाहिने ओर बैठने को कहा और उसे अपने अधिकार का उत्तराधिकारी बनाया। राजा दाऊद के ऊपर यह मसीहा की न केवल संप्रभूता को प्रदर्शित करता है, परंतु यह स्वर्ग और पृथ्वी में उसकी गौरवांवित अवस्था का भी प्रमाण है। इसके साथ ही, यह मसीह एवं उसके लोगों का विरोध करने वाली सब ताकतों पर प्रमुख विजय का भी आश्वासन देता है।

3. बाइबल में दानियल 7:13–14 के अंदर हमको मसीह के राजा के रूप में गौरवांवित होने का सबसे महिमादायक वर्णन मिल सकता है। इस पद को अनेक बार पढ़िये जब तक कि आप इसकी विषय सामग्री से परिचित न हो जायें, तब निम्नलिखित भागों पर अपने विचारों को प्रगट कीजिये।

अ. मैंने दर्शन में रात को देखा कि मनुष्य के पुत्र के समान कोई आकाश के बादलों के साथ आ रहा था, और वह अनादिकाल के प्राचीन तक पहुंचा और वह उसके सम्मुख लाया गया (पद 13)।

_____

_____

_____

_____

27 See Jesus' explanation of this text in Matthew 22:41-45.

टिप्पणियां: यीशु मनुष्य का पुत्र है (मत्ती 26:64; मरकुस 14:62)। जब "प्राचीन" शब्द मनुष्य के ऊपर लागू किया जाता है, तब इसका अर्थ जर्जर, दुर्बलता और शिथिलता को प्रगट करता है। परंतु, जब यह पद परमेश्वर पर लागू किया जाता है, तब यह अनंतता, विद्वत्ता और सामर्थ को प्रगट करता है।

ब. और उसको प्रभुता, महिमा और राज्य दिए गए जिससे देश देश और जाति जाति के भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले उसके लोग उसकी सेवा करे (पद 14) ।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यहां हम मसीह की संप्रभूता का प्रसार देखते हैं। एक शब्द को दूसरे शब्द के ऊपर संग्रहित कर दिया गया है जिससे यह अर्थ निकलता है, मसीह को ***सब*** लोगों के ऊपर ***सारी*** सामर्थ दी गयी है।

क. उसका प्रभुत्व सनातनकाल तक अटल है और उसका राज्य अविनाशी रहेगा (पद 14)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यहां हम मसीह की सनातन संप्रभूता के बारे में पढ़ते हैं। बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने जो असीमित संप्रभूता का श्रेय परमप्रधान परमेश्वर को दिया (दानियेल 4:34–35), वही श्रेय अब मनुष्य के पुत्र नासरथ के यीशु को दिया गया है। उत्पत्ति 41:44 में ऐसा ही एक रोचक समानांतर उल्लेख मिलता है, जब फिरौन युसुफ को गौरवांवित पद पर सुशोभित करता है। युसुफ को कैदखाने से निकालकर फिरौन के दाहिने हाथ बैठाया जाता है, ताकि मिस्र के संपूर्ण देश में कोई भी अपना हाथ या पैर बिना उसकी अनुमति के हिला न सके। उसी तरीके से, किंतु एक असीमित वृहद रूप में, यीशु मुरदों में से जिलाया गया और स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान हुआ, ताकि पूरे विश्व में बिना उसकी अनुमति के कोई भी अपना हाथ या पैर हिला न सके!

अध्याय 32: मसीह प्रभु है

मसीह के राजपद और उसकी संप्रभूता के बिच सीधा संबंध हैं। वह मात्र एक पुतली नहीं है; उसकी प्रभुता पूर्णरूपेण उसके अधिकार, असीमित सामर्थ और अनंत विस्तार में निहित है। कोई स्थान या प्राणी, उसकी राजकीय सत्ता की पहुंच के बाहर नहीं है। जैसे पतरस पेंतुकुस्त के दिन निर्भिकता के साथ कहता है, ''_____इजरायल का संपूर्ण घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसे प्रभु और मसीह दोनों ही ठहराया – इसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया'' (प्रेरितों के काम 2:36)। एक दिन, प्रत्येक घुटना झुकेगा, हर जबान अंगीकार करेगी कि यीशु मसीह ही प्रभु है!

1. बाइबल में, एक नाम या पदवी अक्सर किसी व्यक्ति के बारे में महत्वपूर्ण सत्यों को प्रगट करता है। निम्न पदों में यीशु मसीह को कौन सी पदवियां दी गयी हैं, और वे उसकी संप्रभूता या प्रभुता के विषय में क्या बताते हैं?

   अ. प्र_____ (यूहन्ना 13:13; प्रेरितों के काम 2:36; रोमियों 10:9; 2 कुरिन्थियों 4:5)। यह यूनानी शब्द ***कुरूयॉस*** *से निकलता है, जो एक आधिकारिक व्यक्ति को बताता है, जैसे प्रमुख, स्वामी, या एक मालिक। यह अक्सर सम्मान की उपाधि, जैसे ''महाशय'' के बराबर प्रयुक्त किया जाता है। बाइबल में, इस शब्द का प्रयोग इस इब्रानी विचार को समझाने के लिये किया जाता है कि परमेश्वर ही प्रभु है। यह तो अक्सर परमेश्वर के व्यक्तिगत नाम को भी अनुवादित करने के लिये प्रयुक्त किया जाता था:* ***याहवे*** *(या* ***जेहोवा****) (मत्ती 1:22; 5:33; मरकुस 5:19; लूका 1:6, 9, 28, 46; प्रेरितों के काम 7:33)।*

   ब. वह स_____का प्र_____ है (प्रेरितों के काम 10:36; रोमियों 10:12)। यह पदवी मसीह की संप्रभूता का संयुक्त स्वभाव प्रगट करती है _____ उसके राज्य से परे कुछ भी नहीं है।

   क. वह प्र_____का प्र_____ है (प्रकाशितवाक्य 17:14; 19:16)। मनुष्यों, स्वर्गदूतों, और दुष्टात्मा में महानतम भी मसीह के अधीन हैं। वह समस्त राज्य, अधिकार, सामर्थ और साम्राज्य से ऊपर विराजमान है (इफिसियों 1:20–21)।

   ड. महि_____ के प्र_____ (1 कुरिन्थियों 2:8)। अन्यत्र, परमेश्वर ''महिमा का राजा'' (भजन संहिता 24:7–10) और ''महिमा का परमेश्वर'' (भजन संहिता 29:3; प्रेरितों के काम 7:2) कहलाता है। यह पदवी न केवल मसीह की संप्रभूता परंतु उसके परमेश्वरत्व को भी दर्शाती है।

इ. मृ_____ और जी_____ दोनों का प्र_____ हो (रोमियों 14:9)। जो सत्य यहां प्रगट किया गया है वह यह दर्शाता है कि मसीह के अधिकार से परे कोई राज्य या क्षेत्र नहीं है। मृत्यु, उसके राज्य से बचने का कोई साधन नहीं है।

ई. वही सब प्रधा_____ और अधि_____ का शिरोमणि है (कुलुस्सियों 2:10)।''शिरोमणि'' शब्द यूनानी शब्द ***कैफले*** *से निकला है, जो एक दैहिक सिर को प्रगट करता है। लाक्षणिक रूप से प्रयोग करते हुए, यह उसकी ओर संकेत देता है जो प्रधान है, प्रमुख है, अगुवा है, और ऐसा जन जिसके सब अधीन हो। ''शासन'' और ''अधिकार'' इन दो शब्दों के प्रयोग से, पौलुस लक्ष्य करते हुए बल दे रहा है कि हर प्रकार की प्रधानता मसीह के अधीन है।*

उ. *स्वा_____ और प्र_____ (यहूदा 4)।* ''स्वामी'' की पदवी यूनानी शब्द ***डेस्पोटेस*** से निकली है, जिससे हम ''डेसपोट'' शब्द प्राप्त करते हैं। यह पद उस व्यक्ति के बारे में प्रगट करता है जो पूर्ण या परम सामर्थ व अधिकार किसी दूसरे पर रखते हों। यह परमेश्वर के विषय में प्रयुक्त किया जाता है लूका 2:29, प्रेरितों के काम 4:24, और प्रकाशितवाक्य 6:10।

2. मत्ती 28:18 में, पुनरूत्थित मसीह ने उसके चेलों को स्वर्गारोहण से ठीक पहले एक महत्वपूर्ण कथन कहा। उसका कथन उसके राज्य के विषय में क्या सिखाता है? इसका आशय क्या है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

3. मसीह की संप्रभूता के विस्तार को समझने के प्रयास में जैसा मत्ती 28:18 में घोषित किया गया है, कुछ पदों पर विचार करना उपयोगी है, वे पद, जो परमेश्वर की पूर्ण परम सत्ता के विषय में कहते हैं। निम्न पदों के प्रकाश में, संक्षिप्त में वर्णन कीजिये कि पिता ने उसके पुत्र को समस्त अधिकार सौंप दिये, से क्या तात्पर्य है। पुत्र की परम सत्ता और सामर्थ का विस्तार क्या है?

अ. 2 इतिहास 20:6

_____

_____

टिप्पणियां: प्रश्न आलंकारिक हैं। राजा यहोशापात, समस्त जगत पर परमेश्वर की असीम परम सत्ता पर संशय नहीं करता है; इसके बजाय, वह इसकी घोषणा करता है।

ब. अय्यूब 23:13

टिप्पणियां: वाक्यांश, ''वह तो अद्वितीय है'' यथाशब्द इसका अर्थ है, ''वह एक है।'' यह परमेश्वर के अनूठेपन या सच्चाई को प्रगट करता है कि वह अडिग है या अपरिवर्तनशील है। किसी भी मामले में, यह स्पष्ट है कि कोई भी परमेश्वर को उसके उद्देश्य पिछे नहीं फिरा सकता।

क. भजन. 103:19

ड. भजन. 115:3; 135:6

इ. यशा. 46:9–10; इफि. 1:11

_____

_____

_____

_____

4. नये नियम के लेखक मसीह के सर्वोच्च और सार्वभौमिक गौरवांवित पद के बारे में स्पष्ट हैं। उसकी परम सत्ता के विस्तार के विषय में ये निम्नलिखित पद क्या बताते हैं?

अ. इफिसियों 1:20–22; 1 पतरस 3:22

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: पुनः प्रेरित पौलुस और पतरस यह प्रगट करने के प्रयास में कि प्रत्येक क्षेत्र का हर प्राणी मसीह की प्रभुता के अधीन है, एक पद के ऊपर दूसरा पद संग्रहित कर देता है।

ब. फिलि. 2:9–11

_____

_____

_____

_____

5. भजन 2 में, हमें संपूर्ण बाइबल की भव्य भविष्यवाणियों में से एक पढ़ने को मिलती है जो मसीहा के राजसी कार्य से संबंधित है। भजन के प्रत्येक भाग पर अपने विचार लिखिये। मसीह की परम सत्ता के विषय में यह भविष्यवाणी क्या सिखाती है? यह मनुष्य की उस बड़ी आवश्यकता के प्रति उचित प्रतिक्रिया देने के बारे में क्या सिखाती है?

अ. पद 1–3

टिप्पणियां: यहां भजनकार, परमेश्वर के परम राज्य और जो राजा उसने चुना है, उसके विरूद्ध राष्ट्रों के विरोध व उनकी निर्मम शत्रुता का चित्रण करता है।

ब. पद 4–6

टिप्पणियां: राष्ट्रों का विरोध परमेश्वर के अप्रतिबंधित अधिकार और अनंत सामर्थ के प्रकाश में व्यर्थ है।

क. पद 7–9

टिप्पणियां: पद 7 मसीह के शाश्वत अस्तित्व का इंकार नहीं है; इसके बजाय, मसीहाई राजा के रूप में उसके राज्याभिषेक दिवस का संदर्भ है।

ङ. पद 10–12

_____

_____

_____

_____

6. रोमियों 14:7–9 यीशु मसीह की प्रभुता के संबंध में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण अंश है। इस पद को तब तक पढ़िये जब तक कि आप इसकी विषय सामग्री से परिचित न हो जायें और तब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

अ. पद 9 के अनुसार, मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान का एक बड़ा उद्देश्य क्या है?

_____

_____

_____

_____

ब. पद 7–8 के अनुसार, मसीह की प्रभुता का विश्वासी के लिये क्या अर्थ है?

_____

_____

_____

_____

अध्याय 33: मसीह न्यायी है

हम सीख चुके है कि बाइबल निर्भिकता के साथ घोषित करती है कि यीशु मसीह राजाओं का राजा है और केवल उसी के नाम के द्वारा मनुष्य बचाया जा सकता है। इस अध्याय में, हम देखेंगे कि बाइबल आगे सिखाती है कि मसीह सब मनुष्यों का न्यायी बनकर, परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजित है। यद्यपि, राजा की भूमिका में, उसका यह कार्य विस्तार माना जा सकता है, बाइबल में यह इतना प्रमुख रूप से उल्लेखित है कि इस पर सच में अलग से विचार करना चाहिये। एक दिन आ रहा है जब समस्त मानव जाति का बिना किसी अपवाद के न्याय किया जाएगा; और उनकी शाश्वत नियति केवल एक ही मनुष्य, जो यीशु मसीह, के द्वारा निर्धारित की जायेगी। इस सत्य से परे सुसमाचार को समझा नहीं जा सकता।

मसीह का न्याय और सुसमाचार

यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि न्याय का सिद्धांत समूचे सच्चे सुसमाचार का एक आवश्यक भाग है। बाइबल के प्रति सच्चे होने के लिये, हमें यह घोषित करना आवश्यक है वही मसीह जो उसके लोगों के पापों के लिये मरने आया, वह दूसरी बार न्याय करने और जिन्होंने उसके उद्धार के कार्य से इंकार कर दिया है, उन्हें दोषी ठहराने अवश्य आयेगा।

1. मसीह के लौटने की सच्चाई और सब मनुष्यों का उसके द्वारा न्याय किसी भी रूप में कम महत्व का नहीं है; यह सुसमाचार के किसी भी सच्चे कथन का एक आवश्यक भाग है। कैसे पौलुस के शब्द रोमियों 2:16 में इस सत्य की पुष्टि करते हैं?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

2. बाइबल इसे स्पष्ट करती है कि मसीह का न्यायाधीश के रूप में तय होना और आगे आने वाले न्याय की पुष्टि सच्चे सुसमाचार प्रचार में वैकल्पिक नहीं है – वे पूर्ण रूप से निर्णायक है। पतरस का कथन, प्रेरितों के काम 10:42 में इस सत्य के विषय में क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

परमेश्वर द्वारा नियुक्त न्यायाधीश

यह समझना महत्वपूर्ण है कि मसीह ने दैविक नियोजन से मसीह का कार्य स्वीकार किया है। इसमें पिता का भला अभिप्राय और संप्रभू संकल्प था कि संसार का उसके पुत्र यीशु मसीह के द्वारा सिद्ध धार्मिकता में न्याय किया जाए। यह एक और उदाहरण है कि किस प्रकार परमेश्वर ने हमेशा ही जगत और स्वंय से अपने पुत्र की मध्यस्थता के द्वारा संबंध बनाए रखा – पिता ने जगत को पुत्र के द्वारा रचा, वह पुत्र के द्वारा संसार पर राज्य करता है, और एक दिन समस्त जगत का न्याय पुत्र के द्वारा करेगा।

1. कैसे प्रेरित पौलुस प्रभु यीशु मसीह का 2 तिमुथियुस 4:1 में वर्णन करता है? उसके इस कथन के महत्व पर अपने विचार व्यक्त करो।

अ. जो जी_____और मृ_____का न्या_____ करेगा।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: वाक्यांश ''जीवितों और मृतकों'' समस्त मानव जाति की गणना करता है। जैसे मसीह जीवतों और मृतकों दोनों का प्रभु है (रोमियों 14:9), और वह उनका न्यायी भी है। यहां तक कि मृत्यु भी उसकी परम सत्ता या उसकी दंडाज्ञा से बचा नहीं सकती।

2. जैसा पहिले ही बता दिया गया है, परमेश्वर पिता ने तय कर लिया है कि वह संसार का न्याय धार्मिकता के आधार पर अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा करेंगे। यूहन्ना 5:22–27 इस सत्य के बारे में क्या सिखाता है? इस पद को पढ़िये और अपने विचारों को लिखिये।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: यीशु इंकार नहीं कर रहा है कि पिता न्याय करता है; वह स्पष्ट कर रहा है कि पिता ऐसा अपने पुत्र के द्वारा करता है (रोमियों 2:16)। पिता ने पुत्र को समस्त मानव जाति का न्याय करने की सामर्थ व अधिकार प्रदान किया है। पुत्र को इतना बड़ा सम्मान प्रदान किया जाना उसके परमेश्वरत्व का प्रगटीकरण है और हमारे लिये एक कारण है कि हम पुत्र को उसका यथोचित गौरव देने में सावधान रहें। पद 23 के अनुसार, न केवल पिता अपने पुत्र के माध्यम से न्याय करता है, परंतु मानव जाति भी परमेश्वर का सम्मान, पुत्र के सम्मान करने के द्वारा करती है, जिसे उसने न्यायाधीश नियुक्त किया है। दानियेल 7:13–14 में, इस बात की भविष्यवाणी की गयी थी कि मनुष्य के पुत्र (मसीहा का पद) को साम्राज्य, महिमा और एक राज्य प्रदान किया जायेगा – सब लोग, राष्ट्र और हर भाषा बोलने वाले उसकी आराधना करेंगे। उसका साम्राज्य अनंत साम्राज्य कहलायेगा और वह न कभी समाप्त होगा न नष्ट किया जा सकेगा। यीशु मसीह वही मनुष्य का पुत्र है।

3. मसीह की सब मनुष्यों के न्यायी होने के संबध में ईश्वरीय नियुक्ति का उल्लेख करते हुए एक दूसरा सशक्त अंश, प्रेरितों 17:31 में हमें मिलता है। इस पद को तब तक पढ़िये जब तक कि आप इसकी विषय सामग्री से परिचित न हो जायें, और तब अपने विचारों को लिखिये।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: परमेश्वर ने अपनी संप्रभूता से समस्त मानव जाति के लिये न्याय का एक दिन स्थापित किया है, और मानव इतिहास इसकी ओर तेजी से बढ़ रहा है। यह न्याय मनमाना या अन्यायपूर्ण नहीं होगा, परंतु सिद्ध न्याय द्वारा चिन्हित किया जायेगा। परमेश्वर ने न केवल एक दिन न्याय का ठहराया है, परंतु उसने वह मनुष्य भी ठहराया है जिसके द्वारा वह न्याय करेगा। वह मनुष्य उसका पुत्र है (प्रेरितों के काम को भी पढ़िये)। नासरथ के यीशु का पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण इस बात का प्रमाण है और यह सिद्ध करता है कि वही मसीह है, परमेश्वर का पुत्र, सर्वोच्च प्रभु और समस्त सृष्टि का न्यायी है।

धर्मी और सर्वज्ञ न्यायी

उसका न्याय त्रुटिरहित रहे, इसलिये परमेश्वर को सिद्ध रूप में धर्मी होना अवश्य है (थोड़ी सी भी नैतिक त्रुटि न हो) और वह सर्वज्ञ (प्रत्येक तथ्य के बारे में संपूर्ण ज्ञान) हो।

''धर्मी'' शब्द इब्रानी भाषा के शब्द ***सादिक*** से अनुवादित है और उसके तदनुरूप ***दिखयॉस*** शब्द मिलता है। दोनो पद धार्मिकता, विशुद्धता और परमेश्वर की नैतिक उत्कृष्टता से संबंधित है। इन पदों के अनुसार, परमेश्वर एक परम धर्मी व्यक्तित्व है और हमेशा इस तरह कार्य करता है जो उसकी प्रकृति से पूरी तरह मेल खाता है। वह कभी भी ऐसा कुछ नहीं करेगा जो उसके ऊपर गलत न्याय करने का दोष लगे। उस दिन जब परमेश्वर अपने पुत्र के द्वारा समस्त मनुष्यों का न्याय करेगा, तो दोषी जन भी उनके सिर झुका लेंगे और यह कहेंगे कि उसका न्याय उचित है!

''सर्वज्ञानी'' शब्द लैटिन भाषा के शब्द ***ओमिनीसियंस*** (***ओमनीस*** = सब +***स्कियंस***, ***स्किरे*** से निकला है = जानना) और सब प्रकार के ज्ञान होने के गुण को प्रगट करता है। परमेश्वर को सब बातों के भूत, वर्तमान और भविष्य का सिद्ध ज्ञान है; और वह एकाएक इस ज्ञान का स्वामित्व बिना यत्न के, एक ही बार मे और व्यापक रूप में रखता है। उससे कुछ नहीं छिपा है। उसके ज्ञान और जो वह वास्तव में है, उसके बीच में थोड़ा सा भी अंतर नहीं है। वह न केवल सब तथ्य जानता है, परंतु प्रत्येक तथ्य को पूर्ण विद्वता के साथ प्रगट भी करता है। न्याय के उस महान दिन मसीह सब तथ्यों के अपने सिद्ध ज्ञान अनुसार

प्रत्येक मनुष्य का न्याय करेगा – कोई पाप छिपा नहीं होगा या भुलाया नहीं जायेगा। प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक कार्य और प्रत्येक विचार सदैव उसके सामने एक खुली किताब है।

1. बाइबल में नाम का बड़ा महत्व है कि वह नामधारक के व्यक्तित्व के बारे में कुछ बताता है। प्रभु यीशु मसीह को निम्न पदों में क्या नाम दिये गये हैं? मसीह के न्याय की धार्मिकता के बारे में ये नाम क्या बताते हैं?

   अ. प_____ और ध_____ (प्रेरितों के काम 3:14)

   _____

   _____

   _____

   _____

   ब. धार्मि_____ न्या_____ (2 तीमुथियुस 4:8)

   _____

   _____

   _____

   _____

2. प्रेरितों के काम 17:31 में परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के द्वारा न्याय की प्रकृति के संबंध में एक महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा पाई जाती है। इस प्रतिज्ञा को पहचानिये और तब इसका महत्व बताइये।

   _____

   _____

   _____

   _____

   _____

   _____

3. मसीह का न्याय सिद्धता के साथ उचित ठहरे, इसके लिये उसे स्वयं धर्मी और सर्वज्ञ होना आवश्यक है। उसे प्रत्येक मनुष्य के जीवन का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। क्या यीशु के पास पर्याप्त ज्ञान है ताकि समस्त मनुष्यों को सिद्ध न्याय प्रदान कर सके? मसीही के सर्वज्ञानी होने के संबंध में निम्नलिखित पद क्या सिखाते हैं?

अ. मसीह प्रकाशितवाक्य 2:23 में स्वयं का किस प्रकार वर्णन करता है? यह वर्णन हमें उसके न्याय की खराई या सटिकता बारे में क्या बताता है?

_____

_____

_____

_____

ब. किस प्रकार प्रेरित पौलुस मसीह के न्याय को 1 कुरिन्थियों 4:4–5 में वर्णित करता है? यह वर्णन हमें उसके न्याय की संपूर्णता या परिशुद्धता के बारे में क्या बताता है?

_____

_____

_____

_____

क. प्रेरित पौलुस रोमियों 2:16 में मसीह के न्याय की खराई या सिद्धता के बारे में क्या घोषित करता है? जब वह संसार का न्याय करेगा, तो उस दिन क्या मसीह से कोई बात छिपी रहेगी?

_____

_____

_____

_____

अध्याय 34: न्याय की निश्चयता

हम सुसमाचार के अपने अध्ययन को न्याय की निश्चयता और उसके संक्षिप्त विवरण पर विचार करते हुए समाप्त करेंगे। सामान्य रूप में, मनुष्य जगत भविष्य के न्याय से संबंधित बाइबल के सत्य को उपेक्षित करने या उसका इंकार करने का प्रयास करता है। यहां तक कि मसीहियों के बीच में भी, इस विषय को इस भय मे उपेक्षित करने की प्रवृत्ति है कि कहीं इस से दुसरों को ठोकर ना लगे। इस कारण से, हमें लगातार और यत्न से इस बात की पुष्टि करते रहना है कि बाइबल और यीशु मसीह की शिक्षा के अनुसार, भविष्य में न्याय होगा जो हरेक मनुष्य की शाश्वत नियति तय करेगा। बाइबल में वर्णित इस सत्य के बारे में, जैसा हमने पहले भी वर्णन किया कि, हमें उसी मसीह के विषय में प्रचार करना चाहिये जो उसके लोगों के पापों के लिये मरने आया और दूसरी बार उनका न्याय करने और उन्हें दोषी ठहराने आयेगा जिन्होंने उसके द्वारा किये गये उद्धार के कार्य का इंकार किया है।

न्याय की निश्चयता और निकटस्थता/शिध्रता

बाइबल कहती है कि यीशु मसीह के द्वारा इस संसार में होने वाला न्याय दोनों निश्चित और निकटस्थ है। न्याय ***निश्चित*** है क्योंकि बाइबल में जरा से भी संशय की परछाई नहीं है कि यह न्याय होगा कि नहीं। न्याय होगा; और हरेक मनुष्य प्रारंभ से लेकर अंत तक, बुलाया जायेगा और उसका मुकदमा होगा। न्याय ***निकट*** भी है, यह किसी भी समय संसार में प्रकट हो सकता है। पलक झपकते ही जब इसकी उम्मीद भी कम होगी, मसीह दूसरी बार प्रकट होगा; फिर भी इस बार, उसका जीवन पाप के लिये बलिदान चढ़ाने के लिये नहीं होगा, परंतु संसार में धार्मिकता से न्याय करने और जिन्होंने विश्वास करने से इंकार कर दिया था, उनसे अपने लोगों को अलग करने के लिये आयेगा। इस कारण से बाइबल, उस महान दिवस की चेतावनियों से भरी है और सब मनुष्यों को अपने परमेश्वर से मिलने के लिये तैयार रहने की आवश्यकता है!

1. परमेश्वर द्वारा ठहराये एक मनुष्य द्वारा (प्रेरितों के काम 17:31) संसार का न्याय होना एक बड़ी व अपरिवर्तनीय निंश्चितता है। रोमियों 14:10–12 हमें इस सत्य के विषय में क्या सिखाता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: पद 11 में, परमेश्वर अपने ही नाम और व्यक्तित्व की शपथ लेकर कहता है कि न केवल हरेक व्यक्ति का न्याय किया जायेगा परंतु हरेक घुटना झुकेगा और उसके न्यायी होने के अधिकार व उसके न्याय की खराई को मानेगा।

2. यह समझना महत्वपूर्ण है कि यीशु मसीह द्वारा समस्त मनुष्यों का न्याय जितना निश्चित है, उतना ही निकट भी है। परमेश्वर के न्याय के "निकट होने" का अर्थ है कि यह किसी भी क्षण हो सकता है। यह सत्य याकूब 5:9 में सशक्त ढंग से सामने लाया गया है। यह पद मसीह के जल्द ही लौटने और उसके बाद होने वाले न्याय के विषय में क्या कहता है?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: मसीह जो न्यायी है, का चित्रण यहां द्वार पर खड़े हुए जन के रूप में किया गया है, जो दरवाजा खोलने के लिये ठहरा हुआ है ताकि बिना थोड़ी सी भी चेतावनी दिये बगैर भीतर आ जाये। यह सत्य इस तीव्र जरूरत को प्रगट करता है जिससे कि खोये हुए लोगों को, मसीहियों द्वारा सुसमाचार प्रचार करना चाहिये और उस अत्यावश्यकता के साथ करना चाहिये जिससे मनुष्य परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कि खोज कर सके।

न्याय का बाइबल आधारित वर्णन

मसीह के दूसरे आगमन और उसके बाद होने वाले बड़े न्याय के कई वर्णन बाइबल में मिलते हैं। यह ज्ञान हमें इस संसार पर आने वाले उस महान दिन की झलक दिखाती है। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि बाइबल न्याय के दिन के विषय मे वर्णन

करती है, यह लाक्षणिक रूप में नहीं कहती; परंतु यह एक सच्चे घटनाक्रम के विषय में कह रही है वह घटनाक्रम इतिहास का अंत कर देगा और प्रत्येक मनुष्य की शाश्वत नियति तय करेगा।

1. मत्ती 16:27 में मसीह के द्वितीय आगमन और उसके द्वारा प्रत्येक मनुष्य के किये जाने वाले न्याय का संक्षिप्त परंतु सशक्त वर्णन है। इस पद को पढ़िये, और उसकी विषय सामग्री पर ध्यान दीजिये और अपने विचारों को लिखिये।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: ''मनुष्य के पुत्र'' की पदवी मसीहा या मसीह को प्रगट करती है (दानियेल 7:13–14;यूहन्ना 5:26–27)। पृथ्वी का इतिहास प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जीवतों और मृतकों के न्याय के लिये आने के साथ आकस्मिक ढंग से समाप्त हो जायेगा। यहूदा 14–15 में, बाइबल कहती है कि प्रभु हजारों पवित्रों के साथ लौटेगा। उस समय, मसीह प्रत्येक मनुष्य का उसके विचार, शब्द, कार्य के आधार पर न्याय करेगा। वे जो विश्वास द्वारा धर्मी नहीं ठहराए गएं हैं, वे दोषी ठहराए जाएंगे।

2. मत्ती 25:31–33 में, हम मसीह के दूसरे आगमन और उसके बाद संपूर्ण संसार के होने वाले न्याय के बारे में बाइबल के सबसे भव्य वर्णनों में से एक पढ़ते है। इस पद को पढ़िये जब तक कि आप इसकी विषय सामग्री से परिचित न हो जायें, और तब अपने विचारों को लिखिये।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: जैसा उपर बताया गया है, ''मनुष्य के पुत्र'' की उपाधि मसीहा या मसीह को प्रगट करता है (दानियेल 7:13–14; यूहन्ना 5:26–27)। पुत्र जो पिता की महिमा के साथ आने वाला है (मत्ती 16:27) और अपनी स्वयं धारित महिमा में आने वाला है (25:31), क्योंकि पुत्र अपने पिता की महिमा का तेज है (इब्रानियों 1:3)। जैसा मत्ती 16:27 में हम देखते हैं कि यीशु के साथ अनुगामी स्वर्गदूतों का दल होगा और यह अत्यंत सामर्थ व महिमा का भव्य प्रदर्शन होगा। उसके आगमन पर, वह अपने परम अधिकार को पुनः स्थापित करेगा; और प्रत्येक व्यक्ति, आदम से लेकर इस पृथ्वी पर उत्पन्न अंतिम व्यक्ति तक, उसके न्यायालय में उपस्थित होने के लिये बुलाया जायेगा। कोई एक राष्ट्र, जाति, लोग या व्यक्ति अनुपस्थित नहीं होंगे। उस समय, मानव जाति की बड़ी भीड़ दो समूहों में विभक्त की जायेगीः (1) परमेश्वर के लोग, जो शाश्वत राज्य को उत्तराधिकार में प्राप्त करेंगे, जो जगत की ''नींव डलने से पहले'' उनके लिये तैयार किया गया (पद 34) ; और (2) दुष्ट, वे अनंत आग में भेज दिये जायेंगे, जो शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिये तैयार की गयी है '' (पद 41)।

3. न्याय दिवस का सबसे अदभुत व पूर्ण विवरण बाइबल के समस्त स्थलों मे से एक स्थल प्रकाशितवाक्य 20:11–15 में मिलता है। इस पद पर गहन विचार करे बिना, मसीह के न्यायी होने के ऊपर हमारे विचार पूर्ण नहीं माने जायेंगे। इस पद को तब तक पढ़िये जब तक आप इससे परिचित न हों और तब निम्नलिखित वाक्यांशों पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

अ. फिर मैंने एक बड़ा सिंहासन देखा और उसे देखा जो उस पर बैठा हुआ था (पद 11)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: सिंहासन पर कौन विराजमान है? बाइबल के अनुसार हम जानते हैं कि दोनों पिता (प्रकाशितवाक्य 4:2, 9; 5:1, 7, 13; 6:16; 7:10, 15; 19:4; 21:5) और पुत्र (इब्रानियों 1:3; प्रकाशितवाक्य 3:21) सिंहासन पर विराजित हैं। हम जानते है कि सिंहासन मसीह का न्याय आसन (2 कुरिन्थियों 5:10) और परमेश्वर का न्याय आसन है (रोमियों 14:10)। हम जानते हैं कि परमेश्वर पिता ने एक दिन नियुक्त किया है जब वह धार्मिकता मे मनुष्य मसीह यीशु के द्वारा न्याय करेगा (प्रेरितों के काम 17:31)। हमारे समक्ष प्रस्तुत इस महान प्रकाशन का अर्थ पिता और पुत्र के मध्य अंतर प्रकट करना नहीं है – बल्कि यह कि पिता ने समस्त मनुष्यों का न्याय उसके पुत्र द्वारा करना निर्धारीत किया है। इसका उद्देश्य यह प्रमाणित करना है कि मनुष्य का अंतिम आमना – सामना स्वयं परमेश्वर से होगा।

ब. उसकी उपस्थिति से आकाश और पृथ्वी भाग गए और उन्हें कोई स्थान न मिला (पद 11)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: संसार का प्राचीन क्रम, जो पाप और भ्रष्टता के कारण दूषित हो गया है, वह समाप्त हो जायेगा; एक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी इसका स्थान लेगी।

क. तब मैंने छोटे बड़े, सब मृतकों को सिंहासन के समक्ष खड़े हुए देखा (पद 12) ।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: कोई इतना महान नहीं है जो परमेश्वर के सिंहासन के सामने प्रगट होने से इंकार कर दे, न कोई इतना छोटा या महत्वहीन है जो स्वयं को छिपा सके। प्रत्येक – बिना अपवाद के – उस महान दिन में सामने होगा।

ड. और पुस्तकें खोली गयी तथा एक और पुस्तक खोली गयी जो जीवन की पुस्तक है और उन पुस्तकों में लिखी हुई बातों के आधार पर सब मृतकों का न्याय उनके कामों के अनुसार किया गया (पद 12)।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: जिन्होंने यीशु मसीह के शुभ संदेश द्वारा प्रस्तावित क्षमा को लेने से इंकार कर दिया, उनका न्याय, उनके कार्यो के अनुसार होगा। यह तथ्य कि वाक्यांश "उनके कार्यो के अनुसार" पद 13 में पुनः दोहराया गया है, महत्वपूर्ण

है। जैसे यूहन्ना मनुष्यों के अंतः करण को उनके पापमय कार्यो और उनकी भयावह सत्यता के प्रति जगाने का प्रयास कर रहा था, ताकि यह प्रगट हो कि निसंदेह उन कार्यो के आधार पर उनका न्याय होगा।

इ. समुद्र ने उन मृतकों को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने अपने मृतक दे दिए। उनमें से प्रत्येक का न्याय उसके कामों के अनुसार किया गया (पद 13) ।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: महान न्याय दिवस पर छिपने के लिये कोई स्थान नहीं होगा। बाइबल बताती है मनुष्य चिल्ला उठेंगे कि पहाड़ों और चट्टानों उन पर गिर जायें ताकि जो सिंहासन पर बैठा है, उस एक की उपस्थिति से बचा ले (प्रकाशितवाक्य 6:16)। फिर भी, उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिलेगा। उन्हे छिपने का कोई स्थान न मिलेगा।

ई. मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए। यह आग की झील दूसरी मृत्यु है। जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में फेंक दिया गया (पद 14–15) ।

_____

_____

_____

_____

टिप्पणियां: जिन्होंने परमेश्वर की इच्छा और उसके पुत्र के द्वारा प्रदान किये गये उद्धार को मानने से इंकार कर दिया, यह उनका त्रासदायी अंत होगा– परमेश्वर की कृपापूर्ण उपस्थिति से अनंतकाल तक के लिये वे पृथक कर नर्क में डाल दिये जायेंगे।